ज्ञानपीठ-लोकोदय-ग्रन्थमाला—हिन्दी ग्रन्थाङ्क—६७

चेखवके तीन नाटक

[सीगल, चॅरीका बगीचा, तीन-बहनें]

[एण्टन-पाव्लोविच चेखव के तीन सर्वश्रेष्ठ नाटक]

अनुवादक—राजेन्द्र यादव

भारतीय ज्ञानपीठ • काशी

ज्ञानपीठ लोकोदय-ग्रन्थमाला-सम्पादक और नियामक
श्री लक्ष्मीचन्द्र जैन एम० ए०

प्रकाशक
मंत्री, भारतीय ज्ञानपीठ
दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी

प्रथम संस्करण
१९५८
मूल्य चार रुपये

•

मुद्रक
बाबूलाल जैन फागुल्ल
सन्मति मुद्रणालय
दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी

ये अनुवाद

एण्टन पाव्लोविच चेखवके नाटकोंके ये तीनों अनुवाद अंग्रेज़ीके निम्न अनुवादोंके आधारपर किये गये है :

हंसिनी [सीगल] = १, कॉन्स्टान्स गार्नेट
२, एलिसावेता फ़ेन

चॅरीका बगीचा = १, कॉन्स्टान्स गार्नेट
२, अब्राह्म यार्मोलिन्स्की
३, एल० नाव्ज़ोरोव [मॉस्को संस्करण]

तीन बहनें = १, कॉन्स्टान्स गार्नेट
२, बॅर्नार्ड गिलबर्ट ज्यॅर्नी

भावके प्रति अधिक सचेत और अर्थके प्रति अधिक आश्वस्त होनेके लिये ही मैंने एकसे अधिक अनुवादोंका सहारा लिया है, फिर भी कह सकनेमें असमर्थ हूँ कि प्रस्तुत अनुवाद कहाँ तक सफल हैं। इसका कारण आत्म-विश्वासकी कमी नहीं, बल्कि वे मूल अनुवाद ही हैं। वे अनुवाद कहीं-कहीं तो आश्चर्य-जनक रूपसे एक दूसरेसे अलग है। मॉस्कोसे अभी "चॅरी-ऑर्चर्ड"का अनुवाद आया है इसलिये इन सबमें उसे ही सबसे अधिकारी अनुवाद माना जा सकता है। लेकिन स्थान-स्थानपर यह अनुवाद अपने साथी अनुवादोंसे इस हद तक भिन्न हो गया है कि पहले तो मुझे सचमुच विश्वास नहीं हुआ। हिन्दी वाले अर्थका अनर्थ करनेके लिये बदनाम हैं, लेकिन इधर जब दो-तीन सालसे अनुवादोंके चक्करमें पड़नेका दुर्भाग्य हुआ, तो पाया कि इस दिशामें अपने साथी काफ़ी हैं। अंग्रेजीके अनुवादक मूलकी अपेक्षा अपनी ही भाषाके प्रति अधिक सतर्क रहे हैं,

और हिन्दीवाले मूलको ही ऐसा पकड़कर बैठ जाते हैं कि उन्हें अपनी भाषाका ध्यान नहीं रहता ।

वस्तुतः भाषा कोई भी हो, अनुवादकों की सीमाएँ सभी जगह प्रायः एक जैसी हैं, और चाहे जैसा अच्छा अनुवाद हो, उसकी भाषा-शैली मौलिक रचनाओंसे अलग होती ही हैं—होनेको बाध्य है। जहाँ भी अनुवाद "मौलिक कृति"-सा लगता है वहाँ निश्चित रूपसे अनुवादक काफ़ी स्वच्छन्दता ले लेता है। उसे अनुवादकी अपेक्षा भावोंका पुनर्कथन कहना अधिक अच्छा है।

खैर, फिर भी प्रस्तुत अनुवादकी कमियों और कमज़ोरियोंके लिये यह सब बचाव काफ़ी नहीं है, निश्चित रूपसे वे मेरी ही कमियाँ और

५-ए ग्रीकचर्च रो
कलकत्ता—२६,
२५-३-५८

—राजेन्द्र यादव

चेखव : जीवन और दर्शन

"यह चेखव कौन है ? यह कहाँसे धरती फोड़कर निकल पड़ा ?"

"हमारे पैसे वापिस दो।"

"नाटकवाले ऐसे खेल क्यों लेते हैं ?"

"लगा दो आग।"

उस दिन अलेक्जैन्द्रिस्की थियेटरमें इतना-हल्ला-गुल्ला और गुल गपाडा मचा था कि कान पड़ी बात नहीं सुनाई देती थी। लोग सीटोंसे उछल रहे थे, गालियों और तने हुए घूँसोंसे वातावरण गूँज रहा था, और जिस नाटक 'सीगल' का जनता इस तरह स्वागत कर रही थी उसका लेखक कानों तक ओवरकोट चढ़ाए चुप-चाप हॉलसे बाहर भाग आया था। तीन बजे सुबह तक चेखव पीटर्स बर्गकी सड़कों पर पागलकी तरह भटकता फिरा, उसने निश्चय कर लिया कि चाहे सात-सौ साल और जीवित रहना पड़े—नाटक नामकी कोई चीज़ अब नहीं लिखनी। आजसे नौ वर्ष पहले मॉस्कोमें खेले गये अपने 'आइवानोव' नाटकका जनता द्वारा किया गया ऐसा ही 'स्वागत' उसके दिमागमें घूम रहा था। दूसरे दिन अखबारोंमें उसने पढ़ा कि नाटकोंके इतिहासमें इससे अधिक असफल नाटक आज तक नहीं हुआ।

असलमें जनताके लिये 'आइवानोव' की विषय-वस्तु और 'चेखव' दोनों ही नये थे। अभी तक जनता तो जानती थी हास्यरसके प्रसिद्ध लेखक 'एण्टन चैखोन्ते' को। चेखवने अपनी प्रारम्भिक रचनाएँ इसी नामसे लिखी थीं। और 'मॉस्को आर्ट थियेटर' द्वारा खेले गये उसी चेखवके 'सीगल' 'अंकिलवान्या' 'थ्रीसिस्टर्स' 'चॅरी ऑर्चर्ड' ने नाटकोंके इतिहासमें अभूत

पूर्व सफलता पाई, लेकिन पहली असफलताओंके प्रभावने उसे थियेटरों और अभिनेताओंके प्रति इतना कटु और असहिष्णु बना दिया कि उसने अक्सर लिखा "तुम इन थियेटरोंको शिक्षा और आत्मनिर्माणकी जगह बताते हो, इनमें गुलगपाड़ेके सिवा कुछ भी नहीं होता। यह थियेटर शहरकी बीमारियाँ हैं।" (प्लेश्चयेवको पत्र) तिखोनोवसे एक बार उसने कहा था—"ऐसा लगता है कि हमारे यहाँ अभिनेताओंका असभ्य और अशिक्षित होना एक स्वयंसिद्ध नियम बन गया है...जब ज़रा नये-नये होते हैं तो ये लोग हाथ-पाँव पटकते और खच्चरोंकी तरह हिनहिनाते हैं और जब ज़रा बड़े हुए तो, दिन रात शराब और अय्याशीमें अपनी आवाज़ इत्यादि सबको ख़राब कर डालते हैं।" और उसी वातावरणमें 'चेखव' के नाटकोंने, थियेटरके इतिहास और नाटकोंके साहित्यमें एक नई-धाराको जन्म दिया। कुछ लोगोंने तो कहा कि शैक्सपियरके बाद 'चॅरीका बगीचा' जैसा नाटक लिखा ही नहीं गया, तथा 'तीन बहनें' संसारके सर्वश्रेष्ठ नाटकोंमेंसे है। कहानीकार तो वह निर्विवाद रूपसे संसारका श्रेष्ठतम है ही। किन्तु उसे कभी भी अपने लिखनेसे सन्तोष नहीं हुआ और उसने हमेशा ही अपने लिखे हुए को बड़ी हेय दृष्टिसे देखा। उसने सुवोरिन नामके अपने एक घनिष्ठ मित्रको लिखा था "मेरा तो विश्वास है कि जो कुछ मैं लिखना चाहता था, और जिस उत्साहसे मैं लिख सकता था—उस सबके मुक़ाबले आज तक जो भी कुछ मैंने लिखा है सब बेकार है। मेरे दिमाग़में ऐसे लोगों—चरित्रोंकी पूरी पलटन भरी है जो दिन-रात अपनी मुक्तिके लिए प्रार्थना करते रहते हैं कि मैं एक शब्द कह दूँ और वे निकल पड़ें। मुझे बड़ा दुख होता है जब देखता हूँ कि आज तक मैंने जिन विषयों पर लिखा है, वे सब कूड़ा है; जब कि अच्छेसे अच्छे विषय मेरे दिमाग़के कबाड़खानेमें पड़े सड़ रहे हैं।" अपनी आन्तरिक इच्छाको उसने लज़ारेव ग्रुज़िंस्कीके पत्रमें इस प्रकार व्यक्त किया है, "काश, मुझे

चालीस सालका समय और मिल जाता तो मैं खूब पढ़ता और महनतसे लिखना सीखता...अब क्या है?...जैसे बौने और है, एक मैं भी हूँ। मैंने अभी तक जो कुछ भी लिखा है, पाँच-दस सालमें लोग सब भूल-भाल जायेंगे। लेकिन सन्तोष मुझे बस यही है कि मैंने जो रास्ता खोल दिया है वह जीवित रहेगा। यही मेरी लेखककी दृष्टिसे सबसे बडी सफलता होगी।"

असन्तोष और तटस्थता यह चेखवकी सफलताके मूल रहस्य हैं। लेकिन इन दोनो विशेषताओंको प्राप्त करनेके लिए उसे क्या मूल्य चुकाना पडा था, यह बहुत कम लोग जानते है। चूँकि लिखना उसे पैसेके लिए पड़ा इसलिए अपने लिखेसे उसे कभी सन्तोष नहीं हुआ, और अपनी इस विवशताके प्रति तीव्र-वितृष्णाने उसमें अपने अपनी रचनाओं, अपने समसामयिकों सभी के प्रति एक ऐसी तटस्थताकी भावना भर दी कि वह बडी निर्लिप्तिसे सभीके प्रति अपने विचार प्रगट कर सकता था।

१७ जनवरी १८६० से २ जुलाई १६०४ के बीचका लगभग ४४ वर्षोंका चेखवका जीवन कुछ ऐसी असाधारण परिस्थितियोंमे विकसित हुआ कि उसमें चेखवके प्रारम्भिक दिनोंकी पृष्ठभूमि हमेशा ही झलकती रही। हालाँकि चेखवने सुवेरिनको एक पत्रमें लिखा कि उसने 'अपने भीतरके गुलामकी आखिरी बूँद तक निचोड फेंकी है' लेकिन यह सही है कि उसके पात्रोंमें छाई उदासी, निराशाकी अमिट छाप उस 'गुलाम' की ही देन है। चेखवके दादा, मिखायलोविच चेखव राजस्थानी गोलोंकी तरह गुलाम थे, और उन्होंने ३५०० रूबल देकर अपनी स्वतन्त्रता खरीदी थी। साथ ही अपने बेटे पावेल इगोरोविच चेखवको उन्होंने एक जनरलस्टोर की दूकान भी खुलवा दी थी। इन्हींके पाँच बेटे और एक लड़की चेखवके भाई-बहन थे। पावेलका स्वभाव बहुत क्रूर था और वह बात-बातमें अपने बच्चोंको बुरी तरह मारते, पत्नीको गालियाँ सुनाते थे। अपनी गुलामीके दिनोंमें—उन्होंने जनरल चैरत्खोवको अपने नौकरोंके साथ जो व्यवहार करते देखा

था ठीक वही व्यवहार वह अपने नौकरोंसे करते थे। उन्होंने चूँकि रईसी और ग़ुलामी एक ही जीवनमें देखी थी, इसलिये रईसोंकी भी अच्छाइयों की जगह बुराइयाँ ही अधिक ग्रहण कीं—जब भी बाहर निकलते थे तो बिल्कुल 'टिप-टॉप'। बच्चोंको जबर्दस्ती गिरजामें भेजते, प्रार्थनाएँ कराते और ज़रा-सी ग़लती होने पर बुरी तरह मारते। बचपनकी इसी क्रूरताने चेखवकी 'आत्मामें एक ऐसा घाव' छोड दिया जिसकी पीड़ा वह जीवनके अन्तिम दिनों तक अनुभव करता रहा 'क़ैदियोंकी तरह खड़े होकर प्रार्थना करने' की विवशताने उसे ऐसा नास्तिक बना दिया कि आगे चलकर हर सिद्धान्तके प्रति उसका विश्वास टूट गया, और एक अजब अनास्था उसे मथती रही। कर्ज़दार हो जानेके कारण पूरा परिवार बादमें मॉस्को चला आया और चेखव तागनरोग में ही पढ़ता रहा। स्कूलमें वह बुद्धू क़स्मके लड़कोंमें से था।

इसके बाद मॉस्को आकर उसने डाक्टरीकी पढ़ाई शुरू की। यह जीवन उसके कठिनतम संघर्षोंका युग था। भाइयोंके दुर्व्यसनों सहित पूरे परिवारका पालन और अपनी पढ़ाई। चेखवने ट्यूशन किये, दर्ज़ीके यहाँ नौकरी की और गोर्कीके अनुसार "उसे जवानीकी सारी शक्ति जीवित रहने के लिये झोंक देनी पड़ी।" उसने एकसे अधिक बार कहा कि "मैंने कभी बचपन जाना ही नहीं।" स्कूलमें भी हमेशा संगी-साथी-हीन अकेले ही उसका समय बीतता। अपनी 'तीन वर्ष' शीर्षक लम्बी कहानीमें लैवितन के बचपनके रूपमें चेखवने बहुत कुछ अपना ही जीवन दिया है और इसी सबको लिखनेको एक बार उसने सुवेरिनके पत्रमें लिखा था—"यदि तुम लिख सकते हो तो एक ऐसे लड़केकी कहानी लिखो जिसे ज़िन्दगीमें सिवा दुःखके कुछ नहीं मिला—अच्छा खाना-पहनना नहीं मिला। मारके सिवा जिससे कभी किसीने प्रेमसे बात नहीं की। स्कूलमें हमेशा पिसड्डी रहा और अछूतकी तरह माना जाता रहा।"

चेखवकी पहली रचना 'एक समझदार पड़ोसीको ख़त' थी जो 'ड्रैगन-फ्लाई' नामक पत्रिकामें छपी, फिर तो वह 'अलार्मक्लॉक' इत्यादिमें निरन्तर लिखता रहा। उसे पता भी नहीं था कि उसका यह लिखना क्या प्रभाव पैदा कर रहा है। जब वह पहली बार मॉस्कोसे पीटर्स-बर्गमें आया तो उसका ऐसा स्वागत हुआ कि वह दंग रह गया। लोग उसे काफ़ी बड़ा कहानीकार मानने लगे थे और उन्होंने "फ़ारसके शाह" की तरह उसका अभिनन्दन किया। अभी तक वह ए० चेखोन्तेके नामसे लिखता था। यहीं उसका परिचय प्रसिद्ध लेखक अलेक्सी सुवोरिनसे हुआ और शीघ्र ही वह उसके पत्र 'नया-ज़माना' में धारावाहिक रूपसे लिखने लगा। यहाँ उसे अपनी रचनाओंके पैसे भी अधिक मिलते थे—बादमें तो इसी पत्रमें ४० कॉपेक हर पंक्तिके हिसाबसे मिलने लगे।

यद्यपि टॉल्सटाय इत्यादिने हमेशा ही कहा कि उसके लेखनमें उसकी डॉक्टरी बाधक है, लेकिन स्वयं चेखवका विचार था कि इसने उसके लेखनको अधिक तर्क-संगत और सन्तुलित किया है और उसे दैनिक जीवनमें होनेवाली ऐसी छोटी-छोटी गलतियोंसे बचा लिया है, जो बड़े-से-बड़े लेखकमें पाई जाती है। उसने लिखा: "डॉक्टरी मेरी वैध पत्नी है और साहित्य प्रेयसी। मैं जब एकसे ऊब जाता हूँ तो दूसरीके पास जाता हूँ" बादमें जब अपनी जायदाद मिलीखोवेमें वह बस गया था तो तीन-घण्टे नियमपूर्वक मुफ्त लोगोंको अपनी डॉक्टरी की सेवाएँ देता था।

जब १८८८ में उसे 'पुश्किन-पुरस्कार' मिला तब तक लोग उसकी प्रतिभाको पहचान चुके थे और ग्रिगोरोविचके अनुसार उसमें वह प्रतिभा थी जो नये लेखकोंके मण्डलसे ऊँचा उठा देती है, यद्यपि साहित्यमें बड़ी तेज़ीसे उसका स्थान बनता जा रहा था लेकिन यह भर्त्सना उसे खाये जा रही थी कि अपनी वैध-पत्नी—डॉक्टरी—के प्रति उसका रवैया

सख्त हरामखोरीका है। उन दिनोंके पत्रोंमें उसका यह मानसिक द्वन्द्व बड़े मुखर रूपमें आया है। उन्हीं दिनों लोगोंने अचानक सुना कि हमेशा बीमार रहनेवाला चेखव कील-काँटेसे लैस होकर साइबेरियाको पार करके लम्बे भयानक यात्राका प्रोग्राम बनाकर साढ़े छः हजार मील शाखालिन 'द्वीप' जानेके लिए निकल पड़ा है। उस समय ब्लाडीवेस्तकसे लैलिनग्राड तक जानेवाली संसारकी सबसे बड़ी रेलवे-लाइन नहीं बनी थी। अतः प्रायः सारा ही सफ़र घोड़ा-गाड़ी या नावमें तय करना था। शाखालिन द्वीपमें उन दिनों रूसके आजन्म कारावास पाये क़ैदी भेजे जाते थे। डॉक्टरीको कुछ नई देन वह अपनी इस 'किकज़ोटिक' (स्वयं चेखवने ही अपनी यात्राको यह नाम दिया) यात्रासे दे सकेगा—यही बात उस समयके उसके पत्रोंमें पाई जाती है। सुवोरिन और अपनी बहन मेरिया कैसीलेवको उस यात्रा का विस्तृत विवरण देते हुए चेखवके पत्र जहाँ एक ओर चेखवके अदम्य साहस और अटूट निष्ठाके प्रमाण हैं, वहाँ संसारके पत्र-साहित्यकी अमूल्य निधियाँ भी हैं। किस तरह बर्फ़ीली आँधियों, बाढ़ों और दलदलोंको पार करता हुआ बवासीरका बीमार, टी० बी०में—खून थूकता यह व्यक्ति शाखालिन पहुँचा, सचमुच उस वर्णनको पढ़कर मन सिहर उठता है। लौटते समय उसने समुद्री रास्ता लिया और सिंगापुर-कोलम्बो होता हुआ लौटा। यह तीन महीनेकी यात्रा उसके जीवन और साहित्यमें एक बहुत बड़ा मोड़ है। इसी यात्राने उसे टॉल्सटायके सत्याग्रह और आत्म-संयमवाले 'आत्मघाती' दर्शनसे मुक्त किया।

'शाखालिन'का बाह्य-वर्णन देते हुए यद्यपि उसने 'शाखालिन' नाम की पुस्तक लिखी, लेकिन उसकी मानसिक उथल-पुथलका विशद चित्र हमें उन्हीं दिनों लिखे गये उसके लघु-उपन्यास 'द्वन्द्व'में मिलता है। उसकी दूसरी लम्बी कहानी "वार्ड नं० ६" तथा "मेरा जीवन" के आलोचकोंने

अधिक महत्व दिया है, लेकिन मेरा विश्वास है कि लम्बी कहानीकी कलाकी दृष्टिसे ही नहीं; उन दिनोंके चेखव-मानसको समझनेके लिए 'द्वन्द्व'से अच्छा कोई उदाहरण नहीं है। उन दिनो उसने 'सुवोरिन'को एक पत्रमें लिखा था "मेरा तो कहना यह है कि हर लेखकको शाखालिन अवश्य ही जाना चाहिये। मैं भावुक नहीं हूँ। अगर होता तो यहाँ तक कहनेको तैयार हो जाता कि हमें शाखालिन जैसी जगहों की उसी तरह तीर्थ-यात्रा करनी चाहिये, जैसे तुर्क मक्काकी करते है...ऐसी जगहमें तो केवल उसी देशको कोई दिलचस्पी नहीं हो सकती, जो शाखालिनमें हज़ारों आदमियोंको निर्वासन न देता हो, और जिसका लाखों रुपया उसपर खर्च न होता हो। ऑस्ट्रेलियाके सिवा और ऐसी कौन-सी जगह हैं जहाँ कैदियोंके पूरे उपनिवेश बसे हो ? हम मन्दिरोंमें बैठकर मानवताकी भलाईकी प्रार्थना करते हैं; लेकिन कभी हमने सोचा है शाखालिन जैसी जगहमें मानव पर क्या बीतती है ? शाखालिन ऐसी असहाय-यन्त्रणाओंका स्थान है जिन्हें मानवके सिवा—चाहे वे गुलाम हो या स्वतन्त्र—कोई और सह ही नहीं सकता...कल्पना करो, हमने लाखो आदमियोको किस तरह सडने-मरने और कुत्तोंकी मौत पानेके लिए वहाँ छोड दिया है। कडकड़ाती ठण्डमें जंजीरोसे बाँधकर हाँका है। हाँ, हमें अपने देशके कलंक इस शाखालिन को देखनेकी बेहद ज़रूरत है। दुख मुझे यह था कि कोई और इस सबको देखनेके लिए मेरे साथ नहीं था।" वहाँ क़ैदियोंपर किये जानेवाले भयंकर अमानुषिक अत्याचारोंको देखकर उसकी आँखोंके आगेसे जैसे एक पर्दा हट गया। उसने अपनी पुस्तक 'शाखालिन'में लिखा—"क्या क़ैदियोंका इस अत्याचार, कोड़ेबाज़ी, बेगार और भ्रष्टाचारका प्रतिरोध न करना उनके अफ़सरोंका 'हृदय-परिवर्तन' कर उन्हें अच्छा आदमी बना सकता है ? वहाँ तो वर्षोंसे यही होता आ रहा है। और अगर सचमुच 'पापका प्रतिकार न करो'का सिद्धान्त, कोई प्रभावशाली सिद्धान्त होता तो

शाखालिन पहली जगह है जहाँ उसका प्रभाव दिखाई देना चाहिये।"

'द्वन्द्व' में लायव्स्की और वॉनकरेनके विचारोंका संघर्ष उनके इस मानसिक आन्दोलनको लेकर आता है। लायव्स्की भावुक पराजयवादी और निकम्मे किस्मका व्यक्ति है जो दार्शनिक उक्तियों और आप्तवाक्योंमें अपनी दुर्बलताओंको छिपाना चाहता है। जीव-वैज्ञानिक वॉनकरेन ठोस व्यावहारिक है—और अन्तमें वैज्ञानिक व्यावहारिकताके साथ मानवतावादकी विजय होती है। वार्ड नं० ६ में तो डा० रागिन (जो टाल्सटायके सिद्धान्तोंका प्रतीक है और नौकरसे पानी भी माँगनेमें हिचकता है) पागल होकर मरता है। वहाँ तो उस दर्शनको चेखवने पूरी तरह उतार फेंका है। अपनी पत्नी ओल्गानिपरको उसने लिखा था "अफ़सोस, मैं कभी भी टाल्सटायन नहीं बनूँगा, क्योंकि मैं स्त्रियोंमें सबसे अधिक उनके सौन्दर्यको प्यार करता हूँ। मनुष्यके इतिहासमें मुझे सुन्दर ग़लीचों, स्प्रिङ्गदार गाड़ियों और मेधाकी तीव्रताके रूपमें आनेवाली संस्कृति पसन्द है।"

चेखवके अन्य जीवनी-लेखकोंने—यहाँतक कि उसके चचेरे भाई मिखायल चेखव तकने—उसकी शाखलिन-यात्राके एक कारणको काफ़ी हदतक नज़रन्दाज़ किया है। शायद इसका कारण यह है कि इस बातका ज़िक्र उसके पत्रोंमें नहीं आया है और प्रसिद्ध आलोचक शुस्तोवके शब्दोंमें यह हमें स्वीकार करना होगा कि "चेखवकी पूरी जीवनी कोई नहीं जानता।" फिर भी डैविड मैगार्शकने इस सिलसिलेमें उसकी महिला-मित्र—या प्रेमिका—लिडिया एविलोवको लिखे गये पत्रों तथा एविलोवकी पुस्तक 'मेरे जीवनमें चेखव' की ओर ध्यान खींचा है। और किसी हदतक 'द्वन्द्व' कहानीसे इस बातकी पुष्टि भी होती है

सचमुच एविलोवसे चेखवकी मित्रता एक पहेली बनकर उसके जीवन में आई। पीटर्सबर्गमें उसका नाटक 'आइवानोव' खेला जानेको था—और वह रिहर्सलोंके समय वहीं था। पीटर्सबर्गमें वह 'पीटर्सबर्ग ग़ज़ट' के

सम्पादक खुदकोवसे मिलने गया। वहीं उसकी साली, एविलोव मिली। यह एक बच्चेकी माँ थी; लेकिन दोनों एक दूसरेसे इतने प्रभावित हुए कि प्रथम-दर्शनमें ही एक दूसरेको घण्टो आँखे फाड़े देखते रहे। एविलोवके शब्दोमें : "हम दोनों एक दूसरेकी आँखोंमें देखते रहे; लेकिन उन्हीं दृष्टियों में हमने कितना कुछ विनिमय कर लिया था। मुझे तो ऐसा लगा जैसे मेरे भीतर एक विस्फोट हो उठा है—प्रकाश, आह्लाद और विजयका विस्फोट। मैं समझ गई कि चेखवकी भी हालत यही है।" और इन दोनों की अन्तिम मुलाकात वह थी जब 'सीगल' का मॉस्को आर्ट-थियेटर द्वारा चेखवके लिये व्यक्तिगत रूपसे अभिनय किया गया और बुलानेपर भी वह नहीं आई। चेखव और लिडिया बिना एक दूसरेके रह नहीं सकते थे, और जब भी वे मिलते थे तो लड़ पड़ते थे। जो कुछ चेखव चाहता था और प्राप्त नहीं कर सकता था, साथ ही जिसके बिना रह भी नहीं सकता था, उसीकी कशमकशमें वह शाखालिनकी ओर चल पड़ा। 'द्वन्द्व' कहानीमें नायक लायव्स्की भी 'अन्नाकैरेनिना' की तरह एक विवाहित महिला नाद्याफ्योदोरोव्नाको लेकर सुदूर काकेशस् प्रान्तमें चला जाता है। 'सीगल' नाटकके तीसरे दृश्यमें 'नीना' प्रेमका सन्देश ठीक लिडियाकी तरह भेजती है। एक बार लिडियाने जौहरीसे, बिल्कुल छोटी किताबकी शक्लका जेबघडीकी जंजीरमे लटकनेवाला झुमका बनवाया, उसके एक तरफ़ खुदवाया गया "चेखवकी कहानियाँ" और दूसरी तरफ़ "पृष्ठ २६७, लाइन छः-सात" यह संकेत था चेखवकी 'पड़ोसी' कहानीकी एक लाइनकी ओर : "अगर तुम्हें कभी भी मेरे प्राणोंकी आवश्यकता पड़े, तो निःसंकोच आना और ले लेना।" और इसके बाद शायद मित्रता समाप्त हो गई।

चेखवका विवाह हुआ 'मास्को आर्ट थियेटर' की प्रसिद्ध अभिनेत्री ओल्गानिपर से। वह उसके नाटक 'सीगल' में आर्कदीना इरीना

निकोलायेव्ना बनी थी। उसने उन दिनों सुवोरिनको लिखा कि "मुझे ऐसा लगता है कि मैं तुम्हारी इरीनासे प्रेम करने लगा हूँ।" मॉस्को आर्ट थियेटर' चेखवके नाटक खेलता रहा और दोनों एक दूसरेके निकट आते रहे। चेखव इन दिनों 'मिलिखोवो' में था। विवाहके विषयमें भी उसके विचार बड़े विचित्र थे। रोज़-रोज़ दीखनेवाली पत्नीके पक्षमें वह नहीं था—वह तो ऐसी पत्नी चाहता था जो चाँदकी तरह दीखे और छिप जाये। उनका विवाह 'मास्को' के एक एकान्त गिरजेमें हुआ। उस समय केवल ओल्गानिपर की ओर के दो आदमी थे।

मास्कोके बिना चेखव रह नहीं सकता था और वहाँका जलवायु उसे वहाँ रहने नहीं देता था। अतः कभी मॉस्को और कभी बाहर आते-जाते ही उसका समय बीता। अन्तिम दिनोंमें जब उसकी तबियत बहुत खराब हो गई तो पति-पत्नी जर्मनीके बीदनकीलर क्लिनिक चले गये, और वहीं उसकी मृत्यु हुई। वास्तवमें वह इतनी प्रचण्ड जिजीविशा वाला व्यक्ति था कि उसने बीमारीसे कभी हार नहीं मानी। उसने अपने एक मित्रको लिखा था "बीमारीसे लड़ना मेरा स्वभाव बन गया है। बिल्कुल ऐसा लगता है कि एक राक्षस है जो हमेशा मेरे सामने रहता है। कभी वह मुझे पछाड़ देता है, कभी मैं उस पर चढ़ बैठता हूँ।" मृत्युके कुछ मिनट पहले तक वह अंग्रेजों और अमेरिकनोंके खाऊपने पर एक ऐसा मज़ेदार किस्सा निपरको सुना रहा था कि वह मारे हँसीके सोफ़े पर दुहरी हो गई थी। चेखवके अन्तिम समयका जो हृदयस्पर्शी वर्णन उस समय 'निपर' ने दिया है, वह 'व्यक्ति' चेखवके साहसका अद्वितीय उदाहरण है। बात करते-करते उसे दौरा आ गया, जीवनमें पहली बार उसने डाक्टरके लिए कहा। डाक्टर आया तो उसने शैम्पेन दी। बड़े विचित्र ढंगसे मुस्कुराकर चेखवने कहा—"बहुत दिन हो गये शैम्पेन पिये हैं।" और जर्मनमें बोला—"अब मैं जा रहा हूँ।"

चेखवको नीचता, ओछेपन और गन्दगीसे सदैव ही घृणा रही—वह उनका कट्टर दुश्मन था। इनको उसने कभी भी क्षमा नहीं किया और गोर्कीके अनुसार मृत्युके बाद जैसे इन्हीं सब चीज़ोंने उससे मिलकर बदला लिया—"उसकी शव यात्राके पीछे मुश्किलसे सौ आदमी थे। उनमेंसे दो वकील तो मुझे अभी भी याद हैं। दोनों नये जूते और रंगीन टाइयाँ पहने थे और दूल्हों-से लग रहे थे। पीछे चलते हुए मैंने सुना, एक तो कुत्तोंकी बुद्धिमत्ता पर बहस कर रहा था, और दूसरा अपने गाँवके घरके आराम तथा आस-पासके दृश्योंका बखान कर रहा था।"

गोर्की, स्तैनिस्लेव्स्की, प्लैश्चयेव, कोरोलैंको, टाल्सटाय, इत्यादि चेखवके घनिष्ठ मित्रोंमेंसे थे। ओल्गा-निपर और एविलोवके पत्रोंमें, जो प्रेम पत्रोंके अद्भुत उदाहरण हैं, उसने जिस ढंगसे गोर्कीका ज़िक्र किया है, उससे तो ऐसा लगता है कि पुरुष मित्रोंमें सबसे अधिक स्नेह उसे गोर्कीसे ही था। एविलोवको उसने लिखा "तुम गोर्कीसे मिली हो? देखनेमें वह आवारा-सा लगता है; लेकिन वास्तवमें वह बहुत ही शिष्ट और सभ्य व्यक्ति है। स्त्रियोंसे बहुत शर्माता है, मैं चाहता हूँ उसे कुछ स्त्रियोंसे मिलाऊँ।" उसने स्वयं गोर्कीको लिखा "तुम सचमुच अद्भुत प्रतिभाशाली व्यक्ति हो। तुम्हारी "खदरोंमें" कहानी पढ़ कर मैं बहुत ही प्रसन्न हुआ, वाह! क्या कहानी है! काश, वह मैंने लिखी होती।" जब वह याल्टामें था तो गोर्की उनके घर आकर अपने जीवनके अनुभवोंके अक्षय भण्डारमें से अजब-अजब किस्से चेखव-दम्पत्तिको सुनाया करता था। लेकिन उसने गोर्कीके "गढ़े हुए मनोविज्ञान" और 'गूँजने गरजने' वाले शब्दों, छायावादी शैलीकी सूक्ष्म-अभिव्यक्तिकी बेलौस आलोचना की। गोर्कीने अपना 'फ़ोमागार्जयेव' उपन्यास लेखकोको भेंट किया है, और शायद सबसे अधिक कटु आलोचना चेखवने उसकी ही की है। फिर भी जब चेखवको राज्यकी 'साइन्स एकादमी' का सदस्य चुना गया, लेकिन गोर्कीके राजनैतिक विचारोंके

कारण, 'ज़ार' ने व्यक्तिगत हस्तक्षेप करके गोर्कीकी सदस्यता छीन ली तो चेखव और कोरोलैंकोने स्वयं विरोध स्वरूप सदस्यतासे त्यागपत्र देकर राज्यके सबसे बड़े सम्मानको ठुकरा दिया। इसी तरह ज़ोलाका लिखना उसे कभी पसन्द नहीं आया, लेकिन जब उसे कैप्टेन ड्रीफुसके सिलसिलेमें झूठा मुक़दमा चलाकर सज़ा हो गई, तो उन्हीं दिनों सुवोरिनके पत्र 'नया जमाना' को अधिकारियोंका पक्ष लेता हुआ देखकर उसका खून खौल उठा। उसने अपने भाई मिखायलको लिखा : "यह सुवोरिन जरा भी अच्छा आदमी नहीं है।...मेरा मन नहीं होता कि उसे पत्र लिखूँ...न चाहता हूँ कि वह मुझे लिखे...।"

साहित्यकी तीन दिशाओंमें चेखव ससारके सर्वश्रेष्ठ लेखकोंमें है : कहानी, नाटक और व्यक्तिगत पत्र—और तीनोंमें ही उसका निश्छल 'महान् मानव-हृदय' बोलता है।

चेखवकी कला और विषय वस्तुकी एक मात्र विशेषता है सादगी और बनावटसे बचना। कहानीको इतने सादे और सीधेपनसे अनायास ही वह प्रारम्भ और समाप्त कर देता है, पाठक चकित रह जाता है। उसमें टैकनीक और शिल्पके ओ. हैनरी जैसे कमाल नहीं है, सामाजिक आडम्बरको तेज़ नश्तरी चाकूकी तरह स्तैमाल करके वह मोपांसाकी तरह पाठकको स्तम्भित नहीं करता—बल्कि ऐसी स्वाभाविकतासे अपनी कहानीको कहना प्रारम्भ कर देता है कि उसकी कथा उसके पात्र, वार्तालाप सब कुछ हमारे हृदयकी धड़कनोंके साथ; मिल जाते हैं। वर्षों याद रहते हैं। उसकी नाचनेवाली लड़कीका कथानक अगर मोपांसाके पास होता तो शायद वह 'सिग्नल'से भी अधिक तीखा, व्यंग्य लिख डालता। उसकी कहानी 'चुड़ैल' 'घोड़ाचोर' 'काला सन्यासी' 'प्रियतमा-पड़ोसी' 'चुम्बन' 'दलदल' इत्यादि जैसे अपने साथ हमें विभिन्न वातावरणोंमें घुमाती है। 'दलदल' का कथानक 'नाना' के हिस्सेकी याद दिलाता है जहाँ जार्ज और फिलिप्पे दोनों भाई नानाके पास

आते-जाते है। लेकिन जोला और चेखवमें फर्क है। मुझे तो सबसे अधिक आकर्षित चेखवकी इस बातने किया है न तो उसमें तीखापन है और न उसके पास 'विलेन' है। व्यग्य और हास्य संसारके किसी भी लेखकसे उसके पास कम है, यह कहना गलत होगा; लेकिन उसका व्यग्य तिलमिलाने वाला व्यग्य नहीं, रुलानेवाला व्यंग्य है—जैसे 'दिलका दर्द' या 'दूसरा शमादान' कहानी में। और जब वह हँसता है तो बिना किसी द्वेषके जी खोलकर हँसाता है जैसे, 'अपराधी', 'गिरगिट' इत्यादि कहानियोंमें! सचमुच कितने छोटे-छोटे विषयों पर उसने कहानियाँ लिखी है—लेकिन कितनी प्रभावशाली और स्मरणीय! उसकी 'प्रियतमा' कहानी की आलोचना करते हुए टॉल्सटायने लिखा था—"अद्वितीय चुहल और हास्यके बावजूद, मेरी आँखोंमें तो कमसे कम इस आश्चर्यजनक कहानी के कुछ हिस्सोंको पढ़कर बिना आँसू आये नहीं रहे।"

उसका स्वयं विचार था कि आप संसारकी हर चीजके साथ चालाकी और धोखा कर सकते हैं लेकिन कलाके सामने तो आपको मुक्त हृदयसे ही आना ही होगा। या "साहित्य एक ऐसी वैध पत्नी है जो आपसे पूरी ईमानदारी की माँग करती है!" अलैक्जैन्ड्रको उसने पत्र लिखा था—"लेखककी मौलिकता उसकी शैलीमें ही नहीं, उसकी आस्थाओं और उसके विश्वासोंके रूपमें भी अपने आपको अभिव्यक्त करती है।"

उसके जीवन कालमें स्कैविशेव्स्की और मरते ही शुस्तोव जैसे आलोचकोंने उसके विषय-पात्रोंके अत्यन्त ही साधारण और उपेक्षणीय होनेकी शिकायत की है। शुस्तोवने तो उसकी असहाय मृत्योन्मुख कातरताको ही उसकी रचनाओं—उसके सभी पात्रों—का मूल मानकर उसके साहित्यकी व्याख्या कर डाली है। अपने प्रसिद्ध लेखमें वह लिखता है "हालाँकि ऐसे भी आलोचक थे जो कहते थे कि वह कला कलाके लिये के सिद्धान्त का गुलाम था और उन्होंने उसकी तुलना एक उडते हुए निश्चिन्त पक्षीसे

कर डाली है, लेकिन सचाई तो यह है कि उसका अपना उद्देश्य ही अलग है। मै तो एक शब्दमें कहूँगा कि वह निराशावादका कवि था" आगे वह कहता है कि चेखवमें "हर जगह आपको वही निराशावाद, बीमारी; अनिवार्य मृत्यु ही मिलेगी, जैसे कहीं कोई आशा न हो, स्थितिमे रत्तीभर परिवर्तनकी गुञ्जायश न हो!" लेकिन चेखवकी इसी सचाईको ल्फालनिनने दूसरी तरह स्वीकार किया है कि तत्कालीन रूसी हृदयको समझनेके लिये, चेखवसे अधिक सही, सच्ची और जीवित तस्वीर हमें कहीं नहीं मिल सकती! यही वह रूसी हृदय था जो सन् १७ की महान् क्रान्तिके लिये तैयार हो रहा था। अगर चाहें तो कह सकते हैं कि रूसी हृदयकी वास्तविकताको चेखव ने पकडा और उसकी महत्त्वाकाङ्क्षाओं—परिवर्तनकी अदम्य इच्छाकी आवाज़को गोर्कीने ऊँचा उठाया। अपनी विवशताको चेखवने बड़ी ईमानदारीसे स्वीकार किया है—'अक्सर मेरी भर्त्सनाकी गई है कि—और उन भर्त्सना करनेवालोंमें टाल्सटाय भी हैं, कि मैंने बहुत छोटी-छोटी चीज़ों पर लिखा है, मेरे पास कर्मठ नायक नहीं हैं, अलैक्ज़ेन्द्र और मैकेदोन जैसे क्रान्तिकारी नहीं हैं, यहाँ तक कि लैस्कोवकी कहानियों जैसे ईमानदार पुलिस-इन्स्पेक्टर भी नहीं है, लेकिन आप बताइये, यह सब मैं कहाँसे लाता? घोर साधारण हमारा जीवन है, हमारे शहर ऊबड़-खाबड और गाँव गरीब हैं। लोग जीर्ण-शीर्ण हैं। जब हम लोग बच्चे होते हैं तो गिलहरियोंकी तरह घूरों पर आनन्दसे खेलते हैं—और जब चालीस पर पहुँचते हैं तब तक बुड्ढे हो चुके होते हैं—मृत्युके बारेमें सोचना शुरू कर देते हैं.. सोचिये तो सही, किस तरहके नायक हम लोग है?" (मोरोजोवके यहाँ तिखानोवसे वार्तालाप) शायद इन्हीं सब आक्षेपोंसे क्षुब्ध होकर उसने अपनी नोट बुकमें लिखा: "हमारे शहरोंकी ज़िन्दगीमें कोई निराशावाद नहीं है, कोई मार्क्सवाद नहीं है, किसी भी तरहकी कोई हलचल नहीं है; अगर कुछ है तो वह है अवरोध, बेवक़ूफी

और छिछलापन।" और इसीलिए उसने जिस यथार्थवादको अपनाया वह था कि "आदमी तभी अच्छा बन सकेगा जब आप उसे दिखादें कि वास्तवमें वह है क्या।" (नोट बुक, ५५) यों शुस्तोवकी तरह यह कह देना शायद उसके साथ बहुत बड़ा अत्याचार है कि "वस्तुतः चेखवका वास्तविक और एक मात्र हीरो हताश मनुष्य है। सिवा पत्थर पर सिर फोड़नेके, जीवनमें जिसके लिए कोई काम ही नहीं बचा है।"

यह ठीक है कि किसी भी प्रकारका 'लेबिल' लगाये जानेसे उसे घृणा थी—"कुछ विशेष बातोंसे ऊपर न उठ जानेकी सामर्थ्य ही मनुष्यके पूर्वाग्रहोंकी जड़ हैं. .कलाकारको तो तटस्थ दर्शक होना चाहिये, मैं न तो उदार-पंथी हूँ न पुराणपंथी...मुझे तो स्वतन्त्र कलाकार होना पसन्द है।" और उसने १८८६, अक्टूबरमें प्लैश्चयेवको लिखा कि "उन लोगोंसे मुझे शुरूसे डर रहा है जो उदारपंथी या रूढिपंथी—इन खेमोंमें मुझे बाँटकर देखना चाहते है। मै साधु, सन्त, उदार-रूढ़ कुछ भी नहीं हूँ। इसलिए इन लेबिलोंको दुराग्रह मानता हूँ। ये ट्रेडमार्क खतरनाक हैं।" उसकी इसी प्रकारकी उक्तियोंके आधारपर हिन्दीमे श्रीबनारसीदासजी चतुर्वेदी जैसे लेखक उसे उसके शेष जीवनसे काटकर, "शुद्ध कलाकार" सिद्ध करके पूजने लगते है; लेकिन इसके साथ ही मैं प्लेश्चयेवको लिखे गये इसी पत्रके अगले हिस्सेकी ओर भी उनका ध्यान आकृष्ट करूँगा— "मेरी पवित्रतम आराध्य है मानवता, (हवाई मानवता नहीं—ले०) मानवका शरीर—स्वास्थ्य, बुद्धि, प्रतिभा, प्रेम और मुक्ति—झूठ और द्वेषसे मुक्ति।" ग्रिगोरोविचको उसने लिखा "जो व्यक्ति किसीसे डरता नहीं है, किसीको प्रेम नहीं करता और किसी भी वस्तुकी आकांक्षा नहीं करता वह चाहे जो बन जाय, कलाकार नहीं बन सकता।" और लिडिया को लिखा गया वाक्य तो इन सब आरोपोंका एक साथ जवाब है। "मैं मानवताके लिए कुछ कर रहा हूँ यही एक भाव है जो मुझे जीवित रखे

हुए हैं वर्ना में कबका आत्महत्या कर चुका होता। 'मॉस्कोआर्ट थियेटर' की स्थापनाके समयका सस्मरण लिखते हुए स्टैनिस्लेवकीने कहा है "जीवनको सुन्दरतर बनानेके जो भी प्रयत्न होते थे उस सबसे उसे हार्दिक प्रसन्नता होती थी।"

हाँ, सिद्धान्तहीन कोरी नारेबाजीके चेखव खिलाफ था—उसने अपनी नोट बुकमें [८१] लिखा है—"अगर आप चिल्लाते है 'आगे बढ़ो!' तो निश्चित रूपसे आपको आगे बढनेका रास्ता बताना होगा। क्योंकि बिना दिशा बताये अगर आप अपने इन शब्दोंसे एक क्रान्तिकारी और सन्यासी दोनोंको साथ-साथ उत्तेजित कर देते हैं तो वे निश्चित रूपसे दो विरोधी दिशाओंकी ओर बढ़ते चले जायेंगे।" इसके अलावा डाक्टरी द्वारा अपने स्थानके आस-पासके गाँवोंकी जिस निष्ठासे वह सेवा करता था,—उसकी शाखालिन यात्रा या अन्य ऐसी ही बीसियों जीवनकी घटनाएँ हैं जो बताती हैं कि वह 'तटस्थ' और 'शुद्ध कलाकार' ही नहीं था। सक्रिय राजनैतिक सिद्धान्तोंको न अपना पाना उसकी सबसे बडी कमजोरी थी। इस दिशामें उसकी अपनी कहानी 'प्रियतमा' विचित्र तरह उसके जीवनसे मिलती है। ओलेङ्का बिना किसीके प्यारका आधार पाये रह नहीं सकती, और एकके बाद दूसरेके प्यारमें अपनेको डुबाती जाती है, इसी प्रकार चेखवके विचारोंकी यात्राके भी चार टिकाव हैं—लेविन, सुवोरिन टॉल्सटाय और फिर गोर्की। अपने अन्तिम दिनोंमें तो वह गोर्कीसे इस हद तक सहमत हो गया था कि "ईसाइयत और सामाजिक दोनों दृष्टिकोणोंसे 'फिलिस्तीनवाद' एक पाप है। नदीके बाँधकी तरह यह हमेशा जीवनमें गतिरोध पैदा कर देता है और गोर्कीके ये शराबी गँवार और आवारे ही इस गतिरोधके खिलाफ़ सबसे सही इलाज़ दिखाई देते है। हालाँकि इससे गतिरोध बिल्कुल तो नहीं टूटता फिर भी एक भयानक दरार उसमें ज़रूर पड़ जाती है।" (२ फरवरी १९०३ को

सुम्वातोवको पत्र) तथा इन्हीं दिनो अपनी कहानी 'दुलहन' (१६०३) में उसने लिखा—"हाँ, बहुत जल्दी ही वह नया स्वच्छ जीवन आनेको है, जब हर आदमी शीधे और निर्भय होकर अपने भाग्यकी आँखोंमे आँखे डालकर देख सकेगा,—सच्ची प्रसन्नताका अनुभव कर सकेगा।" और 'तीन-बहनें' नाटकका नायक कहता है—'-समय आ गया है, एक भयंकर दुर्जेय तूफ़ान उठनेवाला है। यह तूफ़ान हमारी ओर बढ़ता चला आ रहा है, बहुत पास आ गया है। शीघ्र ही हमारे समाजकी काहिली, मुर्दनी, मेहनतको घृणासे देखनेकी भावना और सडी-गली गन्दगीको यह उखाड फेंकेगा" और उसने डायरीमें लिखा "यह राज-सत्ता बड़ी जल्दी ही चूर-चूर हो जायेगी। चारो तरफ़ ग़रीबी और भुखमरी है। ग़रीब लोग फटे कपड़े पहने जोकरों-से लगते है।" इन वाक्योंके साथ ही हमें हमेशा यह भी याद रखना चाहिये कि चेखवने फैशन और शौकके लिए कभी कोई बात नहीं कही। उसका हमेशा आग्रह रहा (उसने अपने भाई अलैकजेन्द्रको लिखा) "उस दुख-तक़लीफ़का वर्णन मत करो, जिसे तुमने स्वयं अनुभव नहीं किया—न उस दृश्यका वर्णन करो जिसे तुमने देखा ही नहीं।"

जीवनका कोई सक्रिय सिद्धान्त उसके सामने नहीं था इसका स्वयं उसे कम दुख नहीं रहा। दो-एक बार उपन्यास लिखनेकी कोशिश करने पर भी जब वह सफल नहीं हुआ तो उसने ग्रिगोरोवियको बड़े दुखी स्वर में लिखा—"मैंने जीवनकी कोई राजनैतिक, दार्शनिक और धार्मिक रूप-रेखा अपने सामने नहीं रखी—और जो कुछ थी भी वह मैं हर महीने बदलता रहा, इसीलिये कि मुझे अपनेको सिर्फ़ इन्हीं वर्णनोंमें बाँधकर सन्तोप करना पडा कि कैसे मेरे पात्र प्यार करते है, बच्चे पैदा करते हैं, बातें करते हैं और मर जाते है।"

चेख़वकी महत्वाकांक्षा, अकुलाहट और विवशता सभीको गोर्कीकी इस कल्पनामें कितनी सुन्दर अभिव्यक्ति मिली है "मानो चेख़व, उदास और दुखी ईसाकी तरह मुरझाए, निर्जीव और हताश लोगोंकी भीडके सामनेसे गुज़र रहा हो और मन ही मन पीड़ासे कराह उठता हो—'भाई, सचमुच तुम बहुत बुरी दशामें हो'।"

इस संक्षिप्त परिचयके साथ मैं चेखवके तीन नाटकोंका अनुवाद प्रस्तुत कर रहा हूँ। भारतका सामान्य नागरिक आज बड़ी तेजीसे अपनी राष्ट्रीयताके प्रति सचेत होनेके साथ-साथ विश्व-धरातलपर उठ रहा है। राजनैतिक-मताग्रहोंमें, है विश्वकी बात करते समय हो सकता है हम 'लोहेकी दीवार' के दूसरी ओरकी दुनियाँको भूल जायँ; लेकिन विश्व-साहित्यकी (विशेष रूपसे कथा-साहित्यकी) बात बिना रूसी दिग्गज़ोंके, एक क़दम नहीं चल सकेगी। आज भी अगर विश्वके सारे कथा-साहित्य से छः मूर्धन्य नाम छाँटनेकी बात आये तो तीन केवल रूससे और दो फ्रांससे लेने होंगे।

इन नाटकोंके बारेमें मैं जान-बूझकर कुछ नहीं कह रहा—इब्सन, चेखव और शॉकी त्रिमूर्ति आजके नाटक अध्येताके लिए सुपरिचित हैं।

विषय-क्रम

हंसिनी

सी-गल

१—'सी-गल' का किसी भी प्रकार अनुवाद 'हंसिनी' नहीं किया जा सकता, यह मैं मानता हूँ। किन्तु हिन्दीमें 'सी-गल' के लिए कोई शब्द ही नहीं मिल सका। दूसरे, नाटकमें केवल एक ऐसे पक्षीकी आवश्यकता थी जो समुद्र या झीलके किनारोंपर रहता हो। वैसे भी 'सी-गल' में जो एक उन्मुक्त भावनात्मक स्पर्श है, साथ ही जिस कोमल प्रतीकके रूपमें उसका उपयोग किया गया है उसे काफ़ी दूर तक 'हंसिनी' में निभाया जा सका है—मुझे ऐसा लगा।

२—तत्कालीन रूसी समाजमें विदाई और स्वागतके अवसरपर आपसमें चूमनेका रिवाज है—किसी न किसी रूपमें पश्चिमके सभी देशोंमें है। उसे ज्यों का त्यों रहने दिया है।

पात्र

इरीना निकोलायेव्ना आर्कदीना— [श्रीमती त्रैपलेव]—एक अभिनेत्री

कान्स्तान्तिन आन्द्रियोविच त्रेपलेव—[आर्कदीनाका लड़का] एक नवयुवक।

प्योत्र निकोलायेविच सोरिन— [आर्कदीनाका भाई]

नीना मिखायलोवा जरेश्न्या— एक धनी जमीदारकी युवती बालिका।

इल्या अफनास्येविच शार्मयेव— एक पेंशनयाफ्ता लैफ्टीनेंट : सोरिनका कारिन्दा।

पोलिना अन्द्रेव्ना— कारिन्दाकी पत्नी।

माशा— [पोलिनाकी पुत्री]

बोरिस अलैक्सीविच त्रिगोरिन— लेखक।

यैव्गोनी सर्जाएविच् दोर्न— डाक्टर।

सिमियन सिमोनोविच मैद्वीद्वैंको— स्कूल मास्टर।

याकोव— मज़दूर।

रसोइया और महरी

घटनास्थल : सोरिनका घर और बाग़।

[तीसरे और चौथे अकके बीचमें दो वर्षका अन्तराल]

पहला अंक

[सोरिनकी ज़मींदारीमें बग़ीचेका एक हिस्सा। चौड़ी रविश दर्शकोंकी ओरसे पीछे दूर झील तक गई है। व्यक्तिगत रूपसे शौकिया नाटक दिखानेके लिए बनाये गये एक भोंड़े-से स्टेजने रविशका रास्ता रोककर झीलको छिपा लिया है। स्टेजके दाहिनी और बायीं ओर झाड़ियाँ हैं। सामने कुछ कुर्सियाँ और एक छोटी मेज़।

सूरज अभी छिपा है। याकोव और अन्य मज़दूर उस स्टेजपर पर्देके पीछे काम कर रहे हैं। धरती कूटने और खाँसनेकी आवाज़ें। माशा और मैद्वीद्वैंको घूमकर वापिस आते हैं। बायीं ओरसे प्रवेश]

मैद्वीद्वैंको—तुम यह हमेशा काले कपड़े क्यों पहने रहती हो?

माशा—क्योंकि मुझे तो ज़िन्दगी भर रोना है। मैं दुखी हूँ।

मैद्वीद्वैंको—मगर क्यों? [विचार-मुद्रामें] बात मेरी समझमें नहीं आती...स्वास्थ्य तुम्हारा अच्छा-खासा है। बाप तुम्हारा बहुत रईस न सही, फिर भी खाता-पीता है। तुम्हारी जिन्दगीसे तो मेरी जिन्दगी काफ़ी कठिन है। महीनेमें मुझे सिर्फ तेईस रूबल मिलते हैं, और उसमेंसे भी पेंशनके लिए कुछ न कुछ कट जाता है; मगर फिर भी, मैं तो ये काले-वाले कपड़े नहीं पहनता।

माशा—पैसा ही तो सब कुछ नहीं है। सुखी तो ग़रीब भी हो सकता है।

मैद्वीद्वैंको—हाँ, सैद्धान्तिक रूपसे। लेकिन व्यवहारमें उसका रूप यह है कि मेरी दो बहनें हैं, माँ और छोटा भाई भी है, मैं हूँ—और

तनख्वाह मेरी सिर्फ तेईस रूबल हैं। हमें खानेको चाहिए, पीनेको चाहिए,—चाहिए न ? फिर आदमीको चाय और चीनीकी भी जरूरत पड़ती है, तम्बाकू भी चाहिए ही। अब आप खींच-तान कीजिये और घसीटिये...

माशा—[उस स्टेजके चारों ओर देखकर] खेल शुरू ही होनेवाला है।

मैद्वीद्वेंको—हाँ, जरेश्न्या अभिनय करेगी। नाटक कान्स्तान्तिन गाव्रिलिचका लिखा है। उन दोनोंमें आपसमें भी बड़ा प्यार है और आज तो उन दोनोंकी आत्माएँ कलाको साकार करनेमें एकाकार हो जायंगी। लेकिन तुम्हारा और मेरा हृदय एक हो सके ऐसी कोई जगह नहीं है। मैं तुम्हें प्यार करता हूँ। इतना बेचैन रहता हूँ कि घरपर मुझसे रहा ही नहीं जाता। रोज चार मील इधरसे और चार मील उधरसे चलना पड़ता है; लेकिन तुम्हारी तरफसे उपेक्षाके सिवा कभी कुछ नहीं मिलता। ठीक है, मैं समझता हूँ। साधन मेरे पास कुछ है नहीं, बहुत बड़ा परिवार है ..ऐसे आदमीसे कौन भला शादी करना चाहेगा जिसके पास खाने तकका ठिकाना न हो ?

माशा—उँह, क्या बकवास है ! [चुटकी भरकर सुँघनी चढ़ाती है] तुम्हारा प्यार मेरे दिलको छूता है, लेकिन बस। मैं इसके बदलेमें प्यार-व्यार नहीं दे सकती...[सुँघनीकी डिब्बी उसकी तरफ़ बढ़ाकर] सुँघनी लो...

मैद्वीद्वेंको—नहीं, मन नहीं करता।

[चुप्पी]

माशा—कैसी उमस है। आज रातको ज़रूर आँधी-पानी आयेगा।... तुम या तो हमेशा सिद्धान्त बघारते रहते हो या बस फिर पैसेको रोते हो...तुम समझते हो कि गरीबीसे बढ़कर और दुर्भाग्य नहीं

है; लेकिन मेरे लिए चिथड़ोंमें घूमना...भीख माँगना हजारगुना बेहतर है...बजाय इसके कि...खैर, उस सबको तुम नहीं समझ सकते...

[दाहिनी ओरसे सोरिन और द्रेपलेव आते हैं ।]

सोरिन—[अपनी बेंतपर झुककर] बेटा, गाँवमें मुझे खुद अच्छा नहीं लगता। और सीधी बात है कि मैं इसका अभ्यस्त भी नहीं हो पाऊँगा। अब कल रातको ही लो। मैं दस बजे सोया और आज सुबह नौ बजे उठा तो ऐसा लग रहा था जैसे इतना ज्यादा सोनेसे मेरा भेजा खोपड़ीमें जम गया हो। [हँसता है] खानेके बाद ऐसा हुआ कि मैं गलतीसे फिर सो गया और अब ऐसी थकान है जैसे चूर-चूर हो गया हूँ। लगता है जैसे वाकई मैंने रातभर बुरे-बुरे सपने देखे हों...

द्रेपलेव—जी हाँ, आपको तो शहरमें ही रहना चाहिए। [माशा और मैद्वीद्वैंकोको देखते हुए] भाई, जब खेल शुरू होगा तो तुम लोगोंको बुलवा लेंगे—लेकिन इस समय यहाँ तुम्हारी जरूरत नहीं है। चाहो तो जा सकते हो।

सोरिन—[माशासे] मार्या इलिनिश्ना, जरा अपने बापूसे कुत्तेकी जञ्जीर खोलनेको कहती जाओगी?—भौंके जा रहा है। पिछली रातको बहन फिर नहीं सो सकी...

माशा—बापूसे आप खुद ही कह दीजियेगा। माफ़ करें, मैं तो नहीं कहूँगी। [मैद्वीद्वैंकोसे] आओ चलें।

मैद्वीद्वैंको—[द्रेपलेवसे] तो नाटक शुरू होनेसे पहले किसीको भेजकर हमें बुलवा लेंगे न?

[माशा और मैद्वीद्वैंको जाते हैं ।]

सोरिन—यानी कि कुत्ता फिर रात भर भौंकता रहे। अच्छा मजाक है।

देखो न मैं जैसे चाहता हूँ गाँवमें कभी रह ही नहीं पाता। पिछले दिनों महीने भरकी छुट्टी लेकर यहाँ आराम करने या और कामोंसे आया करता था, लेकिन ज़रा-ज़रा-सी बातोंको लेकर ये लोग मुझे इतना तंग कर मारते थे कि दो दिन बाद ही यहाँसे भाग जानेको तडपने लगता। [हँसता है] इस जगहसे पिण्ड छूटनेपर हमेशा खुशी हुई...लेकिन अब तो मैं रिटायर्ड लोगोंमें हूँ, और सच बात तो यह है कि जाऊँ भी तो कहाँ? चाहूँ या न चाहूँ मुझे तो यहीं मरना है...

याकोव—[**त्रेपलेवसे**] कान्स्तान्तिन गाव्रिलिच, हम लोग नहाने-धोने जा रहे हैं।

त्रेपलेव—अच्छा ठीक है। लेकिन दस मिनटसे ज्यादा मत लगाना। [**घड़ी देखकर**] जल्दी ही हम लोग शुरू कर देंगे।

याकोव—अच्छा सरकार।

त्रेपलेव—[**उस स्टेजके इधर-उधर देखकर**] यह है हमारा स्टेज। पर्दा, पहला विंग, फिर दूसरा, और इसके बाद खुली जगह। किसी तरहका कोई दृश्य नहीं—बस क्षितिज और झीलका खुला नज़ारा। जैसे ही चाँद निकला कि हम लोग ठीक साढ़े आठ बजे पर्दा उठा देंगे।

सोरिन—वाह, बहुत सुन्दर।

त्रेपलेव—अगर नीनाने देर कर दी तो सारा मजा किरकिरा हो जायेगा। अब तक उसे आ जाना चाहिए था। उसका बाप और सौतेली माँ उसपर बडी कडी नजर रखते हैं—इसलिए उसका घरसे निकलना जेलसे भाग आने जैसा ही मुश्किल है। [**मामाकी नेकटाई सीधी करता है**] आपकी दाढ़ी और बाल बहुत बेतरतीब हो गये हैं। या तो यह छँटने चाहिए या कुछ और...

सोरिन—[दाढ़ी सुलझाते हुए] यह मेरे जीवनकी सबसे बड़ी कमज़ोरी रही है। अपनी जवानीके दिनोंमें भी मैं ऐसा दिखाई देता था जैसे या तो छिप-छिपकर पीता या ऐसे ही और काम करता होऊँ। औरतोंने मुझे कभी पसन्द नहीं किया। [बैठते हुए] आज तुम्हारी माँका मिजाज कैसे बिगड़ा है ?

त्रेपलेव—कैसे क्या ? वह ऊब रही है। [उसकी बगलमें बैठकर] वह कुढ़ती है कि क्यों उनकी जगह नीना इस खेलमें अभिनय कर रही है। इसीलिए वह मेरे विरुद्ध हो गई है। इस खेलके खेले जानेके खिलाफ़ हैं, मेरे नाटकके खिलाफ़ है। मेरे नाटकको वे जानती तक नहीं है लेकिन उससे नफ़रत करती है...

सोरिन—[हँसता है] बहुत अच्छे!

त्रेपलेव—उन्हे इसी बातकी तकलीफ़ है कि इस छोटेसे स्टेजपर वे नहीं बल्कि नीना ही 'दिग्विजयी' होने जा रही है। [घड़ी देखते हुए] मेरी माँ एक मनोवैज्ञानिक कुण्ठा है। और इसमें तो शक ही नहीं है कि वे बहुत प्रतिभावान् है, विदुषी है—किसी भी किताबको पढ़कर रोने लगती है, निक्रासोव की लाइनकी लाइनें उन्हें ज़बानी याद है, देवीकी तरह बीमारोंकी सेवा करती है, लेकिन उनके सामने कभी 'ड्यूज'[1]की तारीफ़ कर देखिये!—ओफ़्फ़ोह!—गजब हो जायेगा। तारीफ़ अगर आपको किसीकी करनी है तो उनकी; अगर किसीके बारेमे लिखना है तो उनके; अन्धा-धुन्ध उनकी प्रशंसा किये जाइये—'कैमल्याके साथ एक महिला' या 'जीवनके फेन' में उनके अद्भुत अभिनयपर उल्लाससे उछल पड़िये। लेकिन यहाँ गाँवमें तो उनको उस तरहका नशा नहीं मिलता न, इसीलिए वह उकताती हैं और झुँझलाती है। हम सब तो

१ दुखान्त अभिनय करनेवाली विश्व-प्रसिद्ध इटैलियन अभिनेत्री।

उनके दुश्मन हैं—सारी बुराईकी जड़ तो हम ही हैं। अन्धविश्वासी वे इतनी हैं कि तीन मोमबत्ती जलाने या तेरहकी संख्या तकसे डरती हैं। रुपयेको दाँतसे पकड़ती हैं। मुझे अच्छी तरह पता है कि ओडेसाकी एक बैंकमें इनके नामसे सत्तर-हजार रूबल जमा हैं, लेकिन आप उनसे एक पैसा तो माँग देखिये, फूट-फूट कर रोने लगेंगी।

सोरिन—यह सिर्फ़ तुम्हारा खयाल है कि तुम्हारी माँ को तुम्हारा नाटक पसन्द नहीं है। बस इतनी-सी बातपर इतने बौखला रहे हो? मनको शान्त करो। बहुत ही प्यार करती हैं तुम्हारी माँ तुम्हें।

त्रेपलेव—[एक-एक करके एक फूलकी पत्तियोंको नोचते हुए] प्यार करती हैं.. जी नहीं, प्यार नहीं करती...प्यार करती है...नहीं प्यार करती ..करती हैं...नहीं करतीं.. [हँसता है] सुनिये, वे मुझे प्यार नहीं करतीं। या मुझे यह सब सोचना नहीं चाहिए। वे तो जिन्दा रहना चाहती हैं, प्यार करना चाहती हैं, सोफ़ियाने रंगके छपे ब्लाउज़, कपड़े पहनना चाहती हैं—और मैं पच्चीसका हो गया हूँ। यानी कि मैं हमेशा उन्हें याद दिलाता रहता हूँ कि वे अब नवयुवती नहीं रहीं। जब मैं यहाँ नहीं होता तो वे बत्तीसकी होती हैं, लेकिन मेरे आते ही तेंतालीस की हो जाती हैं! इसीलिए उन्हें मुझसे नफ़रत है। अच्छा, वह यह भी जानती हैं कि थियेटरमें मुझे कोई आस्था नहीं है। उन्हें रंगमंच पसन्द है—वे कल्पना करती हैं कि मानवताके लिए कुछ कर रही हैं—कलाकी पवित्र आराधनामें लगी हैं। जब कि मेरे खयालसे आजकलके ये रंगमंच, परम्पराओं और रूढ़ियोंकी लकीर पीटनेके सिवा कुछ है ही नहीं! जब पर्दा उठते ही, तीन दीवारों वाले कमरेकी नकली रोशनियोंमें—ये बड़े-बड़े 'प्रतिभाशाली', ये

'महान कलाके सेवक', आपको दिखाते हैं, कि कैसे लोग खाते हैं, शराब पीते हैं, चलते-फिरते हैं—कपड़े पहनते हैं, जब बिल्कुल निरर्थक, तुच्छ वाक्यों और दृश्योंसे ये लोग अर्थ और उपदेश निकालनेकी कोशिश करते हैं, ऐसे-ऐसे भोंड़े अर्थ कि हर चलता-फिरता आदमी जिन्हें जानता है; घरमें रोज प्रयोगमें आते हैं—और जब हजारों बार घुमाव-फिरावसे यही-यही चीजें पेश की जाती हैं तो उठकर भाग जानेको मन करता है। शायद इसी सब गन्दगीसे ऊब कर मोपासाँ 'एफ़िल टावर' छोड़कर भाग खड़ा हुआ था।

सोरिन—मगर रंगमचके बिना काम भी तो नहीं चलता न।

त्रेपलेव—अब हमें अभिव्यक्तिके नये तरीकोंकी जरूरत है—कोई नया ढंग। अगर वह नहीं मिलता तो अच्छा हो हम कुछ भी न करें। [घड़ी देखकर] मुझे अम्मासे बहुत-बहुत प्यार है; लेकिन वे अपने उसी छिछले ढंगसे रहना चाहती हैं। हमेशा इस साहित्यिकके साथ चिपकी रहती हैं—हमेशा उनका नाम अखबारोंमें उछाला जाता है—और यही सब मुझे चुभता है। कभी-कभी एक मानव-सुलभ आत्माभिमान मुझे कचोटने लगता है कि काश, मेरी माँ एक प्रसिद्ध अभिनेत्री न होकर साधारण औरत होती, तो मैं कितना खुश होता। मामा, मेरी स्थितिसे ज्यादा दुखी और निराशाजनक स्थिति किसकी होगी? अम्मासे मिलनेवाले आते हैं—बड़े-बड़े लोग, लेखक और कलाकार—उन सबके बीचमें बस, मैं ही ऐसा होता हूँ जो कुछ भी नहीं होता। मैं चूँकि उनका बेटा हूँ इसलिए मुझे भी 'सह' लिया जाता है। और मैं हूँ कौन? हूँ ही क्या? थर्ड-ईयरसे मैंने यूनिवर्सिटी छोड़ दी, बकौल सम्पादकोंके 'उस कारणसे जिसमें हमारा कोई वश नहीं था'। कोई प्रतिभा मुझमें नहीं; अपना एक पैसा नहीं। मेरे पासपोर्टपर लिखा

है कि मैं कीवका रहनेवाला मध्यमवर्गका आदमी हूँ। आप जानते हैं, मेरे पिताजी भी 'कीव' के रहनेवाले मध्यम वर्गके थे; लेकिन वे भी बहुत बड़े अभिनेता थे। सो जब भी अम्माकी बैठकमें ये कलाकार और लेखक लोग दयाभरी दृष्टिसे मुझे देखते हैं, तो मुझे हमेशा लगता है जैसे मेरी तुच्छता और हीनता नाप रहे हों। मैं उनके विचारोंको पढ़ता हूँ और अपमानकी आगसे जल उठता हूँ......

सोरिन—अच्छा छोड़ो। एक बात ज़रा बताओ। यह साहित्यिक कैसा आदमी है? उसका कुछ पता ही नहीं चलता। कभी कुछ बोलता ही नहीं।

त्रेपलेव—बड़ा विद्वान्, बहुत खुश-मिजाज और कुछ खोया-खोया-सा। आदमी बहुत ही अच्छा है। अभी मुश्किलसे चालीसका भी नहीं होगा; लेकिन खूब प्रसिद्ध हो चुका है। जीवनमें इसने काफ़ी देखा-सहा है। जहाँ तक लिखनेकी बात है...क्या कहना चाहिए...? उसके लिखनेमें कला है, आकर्षण है लेकिन...जोला और तोल्सतोय पढ़ चुकनेके बाद त्रिगोरिनको पढ़नेको मन नहीं करता...

सोरिन—अच्छा है। बेटा, मुझे लेखक लोग पसन्द हैं। कभी वक्त था जब मेरे मनमें सिर्फ़ दो ही प्रबल इच्छाएँ थीं: एक तो मैं शादी करना चाहता था, दूसरे लेखक होना चाहता था। लेकिन हो दोनोंमें से एक भी नहीं पाया। सचमुच छोटा-मोटा लेखक होना भी बहुत बड़ी बात है।

त्रेपलेव—[सुनते हुए]—किसीके पैरोंकी आवाज़ सुनाई दे रही है... [मामाको बाँहोंमें भरकर]—अम्माके बिना मैं रह ही नहीं सकता...उनकी पगध्वनि तक बड़ी प्यारी है...मैं बहुत-बहुत

खुश हूँ.. [नीना ज़रेश्न्याके प्रवेशके साथ ही उससे मिलने लपकता है ।].. मेरी मोहनी. .मेरी स्वप्न

नीना—[घबराकर] मुझे देर तो नहीं हो गई? निश्चय ही अभी देर नहीं हुई ।

त्रेपलेव—[उसके हाथ चूमकर]—ना —ना—ना---

नीना—दिन भर बड़ी बेचैनी रही । मैं तो ऐसी डर गई थी कि बस,...डर यही था कि पिताजी मुझे आनेसे न रोक दें लेकिन वे सौतेली माँके साथ अभी कहीं गये हैं । आसमानपर लाली छाई थी. .चाँद निकलने लगा था और मैं घोड़ा दौड़ाये चली आ रही थी [हँसती है] लेकिन अब सचमुच मैं खुश हूँ [जोशसे सोरिनसे हाथ मिलाती है ।]

सोरिन—[हँसते हुए] तुम्हारी आँखोंसे तो लगता है जैसे रोती रही हो । छिः छिः—यह तो अच्छी बात नहीं है ।

नीना—उँह, कुछ भी तो नहीं.. देखिए न, कैसी हाँफ रही हूँ । आध घण्टेमें ही मुझे लौटना है । जरा जल्दी कीजिए । ज्यादा देर मैं नहीं ठहर सकूँगी । भगवान्के लिए, मुझे देर मत कराइए । पिताजीको मालूम नहीं कि मैं यहाँ हूँ ।

त्रेपलेव—शुरू करनेका समय तो हो ही गया, हमें जाकर औरोंको बुला लाना चाहिए ।

सोरिन—मैं अभी इसी वक्त चला जा रहा हूँ [दाहिनी ओर गाता हुआ चला जाता है : "चले दो सिपहिया... ." फिर चारों ओर देखता है ।] एक बार जब मैं ऐसे ही गा रहा था तो एक सरपच बोला—"सरकार आपकी आवाज तो बड़ी अच्छी है ।" फिर कुछ देर सोचकर उसने यह और बढ़ा दिया था—"बस ज़रा सुरीली नहीं है । [चारों ओर देखता है ।]

नीना—पिताजी और उनकी वह महारानी साहिबा मुझे आने ही नहीं देते थे। कहते हैं यह जगह जरा 'महान्' लोगोंकी है ..वे डरते हैं मैं अभिनय न करने लगूँ...लेकिन मेरा मन तो हंसिनीकी तरह इस झीलमें डुबकियाँ लगानेको कर रहा है...मेरे दिलमें तो तुम समाये हो...[चारों ओर देखती है।]

त्रेपलेव—हमलोग अकेले ही हैं न?

नीना—लगता है, वहाँ कोई है।

त्रेपलेव—कोई भी तो नहीं है।

[एक दूसरेको चूमते हैं।]

नीना—यह कौन-सा पेड है?

त्रेपलेव—सालका पेड है।

नीना—चारों ओर इतना अँधेरा क्यों हो गया?

त्रेपलेव—साँझका वक्त है न। चारों ओर कालिमा छा रही है। सुनो मेरा कहना मानो—जल्दी मत जाना।

नीना—जाना तो है ही।

त्रेपलेव—अच्छा, नीना, अगर मैं भी तुम्हारे साथ चलूँ तो? तुम्हारी खिड़कीको देखते हुए रात भर बगीचेमें खडा रहूँगा।

नीना—तुम खडे रह ही नहीं सकते। चौकीदार देख लेगा। कुत्ता ट्रेसर भी तुम्हें नहीं पहचानता। वह भी भोंकेगा।

त्रेपलेव—मैं तुम्हे प्यार करता हूँ।

नीना—चुप..।

त्रेपलेव—[किसीके पैरोंकी आवाज़ सुनकर] कौन है? याकोव तुम हो क्या?

याकोव—[नेपथ्यसे] हाँ, सरकार।

त्रेपलेव—अच्छा, अपनी-अपनी जगह पहुँच जाओ। खेल शुरू करनेका समय हो गया है। देखना, चाँद निकल आया है क्या

याकोव—जी हाँ, सरकार।

त्रेपलेव' मैथिलेटेड स्प्रिट है न तुम्हारे पास ? गन्धक भी होगी न जब लाल-लाल आँखें दिखाई दे तभी गन्धककी गन्ध होनी चाहिए। [नीनासे] तुम जाओ। सब तैयार है। घबरा तो नहीं रही ?

नीना—हाँ, घबराहट तो बुरी तरह हो रही है। तुम्हारी माँ की तो कोई बात नहीं, उनसे मै नहीं डरती; लेकिन त्रिगोरिन...उनके सामने अभिनय करनेमें बडी झिझक और शर्म लगती है ..इतने बड़े लेखक है ? नौजवान है क्या ?

त्रेपलेव—हाँ।

नीना—कितनी ऊँचे दर्जेकी होती हैं उनकी कहानियाँ।

त्रेपलेव—[निर्जीव स्वरसे] मुझे नहीं मालूम। मैंने नहीं पढ़ीं।

नीना—तुम्हारे खेलमें अभिनय करना बडा मुश्किल है। उसमें कोई सजीव पात्र ही नहीं है।

त्रेपलेव—जीते-जागते सजीव पात्र ? जीवन जैसा है या उसे जैसा होना चाहिए, उसका वैसा ही चित्रण तो हमें नहीं कर देना है। बल्कि जो हम सपनोंमें देखते हैं—हमें वह दिखलाना है।

नीना—घटनाएँ भी तो नहीं है तुम्हारे खेलमें—भाषण ही भाषण है बस। फिर मेरा विचार है कि नाटकमें प्रेम भी होना ही चाहिए।

[दोनों स्टेजके पीछेकी ओर चले जाते हैं।]

[पोलिना अन्द्रेव्ना और दोर्न का प्रवेश।]

पोलिना—यहाँ ओस पड़ रही है। जाकर अपने पाँव-बन्द पहन आओ।

दोर्न—मुझे तो गर्मी लग रही है।

पोलिना—पाच, तुम अपनी ज़रा भी फ़िक्र नहीं करते। यह तुम्हारी जिद है। खुद डाक्टर हो और जानते हो कि यह सीली हवा तुम्हारे लिए अच्छी नहीं है। तुम्हें तो बस मुझे सताना। कल शामको जानबूझकर तुम बाहर बरामदेमें बैठे रहे थे।

दोर्न—[गुनगुनाता है] "मत कहो जवानी गई बीत ..."

पोलिना—तुम इरीना निकोलायेव्नासे बातोंमें ही ऐसे मस्त थे...कि ठण्डका ध्यान ही नहीं था......मान लो, तुम्हें उसकी सुन्दरता खींचती है।

दोर्न—देखो, मेरी उम्र पचपन सालकी है।

पोलिना—बकवास! पुरुषके लिए यह कोई ज्यादा उम्र थोड़े ही है। अपनी उम्रके हिसाबसे तो तुम काफ़ी जवान दिखाई देते हो, और औरतोंके लिए तो अब भी आकर्षक हो......

दोर्न—अच्छा हूँ तो फिर? तुम्हें क्या है?

पोलिना—तुम सबके सब पुरुष एक एक्ट्रैसके तलुए चाटनेमें लगे हो।

दोर्न—[गुनगुनाते हुए] "मैं खड़ा हूँ मुग्ध तेरे सामने फिर"—अगर बनिये-व्यापारियोंकी अपेक्षा कलाकारोंका समाजमें अधिक आदर है या उनके साथ दूसरी तरहका व्यवहार होता है तो वह उनके गुणके कारण ही तो। यही तो आदर्श है।

पोलिना—औरतें हमेशा तुम्हें प्यार करती रहीं, अपनेको तुमपर निछावर करती रहीं—यह भी आदर्श है?

दोर्न—[कन्धे उचकाकर] हाँ, यह बात तो है। मेरे प्रति औरतोंका व्यवहार ज्यादातर स्निग्धतापूर्ण ही रहा है। लेकिन मुझमें खास तौरसे वे जो चीज़ प्यार करती थीं वह है, एक कुशल डाक्टर। तुम्हें याद है, दस-पन्द्रह साल पहले पूरे ज़िलेमें मैं ही प्रसव

करानेमें सबसे कुशल डाक्टर था। मैं तो तब भी हमेशा ही ईमानदार रहा।

पोलिना—[उसका हाथ पकड़कर] प्रियतम!

दोर्न—चुप चुप...लोग आ रहे हैं।

[सोरिनकी बाँहमें बाँह डाले हुए आर्कदीना, त्रिगोरिन, शार्मयेव, मैद्वाद्वैंको और माशाका प्रवेश।]

शार्मयेव—सन् १८७३ में पोल्तावाके मेलेपर इन्होंने क्या कमालका अभिनय किया था। बस, मजा आ गया। उस दिन तो इनका अभिनय गजबका था। [आर्कदीनासे] अच्छा हाँ, वह मजाकिया ऐक्टर पावेल सिम्योनिच चादिन आजकल कहाँ है? उसने रासिप्लीयेवका पार्ट तो सादोव्स्कीसे भी कितना अच्छा किया था। सच कहता हूँ कि उसकी कोई नकल भी नहीं कर सकता। आजकल हैं कहाँ वह?

आर्कदीना—तुम मुझसे हमेशा गड़े मुर्दोंके बारेमें ही पूछते हो। मुझे क्या मालूम, कहाँ है? [बैठती है।]

शार्मयेव—[गहरी साँस लेकर] पाश्का चादिन। वैसे ऐक्टर अब हैं नहीं। इरीना निकोलायेव्ना, रंगमंच तो अब रसातलमें चला गया है। पुराने जमानेमें कैसे-कैसे बड़े बैलूतके पेड़ थे—अब तो ठूँठोंके सिवा कुछ भी दीखता नहीं।

दोर्न—यह बात तो सच है कि आजकल प्रतिभाशाली ऐक्टर कम हैं, फिर भी अभिनयका सामान्य-स्तर पहलेसे बहुत ऊँचा है—यह मानना पड़ेगा।

शार्मयेव—मैं आपकी बात नहीं मान सकता। ख़ैर, फिर भी यह तो अपनी-अपनी रुचिकी बात है। क्यों इसपर बेकार खींचतान की जाय।

[त्रेपलेव उस स्टेजके पीछेसे आता है।]

आर्कदीना—[बेटेसे] बेटा, कब शुरू हो रहा है?

त्रेपलेव—बस एक मिनट। ज़रा-सा धीरज रख लो।

आर्कदीना—['हैमलेट' में से बोलती है] "ओः हैमलेट, अब और मत बोल, तू मेरी निगाहोंको मेरी अपनी ही आत्मामें, उसे परखनेके लिए मोड़े दे रहा है, और उस आत्मामें मुझे ऐसे काले-काले दाग़ और धब्बे दिखाई दे रहे है जिनकी छाप शायद कभी नहीं मिटेगी।"

त्रेपलेव—[हैमलेटसे ही] "मुझे अपने दिलको ऐंठ लेने दो, ताकि मैं देखूँ कि क्या सचमुच ही वह किसी कोमल तत्त्वका बना है।"

[उस स्टेजके पीछेसे एक तुरही बजती है।]

त्रेपलेव—देवियो और सज्जनो, अब हम खेल शुरू कर रहे हैं। मेरी प्रार्थना है कि आप ध्यानसे देखें, [रुककर] अब मैं शुरू करता हूँ, [छड़ीसे ठोककर ज़ोरसे बोलना शुरू करता है।] हे रातके समय इस झीलपर मँडराने-वाली पुराने देवताओंकी छायाओ, हमें लोरियाँ सुनाओ कि हम सो जायें और आजसे दो लाख सालका समय पार करके सपनेमें जागें... ।

सोरिन—दो लाख साल बाद तो कुछ होगा ही नहीं।

त्रेपलेव—तो उस "कुछ नहीं" को ही इन लोगोंको दिखाने दीजिये।

आर्कदीना—अच्छी बात है, देखें। हम लोग सोये जाते हैं।

[पर्दा उठता है। झीलका दृश्य खुलता है। चाँद क्षितिजसे उठ चुका है। उसकी परछाईं पानीपर झिलमिला रही है। ऊपर

से नीचे तक सफ़ेद कपड़े पहने नीना ज़रेश्न्या एक बड़े-से पत्थरपर बैठी है।]

नीना—आदमी, शेर, चीलें और तीतर—बारहसिंघे, बतखें, मकड़े, पानी में चुप-चुप तैरनेवाली मछलियाँ, तारों-जैसी मछलियाँ, आँखोंसे न दिखाई देनेवाले छोटे-छोटे कीड़े-मकोड़े—सारे प्राणी, सारे जीव, सारे चेतन अपने दुःखोंका चक्र पूरा करके समाप्त हो चुके हैं, ...हज़ारों सालसे धरतीने किसी जीवित प्राणीको अपनी गोदमें जन्म नहीं दिया...और यह बेचारा चाँद अपने प्रकाश-दीपको जलाये रखनेका उद्देश्य भूल चुका है। घासके मैदानोंमें अब बगुले एक चीख मारकर चौंकते हुए जाग नहीं पड़ते...और नीबूके पेड़ोंपर भौंरोंकी भनभनाहट गूँजना बंद हो गई है। सब कुछ शान्त...जड़...शीत-स्तब्ध...! शून्य...सुनसान...सन्नाटा ! ...भीषण... भयानक...आतंकोत्पादक ! [रुककर] जीवित प्राणियोंके शरीर धूलमें मिलकर न जाने कबके खो चुके हैं और उस मूल-तत्त्वने सभीको चट्टानों, पानी और बादलोंके रूपमें बदल दिया है—सिर्फ़ उनकी आत्माएँ एक दूसरेमें घुलकर समा गई हैं—और मैं ही वह विश्वात्मा हूँ.. मैं...महान् सिकन्दरकी आत्मा मेरे भीतर है...सीजर, शैक्सपियर और नेपोलियनकी आत्माएँ भी मुझमें समाई हुई हैं...छोटी-से-छोटी जोंक तककी आत्मा भी मुझमें है...मेरे भीतर ही मानवके प्राण और अन्य जीवोंकी आत्माएँ घुल-मिलकर एकाकार हो गई हैं...मुझे सब...सब...सब कुछ याद है और हर छोटा-से-छोटा जीवन मेरे भीतर पुनर्जीवित हो उठा है...

[सन्नाटेकी आत्माका प्रवेश]

आर्कदीना—[धीरेसे] यह तो कुछ 'पतनोन्मुख लोगों' जैसी बातें हैं !
त्रेपलेव—[झिडकने प्रार्थनाके स्वरमें] अम्मा !
नीना—मैं बिलकुल अकेली हूँ । दो सौ सालमें एक बार बोलनेके लिए मेरे होंठ फड़कते हैं ! और मेरी आवाज़ शून्य अन्तरिक्षमें बिलखती-सी भटकती रहती है ! उसे सुननेवाला कोई नहीं है । ओ, मुर्दा छायाओ, तुम भी तो उसे नहीं सुन पातीं...दिनकी रोशनी फूटने से पहले पथराई दल-दल तुम्हें जन्म देती है और पौ फटने तक तुम इधरसे उधर भटकती रहती हो...भावहीन—इच्छा-रहित और जीवनके स्पन्दनोंसे दूर ! शाश्वत-भूतोंका स्वामी 'पाप' खुद डरता है कि कहीं तुममें फिरसे जीवन न जाग उठे । वह चट्टानोंके रूपमें, बहते पानीके रूपमें, अणुओंको तुम्हारे भीतर भी उँडेलता रहता है और तुम हमेशा—अनवरत रूपसे बदलती रहती हो...क्योंकि उस अखिल ब्रह्माण्डमें आत्माको छोड़कर कुछ भी स्थायी और नित्य नहीं है ।

...[रुककर] अन्धे कुएँमें पड़े क़ैदीकी तरह मुझे नहीं मालूम मैं कहाँ हूँ और आगे यहाँ क्या होनेवाला है ! मैं इसके सिवा और कुछ नहीं जानती कि मुझे 'पाप' से लड़ना है, और भौतिक-शक्तियोंके स्वामी 'पाप' के साथ होनेवाले इस क्रूर और निरन्तर संघर्षमें अन्तिम विजय मेरी ही होगी ! उसके बाद जड़ और चेतन मधुर-संगीतकी तरह एकात्म और एकलय हो जायेंगे... तब धरतीपर विश्वेच्छाका अवतरण होगा...लेकिन यह सब धीरे-धीरे होगा... लम्बे-लम्बे हज़ारों सालोंके बाद...जब चाँद... लुब्धक तारा...धरती सभी कुछ ज़र्रे-ज़र्रेमें बिखर जायेंगे...तब यह...महाभयानक...आतङ्क...[चुप्पी । दो लाल-लाल चमक-दार धब्बे झीलकी पृष्ठभूमिमें उभरते हैं] अब मेरा भयानक शत्रु

'पाप' आ रहा है...मुझे उसकी लाल-लाल चमकती भयङ्कर आँखें दीख रही हैं. .

आर्कदीना—गन्धककी बदबू-सी आ रही है। क्या उसकी भी ज़रूरत थी?

त्रेपलेव—जी हाँ!

आर्कदीना—[हँसकर] अच्छा तो यह रङ्ग-मञ्चका प्रभाव पैदा करने को है।

त्रेपलेव—अम्मा!

नीना—बिना मनुष्यके अस्तित्वके 'पाप' अपने-आपसे उकता चुका है।

पोलिना—[दोर्नसे] तुमने अपना टोप उतार लिया है। पहन लो न, ठण्ड लग जायेगी...

आर्कदीना—डाक्टर साहबने शाश्वत-भूतोंके स्वामी 'पाप' के स्वागतमें टोप उतार लिया है!

त्रेपलेव—[भड़ककर चीख़ते हुए] बस! बहुत हो चुका! खेल खत्म किया जाता है! पर्दा गिराओ!

आर्कदीना—इतना नाराज़ होनेकी क्या बात है?

त्रेपलेव—बस, बस, बहुत हो चुका! पर्दा गिरा दो। आने दो पर्देको नीचे [पैर पटककर] पर्दा। [पर्दा गिरता है] माफ़ कीजिये भाइयो, मैं इस बातको बिलकुल ही भूल गया था कि सिर्फ़ कुछ चुने हुए लोग ही नाटक लिख सकते हैं, और कुछ चुने हुए ही अभिनय कर सकते हैं! मैंने उनकी बपौतीको हथियानेकी कोशिश की. .मैं.. मैं ..

[कुछ और कहनेकी कोशिश करता है; लेकिन सिर्फ़ हाथोंको झटककर बाईं ओर चला जाता है।]

आर्कदीना—इसे हो क्या गया?

सोरिन—इरीना बहन, तुम्हें बच्चोंके भी आत्म-सम्मानका ध्यान रखना चाहिये।

आर्कदीना—मैंने उसे कहा क्या था?

सोरिन—तुमने उसकी भावनाओंको चोट पहुँचाई है।

आर्कदीना—उसने तो मुझसे पहले ही कहा था कि यह प्रहसन है, इसलिए मैंने उसके खेलको प्रहसन ही समझा।

सोरिन—फिर भी......

आर्कदीना—अच्छा तो अब पता लगा कि उसने एक महान्-कृतिको जन्म दिया है! यह सारा नाटक मनोरंजनके लिए नहीं रचा गया...हमारे चारों ओर यह गन्धककी बदबू परिहासके लिये नहीं; बल्कि हमें मंचका प्रभाव सिखानेके लिए फैलाई गई है! हमें वह लिखना और अभिनय करना सिखाना चाहता था। यह ज़्यादती है। तुम कुछ कहो दादा, लेकिन मुझे लेकर हमेशा यह खिल्ली उड़ाना, हमेशा यह तानाकशी—इससे किसीका भी धीरज टूट सकता है। यह लड़का बड़ा ही घमण्डी और सनकी है।

सोरिन—उसने तो तुम्हारा मन ही बहलाना चाहा था।

आर्कदीना—सचमुच? फिर उसने कोई साधारण-सा खेल क्यों नहीं चुना?—क्यों हमें 'पतनोन्मुख' लोगोंकी, पागलपनेकी बकवास सुनवाता रहा? ठीक है, मज़ाकके लिए मैं बकवास भी सुननेको तैयार हूँ, लेकिन नाम तो हम 'कलाका नया दृष्टि-कोण', 'नये कलारूप' जैसे देते हैं। मेरे खयालसे "नये कलारूपों" से तो इसका कोई सम्बन्ध है नहीं—उलटे विकृत मानसिक स्थिति की नुमायश है।

त्रिगोरिन—हर आदमी अपनी पसन्द और सामर्थ्यके अनुसार ही तो लिख पाता है।

आर्कदीना—अरे, उसका जो मन हो और जो वह लिख सके सो लिखे—
बस मुझे शान्तिसे रहने दे।

दोर्न—जुपीटर[1] साहब, तो नाराज हो गये।

आर्कदीना—जुपीटर नहीं, मैं औरत हूँ [**सिगरेट जलाती है**] नाराज मैं नहीं हूँ, फिर भी झुँझलानेकी तो बात ही है कि एक नौजवान इस बुरी तरह अपना वक्त बरबाद करे। मैं उसकी भावनाओंको चोट पहुँचाना नहीं चाहती थी...

मैद्वीद्वैंको—यह जान-बूझकर भी कि चेतना भौतिक अणुओंके मिश्रणसे ही बनी है, जड़को चेतनसे अलग कर डालनेका किसीको कोई अधिकार नहीं है। [**जोशमें त्रिगोरिनसे**] लेकिन देखिये, किसीको इस विषयपर नाटक लिखकर अभिनय करना चाहिये कि हम बेचारे अध्यापक कैसे जीते हैं। हमलोगोंकी जिन्दगी बड़ी कठोर है।

आर्कदीना—यह सब तो ठीक है। फिर भी क्यों न हम नाटकों और अणुओंके अलावा किसी और विषयपर बातें करें? कैसी सुहावनी सन्ध्या है! आपलोग सुनते हैं न, कोई गा रहा है [**सुनती है**] कैसा सुरीला है!

पोलिना—गीत झीलके उस पारसे आ रहा है।

[चुप्पी]

आर्कदीना—[त्रिगोरिनसे] यहाँ बैठो, मेरे पास। दस-पन्द्रह साल पहले इस झीलपर रोज़ ही रातको संगीत और गानेके स्वर लहराया करते थे! झीलके किनारोंपर छः झोपड़ियाँ हैं। मुझे याद है: यहाँ हर समय हँसी, कोलाहल, क़हकहे, किलकारियाँ और प्रेमके क़िस्से

---

१. रोमका सर्वश्रेष्ठ देवता : इन्द्र।

ही छाये रहते थे और उन दिनों उन छहों घरानोंके आराध्य कृष्ण-कन्हैया हमारे मित्र [दोनोंकी ओर इशारा करके] डा० यैवगैनी सर्जीएविच ही थे। मन-मोहन तो यह अब भी हैं, लेकिन उन दिनोंकी तो कुछ पूछिये ही मत। पर मेरी आत्मा मुझे अब कोंच रही है। बेचारे बच्चेकी भावनाओंको मैंने ठेस क्यों पहुँचाया...? मुझे बड़ी चिन्ता है [पुकारती है] कोस्त्या, बेटा कोस्त्या !

माशा—मैं जाकर देखती हूँ, कहाँ हैं।

आर्कदीना—ज़रा चली जाना बेटी।

माशा—[बायीं ओर जाते हुए] अरे ओऽकोन्स्तान्तिन गाव्रिलिच ! ओऽऽऽ [चली जाती है]

नीना—[उस स्टेजके पीछेसे आते हुए] अब खेल तो होगा ही नहीं। इसलिए में निकली आती हूँ। नमस्कार !

[आर्कदीना और पोलिनाके हाथ अभिवादनके लिए चूमती है।]

सोरिन—शाबास ! शाबास !

आर्कदीना—शाबास ! हमें तुम्हारा अभिनय बहुत ही पसन्द आया। ऐसा सौन्दर्य, ऐसा मधुर स्वर। तुम कहाँ गाँवमें पड़ी हो ? यह ग़लती है। प्रतिभा तो तुममें है ही। सुन रही हो ? तुम्हें रंगमंचको अपना लेना चाहिए...

नीना—हाय, यही तो मेरा भी एक-मात्र स्वप्न है ! [सोच्छ्वास] लेकिन यह कभी सच नहीं होगा।

आर्कदीना—कौन कह सकता है। अच्छा आओ, तुम्हारा परिचय करा दूँ। आप हैं बोरिस अलैक्सीविच त्रिगोरिन !

नीना—सचमुच, मुझे बड़ी खुशी हुई [एक दम विह्वल-सी होकर] मैं हमेशा आपकी चीज़ें पढ़ती...

आर्कदीना—[उसे अपने पास बैठाते हुए] बिटिया, शरमाओ मत। ये बहुत बड़े आदमी हैं, लेकिन बड़े ही सीधे सरल-हृदय। देखो न, यह तो खुद ही झेंप रहे हैं।

दोर्न—मेरा ख्याल है अब पर्देको हटा ही दिया जाय। बड़ी घुटन है।

शामंयेथे—[पुकारता है] याकोव, पर्दा उठा देना, भैया!

त्रिगोरिन—समझमें तो मेरी जरा भी नहीं आया, लेकिन अच्छा बहुत लगा! तुमने बहुत ही सधा अभिनय किया। दृश्यावली भी बहुत ही सुन्दर थी। [थोड़ी देर चुप रहकर] इस झीलमें तो मछलियाँ भी बहुत होंगी...

नीना—जी हाँ।

त्रिगोरिन—मुझे मछलियाँ पकड़नेका बड़ा शौक है। सन्ध्याको नदीके किनारे बैठकर धाराके बहावको ताकते रहनेसे अधिक आनन्द मुझे किसीमें नहीं आता।

नीना—लेकिन मैं सोचती हूँ जिसने एक बार रचना करनेका आनन्द जान लिया है उसके लिए तो कोई दूसरा आनन्द है ही नहीं. .

आर्कदीना—[हँसकर] यों मत कहो। जब लोग इनसे प्रशंसा भरी वाणीमें अच्छी-अच्छी बातें करते हैं तो यह बेचारे चित आ जाते हैं।

शामंयेव—मुझे याद है, मास्को आर्ट थियेटरमें एक बार प्रसिद्ध गायिका सिल्वाने पंचमका 'सा' उठाया। मज़ा देखिये, वहीं गैलरीमें हमारे चर्चकी संगीत-मण्डलीका पंचम-स्वर गानेवाला भी बैठा था। आप हमारे आश्चर्यका अन्दाजा लगाइये जब हमने अचानक गैलरीसे सुना—'शाबास सिल्वा' पूरेके पूरे सातों स्वरोंका सरगम एक ही बारमें. [गला भींचकर पञ्चम स्वरमें] 'शाबास सिल्वा' सारे दर्शक स्तब्ध रह गये...।

[कुछ देर चुप्पी]

दोर्न—सन्नाटेकी आत्मा हमारे ऊपर भी छा गई है ।

नीना—अब मेरे जानेका समय हो गया है । अच्छा नमस्कार !

आर्कदीना—अरे चल कहाँ दीं ? इतनी जल्दी कैसे ? भई, हम तो नहीं जाने देंगे···

नीना—पिताजी मेरी राह देख रहे होंगे...

आर्कदीना—सचमुच कैसे व्यक्ति हैं...[उसका चुम्बन लेकर] अच्छा, तब तो कोई चारा ही नहीं । मुझे बड़ा दुख है,...तुम्हें जाने देनेमें मुझे अच्छा नहीं लग रहा...

नीना—आप मानिये, जाते हुए मुझे भी बुरा लग रहा है ।

आर्कदीना—मुन्नी, किसीको तुम्हारे साथ घर तक पहुँचाने भेज दें...

नीना—अरे नहीं...नहीं...

सोरिन—[नीनासे ख़ुशामदके स्वरमें] रुक ही जाओ न ?

नीना—प्योत्र निकोलायेविच्, मैं रुक नहीं सकती ।

सोरिन—एक घण्टा और रुक जाओ । इसमें क्या बात है ?

नीना—[एक मिनट सोचकर आँखोंमें आँसू भरे हुए] मैं रुक नहीं सकती ।

[*हाथ मिलाती है और तेज़ीसे चली जाती है ।*]

आर्कदीना—सचमुच बडी अभागी लड़की है बिचारी । लोग कहते हैं, इसकी माँने सारी अपनी अथाह जायदाद इसके बापके नाम कर दी थी—एक-एक पाई । लडकीको एक फूटी कौड़ी नहीं मिली । अब बापने सब कुछ दूसरी बीबीके नाम कर दिया है । बदक़िस्मती...

दोर्न—हाँ, इसका बुद्धू-सा बाप बड़ा बदमाश आदमी है । उसको तो गाली देना ही सबसे बड़ा सत्कार है ।

सोरिन—[अपने ठिठुरे हुए हाथ मलते हुए] अब चला जाय। ठण्ड हो रही है। मेरे पैरोंमें दर्द होने लगा है।

आर्कदीना—बिल्कुल लकडी जैसे हो गये हैं। तुमसे चला थोड़े ही जायेगा। आओ, दादा, चलें।

[बाँह थामती है]

शामंयेव—[अपनी पत्नीकी ओर बाँह बढ़ाकर] श्रीमती जी...

सोरिन—मुझे लगता है कुत्ता फिर भोंक रहा है [शामंयेवसे] इल्या अफ़नासिच, ज़रा महरबानी करके उसकी जंजीर खोलनेको तो कह दो...

शामंयेव—यह तो नहीं हो सकता प्योत्र निकोलायेविच्, कहीं खलिहानमें चोर-वोर घुस जाँय तो? [अपने साथ चलते मैद्वीद्वेंको से] हाँ, तो उसने सरगमके सातों स्वर एक ही साथ सुना डाले 'शाबास सिल्वा!' खुद वह कोई अच्छा गायक नहीं था—बस चर्चकी संगीत-मण्डलीका एक मामूली-सा आदमी था...

मैद्वीद्वेंको—संगीत-मण्डलीके आदमीको कितना मिलता होगा महीने में?

[दोर्नके सिवा सब चले जाते हैं।]

दोर्न—[स्वगत] मैं नहीं जानता...शायद मैं समझ ही न पाया होऊँ या हो सकता मेरा दिमाग़ ही साथ न दे रहा हो, लेकिन नाटक मुझे तो पसन्द आया...उसमें था कुछ! जब वह लड़की सन्नाटे और एकान्तके बारेमें बोल रही थी और जब 'पाप' की आँखें दिखाई दे रही थीं तब मैं तो ऐसे भावावेशमें आ गया कि मेरे हाथ काँपने लगे थे...एकदम मौलिक...सीधा-सादा ढंग...मुझे लगता है वह आ रहा है...जितना मुझसे होगा उसकी तारीफ़ करूँगा...

त्रेपलेव—[प्रवेश करते हुए] सब लोग चले गये...

दोर्न—मैं हूँ!

त्रेपलेव—माशेंका मुझे सारे बागमें खोजती फिर रही है। बड़ी दुष्ट है।

दोर्न—कान्स्तान्तिन गाव्रिलिच, मुझे तो तुम्हारा खेल बहुत ही पसन्द आया। एकदम अद्‌भुत चीज़ थी। हालाँकि मैंने उसका अन्त नहीं सुना, लेकिन इतनेका ही मेरे ऊपर बहुत गहरा असर पड़ा है। तुम प्रतिभाशाली आदमी हो...लगे रहो।

[त्रेपलेव आवेशसे उसका हाथ दबाता है और अचानक बाँहोंमें भर लेता है।]

दोर्न—छिः कैसे पागल आदमी हो। रोने लगे। मेरा मतलब यह थोड़े ही था। तुमने अपना विषय निराकार भावोंकी दुनियासे लिया है, और होना भी यही चाहिए। किसी भी महान् कलाकृतिका कोई न कोई सन्देश होना चाहिए। कृतिकी श्रेष्ठताके लिए उसमें गम्भीरता होनी चाहिए। क्यों, ऐसे सुस्त क्यों हो रहे हो?

त्रेपलेव—तो आपकी यह सलाह है कि मैं लगा रहूँ?

दोर्न—हाँ...हाँ, मगर बस लिखो महत्त्व-पूर्ण और स्थायी चीजें ही। जानते हो, मुझे जीवनके तरह-तरहके अनुभव हैं और मैंने सभीका आनन्द लिया है। अब मनमें कोई साध नहीं है। फिर भी अगर कहीं उस आध्यात्मिक ऊँचाई तक पहुँच पाना मेरे भाग्यमें होता जिसे कलाकार रचना करते समय छू लेता है तो मेरा विश्वास है कि मैं ज़रूर ही इस शारीरिक अस्तित्व और उसके साथ लगे दुनिया भरके पुछल्लोंसे घृणा करने लगता—इन सारे सांसारिक झंझटोंसे जितना बन पड़ता पीछा छुड़ा लेता।

त्रेपलेव—माफ़ कीजिये बीचमें एक बात—इस वक्त नीना कहाँ होगी...?

दोर्न—एक बात और भी। हर कला-कृतिमें एक साफ़-सुथरा निश्चित विचार होना चाहिए। आपके लिखनेका उद्देश्य क्या है, यह आपको साफ़ पता हो। क्योंकि अगर आप बिना किसी निश्चित

लक्ष्यके इस रंग-बिरंगे रास्तेपर जिधर मन हुआ चलते चले गये तो भटक जायेंगे और आपकी प्रतिभा आपको ले डूबेगी।

त्रेपलेव—[अधीरतासे] नीना कहाँ है ?

दोर्न—वह तो चली गई घर।

त्रेपलेव—[हताश-सा] अब क्या करूँ...मैं तो उससे मिलना चाहता हूँ. .मुझे उससे मिलना ही है...मैं जरूर जाऊँगा।

[माशाका प्रवेश]

दोर्न—[त्रेपलेवसे] बेटा, ज़रा धीरज रखो।

त्रेपलेव—अब तो कुछ हो...मैं जा ही रहा हूँ...

माशा—भीतर चलो कान्स्तान्तिन गाब्रिलिच, अम्माने बुलाया है। वे बड़ी चिन्तित हैं...

त्रेपलेव—उनसे कह दो, मैं चला गया...और मैं तुमसे...तुमसे प्रार्थना करता हूँ मुझे तङ्ग मत करो...मुझे अकेला रहने दो, मेरे पीछे मत पड़ो...

दोर्न—चलो ..चलो आओ बेटा, तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए. .अच्छी बात नहीं है. .

त्रेपलेव—[गीले स्वरमें] नमस्कार डाक्टर साहब...शुक्रिया...।

[चला जाता है]

दोर्न—[गहरी साँस लेकर] नौजवान लोग हैं। अपने मनकी ही करेंगे।

माशा—लोगोंको जब कुछ और कहनेको नहीं मिलता तो कहते हैं "नौजवान लोग हैं, नौजवान लोग हैं !"

[चुटकी भरकर सुँघनी चढ़ाती है।]

दोर्न—[उसकी सुँघनीकी डिबिया झाड़ीमें फेंकते हुए] यह बदतमीज़ी है। [कुछ देर चुप रहकर] मुझे लगता है, भीतर वे लोग पयानो बजा रहे है। आओ भीतर ही चलें।

माशा—ज़रा रुकिये न।

दोर्न—क्या बात है ?

माशा—मैं बार-बार आपसे कह रही हूँ...मेरा आपसे बातें करनेको बड़ा मन कर रहा है...[आवेशमें आते हुए] बापूसे मुझे विशेष प्रेम नहीं है, लेकिन आपके लिए मनमें बड़ी श्रद्धा है। पता नहीं कैसे यह मेरे दिलमें जम गया है कि आप मेरे हृदयके बहुत ही निकट हैं...मुझे बचाइये, या तो बचा लीजिये; नहीं तो मै कुछ पागल-पना कर डालूँगी...मैं अपनी जिन्दगीके साथ कोई खिलवाड़ कर डालूँगी—अपना सत्यानाश कर लूँगी...अब मुझसे सहा नहीं जाता...

दोर्न—यह सब क्या है ? किससे तुम्हें बचा लूँ ?

माशा—मै बड़ी दुखी हूँ ! कोई भी...किसीको भी तो नहीं पता मै कितनी दुखी हूँ...[उसकी छातीपर अपना सिर रखकर धीरेसे] मै त्रेपलेवसे प्यार करती हूँ...

दोर्न—सब लोग कैसे पागल हो गये हैं...कैसे पागल...प्यारका कितना ढेर लग गया है...यह सारा जादू इस झीलका ही है [स्निग्ध स्वरमें] लेकिन बिटिया, मै क्या करूँ ? क्या ?...क्या ?

[पर्दा गिरता है।]

दूसरा अङ्क

[क्रॉकेट (लकड़ीकी गेंद और बल्लोंसे खेला जानेवाला खेल) खेलनेका लॉन। दायीं ओर पृष्ठभूमिमें एक बड़ेसे बरामदेवाले मकानका हिस्सा। बायीं ओर तेज़ धूपमें चिलकती झील दिखाई दे रही है। क्यारियाँ फूलोंसे भरी हैं। समय दोपहर। आर्कदीना, दोर्न और माशा लॉनके एक ओर पुरानेसे नीबूके पेड़की छायामें एक बेंचपर बैठे हैं। दोर्नके घुटनोंपर एक किताब खुली रखी है।]

आर्कदीना—[माशासे] चलो, अब उठें [दोनों उठती हैं] आओ, ज़रा मेरे पास तो आकर खड़ी होना इधर। तुम बाईस सालकी हो और मैं तुमसे करीब-करीब दुगुनी हूँ। यैव्गैनी सर्जीएविच्, देखना, हम दोनोंमें कौन छोटा दिखाई देता है?

दोर्न—साफ़ है, तुम्हीं तो छोटी लगती हो।

आर्कदीना—वही तो! अच्छा उसका कारण क्या है जानती हो? मैं मेहनत करती हूँ। मुझे हमेशा ऐसा लगता है जैसे कुछ करना है... तुम तो जब देखो तब बस एक ही जगह बैठी रहती हो। यह भी कोई ज़िन्दगी है तुम्हारी...मेरा उसूल है: कभी भी भविष्यकी चिन्ता मत करो। मैं कभी भी बुढ़ापे और मौतकी बातें नहीं सोचती। अरे, जो होना होगा; होगा।

माशा—और मुझे तो हमेशा ऐसा लगता है न जाने किस युगमें मेरा जन्म हुआ था और जैसे ज़िन्दगीकी अछोर शृङ्खलाको पीछे घिसटते कपड़ेकी तरह घसीटे लिये जा रही हूँ...लिये जा रही हूँ...कभी-

कभी तो यों जिये चले जानेसे मन बुरी तरह ऊब जाता है—ज़रा भी मन नहीं होता। [बैठ जाती है] ठीक है, यह सब बेकारकी बातें हैं, मुझे इन बातोंको दिमाग़से झटक फेंकना चाहिए।

दोर्न—[धीरे-धीरे गुनगुनाता है] "मेरी कलियो उससे कहना..."

आर्कदीना—मैं अंग्रेजोंकी तरह नियम-कायदेसे रहती हूँ। बेटी, मेरे साथ तो वह कहावत है, "अपना काम अपने हाथ"—मैं हमेशा कपडे इत्यादि ढगसे पहने रहती हूँ—हमेशा चोटी-कघीसे लैस। क्या सिर्फ़ ड्रैसिंग-गाउनमें या बाल खोले हुए कभी बगीचे तक जाती हूँ? कभी नहीं! मेरे इस तरह बने रहनेका रहस्य ही यह है कि मैं कभी भी गन्दी नहीं रहती—जैसी और औरतें रह लेती हैं उस तरह तो मैं रह ही नहीं सकती...[हाथ पीछे कमरपर रखे हुए इधर-से-उधर टहलती है।] देखो न मुझे, चिडिया जैसी फुर्ती भरी है मुझमें। अब भी पन्द्रह सालकी लडकीका पार्ट कर लेती हूँ।

दोर्न— अच्छा छोडो, अब मैं किताब पढ़ना शुरू करता हूँ [किताब उठाता है] हमने अन्नके व्यापारी और चूहोंपर पढ़ना छोड़ा था।

आर्कदीना—हा, चूहों पर ही थे। आगे पढ़ो [बैठ जाती है] अच्छा लाओ, किताब मुझे दो। मैं पढ़ती हूँ। अब मेरा नम्बर है [किताब लेकर देखते हुए] हाँ और चूहे...कहां है? अच्छा, यह रहा। [पढ़ती है] "कहनेकी आवश्यकता नहीं है कि समाजके लोगोंका, उपन्यासकारोंको पालना तथा उन्हें प्रोत्साहन देना ऐसा ही खतरनाक है जैसा ग़ल्लेके व्यापारीका अपने गोदामके भीतर चूहोंको पालना। फिर भी वे उन्हें प्यार करते हैं। ठीक इसी तरह जब एक औरत किसी ऐसे लेखकको चुन लेती है जिसे अपना ग़ुलाम बनाना

चाहती है तो उसकी तारीफ़ों, खुशामदों और उसके प्रति पक्षपातका जाल फेंक कर उसके चारों ओर एक घेरा डाल देती है"...खैर यह बात फ्रांसीसियोंके साथ हो तो हो, हमारे यहाँ यह सब नहीं है। तुम खुद नहीं देखते ? यहाँ तो लेखकको ग़ुलाम बनानेकी बात सोचनेसे पहले ही अक्सर औरत स्वयं उसके प्यारमें अन्धी हो चुकी होती है। दूर क्यों जाते हो...त्रिगोरिन और मुझे ही लो...

नीनाके साथ सोरिनका अपनी छड़ी पर सहारा देकर झुके हुए प्रवेश। उसके पीछे नहानेकी कुर्सी धकेलते हुए मैद्विद्वैंको।]

सोरिन—[**बड़े लाड़के स्वरमें, जैसे किसी बच्चेसे कह रहा हो**] अच्छा ! आज तो हमलोग बहुत ही खुश हैं, न ? [**बहनसे**] आज हमारे माँ-बाप त्वैर चले गये है। अब तो हमें पूरे तीन दिनकी छुट्टी है।

नीना—[**आर्कदीनाके पास बैठते हुए उसे बाँहोंमें भर कर**] आज तो मैं बहुत खुश हूँ। आज मैंने अपना सारा कार्यक्रम, आपके ऊपर ही छोड़ दिया है।

सोरिन—[**अपनी नहानेकी कुर्सीपर बैठता है**] आज यह अप्सरा जैसी सुन्दर लग रही है।

आर्कदीना—इसने कपड़े भी आज ढङ्गसे पहन रखे हैं। सच, बड़ी अच्छी लग रही है रानी बेटी [**नीनाका चुम्बन लेती है**] लेकिन अब हम ज्यादा तुम्हारी तारीफ़ नहीं करेंगे—कहीं नजर लग-लगा जाय। बोरिस अलेक्सीविच कहाँ है ?

नीना—वे तो घाटकी छतरीमें बैठे मछली पकड़ रहे हैं।

आर्कदीना—मुझे यही ताज्जुब है कि उसका मन नहीं उकताता। [**फिर पढ़ना शुरू करना चाहती है**]

नीना—यह कौन-सी किताब है ?

आर्कदीना—मोपासॉकी "सू ल्या" (Swl' eau) है बेटी। [मन-ही-मन कुछ पंक्तियाँ पढ़कर] छोडो, बाकीमें कोई खास बात नही है,—सही भी नहीं है। [किताब बन्द कर देती है] मेरा तो जी घबरा रहा है। बताओ न, मेरे बेटेको क्या हो गया है? ऐसा मुरझाया और झल्लाया-सा क्यों रहता है? वह झीलपर ही सारा दिन गुज़ार देता है। कभी मेरे सामने ही नहीं पड़ता।

माशा—उनका मन बडा उद्विग्न है [नीनासे डरते-डरते] ज़रा उनके नाटकसे ही कुछ सुनाओ न?

नीना—[कन्धे झटककर] पसन्द आयेगा तुम्हे? बडा नीरस नाटक है।

माशा—[आवेश दबाकर] जब खुद वे कोई चीज़ पढते हैं तो उनका चेहरा सूख जाता है, लेकिन आँखें चमकने लगती है। उनकी आवाज़में बडा दर्द है—भाव-भङ्गीमें कवियों जैसा प्रभाव है।

[सोरिनके ख़र्राटोंकी आवाज़]

दोर्न—भाई, यहाँ तो रात होगई।

आर्कदीना—पैत्रूशा!

सोरिन—ऑऽऽ?

आर्कदीना—सो रहे हो क्या?

सोरिन—नहीं तो...नहीं तो...

[चुप्पी]

आर्कदीना—दादा, तुम अपने स्वास्थ्यकी ज़रा भी चिन्ता नहीं करते। यह अच्छी बात नहीं है।

सोरिन—दवा तो मैं तब खाऊँ, जब डाक्टर मुझे कुछ दे।

दोर्न—साठ सालकी उम्रमें भी दवा!

सोरिन—क्या हुआ? साठ सालका होकर भी तो आदमी ज़िन्दा रहना चाहता है।

दोर्न—[परेशान होकर] अच्छा, अच्छा ठीक है। अर्क-धतूरेकी कुछ बूँदे ले लो।

आर्कदीना—मुझे लगता है किसी गन्धक-वन्धकके सोतेमें नहाना इन्हें फायदा करेगा।

दोर्न—हाँऽऽ, वहाँ भी जा सकते हैं, या शायद जाना न पसन्द करें...

आर्कदीना—यह आपने कैसे जाना ?

दोर्न—जाननेकी क्या बात ? यह तो साफ़ ही है।

[चुप्पी]

मैद्वीद्वैंको—प्योत्र निकोलायेविचको तम्बाकू पीना छोड़ देना चाहिए।

सोरिन—यह सब बकवास है।

दोर्न—नहीं, यह बकवास नहीं है। शराब और तम्बाकू आदमीका सारा रङ्ग-ढङ्ग बिगाड देती है। एक सिगार या एक गिलास वोद्का पीनेके बाद आप सिर्फ़ प्योत्र निकोलायेविच ही नहीं रह जाते। इसके साथ कुछ और भी हो जाते हैं। आपका "मैं" बिखर जाता है, और आप अपने आपको यों समझने लगते है, जैसे वह कोई दूसरा हो।

सोरिन—[हँसकर] बहस तो बडी अच्छी कर लेते हो। तुमने तो जिन्दगीके खूब मजे लिये हैं, मैंने अट्ठाईस साल कानूनके महकमेमें काम किया, फिर भी आजतक जीवन ही नहीं देखा। सच पूछो तो न तो मैं कुछ कर ही पाया, न देख ही सका। इसलिए मैं बहुत दिनों ज़िन्दा रहना चाहता हूँ यह बिल्कुल स्वाभाविक है। तुम्हारे पास काफ़ी है। चिन्ता तुम्हें कुछ है नहीं इसलिए तुम दार्शनिकता बघारते हो। मगर मैं तो ज़िन्दा रहना चाहता हूँ। इसलिए रातको खानेके वक्त शेरी लेता हूँ; सिगार वगैरा पीता हूँ।...सो जनाब बात यों है.........।

दोर्न— जीवनको हमेशा गम्भीरता पूर्वक लेना चाहिए। साठ सालका होनेपर भी दवाएँ खाते चले जाना, हर वक़्त यह रोना कि हाय, हमने जवानीमें जीवन नहीं देखा, बुरा न मानिए ये सब—बड़ी छिछली बातें हैं।

माशा—[उठते हुए] खानेका समय हो गया है। [पाँव घिसटाते हुए आलससे चलती है] मेरे तो पाँव सो गये [चली जाती है]।

दोर्न— जाकर खाना खानेसे पहले दो गिलास चढ़ायेगी।

सोरिन—बेचारीकी जिन्दगीमें अपना सुख ही क्या है ?

दोर्न— सब बकवास है, नवाब साहब !

सोरिन—तुम तो हमेशा ऐसे ढंगसे बातें करते हो जैसे जो जो तुमने चाहा सभी मिल गया हो।

आर्कदीना—उफ़, इन अघानेवाली गँवारू गप्पोंसे बढ़कर और क्या उबानेवाला होगा। ऐसी गर्मी, जिसमें किसीको कुछ करना नहीं—बस, हर एकको सिद्धान्त बघारने। भाई, तुम लोगोंके साथ रहने, तुम लोगोंकी बातें सुननेमें भी एक आनन्द है। लेकिन किसी होटलके कमरेमें बैठकर अपना पार्ट याद करनेका और इस सबका क्या-मुकाबला ?

नीना—[जोशसे] ठीक, बिल्कुल ठीक ! मै आपकी बात मानती हूँ।

सोरिन—ज़रूर शहर यहाँसे अच्छा होगा। वहाँ आप अपने अध्ययन-कक्षमें बैठे है, चपरासी बिना बताये किसीको घुसने नहीं दे रहा है, टेलीफ़ोन है.........सड़कोंपर गाड़ियाँ..........दुनिया भरकी भीड़, शोरगुल.........।

दोर्न—[गुनगुनाता है] मेरी कलियो, उससे कहना.......।

[शार्मयेव और उसके पीछे पोलिना आन्द्रेयव्नाका प्रवेश]

शार्मयेव—अरे, सब लोग तो यहाँ है। नमस्कार भाइयो। [पहले

आर्कदीनाका और फिर नीनाका हाथ चूमता है] आपको स्वस्थ देखकर बड़ी खुशी हुई। [आर्कदीनासे] मेरी पत्नी कहती थी कि आप उनके साथ आज बाहर गाँवोंमें ताँगेपर घूमने जाने को कह रही है। ऐसा है क्या ?

आर्कदीना—हाँ, सोच तो रहे हैं हमलोग।

शामंयेव—हुँः बहुत अच्छा तो है। लेकिन आप जायेंगी कैसे ? आज तो लोग गाडीमें अनाज ढो रहे हैं—सभी लगे है। मैं भी तो सुनूँ—कौन-से घोड़े ले जायेंगी ?

आर्कदीना—कौनसे घोड़े ? मुझे क्या मालूम कौनसे ?

सोरिन—मगर हमारे पास ताँगेवाले घोड़े भी तो हैं।

शामंयेव—[गुस्सेसे] ताँगेवाले घोड़े ! उनके लिए मैं साज कहाँसे लाऊँगा ? वाह, यह अच्छी रही। मेरी समझमें नहीं आता। [आर्कदीनासे] माफ़ कीजिये, मैं आपकी प्रतिभाका बड़ा कायल हूँ—अपनी जिन्दगीके दस साल आपकी सेवाके लिए निछावर कर सकता हूँ; लेकिन घोड़े बिल्कुल नहीं ले जाने दूँगा।

आर्कदीना—लेकिन मुझे जाना ही हो तो? क्या अजीब बात करते हो।

शामंयेव—आप जानती नहीं, खेती किसे कहते है ?

आर्कदीना—[भड़ककर] यह सब मैं बहुत सुन चुकी। अगर यही बात है तो मैं आज ही मॉस्को लौटी जा रही हूँ। मेरे लिये गाँवसे भाड़े पर घोड़े मँगा दो—नहीं तो स्टेशन तक भी पैदल ही चली जाऊँगी।

शामंयेव—तो फिर मेरा भी इस्तीफ़ा ले लीजिए। कोई दूसरा कारिन्दा तलाश कर लीजिए। [जाता है]

आर्कदीना—हर गर्मियोंकी छुट्टियोंमें यही होता है। हर बार गर्मियोंमें यहाँ मेरा अपमान होता है। अब मै यहाँ कभी कदम नहीं रखूँगी।

[बांयी ओर, जहाँ घाटकी छतरी है, चली जाती है। फिर एक मिनट बाद ही मकानमें प्रवेश करती दिखाई देती है। पीछे-पीछे बंसी, डोर और डोलची लिये हुए त्रिगोरिन जाता है।]

सोरिन—[भड़ककर] यह सरासर गुस्ताखी है! हद कर दी है! मेरी तो नाकमें दम आ गया है। अच्छा, अभी इसी वक्त सारे घोड़ोंको यहाँ लाओ।

नीना—[पोलिनासे] इरीना निकोलायेव्ना जैसी मशहूर ऐक्ट्रैसकी किसी भी इच्छा—या मान लो सनक ही सही—को इन्कार कर देनेका नतीज़ा आपकी सारी खेतीसे कहीं ज्यादा महत्त्वपूर्ण है? सचमुच, यह तो बड़ी बुरी बात है।

पोलिना—[बेबसीसे] इसमें मैं कर भी क्या सकती हूँ? तुम अपनेको मेरी जगह रखकर देखो। मैं क्या करूँ?

सोरिन—[नीनासे] चलो, आर्कदीनाके पास चलें। हम सभी उन्हें समझायेंगे कि न जाँय। ठीक है न? [जिधर शामँयेव गया है उधरकी ओर देखकर] दुष्ट! चाण्डाल!

नीना—[उसे उठनेसे रोकते हुए] बैठे रहिये, बैठे रहिये। हम आपको भीतर धकेल ले चलेंगे [वह और मैद्वीद्वैंको नहानेकी कुर्सीको धकेलते हैं] हाय, कैसी बुरी बात है!

सोरिन—हाँ, हाँ बुरी बात है, लेकिन वह यह आदत छोड़ेगा नहीं। मैं उसे साफ़-साफ़ जवाब दे दूँगा। [ये लोग चले जाते हैं। मंचपर दोर्न और पोलिना ही अकेले रह जाते हैं]

दोर्न—लोग भी कैसे कैसे मूर्ख होते हैं। तुम्हारे इस पतिको तो लात मारकर बाहर निकाल देना चाहिए। लेकिन तुम देख लेना, इस सबका अन्त यों होगा कि प्योत्र निकोलायेविच और उनकी बहन—

यह बुढ़िया ही जाकर उससे माफ़ी माँग लेंगे। चलो किस्सा खत्म हुआ।

पोलिना—इन्होंने ही तो भिजवाया था ताँगेके घोड़ोंको भी खेतपर काम कराने। रोज़ इसी तरहकी उलटी-सीधी बातें होती हैं। काश, आप जान पाते, यह बातें मुझे कितना दुखी कर डालती हैं। मेरा तो जी खराब कर देती है—देखिये न, अभी तक कैसे काँप रही हूँ......यह सब जंगलीपना मुझसे तो नहीं सहा जाता [खुशामदके स्वरमें] येव्गैनी, प्रियतम, मेरे नयनोंकी ज्योति, मुझे अपने साथ रख लो न......हमारी उम्र गुजरी जा रही है......अब तो हम नौजवान भी नहीं हैं......काश, जीवनके अन्तिम दिनोंमें तो इस लुका-छिपी और झूठसे पीछा छूटता...।

[चुप्पी]

दोर्न—मैं पचपन सालका हो चुका हूँ। अब मेरे लिए जीवनके रवैयेको बदलनेका वक्त नहीं रहा।

पोलिना—मुझे पता है। तुम मुझसे इसलिए कतराते हो कि तुम्हारी अपनी औरतें भी तो हैं न। उन सभीको तो तुम अपने साथ नहीं रखोगे। मैं सब समझती हूँ। बुरा मत मानना, तुम मुझसे ऊब चुके हो......

[मकानके पास ही नीना दिखाई देती है। वह फूल चुन रही है।]

दोर्न—नहीं-नहीं, ऐसी तो कोई बात नहीं है।

पोलिना—घुल-घुलकर मेरा बुरा हाल है। जानती हूँ तुम डाक्टर हो, औरतोंसे दूर-दूर कहाँ तक रह सकते हो।

दोर्न—[नीना से—जो उनके पास तक आ गई है] अब क्या हाल-चाल है?

नीना—इरीना निकोलायेव्ना रो रही हैं और प्योत्र निकोलायेविचाको साँसका दौरा पड़ गया है।

दोर्न—[उठते हुए] अच्छा! मैं चलकर उन दोनोंको अर्कधतूरे [वैलेरियन] की कुछ बूँदें दिये देता हूँ।

नीना—[उसे फूल देकर] ये आपकी भेंट हैं।

दोर्न—शुक्रिया! [मकानकी तरफ़ चलता है]

पोलिना—[उसके साथ जाते हुए] कैसे सुन्दर फूल हैं। [मकानके पास जाकर बड़ी भिंची आवाज़में] ये फूल मुझे दे दो। दो मुझे ये फूल। [फूल लेकर मसलकर फेंक देती है। दोनों घरमें चले जाते हैं]

नीना—[स्वगत] इतनी प्रसिद्ध अभिनेत्रीको रोते देखकर कैसा आश्चर्य होता है—और वह भी इतनी-सी बातके लिए। अच्छा, नहीं लगता यह सब अद्‌भुत? एक प्रसिद्ध लेखक—जनता जिसे पूजती है; अखबारोंमें जिसके बारेमें खबरें निकलती हैं; जिसकी तस्वीरें बिकती हैं; जिसकी रचनाओंका विदेशी भाषाओंमें अनुवाद होता है—वह सारे दिन बैठा मछलियाँ पकड़ा करता है। इसी बात पर खुश होता है कि उसने दो रोहू मछलियाँ पकड़ ली हैं। मैं सोचा करती थी कि बड़े आदमियोंमें बड़ा घमण्ड होता होगा; वे किसीसे मिलते-जुलते नहीं होंगे; भीड़-भाड़से घबराते होंगे। अपने यश और महिमाके सामने, वंश और धनको ही सब कुछ समझनेवाले लोगोंसे वे लोग अपनेको ऊपर रखकर उन्हें तुच्छ समझते होंगे......लेकिन ये तो साधारण लोगोंकी तरह रोते हैं, मछलियाँ मारते हैं, हँसते हैं, और झुँझलाते-चिड़चिड़ाते हैं।

त्रेपलेव—[नंगे सिर, हाथमें बन्दूक़ और एक मरी हुई हंसिनी लेकर प्रवेश करते हुए] क्या तुम यहाँ अकेली ही हो?

नीना—हाँ, हूँ तो।

[त्रेपलेव हंसिनीको उसके पैरोंके पास रख देता है।]

नीना—इसका क्या मतलब ?

त्रेपलेव—आज इस हंसिनीकी साँसें छीनकर मैंने कैसी नीचताका काम किया है! मैं इसे तुम्हारे चरणोंमें सौंप रहा हूँ।

नीना—यह तुम्हें हो क्या गया है ? [हँसिनीको उठा लेती है और उसे ध्यानसे देखती रहती है]

त्रेपलेव—[कुछ देर चुप रहकर] यों ही एक दिन मैं आपको भी मार लूँगा।

नीना—सच त्रेपलेव, तुम बहुत ही बदल गये हो। तुम्हारी बातें मेरी समझमें नहीं आती।

त्रेपलेव—हाँ, उसी दिनसे तो, जिस दिनसे मैं तुम्हें नहीं समझ पाया। मेरे लिए अब तुम वह नहीं रहीं—तुम्हारी निगाहोंमें अब प्यारकी गरमी नहीं रही। तुम्हें मेरा अपने रास्तेमें आना बुरा लगता है।

नीना—तुम तो इधर बहुत ही चिडचिडे हो गये हो.... .जब देखो तब पता नहीं, किन प्रतीकों और अलकारोंमें बोलते रहते हो कि मेरी समझमें तो कुछ भी नहीं आता। हो सकता है यह हंसिनी भी किसी बातका प्रतीक हो! लेकिन माफ़ करो, मैं इसे समझ नहीं सकी [हंसिनीको बेंच पर रख देती है] तुम्हें समझ पाना मेरे बसके बाहर है।

त्रेपलेव—इस न समझ पानेका प्रारम्भ तो उसी दिनसे हुआ है जिस दिन मेरे नाटकको भँडैती बताकर सत्यानाश किया गया। नारी कभी भी असफलताको नहीं भूल पाती। मैंने उसका एक-एक पन्ना जला डाला है। काश, कि तुम जान पाती मैं कितना व्यथित हूँ। तुम्हारा यह ठण्डा पड़ता प्यार मेरे लिए कितनी

बड़ी सज़ा है--कैसा भयानक, कितना अ-कल्पनीय। जैसे एक दिन अचानक नींदसे जागकर मैं देखूँ कि सारी झीलका पानी सूख गया है, धरतीने उसे निगल लिया है। तुमने अभी कहा कि मेरी बातें समझना तुम्हारे बसके बाहरकी बात है...हाँ, उनमें रखा ही क्या है समझनेको? मेरे नाटकको किसीने पसन्द नहीं किया। तुम तो मेरी मूल प्रेरणासे ही नफ़रत करती हो। अब तुम यह समझने लगी हो कि मैं हजारों-लाखों लोगोंकी तरह एक तुच्छ और मामूली आदमी हूँ...[**पैर पटककर**] तुम्हारी इन सारी बातोंका अर्थ मैं खूब अच्छी तरह समझने लगा हूँ नीना। मुझे लगता है जैसे किसीने मेरे दिमाग़में कीलें ठोंक दी हों...काश कि इस सबको, अपने इस अहंकारको कहीं कुँए-भाड़में फेंक पाता—यह मेरे जीवनको साँपकी तरह चूसे ले रहा है [**किताब पढ़ते हुए त्रिगोरिनको आते देखकर**] लो, असली प्रतिभा तो यह आ रही है। वाह, क्या हाथमें किताब लिये हैमलेटकी तरह चले आ रहे हैं [**विद्रूपसे**] शब्द! शब्द। शब्द। [**नीनासे**] अरे, अभी सूरज तुम्हारे पास तक आया भी नहीं और तुम्हारे होंठोंपर सूरजमुखीकी मुसकराहट छा गई—आँखोंमें किरणें घुलने लगीं। अच्छी बात है, मैं तुम्हारे रास्तेमें नहीं आऊँगा! [**तेज़ीसे चला जाता है**]।

त्रिगोरिन—[**किताबमें लिखता है**] सुँघनी चढ़ाती है, और वोद्का पीती है। हमेशा काले कपड़े पहनती है। स्कूल मास्टर उसे प्यार करता है...

नीना—नमस्कार, बोरिस अलक्सीविच।

त्रिगोरिन—नमस्कार। अचानक परिस्थिति एकदम ऐसी बदल गई कि लगता है आज शायद हम लोग चले जायें। फिर तो शायद

ही कभी मिल सके। बडा अफ़सोस है। सुन्दर-सुन्दर नवयुवती लडकियोंसे मिलनेके बहुत अधिक अवसर मुझे नहीं मिले। अठारह-उन्नीस सालकी उम्रमें कोई क्या सोचता है, यह मेरे दिमाग़से अब बिल्कुल ही उतर चुका है—इसलिए मै स्वयं उसीको चित्रित नहीं कर पाता। यही कारण है कि मेरे उपन्यासों और कहानियोंमें युवतियाँ बडी ही काल्पनिक और नक़ली-सी है। मेरे मनमें आता है कि काश, एक घण्टे भरके लिए ही अगर कहीं मै तुम्हारी जगह हो पाता, देख पाता तुम लोग क्या सोचती हो—किस तरहकी होती हो।

नीना—और मेरा मन होता है—काश, मै आपकी जगह होती।

त्रिगोरिन—किस लिए ?

नीना—देखती, प्रतिभाशाली, प्रसिद्ध लेखक होकर कैसा लगता है ? प्रसिद्ध होना कैसा होता है ? प्रसिद्ध होनेका क्या-क्या असर पडता है ?

त्रिगोरिन—कैसा क्या ? कोई खास नहीं। मैंने तो कभी इस बारेमें सोचा तक नहीं [एक क्षण सोचकर] उस स्थितिमें दो बातोंमेंसे एक ही बात होती है—या तो आप लोग यशको बहुत बढ़ा-बढ़ाकर देखते हैं या फिर उस ओरसे बिल्कुल ही आँखें मूँद लेते हैं...

नीना—लेकिन जब आप अपने बारेमें अखबारोंमें पढ़ते होंगे तब ? कैसा लगता होगा आपको ?

त्रिगोरिन—लोग जब मेरी तारीफ़ें करते है तो बडा अच्छा लगता है, और जब गालियाँ देते हैं तो दो-एक दिन तबियत बड़ी उखड़ी-उखडी रहती है।

नीना—कैसी अजीब दुनियाँ है ? काश कि आप जान पाते मुझे आपसे कितनी ईर्ष्या है। क्या-क्या होती हैं लोगोंकी क़िस्मतें भी ! कुछ हैं कि दूसरे हज़ारों लोगोंकी तरह अपनी नीरस अनजान ज़िन्दगीको घसीटते भर रहते हैं—दुखी रहते हैं, और दूसरी तरफ़ लाखोंमेंसे एक आप जैसे हैं कि जिनके दिलचस्प जीवनमें आनन्द है, महिमा है ! वास्तविक सुखी तो आप हैं।

त्रिगोरिन—मैं ? [कन्धे झटककर] हुँः, तुम तारीफ़ों और खुशियोंकी बात करती हो, चमक-दमक भरी दिलचस्प जिन्दगीकी बात करती हो। लेकिन माफ़ करना, मेरे लिए ये सारे सुन्दर-सुन्दर शब्द ऐसी मिठाइयाँ हैं जिन्हें खुद मैं कभी चखता तक नहीं। अभी तुम बहुत भोली हो—बड़ी सीधी-सरल हो।

नीना—आपका जीवन बड़ा शानदार है।

त्रिगोरिन—क्या खास शानदार है इसमें ? [घड़ी देखकर] अब मैं यहाँसे सीधा जाकर लिखूँगा। क्षमा करना, अब मैं रुक नहीं सकता। [हँसता है] जैसा लोग कहते हैं न, कि तुमने मेरे सोये तारोंको छेड़ दिया; और मैं हूँ कि भावावेशमें आया जा रहा हूँ—थोड़ी झुँझलाहट भी आ रही है। अच्छा खैर, आओ, बातें ही सही। हमलोग इस चमक-दमक भरी अपनी शानदार ज़िन्दगी के बारेमें ही बातें करें...क्यों ? कहाँसे शुरू किया जाय ? [एक क्षण सोचकर] विचारोंका ध्रुव क्या होता है जानती हो ? आदमी जब रात और दिन एक ही बात सोचता रहता है, जैसे चाँद ! मेरा भी अपना एक ऐसा ही चाँद है। लगातार बस एक ही पागल विचार मेरे दिमागमें हरवक्त चक्कर काटा करता है कि मुझे लिखना है। मुझे लिखना है...मैं एक उपन्यास पूरा करके चुकता नहीं हूँ कि न जाने क्यों नया शुरू कर देता हूँ...फिर

दूसरा, फिर तीसरा, तीसरेसे चौथा...बिना रुके अन्धा-धुन्ध बस लिखता ही चला जाता हूँ—इसके सिवा मैं कुछ और कर ही नहीं सकता। मैं तुम्हींसे पूछता हूँ, उसमें ऐसा क्या है जिसे शानदार नाम दिया जा सके? उफ़, कैसी बेकार जिन्दगी है यह भी! अब मैं तुम्हारे साथ हूँ, जोशमें हूँ; लेकिन हर क्षण मुझे ध्यान है कि वह अधूरा उपन्यास मेरी राह देख रहा है। देखो, वह सामने जो बड़े पयानो जैसी शक्लका बादल दिखाई देता है न, अब मैं उसे देखकर सोच रहा हूँ कि किसी कहानीमें लिखना है कि तैरता हुआ बादल ऐसा लगता था जैसे बड़ा भारी पयानो हो। कहीं सूरजमुखीके फूलकी गन्ध आ रही है, और मैं झपटकर नोट कर लेता हूँ—मुर्झाई-सी गन्ध, विधवाके कपड़ों जैसे रङ्गका फूल...कहीं गर्मीकी सन्ध्याके वर्णनमें ज़िक्र करना है...मैं अपने आपको और तुम्हें हर वाक्यपर, हर शब्दपर, हरवक़्त, तौलता हूँ और फौरन ही निष्कर्षको अपने साहित्यिक गोदाममें जमा कर लेता हूँ कि शायद कहीं काम आ जायँ। जैसे ही एक किताब पूरी की कि मैं थियेटरकी ओर या मछली मारने दौड़ पड़ता हूँ। लेकिन नहीं, फिर कोई नई सूझ तोपके भारी गोलेकी तरह मेरी खोपड़ीमें भन्नाने लगती है और मैं फिर मेज़पर आ जमता हूँ—जितनी फुर्तीसे बन पड़ता है लिखता जाता हूँ, लिखता जाता हूँ। हमेशा-हमेशा यही होता है। मुझे अपने आपसे ही छुट्टी नहीं है और लगता रहता है जैसे मैं खुद ही अपने जीवन को खाये जा रहा हूँ। शहदकी खातिर मैं अच्छे-अच्छे तरह-तरहके फूलोंका नाश किये जा रहा हूँ, मानो उन फूलोंको खुद ही तोड़-तोड़कर कुचल-मसल रहा हूँ। अच्छा, सच कहो मैं पागल-सा नहीं दिखाई देता? मेरे रिश्तेदार या मित्र मेरे

साथ क्या ठीक वैसा ही व्यवहार करते हैं जैसा समझदारोंके साथ किया जाता है ? "आप आजकल क्या लिख रहे हैं ?" "इसबार हमें क्या दे रहे हैं ?" हरबार-हरबार बस एक ही, एक ही, सवाल ! मुझे लगता है जैसे मेरे दोस्त खुद जानते है कि उनकी ये सारी तारीफ़ें, उसके ये सारे जोश-खरोश बिल्कुल झूठे हैं और वे मुझे निकम्मा समझकर सिर्फ धोखा दिये जा रहे हैं। हमेशा मुझे डर लगा रहता है कि वहीं वे मुझे पीछेसे अचानक आकर दबोच न लें और पागल-खानेमें लेजाकर न डाल दें। जवानीके सबसे अच्छे दिनोंमें जब मैंने नया-नया लिखना शुरू किया था, उन दिनों तो यह लिखनेका काम मेरे लिए विशुद्ध यातनासे कम नहीं था। हर छोटा लेखक, खास तौरसे वह छोटा लेखक जिसने अभी सफलताका मुँह न देखा हो अपने आपको बड़ा तुच्छ और बेचारा महसूस करता है। बड़ी जल्दी जोशमें आजाता है, बड़ी जल्दी घबरा जाता है। वह कला और साहित्यसे सम्बन्धित लोगोंके पीछे-पीछे लगे फिरनेके मोहको रोक नहीं पाता। उस समय न तो कोई उसकी तरफ़ ध्यान देता है न साहित्यमें उसका कोई स्थान होता है। वह शौक़में अन्धे, खाली-जेब जुआरीकी तरह हर किसीसे आँख मिलानेमें डरता है। जाने क्यों, अपने पाठककी मैंने कभी भी, एक अविश्वासी व्यक्ति और शत्रुके सिवा और किसी भी रूपमें कल्पना ही नहीं की। मैं जनता से हमेशा डरता रहा, उससे मुझे हमेशा ही घबराहट रही। जब भी कभी मेरा खेल पहली बार दिखाया जाता है तो मुझे हरक्षण लगता है जैसे सारे काले आदमी द्वेषसे जले जारहे हैं, और सारे गोरे लोग उसकी ओर बिल्कुल भी ध्यान नहीं देरहे—उदासीन हैं। उफ, वह सब कैसी तकलीफ़ थी, कितना तीखा दर्द था!

नीना—खैर, जो भी हो, रचनाकी प्रेरणा और निर्माणकी प्रक्रिया तो जरूर ही आपको एक अछूते उल्लासके क्षण प्रदान करती होगी।

त्रिगोरिन—हाँ, जब लिखता हूँ तब तो उसका आनन्द लेता ही हूँ। अपने प्रूफ़ पढ़नेमें भी बड़ा अच्छा लगता है......लेकिन जैसे ही किताब छपी कि मुझसे फिर उसे देखा नहीं जाता। मुझे लगने लगता है कि उसे लिखना व्यर्थ था, अनुचित था—उसे तो लिखा ही नहीं जाना चाहिये था. ...और इसी बातको लेकर मैं परेशान हो जाता हूँ, झुँझलाता हूँ......[हँसता है] और जब जनता पढ़ती है तो कहती है—"वाह, बहुत सुन्दर! चीज तो कमालकी है। लेकिन फिर भी, टालस्टायसे काफ़ी नीचे दर्जेकी है।" या "चीज़ तो बड़े गज़ब की है लेकिन तुर्गनेव की 'बाप-बेटे' इससे कहीं ऊँची चीज है।"—मेरी मौत तक बस यही होता रहेगा—सुन्दर और कमालकी चीज, सुन्दर और कमाल की चीज़! जब मर जाऊँगा तो मेरी कब्रके पाससे गुज़रनेवाले मेरे दोस्त कहेंगे "यह त्रिगोरिनकी क़ब्र है। बड़ा अच्छा लेखक था लेकिन तुर्गनेव जैसा नहीं।"

नीना—माफ़ करें, मैं आपकी बात माननेको तैयार नहीं हूँ। आपकी सफलताने आपको बिगाड़ दिया है।

त्रिगोरिन—सफलता क्या खाक़? मुझे कभी अपना लिखा पसन्द ही नहीं आया। पता नहीं क्यों, जो कुछ भी मैं लिखता हूँ मुझे अच्छा ही नहीं लगता। सबसे मजेकी बात यह है कि मैं मानो होशमें ही नहीं रहता। अक्सर मेरी समझमें नहीं आता कि मैं क्या लिख रहा हूँ। मुझे यह झीलका पानी, ये पेड़, आसमान इन सबसे बड़ा प्यार है। मुझे प्रकृतिसे भी बड़ा मोह है—यह मुझमें एक आवेग, एक दुर्दमनीय इच्छा जगा देती है। मगर मैं सिर्फ़

दृश्योंका चितेरा ही तो नहीं हूँ, मैं एक नागरिक भी हूँ। मुझे अपनी जन्म-भूमिसे प्यार है। यहाँके लोग-बाग अच्छे लगते हैं। और तब मुझे लगता है कि मैं एक लेखक हूँ, मेरा यह परम-कर्तव्य है कि लोगोंके बारेमें लिखूँ, उनके कष्ट-मुसीबतोंके बारेमें लिखूँ, उनके भविष्यके बारेमें लिखूँ, साइंसके बारेमें और मानव अधिकारोंके बारेमें बोलूँ। और तब हर चीज़के बारेमें लिखनेकी इच्छा होती है। मैं अन्धाधुन्ध, दम तोड़कर लिखता हूँ, लेकिन लोग हैं कि मुझे चारों तरफ़से कोंचते हैं—मुझसे नाराज रहते हैं। शिकारी कुत्तोंसे खदेड़ी जाती लोमड़ीकी तरह मैं इधरसे उधर और उधरसे इधर दौड़ता हूँ। मेरी आँखोंके सामने ही जीवन और संस्कृति लगातार आगे-आगे बढ़ते चले जारहे हैं और मुझे लगता है रेल छूट जानेके बाद पहुँचनेवाले किसानकी तरह मैं पीछे और पीछे ही छूटता चला जा रहा हूँ। नतीजा इसका यह होता है कि अन्तमें मैं देखता हूँ कि मैंने सिर्फ़ ऐसे दृश्योंका ही चित्रण किया है जो सबके सब शुरूसे आखिर तक सरासर झूठे थे।

नीना—असलमें आपने बहुत मेहनत की है, इसलिए अपने महत्त्वको पहचाननेका न तो आपको समय मिला और न इच्छा ही हुई। आप खुद अपने आपसे चाहे जितने असन्तुष्ट हों, लेकिन दूसरोंके लिए महान् और पूज्य हैं ही। अगर मैं आपकी तरह लेखिका होती तो साधारण लोगोंके लिए अपना जीवन उत्सर्ग कर देती। बस, मुझे हर वक्त इसका ज़रूर ध्यान रखना होता कि उन्हें अपने धरातल तक ऊँचा उठानेकी कोशिशसे बढ़कर दूसरी कोई खुशी नहीं है। तब वे मेरी प्रगतिके रथके लिए अपनेको घोड़ोंकी तरह सजा लेते।

त्रिगोरिन—क्या कहना है, अपना रथ ! मै क्या कोई *'ऐगामैनन्' हूँ ?

[दोनों मुसकराते हैं।]

नीना—एक लेखक या कलाकारको जो आनन्द प्राप्त है, उसे पानेके लिए मै ग़रीबी, निराशा अपने चारों ओरकी घृणा सभी कुछ बरदाश्त करनेको तैयार हूँ। मैं उसके लिए मचानपर रह लूँगी और केवल राई (सस्ता रूसी अन्न) की बनी रोटियों पर गुजरकर लूँगी। आपकी तरह अपनी कमियों और कमजोरियोंको पहचानकर अपने आपसे कभी भी सन्तुष्ट न हो पानेके अपार कष्टको भी सहनेको मैं तैयार हूँ—लेकिन बदलेमें मैं सिर्फ़ एक चीज़ चाहती हूँ—वह है यश ! दिग्दिगन्तरोंमें गूँजता-मँडराता यश !...... [दोनों हाथोंसे अपना चेहरा ढाँप लेती है] हाय मेरा सिर भन्ना रहा है।

[मकानके भीतरसे आर्कदीनाकी आवाज़]

आर्कदीना—बोरिस अलेक्सीविच् ।

त्रिगोरिन—वे लोग मुझे ही बुला रहे हैं। मेरा ख्याल है, सारी तैयारियाँ पूरी हो चुकीं। लेकिन मेरा तो यहाँसे जानेको मन ही नहीं कर रहा [झीलको चारों ओर देखता है] देखो न, कैसी रमणीक झील है। शानदार !

नीना—आप देख रहे हैं न, झीलके उस किनारेका मकान और बगीचा ?

त्रिगोरिन—हाँ, हाँ।

---

*हेलेनके भगा लिये जानेपर उसके पति मोनिलसके भाई ऐगामैनन् ने ट्रॉयके विरुद्ध फौजें लेकर हमला किया था।

नीना—वही मेरी माँ का मकान है। वहीं मैं पैदा हुई थी। इसी झीलके आस-पास मैंने अपनी सारी ज़िन्दगी बिताई है। इसके छोटे-से छोटे द्वीपसे मेरा परिचय है।

त्रिगोरिन—बड़ी रमणीक जगह है यह तो सचमुच [हंसिनीको देखकर] अरे, यह क्या है ?

नीना—हंसिनी। कान्स्तान्तिन गात्रिलिचने शिकार किया है।

त्रिगोरिन—कैसा सुन्दर पक्षी है। सचमुच, मेरा जानेको जरा भी मन नहीं करता। इरीना निकोलायेव्नाको रोकनेकी कोशिश कर देखो न !

[अपनी किताबमें लिखने लगता है]

नीना—यह क्या लिखने लगे आप ?

त्रिगोरिन—कुछ नहीं, यों ही ज़रा दो-एक लाइनें लिख रहा था। अचानक एक बात सूझ गई [किताब एक ओर रख देता है] कहानीका एक विषय था। तुम्हारी जैसी एक युवती बालिकाने अपना सारा जीवन झीलके किनारोंपर ही रहकर बिताया है...वह झीलको हंसिनीकी तरह प्यार करती है, हंसिनीकी तरह ही वह उसके आस-पास प्रसन्न और स्वच्छन्द घूमी है; लेकिन अचानक वहाँ एक आदमी आजाता है, उसे देखता है और ज़ब उसकी समझमें कुछ और करनेको नहीं आता तो इस हंसिनीकी तरह ही उसकी हत्या कर डालता है।

[चुप्पी]

[खिड़कीसे आर्कदीना दिखाई देतीहै]

आर्कदीना—बोरिस अलैक्सीविच्, तुम कहाँ हो ?

त्रिगोरिन—आता हूँ [जाते हुए नीनाको पीछे घूमकर देखता है। खिड़कीसे झाँकती आर्कदीना से] क्या बात है ?

आर्कदीना—हमलोग आपके लिए रुके हैं।

[त्रिगोरिन उस मकानमें चला जाता है]

नीना—[कुछ देर विचारोंमें खोयी-सी खड़ी रहती है, फिर फुट-लाइटों तक बढ जाती है] कैसा मोहक सपना है!

[पर्दा गिरता है]

तीसरा अंक

[सोरिनके मकानका डाइनिंग-रूम । दाहिनी और बायीं ओर दरवाज़े । दवाओंकी एक आलमारी । कमरेके बीचों-बीच एक मेज़ । एक बक्स और टोपोंके डिब्बोंसे चलनेकी तैयारीका पता चलता है । त्रिगोरिन दोपहरका खाना खा रहा है । माशा मेज़के पास खड़ी है ।]

माशा—आप लेखक हैं न, इसीलिए मैं आपको यह सब बता रही हूँ। हो सकता है कहीं आपके काम ही आजाय। आपसे सच कहती हूँ, अगर उन्होंने अपने आपको थोड़ा-सा भी और बुरी तरह घायल कर लिया होता तो मैं एक क्षण भी ज़िन्दा न रह पाती। फिर भी साहस मुझमें काफ़ी है। मैंने तो तयकर लिया है कि अब मैं उनके इस प्यारको दिलसे निकाल फेंकूँगी। जड़से उखाड़ डालूँगी।

त्रिगोरिन—कैसे ?

माशा—मैं शादीकर लूँगी—मैद्वीदेंकोसे।

त्रिगोरिन—उस स्कूलमास्टरसे ?

माशा—जी हाँ।

त्रिगोरिन—मुझे तो इसमें कुछ तुक नहीं लगती।

माशा—बिना किसी आशाके प्यार किए जानेमें ही या क्या तुक है ? कुछ होगा—इसी उम्मीदपर सालपर साल बिताये जानेमें क्या तुक है ? जब शादी हो जायेगी तो इस प्रेम-प्यारके लिए फ़ुर्सत ही नहीं मिलेगी। नई चिन्ताएँ सारी पुरानी भावनाओंके गले मरोड़

देगी......खैर जो भी हो—आप देखिये, इससे कुछ परिवर्तन तो आयेगा ही। एक गिलास और लेंगे?

त्रिगोरिन—ज्यादा तो नहीं हो जायेगा?

माशा—अरे, सब ठीक है [दो गिलास भर देती है] इस तरह मेरी ओर मत देखिये। औरतें अक्सर कितनी पीनेवाली होती हैं आप सोच भी नहीं सकते। कुछ थोड़ी-सी ही है जो मेरी तरह खुल्लम-खुल्ला पीती है, वर्ना ज्यादा तो चुप-चुप ही चढ़ाती हैं। जी हाँ, और वह भी वोद्का या ब्राण्डी [गिलासोंको एक दूसरेसे छुलाकर] मेरी शुभकामनायें लें। आप बड़े अच्छे दिलके आदमी हैं। आपसे बिछुड़नेका मुझे बड़ा दुख है।

[दोनों पीते हैं]

त्रिगोरिन—मेरा मन खुद जानेको नहीं कर रहा।

माशा—उन्हें रुकनेको समझाइये न?

त्रिगोरिन—नहीं, वे अब नहीं रुकेंगी। उनके प्रति उनके बेटेका व्यवहार अच्छा नहीं है। एक तो उसने खुद अपने गोली मारली; दूसरे सुनते हैं वह मुझे भी द्वन्द्वके लिए ललकारनेवाला है। और इसका कारण भी तो हो कुछ? वह बौखलाता है, बर्राता है और कलाके नये रूपोंकी वकालत करता है......भाई, नये-पुराने सभीके लिए जगह है .....इसमें झगड़नेकी क्या बात है?

माशा—हो सकता है इसमें ईर्ष्या भी हो......लेकिन मैं ठीक-ठीक नहीं कह सकती... ..

[चुप्पी। याकोव एक बक्स लेकर दाहिनी ओरसे बायीं ओरको जाता है। नीनाका प्रवेश। वह खिड़कीके पास खड़ी हो जाती है।]

माशा—माना स्कूल मास्टर-साहब बहुत विद्वान नहीं हैं; लेकिन आदमी बेचारे बड़े भले है। बहुत ही प्यार करते है। मुझे उनकी माँ-पर बड़ी दया आती है। खैर, आपके लिए मेरी शुभ-कामनायें है। मेरे बारेमें मनमें कोई बुरा खयाल मत रखिये। [बड़े आवेगसे हाथ मिलाती है] आपकी इस आत्मीयताके लिए मैं बहुत ही कृतज्ञ हूँ। अपनी किताबें मुझे जरूर भेजिये, और देखिये, उनपर अपने हाथसे जरूर लिखिये। हाँ, यह मत लिख दीजिये कहीं, कि 'अपनी आदरणीया मित्रको' उसपर लिखिये सिर्फ—'मार्याको, जो किसीकी नहीं है—जीवनमें जिसका कोई नही है।' अच्छा नमस्कार!

[चली जाती है]

नीना—[अपनी बँधी मुट्ठीवाला हाथ उसकी ओर बढ़ाकर] दो या एक ?

त्रिगोरिन—दो।

नीना—[गहरी साँस लेकर] गलत! मेरे हाथमें सिर्फ एक ही मटरका दाना है। मैं अपना भाग्य देख रही थी कि स्टेज-जीवन अपनाऊँगी या नहीं। काश, कोई मुझे इस बारेमें कुछ बताये।

त्रिगोरिन—ऐसी बातोंमें सलाह दे पाना असम्भव है।

नीना—हम लोग बिछुड रहे हैं। शायद अब फिर कभी न मिल पायें। बिदाईकी यादमें मेरी ओरसे भेंट यह तमगा स्वीकार करेंगे। मैंने इसके ऊपर आपके नामके अक्षर खुदवाये है, दूसरी ओर आपकी किताबका नाम है—'रातें और दिन।'

त्रिगोरिन—चीज तो बड़ी सुन्दर है [तमगेको चूम लेता है] बड़ी मधुर भेंट है।

नीना—कभी-कभी मुझे याद कर लीजिये।

त्रिगोरिन—मैं तुम्हें जरूर याद रखूँगा...जरूर याद रखूँगा.. तुम्हें याद है, उस दिनके वेशमें मैं तुम्हें याद रखूँगा जब हफ्ते भर पहले खुली धूपमें तुम बड़े सोफियाने-से कपड़े पहने थीं...हम लोग बातें कर रहे थे...पास ही बेंचपर सफेद हंसिनी पड़ी थी...

नीना—[व्यथासे] हाँऽऽऽवह हंसिनी...[कुछ रुककर] अब हम लोग ज्यादा बातें नहीं कर पायेंगे, कोई आ रहा है। प्रार्थना करती हूँ, जानेसे पहले मुझे दो मिनटका समय दें...

[बायीं ओर चली जाती है।]

[उसी क्षण दाहिनी ओरसे आर्कदीना, किसी पदवी लगे स्टारवाला कोट पहने सोरिन और पीछे-पीछे सामान लादे याकोवका प्रवेश]

आर्कदीना—दादा, तुम आरामसे यहीं बैठो। अपनी गठियाका ध्यान करके इधरसे उधर घूमना तुम्हारे लिए ठीक नहीं है। [त्रिगोरिनसे] अभी कौन गया ? नीना ?

त्रिगोरिन—हाँ।

आर्कदीना—माफ़ कीजिये, हमने बीचमें आकर विघ्न डाला। [बैठ जाती है] अब जाकर सब बाँध-बूँध पायी हूँ। थककर चूर-चूर हो गयी......

त्रिगोरिन—[उस तमगेपर पढ़ता है] 'रातें और दिन' पृष्ठ एक-सौ इक्कीस, लाइन ग्यारह और बारह।

याकोव—[मेज़ पोंछकर] आपके मछली पकड़नेकी चीजें भी बाँध दूँ साहब ?

त्रिगोरिन—हाँ-हाँ, मुझे फिर जरूरत पड़ेगी। उनके 'हुक' निकाल लेना।

याकोव—बहुत अच्छा, सा'ब !

त्रिगोरिन—[स्वगत] पृष्ठ एक-सौ इक्कीस, लाइनें ग्यारह और बारह; क्या होगा इन लाइनोंमें ? [आर्कदीनासे] यहाँ घरमें मेरी किताबें हैं ?

आर्कदीना—हाँ, दादाके पढ़नेके कमरेमें, कोने वाली आलमारीमें रखी हैं।

त्रिगोरिन—पृष्ठ एक-सौ इक्कीस.... .

[जाता है]

आर्कदीना—सच दादा, आप घर ही आराम करें न।

सोरिन—तुम तो चली जा रही हो......तुम्हारे बाद यहाँ रहना मेरे लिए बड़ा मुश्किल हो जायेगा.....

आर्कदीना—शहरमें ऐसा क्या रखा है ?

सोरिन—यों तो कुछ नहीं...मगर फिर भी......[हँसता है] वहाँ ज़ेमेस्त्वो हॉलका शिलान्यास होगा, दुनिया भरकी बातें होंगी। एक दो घण्टेको ही सही—यहाँके इस बँधे-बँधाये नीरस जीवनसे छूट भागनेको बड़ा मन करता है। पुराने सिगरेट-होल्डरकी तरह इतने दिन तो आल्मारीमें बन्द रह लिया। एक बजे घोड़ोंके लिए मैंने कह दिया है—तभी हमलोग चल पड़ेंगे।

आर्कदीना—[कुछ देर रुककर] सुनो दादा,यहीं रहो। ऊबना मत और ठंड मत खाना। मेरे बेटेकी देखभाल करते रहना। उसे अच्छी-अच्छी बातें समझाना [रुककर] मैं तो अब जा रही हूँ। त्रेपलेवने क्यों अपने गोली मार ली शायद यह बात मुझे कभी भी मालूम न हो पायेगी। मेरा ख्याल है, इसका मुख्य कारण जलन है। त्रिगो-रिनको यहाँसे जितनी जल्दी हटा ले जाऊँ उतना ही अच्छा है।

सोरिन—मैं क्या बताऊँ ? कारण तो कुछ और भी थे। सीधी-सी तो बात है। वह नौजवान है, बुद्धिमान है, जङ्गलियोंके बीचमें गाँवमें रहता है—पासमें न पैसा है, न कोई सम्मान, न आगे कोई

भविष्य! उसे करनेको कुछ भी तो नहीं है। उसे अपने निकम्मे-पनसे डर लगता है, शर्म लगती है। मुझे वह बहुत ही अच्छा लगता है, वह भी मुझे काफ़ी चाहता है। इस सबके बावजूद उसे लगता है जैसे घर भरमें वही एक फ़ालतू है। भिखारियोंकी तरहँ दूसरोंके सिर पडा है.. . बडी सीधी-सी बात है—आखिर उसका भी तो आत्म-सम्मान है।

आर्कदीना—मेरे लिए तो वह एक बडी भारी चिन्ता है [सोचते हुए] उसे किसी नौकरीमें भेज दें, क्या?

सोरिन—[सीटी बजाने लगता है। फिर बड़ी अनिश्चयात्मकतासे] जहाँ तक मेरा ख्याल है अगर तुम यह कर सको तो उसको सबसे अच्छा रहेगा.....। उसके पास कुछ पैसा हो जाने दो। सबसे पहले तो उसे भले आदमियोंकी तरह ओढना-पहनना चाहिये. जरा उसकी तरफ भी तो देखो...उसी फटी-पुरानी जाकेटमें तीन सालसे इधरसे-उधर घूमता फिरता है, एक ओवर-कोट तक नहीं है। [हँसकर] कभी-कभी मन-बहलाव हो जाय तो इसमें भी कोई नुकसान नहीं है...जरा घूमने-फिरने या बाहर विदेश चला जाय...इसमें ज्यादा खर्चा भी नहीं है।

आर्कदीना—अच्छा, ठीक है......। कपडोंका तो मैं शायद इन्तज़ाम कर दूँ लेकिन...जहाँ तक बाहर जानेकी बात है...नहीं......अभी तो कपडोंका भी इन्तजाम मैं नहीं कर पाऊँगी। [दृढतासे] मेरे पास कौडी भी नहीं है।

[सोरिन हँसता है]

आर्कदीना—नहीं है।

सोरिन—बिल्कुल सही है। माफ़ करना, बहन, मैं तुम्हारा पूरा विश्वास

करता हूँ, नाराज मत होओ...तुम बडी दयालु......सहृदय......
महिला हो......

आर्कदीना—[रोती है] मेरे पास पसा नहीं है।

सोरिन—अगर मेरे पास पैसा होता तो मैं निश्चय ही उसे दे देता। लेकिन करूँ क्या, है ही नहीं—एक कानी कौडी भी नहीं है। मेरी सारी पेंशनको वह सुसरा कारिन्दा ले जाकर खेतोंपर, जानवरों और शहदकी मक्खियोंपर झोंक देता है। पैसा बर्बाद होता है। मक्खियाँ मर जाती है, गाय-भैंस मर जाते है—मौक़ेपर मुझे घोड़े तक नहीं मिलते......

आर्कदीना—हाँ, मेरे पास पैसा है। लेकिन देखो न, मैं एक्ट्रैस हूँ, मेरे कपड़े ही मेरा दिवाला निकाल देते हैं।

सोरिन—तुम बडी दयालु हो...बडी अच्छी हो...मै तुम्हारी बहुत इज्जत करता हूँ। हॉ-हॉ...मगर...पता नहीं मुझे कैसा-कैसा लग रहा है......[लड़खड़ाता है] मेरा सिर घूम रहा है। [मेज़को पास आकर पकड़ लेता है] मुझे बेहोशी जैसी कुछ आ रही है......

आर्कदीना—[चौंककर] पेत्रूशा! [उसे सहारा देनेकी कोशिश करते हुए] पेत्रूशा, दादा......। [पुकारती है] दौड़ो! अरे, कोई आओ!

[माथेपर पट्टी बाँधे त्रेपलेव और मैद्वाह्वेंको आते हैं]

आर्कदीना—दादाको बेहोशी आ गयी है......

सोरिन—सब ठीक है......सब ठीक है [मुस्कराते हुए थोड़ा पानी पीता है] कोई बात नहीं......अब सब ठीक हो गया......

त्रेपलेव—[माँसे] अम्मा डरनेकी कोई बात नहीं है, कोई खतरा नहीं। मामाको आजकल ऐसे दौरे आ जाते हैं...[मामासे] मामा, आप लेट जाइये......

सोरिन—हाँ, थोडी देरके लिए लेटा जाता हूँ......लेकिन मै शहर ज़रूर जाऊँगा। थोडी देर लेटनेके बाद चलने-फिरने लायक हो जाऊँगा......ऐसा तो होता ही रहता है...

[अपनी बेंतके सहारे झुककर चला जाता है]

मैद्वीद्वैंको—[उसे अपनी बाँहका सहारा देकर] एक पहेली बताओ... सुबह चार पैरोंपर, दोपहरमें दोपर, और सन्ध्याको तीनपर...

सोरिन—बिल्कुल ठीक—और रातको पीठके बल! अच्छा, तुम्हारी कृपाके लिए धन्यवाद, अब मै खुद चला जा सकता हूँ......

मैद्वीद्वैंको—अरे छोडिये भी, तकल्लुफ़की क्या बात है! [सोरिनके साथ चला जाता है]

आर्कंदीना—मुझे दादाने कितना घबरा दिया।

त्रेपलेव—इस गाँवमें रहना उनके लिए ठीक नहीं है। वे बडे हताश हो जाते है। अच्छा अम्मा, मान लो अचानक ऐसा हो जाय कि तुम्हारे हृदयमें दया उमड पड़े और तुम उन्हें हज़ार–दो हजार रूबल उधार दे दो तो यह पूरे साल आरामसे शहरमें बिता सकते हैं।

आर्कंदीना—मेरे पास पैसा ही नहीं है। मै एक्ट्रैस हूँ। महाजन तो हूँ नहीं।

[चुप्पी]

त्रेपलेव—अम्मा मेरी पट्टी बदल दो। तुम बड़ी अच्छी तरह बदलती हो...

आर्कंदीना—[दवाओंकी आलमारीसे थोडा आइडो-फ़ॉर्म और पट्टियोंका सामान निकालते हुए] डाक्टर साहबने बड़ी देर लगा दी।

त्रेपलेव—उन्होंने दस तक यहाँ आनेको कहा था, और अब दोपहर हो चुकी है।

आर्कदीना—बैठो [माथेकी पट्टी उतारती है] कैसी पगडी-सी लगती है। कल कोई नया आदमी रसोईमें पूछ रहा था कि तुम कहाँके रहनेवाले हो। लेकिन तुम्हारा घाव तो करीब-क़रीब भर आया। बस, थोडा-सा रह गया है [उसके माथेको चूमती है] मेरे पीछे तो अब कोई ऐसा उपद्रव नहीं करोगे न ?

त्रेपलेव—नहीं माँ ! वह तो पता नही निराशाका कैसा एक क्षण था कि मेरा अपनेपर कोई बस ही नहीं रहा। अब फिर नहीं होगा [उसके हाथ चूमता है]। कैसे कुशल हाथ हैं तुम्हारे। मुझे याद है, जब मैं छोटा-सा था और तुम इम्पीरियल थियेटरमें ही एक्टिंग किया करती थीं, हमारे आँगनमें झगडा हो गया था—एक धोबिन किरायेदारकी खूब मरम्मत हुई थी। याद है न अम्मा ? उसे बेहोशीमें ही उठा लाया गया था......तुमने उसकी सेवा-परिचर्या की थी और तुम उसके बच्चोंको एक हौदमें नहलाया करती थीं—याद है न तुम्हें ?

आर्कदीना—मुझे तो याद नहीं है।

[नई पट्टी चढ़ाती है]

त्रेपलेव—जिस घरमें हमलोग रहते थे उसी घरमें दो 'बैले' नाच नाचने वाली लडकियाँ रहती थीं...वे दोनों तुम्हारे पास आकर कॉफ़ी पिया करती थीं......

आर्कदीना—हाँ, यह तो याद है।

त्रेपलेव—कैसी अच्छी सीधी-सादी थीं दोनों [कुछ देर रुककर] अभी इन्हीं दिनों अम्मा, मेरे हृदयमें तुम्हारे लिए वैसा ही प्यार, मधुर और सच्चा प्यार उमडता रहा जैसे बचपनमें उमडा करता था। अब मेरा तो तुम्हारे सिवा कोई भी नही रह गया। बस, अम्मा तुममें यही बुराई है, तुम उस आदमीके चक्करमें कैसे फँस गयी हो ?

आर्कदीना—तुमने उसे पहचाना नहीं है, कांन्स्तान्तिन ! वह बड़े ऊँचे चरित्रका आदमी है।

त्रेपलेव—और जब उसे यह बताया गया कि मैं उसे चुनौती देने जा रहा हूँ तब उसकी चारित्रिक ऊँचाईने उसे कायरतासे नहीं रोका ? अब वह भागा जा रहा है। काला मुँह कर रहा है।

आर्कदीना—क्या बकते हो ? मैं ही तो उससे जानेको कह रही हूँ।

त्रेपलेव—वाह ! कैसा ऊँचा चरित्र है ! यहाँ हम और तुम उसे लेकर झगड़ रहे हैं, और हो सकता है इसी वक्त बैठक या बगीचेमें बैठा वह हमारी हँसी उड़ा रहा हो......नीनाको प्रोत्साहन दे रहा हो, उसे समझा रहा हो कि वह प्रतिभाशालिनी है !

आर्कदीना—मुझसे यह सब भद्दी बातें करनेमें तुम्हें मजा आता है ? मेरे दिलमें उस आदमीके लिए इज्जत है। विनती करती हूँ, मेरे सामने उसे गालियाँ मत दो.... .

त्रेपलेव—मगर मेरे दिलमें उसके लिए कोई इज्ज़त नहीं है। तुम मुझसे यह मनवाना चाहती हो कि वह प्रतिभाशाली है। लेकिन माफ़ करना, मैं झूठ नहीं बोलूँगा, उसकी किताबें मेरी रूह खुश्क कर देती हैं।

आर्कदीना—यही तो जलन है। अपने मुँह मियाँ-मिट्ठू बननेवालोंसे तो खुदा भी नहीं बचा ! खुद तो उनमें प्रतिभा है नहीं, लेकिन सच्चे प्रतिभाशालियोंकी टाँग खींचते हैं। मैं तो कहूँगी उन्हें इसीमें आनन्द आता है।

त्रेपलेव—[व्यंगसे] सच्ची प्रतिभा ! [गुस्सेसे] मुझमें तुम सबसे मिला कर ज्यादा प्रतिभा है। [सिरकी पट्टी फाड़ फेंकता है] तुम...... तुम लोगोंने अपनी सड़ी गली रूढ़ियोंसे कलाके सारे गुणोंको चूस डाला है। जो कुछ तुमलोग कर सकते हो, उसके सिवा तुम्हें न

कुछ सत्य लगता है, न सही। बाकी हर चीजका गला घोटकर तुम उसे कुचल डालना चाहते हो। मुझे तुम्हारी बातोंमें कोई आस्था नहीं है! मुझे तुम्हारी और उसकी बातोंपर रत्तीभर विश्वास नहीं है।

आर्कदीना—तुम दिवालिये और 'पतनोन्मुख' हो......!

त्रेपलेव—जाओ तुम, अपने उसी सुन्दर थियेटरमें जाओ, और उन्हीं औंधे-सीधे खेलोंमें ऐक्टिंग करो।

आर्कदीना—मैं ऐसे किसी भी खेलमें ऐक्टिंग नहीं करती। मेरे सामनेसे चला जा। तुझसे दो उल्टे-सीधे दृश्य तक तो नहीं लिखे जाते। तू तो बस 'कीव'का बनिया है। दूसरोंके सिर रहने वाला।

त्रेपलेव—कञ्जूस!

आर्कदीना—भिखमंगे!

[त्रेपलेव बैठकर चुपचाप रोता रहता है]

आर्कदीना—पिद्दी-न-पिद्दीका शोरबा [गुस्सेमें इधर-उधर घूमती है] रो मत......मैं कहती हूँ मत रो [रोने लगती है] चुप हो जा... [उसके माथे, गालों और सिरको चूमती है] मेरे बेटे...मुझे माफ़ कर दे......अपनी पापिनी माँको माफ़ कर दे! मुझे माफ़ कर दे...तू तो जानता ही है, मैं कैसी बुरी हूँ......

त्रेपलेव—[उसे बाहोंमें भरकर] काश! तुम जानतीं! मेरा सब कुछ लुट गया। नीना अब मुझे प्यार नहीं करती...और मैं कुछ भी लिख नहीं पाता......मेरी सारी उम्मीदें बुझ गयीं......

आर्कदीना—यों दिल मत तोड़ो......सब ठीक हो जायेगा—अब तो वह यहाँसे सीधे जा ही रहे हैं! नीना तुम्हें फिर प्यार करने लगेगी— [आसूँ पोंछ लेती है] अब, बस बहुत हो चुका......हम लोगोंमें सुलह हो गयी......

त्रेपलेव—[उसके हाथ चूमकर] अच्छा अम्मा ।

आर्कदीना—[प्यारसे] उनसे भी मेल कर लो। अब तो तुम द्वन्द्व नहीं चाहते न ?

त्रेपलेव—अच्छी बात है...बस, अम्मा तुम मुझे उसके सामने मत पडने दो......उससे मिलना मेरे लिए बड़ा दुखदायी है...मुझसे सहा नहीं जाता......

[त्रिगोरिनका प्रवेश]

देखो वह आ गया...मैं अब चलता हूँ...[जल्दीसे पट्टी बाँधनेका सामान आलमारीमें रख देता है] अब डाक्टर साहब ही आकर पट्टी बाँध देंगे ।

त्रिगोरिन—[एक किताबमें पढ़ते हुए] पृष्ठ एक-सौ एक्कीस......ये रही ग्यारहवीं और बारहवीं लाइनें......[पढ़ता है] 'अगर *तुम्हें कभी मेरे प्राणोंकी ज़रूरत पड़े तो आना और निस्सङ्कोच ले लेना. ....।'*

[त्रेपलेव फ़र्शसे पट्टी उठाकर चला जाता है]

आर्कदीना—[अपनी घड़ी देखकर] घोड़े आने ही वाले हैं......

त्रिगोरिन—[स्वगत] 'अगर तुम्हें कभी मेरे प्राणोंकी ज़रूरत पड़े तो आना और निस्सङ्कोच ले लेना।'

आर्कदीना—मेरा ख़याल है, तुम्हारा सामान तो बँध ही गया होगा ।

त्रिगोरिन—[अधीरतासे] हाँ-हाँ [विचारोंमें डूबे हुए] उस निष्पाप आत्माकी आवाज़ क्यों मुझे छूकर इतना उदास कर गयी है, और जैसे कोई मेरे हृदयको निर्ममतासे मरोड़े दे रहा है—'अगर तुम्हें कभी मेरे प्राणोंकी ज़रूरत पड़े तो आना और निस्सङ्कोच

ले लेना.... ।' [आर्कदीनासे] एक दिन और नहीं रुक सकते हम लोग ?

[आर्कदीना सिर हिलाती है]

त्रिगोरिन—रुक जाओ न ।

आर्कदीना—प्रियतम, मुझे मालूम है तुम्हें यहाँ कौन खींच रहा है । पर अपने आपको थोड़ा सँभालो । तुम नशेमें हो, जरा गम्भीर होनेकी कोशिश करो ।

त्रिगोरिन—मै कहता हूँ—तुम भी तो जरा-सी गम्भीर, समझदार और उदार बननेकी कोशिश करो । सच्चे दोस्तकी तरह मेरी बातपर गौर करो [उसका हाथ दबाकर] तुम त्याग कर सकती हो । मेरी भलाईके लिए मुझे छोड़ दो..... .

आर्कदीना—[तीव्र क्रोधसे] ऐसे पागल हो रहे हो, तुम उसके पीछे ?

त्रिगोरिन—मै उसकी ओर आकर्षित हूँ । वह मेरे सपनोंकी, आकांक्षाओंकी साकार प्रतिमा है ।

आर्कदीना—उस गँवार लड़कीसे प्यार ? हाय, तुम्हे अपना जरा भी खयाल नहीं ?

त्रिगोरिन—कभी-कभी लोग सोते हुए बोलते रहते है.. मुझे भी ठीक वैसा ही लग रहा है । मैं बातें तुमसे कर रहा हूँ, लेकिन जैसे सो रहा होऊँ और केवल उसके ही सपने देख रहा होऊँ...... उन मीठे मधुर सपनोंने मुझे बाँध लिया है......मुझे मुक्त कर दो......

आर्कदीना—[काँपते हुए] नहीं-नहीं । मैं एक मामूली औरत हूँ । मुझसे यह सब मत कहो । मुझे मत सताओ बोरिस, मेरा-जी सूखा जा रहा है.. ...

त्रिगोरिन—तुम अगर चाहो तो असाधारण भी बन सकती हो! जीवनमें अगर कोई चीज खुशी दे सकती है तो वह केवल प्यार है—जवानी की उमङ्गों, माधुर्य और कवित्वसे लहलहाता प्यार, जो आदमीको सपनोंकी दुनियामें पहुँचा देता है। मैंने कभी नहीं जाना ऐसा प्यार...अपनी जवानीमें तो मुझे कभी फुर्सत ही नहीं मिली—बस, वही अभावोंसे लड़ना और इस सम्पादकके दफ्तरसे उस सम्पादकके दफ्तरमें चक्कर लगाना... अब आया है वह अलौकिक प्यार—मुझे निमन्त्रण दे रहा है। उससे मुँह मोडकर भागनेमें क्या बुद्धिमानी है?

आर्कदीना—[गुस्सेसे] तुम पागल हो गये हो।

त्रिगोरिन—आखिर क्यों न होऊँ?

आर्कदीना—आज क्या तुम सबने मिलकर मुझे घोट-घोटकर मारनेका ही निश्चय कर लिया है? [रोती है]।

त्रिगोरिन—[अपनी छाती दबाकर] तुम कुछ नहीं समझती...तुम समझोगी भी नहीं...

आर्कदीना—मैं ऐसी बुड्ढी और बदसूरत हो गयी कि मेरे सामने दूसरी औरतकी बात करते तुम्हें लिहाज नहीं होता? [अपनी बाँहें उसके गलेमें डालकर चुम्बन लेती है] हाय, तुम कैसी पागलों-सी बातें करते हो...मेरे राजा...प्रियतम...तुम ही तो मेरे जीवनके आखिरी अध्याय हो [उसके पैरोंपर झुकती है] मेरे सुख, मेरे गौरव, मेरे आनन्द [उसके पैरोंको बाँहोंमें कस लेती है] अगर तुम एक घण्टे भरको भी मुझे छोड़ जाओगे तो मैं बचूँगी नहीं...मेरे मोहन, मेरे नाथ, मेरे स्वामी मैं पागल हो जाऊँगी......

त्रिगोरिन—कोई आ जायेगा [उसे उठनेको सहारा देता है] ।

आर्कदीना—आने दो...तुम्हारे लिए अपने प्रेमपर मुझे कोई लाज नहीं है [उसके हाथ चूमती है] मेरी निधि, मेरे रूठे साथी, तुम पागलपन करने जा रहे हो...लेकिन मैं करने नहीं दूँगी यह सब... मैं नहीं सह पाऊँगी...[हँसती है] तुम मेरे हो...मेरे...तुम्हारा यह माथा मेरा है, ये आँखें मेरी हैं...ये रेशमी प्यारे-प्यारे बाल भी मेरे हैं...तुम्हारा अंग-अंग मेरा है...तुम कितने प्रतिभावान हो, कलाकार हो, नये लेखकोंमें सर्वश्रेष्ठ—रूसकी एकमात्र आशा ! तुममें कितनी सचाई, सरलता, ताज़गी और स्वस्थहास्य है......एक लाइनमें ही तुम आदमी या दृश्यकी सारी खूबियाँ उतार देते हो—तुम्हारे चरित्र सजीव हैं...। तुम्हें पढ़कर आदमी खुद-बखुद खिल उठता है। तुम समझते हो मैं झूठी प्रशंसा कर रही हूँ, तुम्हारी चापलूसी कर रही हूँ...लेकिन मेरी आँखोंमें देखो...देखो, मैं झूठ बोलती लग रही हूँ ? सुनो, सिर्फ़ मैं ही तुम्हारी सच्चे दिलसे तारीफ़ कर सकती हूँ—सच-सच कह सकती हूँ ! मेरे जीवनधन, एकमात्र प्रियतम...चलोगे न ? बोलो, हाँ । मुझे छोड़ोगे तो नहीं ?

त्रिगोरिन—मेरी अपनी कोई इच्छा नहीं है।...मेरी अपनी इच्छा नहीं रही......दुबला-पतला मरियल, गन्दा हमेशा मिमियाता-सा मैं—कैसे ऐसे आदमीपर कोई औरत मर सकती है ? मुझे ले चलो, मुझे यहाँसे दूर ले जाओ......लेकिन मुझे अपने पाससे एक क़दम मत हटने देना ।

आर्कदीना—[स्वगत] अब यह जायेंगे कहाँ। [ऐसी स्वाभाविकतासे जैसे कुछ हुआ ही न हो] अगर सचमुच तुम चाहते ही हो, और चलनेका मन न हो तो रुक जाओ—मैं अकेली चली

जाऊँगी। तुम बादमें आ जाना—एक हफ्ते बाद आ जाना! आखिर तुम्हें ऐसी जल्दी भी क्या है?

त्रिगोरिन—नहीं—हम लोग साथ ही चलेंगे।

आर्कदीना—जैसी तुम्हारी इच्छा। साथ ही चले चलेंगे।

[चुप्पी]

[त्रिगोरिन कुछ लिखता है]

त्रिगोरिन—आज सुबह मैंने एक बड़ा अच्छा वाक्य सुना—"अप्सराका उपवन" शायद किसी काम आ जाय। [अँगड़ाई लेता है] तो हमें जाना है? फिर वही रेलके डिब्बे, स्टेशन, उपाहार-गृह, मटन-चॉप—गप्पें......

शार्मयेव—[प्रवेश करके] मुझे बड़े अफ़सोसके साथ खबर देनी पड़ती है कि घोड़े तैयार हैं। [आर्कदीनासे] स्टेशन रवाना होनेका समय हो गया है। गाड़ी दो बजकर पाँच मिनटपर आ जाती है......। इरीना निकोलायेव्ना, बस मेहरबानी करके मेरा एक काम कर दीजिये, ऐक्टर सुल्दात्सेवका क्या हुआ—यह पता लगाना न भूलिये......वह अब भी जिन्दा और स्वस्थ है क्या? एक वक़्त था जब हम लोग साथ-साथ शराब पिया करते थे...... वह "लुटी हुई रेल" में क्या गज़बका काम करता था। मुझे याद है, उन दिनों दुखका पार्ट करनेवाला था इज्म्यालोव; वह 'एलिज़बेथ गार्ड थियेटर'में हमेशा उसके साथ ही काम करता था......देखिये, अभी इतनी जल्दी मत कीजिये......पाँच मिनट और न चलें तो भी कोई नुक़सान नहीं है......हाँ, तो एक बार एक मैलोड्रामामें वे लोग जालसाज़ोंका अभिनय कर रहे थे। तभी अचानक उनका भण्डाफोड हो गया। इज्म्यालोवको कहना था—

"हम लोग जालमें फँस गये",......लेकिन कहा उसने "हम लोग तालमें धँस गये !" [हँसता है] 'तालमें धँस गये !'

[उसके बात करनेके समय याकोव सामानको लेकर व्यस्त दिखायी देता है। नौकरानी आर्कदीनाको उसका टोप, कोट, छाता और दास्तानें लाकर देती है। उसे यह सब चीज़ें पहनानेमें सभी मदद करते हैं। रसोइया बाँयीं ओरके दरवाज़े पर दिखायी देता है--और कुछ झिझकके बाद भीतर आ जाता है। पोलिना आन्द्रेयव्ना, फिर सोरिन और मैंद्वीद्वैंकोका प्रवेश]

पोलिना--[एक डलिया लाती है] रास्तेके लिए ये थोड़ेसे बेर है... बड़े मीठे हैं...रास्तेमें कुछ अच्छी चीजें खाकर शायद आपका मन प्रसन्न रहे......

आर्कदीना--पोलिना आन्द्रेयव्ना, तुम बड़ी अच्छी हो।

पोलिना--नमस्कार बहन ! अगर कुछ आपके मनका न हो पाया हो तो माफ़ कीजिये ......।

[रो पड़ती है]

आर्कदीना--सब कुछ बड़ा ही अच्छा रहा--बहुत ही अच्छा ! मगर रोओ तो नहीं।

पोलिना--समय कैसा चुपचाप खिसक जाता है।

आर्कदीना--उसमें हमारा बस ही क्या है ?

सोरिन--[भारी-सा कोट पहने, शॉल लपेटे है। सिरपर टोप और हाथमें छड़ी लिये हुए बायीं ओरसे प्रवेश करता है। पूरा मञ्च पार करके] बहन, चलनेका वक्त हो गया। नहीं तो तुम्हें ही देर हो जायगी......मै ताँगेमें जाकर बैठता हूँ [जाता है]।

मैंद्वीद्वैंको--स्टेशन तक मैं भी साथ चलूँगा...आप लोगोंको बिदा देनेको मैं अभी वहाँ पहुँचता हूँ...[जाता है]

आर्कदीना—अच्छा सभी लोगोंको मेरा नमस्कार...अगर ज़िन्दा और चंगे रहे तो फिर अगली गर्मियोंमें मिलेंगे. [नौकरानी, रसोइया और याकोव उसके हाथको चूमते हैं] मुझे भूल मत जाना [रसोइये को एक रूबल देती है] यह तुम तीनोंके लिए एक रूबल है।

रसोइया—हम लोगोंकी ओरसे बहुत-बहुत शुक्रिया बीबीजी। आपका सफ़र अच्छा कटे—आपकी कृपाके हम सभी अहसानमन्द हैं।

याकोव—भगवान् आपको सुखी रखे।

शार्मयेव—आपका पत्र पाकर हमें बड़ी ही खुशी होगी। बोरिस अलैक्सी-विच, प्रणाम!

आर्कदीना—त्रेपलेव कहाँ है? उससे कहो मैं जा रही हूँ। मैं उससे तो मिल लूँ। अच्छा भाई, मेरे बारेमें दिलमें मलाल मत रखना। [याकोवसे] मैंने रसोइयेको एक रूबल दे दिया है—वह तुम तीनोंका है।

[सब दाहिनी ओर चले जाते हैं। मञ्च खाली है। नेपथ्यमें लोगोंको विदा देने वाला जाना-पहचाना शोरगुल। महरी मेज़पर रखी बेरोंकी डलिया लेने आती है और लेकर चली जाती है]

त्रिगोरिन—[लौटकर] अपनी छड़ी तो मैं भूल ही गया। शायद बाहर यहाँ बरामदेमें छूट गयी है।

[जाने लगता है कि बाँयीं ओरके दरवाज़ेपर भीतर आती हुई नीनासे मिलता है] अरे तुम यहाँ हो? सुनो हम लोग जा रहे हैं... ...

नीना—मेरे मनमें आया कि एक बार हमलोग फिर एक दूसरेसे मिल लें...... [आवेशसे] बोरिस अलैक्सीविच, मैंने अब ठान लिया है......पाँसा फेंका गया था। अब मैं रंगमंचको अपना

ही रही हूँ......कल मैं यहाँसे चली जाऊँगी......मैं अपने पिताजीका भी साथ छोड़ रही हूँ.. ...सब कुछ छोड़े जा रही हूँ। एकदम नयी जिन्दगी शुरू कर रही हूँ। मे भी मास्को ही आ रही हूँ। हमलोग वहीं मिलेंगे।

त्रिगोरिन—[इधर-उधर देखकर] स्लाव्यास्की बाज़ारमें ठहरना, फ़ौरन ही मुझे खबर देना...मोल्चोनोका, ग्रोखोलोव्स्की-भवन......मैं बहुत जल्दीमें हूँ।

[चुप्पी]

नीना—सिर्फ़ एक मिनट और......

त्रिगोरिन—[बड़े दबे स्वरमें] तुम कितनी सुन्दर हो......ओह, हमलोग जल्दी ही फिर मिलेंगे यह सोचकर कैसा आनन्द हो रहा है...... [उसकी छाती पर सिर रखकर नीना रो पड़ती है] इन जादूभरी अद्भुत रतनारी आँखोंको मैं फिर देखूँगा......यह मन्द-मन्द मोहक मधुर मुस्कान......यह प्यारा-प्यारा मुखड़ा, यह स्वर्गीय पवित्रताकी छाप.. मेरी प्राण......

[एक गहरा व्यस्त-चुम्बन]

पर्दा गिरता है।

चौथा अङ्क

[सोफिनके घरकी बैठकको अब त्रेपलेवके अध्ययन-कक्षके रूपमें बदल दिया गया है। दायीं और बायीं ओरके दरवाज़े अन्दर कमरोंमें गये हैं। सामने बीचमें शीशोंका जँगला बरामदेमें खुलता है। बैठकके साधारण फ़र्नीचरके अलावा बायीं ओरके दरवाज़ेके पास एक कोनेमें लिखनेकी मेज़, एक सोफा, किताबोंकी आलमारी, खिड़की तथा कुर्सियोंपर किताबें। सन्ध्याका समय। सिर्फ़ एक ही शेड वाला लैम्प जल रहा है। कमरेकी रोशनी बड़ी धुँधली है। ऊपरकी चिमनियोंसे पेड़ोंके सरसराने और तेज़ आँधीकी गरजन सुनाई देती है। चोरोंको डरानेके लिए एक चौकीदार ज़ोर-ज़ोरसे कनस्टर पीटता सुनाई दे रहा है]

[मैद्वीद्वेंको और माशाका प्रवेश]

माशा—[पुकारती है] कान्स्तान्तिन् ग्राविलिच ! कान्स्तान्तिम ग्राव्रिलिच [इधर-उधर देखकर] नहीं...यहाँ तो कोई भी नही है। बुड्ढा हर मिनट बस यही रट लगाये रहता है, कोस्त्या कहाँ है, कोस्त्या कहाँ है। बिना उनके उससे रहा ही नहीं जाता।

मैद्वीद्वेंको—अकेलेपनसे वह डरता है [आवाज़ सुनकर] कैसा खराब मौसम है। पूरे दो दिन होने आ रहे हैं इसे......

माशा—[लैम्प घुमाती हुई] झीलमें लहरें उठ रही है—बड़ी-बड़ी लहरें !

मैद्वीद्वेंको—बगीचेमें कैसा अन्धकार है। हमें उन लोगोसे कह देना था कि बगीचेके स्टेजको अब तोड़-ताड दें। हड्डियोके ढाँचेकी तरह

नङ्गा और मनहूस-सा खड़ा है—पर्दे हवामें फड़फड़ा रहे हैं। कल शामको जब मैं वहाँसे गुज़र रहा था तो मुझे ऐसा लगा जैसे उसमें बैठा कोई सिसक-सिसक कर रो रहा हो......

माशा—अच्छा, अब और क्या करना है हमें ?

[चुप्पी]

मैद्वीद्वैंको—चलो, घर चलें, माशा।

माशा—[सिर हिलाकर] मैं तो आज रातभर यहीं रहूँगी।

मैद्वीद्वैंको—[ख़ुशामदके स्वरमें] चली चलो न माशा ! मुन्ना भूखा होगा।

माशा—न कहीं। मियोना सब उसे खिला-पिला देगी।

[चुप्पी]

मैद्वीद्वैंको—मुझे तो उसपर बड़ी दया आ रही है। बेचारेको बिना माँके तीन दिन हो गये।

माशा—तुम तो एक आफ़त हो। पहले तुम कम-से-कम और चीजोंपर भी तो बोलते थे—अब तो बस, वही बच्चा, घर, बच्चा—कोई तुमसे यही-यही सुने जाय।

मैद्वीद्वैंको—मानो माशा, चलो चलो।

माशा—तुम चले जाओ न।

मैद्वीद्वैंको—तुम्हारे बापू मुझे जानेको घोड़ा नहीं देंगे।

माशा—नहीं, वे दे देंगे। तुम पूछ लेना बस, वे ज़रूर दे देंगे।

मैद्वीद्वैंको—अच्छी बात है—पूछ ही लूँगा। तो तुम कल आ रही हो न।

माशा—हाँ-हाँ कल [चुटकी भरकर सुँघनी चढ़ाती है] तुम तो मेरी नाकमें दम ही किये रहते हो।

[ग्रेपलेव और पोलिना आन्द्रोयेव्नाका प्रवेश । ग्रेपलेव रज़ाई और तकिये लिये हैं, पोलिना चादर और गिलाफ़ । वे उन्हें सोफ़ेपर रख देते हैं । फिर ग्रेपलेव मेज़के पास जाकर बैठ जाता है]

माशा—अम्मा, यह किस लिए है ?

पोलिना—प्योत्र निकोलायेविचने कहा है कि उनका बिस्तर भी कोस्त्याके कमरेमें ही बिछेगा ।

माशा—मैं बिछाती हूँ [बिस्तर बिछाती है] ।

पोलिना—[आह भरकर] ये बुड्ढे भी बिल्कुल बच्चों जैसे हो जाते हैं । [लिखनेकी मेज़के पास जाकर उसपर कुहनियाँ टिकाकर झुकते हुए एक-पाण्डु लिपिको देखती रहती है]

[चुप्पी]

मैद्वीद्वैंको—अच्छा, तो फिर मैं चलता हूँ । अच्छा माशा, नमस्कार [अपनी पत्नीका हाथ चूमता है] नमस्कार माताजी । [अपनी सासका हाथ चूमना चाहता है]

पोलिना—[खीझसे] ठीक है, ठीक है । जाना ही है तो अब देर मत करो ।

मैद्वीद्वैंको—नमस्कार कोन्स्तान्तिन गाव्रिलिच ।

[ग्रेपलेव बिना कुछ बोले हाथ उठा देता है । मैद्वीद्वैंको चला जाता है]

पोलिना—[पाण्डु-लिपिको देखते हुए] कोस्त्या, कोई सोच सकता था कि एक दिन तुम सच-मुच लेखक बन जाओगे ? अब तो भगवान्की कृपासे तुम्हें पत्रिकाओंसे रुपये भी मिलने लगे हैं [उसके बालोंपर हाथ फेरकर] और अब तो तुम भी बड़े अच्छे लगने लगे हो......अच्छे कोस्त्या, बेटा, बस, मेरी बेटी माशापर ज़रा मेहरबानी रखना...

माशा—[बिस्तर बिछाते हुए ही] अम्मा उनके पाससे चली आओ न।

पोलिना—[ग्रेपलेव] यह बिचारी बडी भोली है [चुप रहकर] तुम तो खुद समझते ही हो कोस्त्या, आदमीकी कृपा-दृष्टि रहे तो औरत कुछ भी नहीं चाहती। मैं तो खुद भोगे बैठी हूँ।

[ग्रेपलेव मेज़से उठकर बिना कुछ बोले बाहर चला जाता है]

माशा—लो, उन्हें नाराज़ कर दिया न। तुम्हें उन्हें तङ्ग करनेकी क्या पडी थी?

पोलिना—माशेका, तेरे ऊपर मुझे बड़ा तरस आता है।

माशा—बस-बस बड़ी अच्छी बात है।

पोलिना—मेरे दिलमें तेरे लिए बडी कलक है बेटी। तू तो जानती ही है, मैं सब देखती हूँ—सब समझती हूँ......

माशा—यह सब बेवकूफ़ीकी बातें है। बिना किसी उम्मीदके प्यार करते जाओ—ये सब बातें उपन्यासोंमें ही होती हैं। इससे आता-जाता क्या है? आदमीको चाहिए कि हाथपर हाथ रखकर न बैठ जाय। कुछ होगा, कुछ होगा इसी आशामें न रहे...... ज्वार उतर जानेकी राह देखता रहे...और जब प्यारकी जडें हृदयमें बहुत ही गहरी पैठ जायें तो उन्हें उखाड़ फेंके। अधिकारियोंने मेरे पतिका दूसरे ज़िलेमे तबादला करनेका वचन दे दिया है...तुम देखना वहाँ जाते ही मैं सब भूल-भाल जाऊँगी... सबको अपने दिलसे नोंचकर फेंक दूँगी।

[दो कमरोंके पार एक बड़ा उदास-सा सङ्गीत बज़ता है]

पोलिना—कोस्त्या ही बजा रहा है...ज़रूर उसके मनमें भी बड़ा दर्द है।

माशा—[चुपचाप सङ्गीतपर दो-एक क़दम नाचती है] अम्मा, यह हमेशा मेरी आँखोंके सामने न रहें, इतना ही मेरे लिए काफ़ी है...

विश्वास मानो, अगर वे मेरे सिमियनका तबादला भर कर दें तो एक महीनेमें मैं अपनेको बिल्कुल सँभाल लूँगी। ये सब प्रेम-प्यार, बेकारकी बातें हैं।

[बायीं ओरका दरवाज़ा खुलता है। दोर्न और मैद्वीद्वैंको, सोरिनको उसकी कुर्सीपर धकेलते लाते हैं]

मैद्वीद्वैंको—वे छहों अब मेरे पास हैं। और आटा आज कल दो कॉपेक, पाउण्ड है।

दोर्न—आमके आम और गुठलियोंके दाम बनानेके लिए काफ़ी चलता-पुर्जा होनेकी जरूरत है।

मैद्वीद्वैंको—आप तो इसपर हँसेगे ही। आपके पास तो पैसा भरा पड़ा है। आपको यही नहीं पता कि पैसेका क्या करें......

दोर्न—पैसा? भाई मेरे, तीस साल रगडनेके बाद! उन दिनों मैंने रात को रात और दिनको दिन नहीं जाना। अपनी जानको अपना नहीं समझा—और तब जाकर कहीं मैंने हज़ार रूबल बचाये थे सो अभी जब बाहर गया तो फूँक आया। अब मेरे पास क्या रखा है?

माशा—[अपने पतिसे] तुम गये नहीं?

मैद्वीद्वैंको—[अपराधीके स्वरमें] तुम्हीं बताओ, जब कोई मुझे घोड़ा ही नही देगा तो कैसे जाऊँगा?

माशा—[दबी ज़बानमें, बुरी तरह झल्लाकर] मैं तुम्हारी सूरत नहीं देखना चाहती!

[पहियोंवाली कुर्सी कमरेके बायीं ओर बीचमें रहती है। पोलिना, माशा और दोर्न उसके आसपास बैठ जाते हैं। मैद्वीद्वैंको उदास-दुखी-सा उनसे ज़रा हटकर खड़ा है]

दोर्न—यहाँ कितना बदल गया है। बैठक, पढ़नेका कमरा बन गई है।

माशा——यहाँ कोन्स्तान्तिन ग्राब्रिलिचको काम करनेमें काफ़ी सुविधा रहती है। जब भी मन करता है बाग़में टहलने चले जाते हैं——वहाँ चिन्तन कर सकते है।

[चौकीदार कनस्टर बजाता है।]

सोरिन——बहन कहाँ हैं ?

दोर्न——वे स्टेशनपर त्रिगोरिनसे मिलने गई हैं। अभी सीधी वापस आ जायेंगी।

सोरिन——जब तुमने मेरी बहनको बुला लेना ज़रूरी समझा है तो निश्चय ही मेरी बीमारी ख़तरनाक है। [कुछ देर चुप रहकर] कैसी अनोखी बात है। मेरी बीमारी ख़तरनाक है और देखो, कोई मुझे दवा ही खानेको नहीं दे रहा है।

दोर्न——अच्छा, कौन-सी दवा लेंगे ? अर्कधतूरा ? सोडा ? कुनैन ?

सोरिन——डाक्टर, तुमने फिर वही अपनी-अपनी लगाई ? मुसीबत कर डाली मेरी तो। [सोफ़ेपर बिछे बिस्तरकी ओर इशारा करके] मेरे लिए यही बिस्तर है क्या ?

पोलिना——जी हाँ, यह आपका ही है प्योत्र निकोलायेविच।

सोरिन——शुक्रिया।

दोर्न——[गुनगुनाता है] "रात आधी है कि चन्दा तैरता आकाशमें।"

सोरिन——मै कोस्त्याको एक कहानीका विषय देना चाहता हूँ। उसका नाम होना चाहिए "महत्त्वाकांक्षी मनुष्य।" जवानीके दिनोंमें मैं एक साहित्यिक होना चाहता था——लेकिन हो नहीं पाया। मैं अच्छा भाषणकर्त्ता बनना चाहता था, लेकिन बोलता था तो ऐसा कि रोना आये [अपना मज़ाक उड़ाते हुए] "और भी इसी प्रकारकी बातें...वग़ैरा——वग़ैरा..." बोलते-बोलते मैं

पसीनेसे लथ-पथ हो जाता था, अपनी बातोंको जैसे-तैसे समेट पाता था और पसीने-पसीने हो जाता था। मै शादी करना चाहता था, लेकिन कर नहीं सका। मैंने हमेशा शहरोंमें रहना चाहा, लेकिन अब अपनी जिन्दगीको यहाँ झोंके दे रहा हूँ...... वग़ैरा......वग़ैरा......

दोर्न—यह भी तो जोड़िये न कि मैं सरपञ्च होना चाहता था और सरपञ्च हो गया।

सोरिन—[हँसता है] इसके पीछे तो मैं कभी नहीं पड़ा। यह तो अपने आप ही हो गया।

दोर्न—आप जानते हैं, साठ साल पर पहुँच कर हर वक्त जीवनसे असन्तोष दिखाते रहना आपको कोई शोभा नहीं देता।

सोरिन—अजब ज़िद्दी आदमी हो जी। अरे, तुम यह भी तो सोचो कि हरेक आदमी जिन्दा रहना चाहता है।

दोर्न—अरे साहब, बेवकूफ़ी तो यही है। यह तो कुदरती नियम है कि हर प्राणीका अन्त होता है।

सोरिन—तुम ऐसे आदमीकी तरह बहस करते हो जिसे जीवनमें कोई कमी नहीं रही। तुम सन्तुष्ट हो, इसलिए जीवनकी ओरसे लापरवाह हो। तुम्हारे लिए किसीकी अहमियत ही नहीं है। मैं कहता हूँ, इतने पर भी तुम मरनेको आसानीसे तैयार नहीं होओगे।

दोर्न—मौतका भय तो एक पशु-प्रवृत्ति है। आदमीको इस पर विजय पानी चाहिए। मृत्युका सच्चा और युक्ति-संगत भय तो धार्मिक लोगों को हो सकता है जो परलोक और पुनर्जन्ममें विश्वास रखते हों, क्योंकि अपने पापोंका उन्हें दण्ड मिलेगा। और आप? पहली बात तो यह कि परलोक-वरलोकमें आप विश्वास ही नहीं करते,

बात यह कि ऐसी परेशानीका कौन-सा पाप आपने किया होगा ? न्याय-विभागमें आपने पच्चीस साल नौकरी की है—यही तो ।

सोरिन—[हँसकर] अट्ठाईस !

[त्रेपलेव आकर सोरिनके पैरोंके पास एक चौकी पर बैठ जाता है । माशा अपनी आँखें एकटक उसी पर जमाये रहती है]

दोर्न—हमलोग कोन्स्तान्तिन गाव्रिलिचको काम नहीं करने दे रहे ।

त्रेपलेव—नहीं-नहीं, ऐसी कोई बात नहीं ।

मेद्वीद्वेंको—आपसे एक बात पूछूँ डाक्टर साहब, आपको कौन-सा शहर सबसे अधिक अच्छा लगा ?

दोर्न—जनेवा !

त्रेपलेव—जनेवा क्यों ?

दोर्न—वहाँकी सड़कों पर क्या गजबकी ज़िन्दगी है ! सन्ध्याको ज़रा आप होटलसे निकलकर सड़कों पर जाइये—सारी सड़कें भीड़से ठसाठस मिलेंगी । आप भीड़में, निर्लक्ष्य टेढ़े-सीधे, आड़े-तिरछे चारों तरफ़ भटकते फिरेंगे......भीड़के साथ जिन्दा रहेंगे—मानसिक रूपसे एक होकर इस बात पर विश्वास कर उठेंगे कि 'विश्वात्मा'की बात सम्भव है—जैसे नीना जरेश्न्याने तुम्हारे खेलमें अभिनय किया था न......अरे हाँ, बात पर बात याद आई—आजकल वह कहाँ है ? कैसी है आजकल ?

त्रेपलेव—उम्मीद तो है, कि बिल्कुल ठीक है !

दोर्न— मुझे किसीने बताया था कि उसकी जिन्दगी कुछ अजब हो गयी है । क्या बात हो गई ?

त्रेपलेव— डाक्टर साहब, वह एक लम्बी कहानी है ।

दोर्न—तो भी संक्षेपमें ही बता दो ।

[चुप्पी]

त्रेपलेव— वह घरसे भाग गयी थी और त्रिगोरिनके साथ उसका कुछ किस्सा चलता रहा। इतना तो जानते हैं न?

दोर्न—हाँ, यह तो पता है।

त्रेपलेव—फिर वह माँ बनी। बच्चा मर गया। और जैसी कि उम्मीद थी, त्रिगोरिन उससे ऊब चुका था, इसलिए वह अपने पुराने सम्पर्कोंमें वापिस आ गया। सच पूछा जाय तो उसने उन्हें कभी छोडा ही नही था, बल्कि अपने उसी ढुल-मुल 'हाँ-नहीं' के ढंगपर दोनो नावों पर सवार रहता था। सुन-सुनाकर जो कुछ मैं समझ पाया हूँ वह यह कि अब नीना का व्यक्तिगत जीवन तो बिल्कुल चौपट ही समझिये।

दोर्न—और रंगमचके जीवनका क्या हुआ?

त्रेपलेव—मेरा विचार है उसकी हालत उससे भी बुरी है। मॉस्कोके पास, किसी ऐसे रद्दीसे थियेटरमें जहाँ लोग छुट्टियाँ बिताने पहुँचते हैं, आप पहली बार जनताके सामने तशरीफ़ लायीं......और फिर गाँव-गाँव भटकती फिरीं. ....इस पूरे समय मैंने उसे कभी भी आँखोंसे ओझल नहीं होने दिया। जहाँ-जहाँ वह गयी मैं भी पहुँचा। पार्ट वह हमेशा बड़े-बडे ही लेती थी; लेकिन अभिनय बडा भोडा, बिल्कुल नीरस, चीख-चीखकर और बुरी तरह मुँह बनाकर करती थी। कुछ क्षण ऐसे भी होते थे जब उसकी प्रतिभा खिलकर आती थी जैसे मंच पर रोने और मरनेके दृश्योंमें......लेकिन गनीमत बस वहीं तक थी।

दोर्न—तो क्या सचमुच उसमें 'प्रतिभा' थी?

त्रेपलेव—यह कहना तो बडा मुश्किल है। मेरा तो खयाल है कि थी। मैं उसे देखता था लेकिन वह जानबूझकर आँखें फेर लेती थी, नौकर लोग मुझे उसके होटलमें जाने नहीं देते थे। मै उसकी मानसिक अवस्थाको समझता था और कभी मिलनेका हठ नहीं करता था

[रुक कर] इससे ज्यादा और क्या बताऊँ ? बादमें, जब मैं घर लौट आया तो उसके कुछ पत्र मिले......बड़े प्यार, समझदारीसे भरे दिलचस्प पत्र ! वह खुद कभी इस बातको मुँह पर नहीं लायी लेकिन महसूस उसे भी होता रहा कि वह भीतर दिलकी गहराईमें कहीं व्यथित है ......उसकी हर लाइनमें उसकी दुखती और चटखती रगें जैसे बोलती थीं, जैसे उसकी कल्पनाकी धुरी खो गयी हो। अपने हस्ताक्षरोंकी जगह हंसिनी बना देती है, पुश्किनकी "मत्स्य-कन्या"मे पन-चक्कीवाला हमेशा कहता है 'मै कौआ हूँ, मैं कौआ हूँ' इसी तरह वह अपने पत्रोंमें हमेशा लिखती रहती है कि मै 'हंसिनी हूँ'......अब वह फिर लौट आयी है।

दोर्न—यहाँ ? तुम्हें कैसे मालूम ?

त्रेपलेव—इसी गॉवमे एक सरायमें ठहरी है। पिछले पॉच दिनसे यही है। मैं उससे मिलने गया था। मार्या इलियिनिश्ना भी गयी थी, लेकिन वह तो किसीसे भी नहीं मिलना चाहती......। सिमियन सिमोनोविच कहते थे कि उन्होंने एक दिन दोपहर बाद उसे कस्बे से डेढ़ मील दूर एक खेतमें देखा था।

मेद्वीदेंको—जी हॉ—मैने देखा था। वह क़स्बेकी तरफ़ जा रही थी। मैंने झुककर नमस्कार भी किया, पूछा हमलोगोंसे मिलने क्यो नहीं आ रहीं। बोलीं, 'आऊँगी कभी'।

त्रेपलेव—वह नहीं आयेगी [चुप रहकर] उसके बाप और सौतेली मॉने उसे अपना कुछ भी मानने से इन्कार कर दिया है। उन्होंने चौकीदार बैठा दिया है कि वह घरके पास तक न फटकने पाये [डाक्टरके साथ-साथ लिखने की मेज़ तक जाता है] डाक्टर साहब, काग़ज़ पर फिलॉसफ़ी बघारना कितना आसान है, लेकिन जीवन कितना कठोर है !

सोरिन—लड़की बड़ी ही सुन्दर थी।

दोर्न—क्या कहा ?

सोरिन—मैंने कहा, लड़की बड़ी सुन्दर थी। खुद सरपंच सोरिन साहब भी एक बार उसे प्यार करते थे।

दोर्न—वही पुराना पचड़ा।

[सोरिनकी हँसी सुनाई देती है]

पोलिना—मुझे लगता है, वे लोग स्टेशनसे लौट आये।

त्रेपलेव—हाँ, बाहर अम्माकी आवाज़ लगती है।

[आर्कदीना, त्रिगोरिन और उनके साथ-शार्मयेवका प्रवेश]

शार्मयेव—[प्रवेश करते हुए] आँधी-पानीमें मुरझाते पेड़की तरह हम लोग तो दिन-दिन बुड्ढे होते जा रहे हैं लेकिन [आर्कदीनासे] आप बिल्कुल वैसी ही हैं... ..वही सोफ़ियाने रंगीन कपड़ेका ब्लाउज, वही उल्लास, वही रौब-शान......

आर्कदीना—मुझे फिरसे नजर लगाना चाहते हो क्या ? दुष्ट कहींके।

त्रिगोरिन—प्योत्र निकोलायेविच, कैसे हैं आप ? वैसे ही बीमार चले जा रहे हैं। यह तो अच्छी बात नहीं है [उमँग कर माशाको देखते हुए] और मार्या इल्यिनिश्ना आप ?

माशा—मेरी अभी तक याद है आपको ? [हाथ मिलाती है]

त्रिगोरिन—शादी हो गयी ?

माशा—बहुत पहले ही।

त्रिगोरिन—खुश तो हो ? [दोर्न और मैद्वीद्वेंकोका ज़रा झुककर अभि-वादन करता है फिर हिचकिचाता-सा त्रेपलेवके पास जाता है] इरीना निकोलायव्ना बता रही थीं कि तुमने सारी पुरानी बातें भुला दी हैं—और अब मुझसे नाराज़ नहीं हो।

[त्रेपलेव उसका हाथ पकड़े रहता है]

आर्कदीना—[बेटे से] बोरिस अलैक्सीविच वह पत्रिका लाये हैं जिसमें तुम्हारी नई कहानी छपी है।

त्रेपलेव—[पत्रिका लेकर, त्रिगोरिन से] शुक्रिया। आपने बड़ा कष्ट किया।

[बैठते हैं]

त्रिगोरिन—तुम्हारे प्रशंसकोंने तुम्हे बधाइयाँ भेजी है। मॉस्को और पीटर्सबर्गमें तुम्हारी चीज़ोंके लिए बड़ा उत्साह है। मुझसे लोग लगातार तुम्हारे बारेमें पूछते रहते है। लोग पूछते हैं, तुम कैसे लगते हो, कितने बड़े हो, काले हो या गोरे। तुम हमेशा नकली नामसे लिखते हो न, इसलिए कोई तुम्हारा असली नाम ही नहीं जानता। तुम लोहेकी दीवारकी तरह रहस्यमय हो।

त्रेपलेव—कुछ दिनों ठहरेंगे न ?

त्रिगोरिन—नहीं, मै सोचता हूँ कि कल मुझे मॉस्को लौट जाना चाहिए। हाँ, मुझे लौटना ही है। जल्दी ही अपना उपन्यास खत्म कर देना है। इसके अलावा कहानियोंके एक संग्रह प्रकाशनका भी मैंने वचन दे दिया है। सच पूछो तो सब वही पुरानी रफ्तार है।

[जब ये लोग बातें करते हैं तो, आर्कदीना और पोलिना कमरेके बीचमें ताश खेलनेकी मेज़ ला रखती हैं। शार्मयेव मोमबत्ती जलाकर कुर्सियाँ ठीक करता है। आलमारीमें से एक 'लोटो' (जुएका चक्कर) निकाल लिया जाता है]

त्रिगोरिन—मौसम मेरे आनेसे खास खुश नहीं लगता। बड़ी भयानक आँधी है। कल सुबह तक अगर ठीक हो जाय तो मै झील-पर मछली पकड़ने जाऊँगा। मेरे मनमें बाग़ और उस जगहको भी

जरूर देखनेकी इच्छा है जहाँ तुम्हारे नाटकका अभिनय हुआ था—तुम्हें याद है न ! दिमागमें एक कहानीका प्लॉट है—और जहाँ यह कहानी घटित होती है उस दृश्यकी सारी स्मृतियोंको मैं फिरसे दुहरा लेना चाहता हूँ ।

माशा—[पिता से] बापू, मास्टर साहबको एक घोडा दे दीजिए न । *उन्हें अब घर चला जाना चाहिए ।*

शामर्येव—[मज़ाक उड़ाकर] घर जाना चाहिए—घोडा ! [तैशसे] तुम खुद ही देखो न, अभी तो घोड़े स्टेशनसे लौटकर आये हैं । इस समय तो उन्हें मैं कहीं भी नहीं भेजूँगा ।

माशा—और भी तो घोड़े हैं । [अपने बापको कुछ न बोलता देखकर, हाथ झटक देती है] तुमसे तो किसी भी काम की उम्मीद नहीं ।......

मैद्वीद्वेंको—*माशा, मैं पैदल जा सकता हूँ, वाकई......*

पोलिना—[गहरी साँस लेकर] ऐसे मौसममें पैदल ! [ताश खेलनेकी मेज़के सहारे बैठती है] अच्छा बन्धुओ, आइए ।

मैद्वीद्वेंको—चार मील ही तो है । अच्छा नमस्कार ! [अपनी पत्नीके हाथको चूमता है] माताजी नमस्कार ! [उसकी सास बड़े बेमनसे चुम्बनके लिए अपना हाथ उधर बढ़ा देती है] अगर बच्चेकी बात न होती तो मैं किसीको तङ्ग न करता [सब लोगोंको झुककर प्रणाम करता है] अच्छा विदा......[बड़े हिचकिचातेसे क़दमोंसे चला जाता है]

शामर्येव—सीधा चला जायेगा अपने आप । आखिर कोई लाट साहब तो है ही नहीं ।

पोलिना—[मेज़पर हाथ थपथपाकर] आओ भाइयो, क्यों बेकार वक्त बरबाद किया जाय। फिर अभी हमें खाना खानेका बुलावा आ जायेगा।

[शार्मयेव, माशा और दोर्न मेज़के चारों ओर बैठ जाते हैं]

आर्कदीना—[त्रिगोरिनसे] जब जाड़ेकी लम्बी-लम्बी सन्ध्याएँ आ जाती हैं—तो सब लोग यहाँ 'लोटो' खेलते हैं। देखो, जिस 'लोटो' से माँ बचपनमें, हमारे साथ खेला करती थी यह वही 'लोटो' है। खानेसे पहले एक बाज़ी खेलोगे? [त्रिगोरिनके साथ मेज़-पर बैठती है] देखनेमें यह खेल बड़ा नीरस-सा है; लेकिन थोड़ा-सा सीख लेनेपर इतना रूखा नहीं लगता। [हरेकको तीन-तीन पत्ते बाँटती है]

त्रेपलेव—[पत्रिकाके पन्ने पलटते हुए] इन्होंने खुद तो अपनी कहानी पढ़ली है लेकिन मेरी कहानीके पन्ने भी नहीं चीरे हैं [पत्रिका को पढ़नेकी मेज़पर रख देता है, फिर बाँयीं ओर दरवाज़ेकी ओर जाता है। जैसे ही माँके पाससे गुजरता है, माँके सिरका चुम्बन लेता है]

आर्कदीना—कोस्त्या, तुम नहीं खेलोगे?

त्रेपलेव—माफ़ करना माँ, मेरा मन नहीं कर रहा......मैं बाहर घूमने जा रहा हूँ......[जाता है]

आर्कदीना—चाल दस कोपेककी है। डाक्टर साहब, ज़रा मेरी ओरसे भी चल दीजिए।

दोर्न—अच्छी बात है।

माशा—सब कोई अपनी-अपनी चाल चल चुके? अब मैं शुरू करती हूँ... बाईस।

आर्कदीना—ठीक।

माशा—तीन।

दोर्न—ठीक।

माशा—तीन आपने चला? आठ! इक्यासी! दस।

शामयेव—ऐसे मत घबराओ।

आर्कदीना—हार्कोवमें मेरा ऐसा शानदार स्वागत हुआ कि मज़ा आ गया। अब भी आनन्दसे मेरा सिर चकरा रहा है!

माशा—चौंतीस।

[नेपथ्यमें व्यथापूर्ण 'वाल्ज़' की धुनें बजती सुनाई देती है]

आर्कदीना—विद्यार्थियोंने बाकायदा मेरा सत्कार किया......तीन डलिया भरकर फूल...दो मालाएँ और साथमें यह......[गलेमें लगी जड़ाऊ पिन खोलकर मेज़पर रखती है]

शामयेव—हाँ, यह है एक चीज!

माशा—पचास।

दोर्न—पूरे पचास?

आर्कदीना—उस दिन मैंने बड़े शानदार कपड़े पहने थे। और कुछ चाहे मैं न जानती होऊँ, कम-से-कम कपड़े पहननेका सलीका जानती हूँ।

पोलिना—कोस्त्या पयानो बजा रहा है—बेचारा बड़ा दुखी और व्यथित है।

शामयेव—अखबारोंमें भी उन्हें भला-बुरा कहा गया है।

माशा—सतहत्तर।

आर्कदीना—अरे, यह भी कोई बात हुई। इस बातपर उसे इतना ध्यान नहीं देना चाहिए।

त्रिगोरिन—असलमें अभी तक वह जम नहीं पाया है। अपनी लाइनपर अभी उसने ठीकसे अधिकार नहीं प्राप्त किया। हमेशा उसके लिखे में कुछ अद्भुत, कुछ अस्पष्ट, और कभी-कभी तो पागल-पन-सा रहता है। किसी भी पात्रमें ज़िन्दगी नहीं......

माशा—ग्यारह।

आर्कदीना—[सोरिनको इधर-उधर देखकर] पेत्रूशा, आप तो बहुत उकता रहे होंगे ? [चुप रहकर] यह तो सो गये।

दोर्न—असली सरपञ्च हमेशा सोता रहता है।

माशा—सात ! नब्बे ?

त्रिगोरिन—मैं भी अगर किसी ऐसी जगह, झीलके किनारे रहता होता तो आप समझते हैं कुछ लिख पाता ? मैं तो वहाँके प्रभावसे ही ऐसा सम्मोहित हो जाता कि मछली मारनेके सिवा शायद दिनभर कुछ भी न करता।

माशा—अट्ठाईस ?

त्रिगोरिन—झींगा मछलीको पकडकर कैसा मज़ा आता है।

दोर्न—आप चाहे जो कहें, मैं तो कान्स्तान्तिन गाव्रिलिचकी दाद देता हूँ। उसमें कुछ है, ज़रूर कुछ है उसमें ! वह कल्पना-चित्रोंके माध्यमसे सोचता है......उसकी कहानियाँ बड़ी ही सजीव, जानदार होती हैं—मैं तो उससे बुरी तरह प्रभावित हूँ। उसमें सबसे बुरी बात सिर्फ़ यही है कि उसका अपना कोई निश्चित लक्ष्य नहीं है। वह पाठकके हृदयमें प्रभाव पैदा तो कर लेता है, मगर खाली प्रभावको लेकर ही तो आप आगे नहीं बढ़ सकते। अच्छा, इरीना निकोलायेव्ना,—तुम्हारा बेटा एक लेखक है इससे तुम्हें खुशी है ?

आर्कदीना—कभी कल्पना कर सकते हैं आप कि मैंने उसकी लिखी एक भी चीज नहीं पढ़ी होगी? मुझे कभी फुर्सत ही नहीं मिली।

माशा—छब्बीस!

[त्रेपलेव चुपचाप प्रवेश करके मेज़ पर बैठ जाता है]

शामयेव—ओ हाँ, बोरिस अलैक्सीविच, आपकी एक चीज अभी भी हमारे पास रखी है।

त्रिगोरिन—क्या चीज़?

शामयेव—कोन्स्तान्तिन गाव्रिलिचने एक हंसिनीका शिकार किया था और आपने मुझे देकर कहा था कि मैं उसमें आपके लिए मसाला लगवा दूँ।

त्रिगोरिन—मुझे तो याद नहीं है [सोचते हुए] नहीं, मुझे बिल्कुल याद नहीं है।

माशा—छयासठ। एक!

त्रेपलेव—[झटकेसे खिड़की खोलकर बाहर सुनता है] कैसा घना अँधेरा है। मालूम नहीं, क्यों आज मेरा मन बड़ा उद्विग्न हो रहा है।

आर्कदीना—कोस्त्या, खिड़की बन्द कर दो न, हवा बड़ी तेज़ है।

[त्रेपलेव खिड़की बन्द कर देता है]

माशा—अट्ठासी।

त्रिगोरिन—बाज़ी मेरी रही।

आर्कदीना—[उल्लाससे] शाबास। शाबास।

शामयेव—बहुत खूब।

आर्कदीना—इनकी तो हर बातमें किस्मत साथ देती है। [उठते हुए] आइए, अब चलकर कुछ खा-पी लिया जाय। हमारे अतिथि

'महान् पुरुष'ने अभी कुछ खाया नहीं है। खाना खानेके बाद हम लोग फिर जमेंगे। [त्रेपलेवसे] कोस्त्या, लिखना छोड़ो और चलकर खाना खा लो।

त्रेपलेव—मेरा मन नहीं कर रहा, माँ। मुझे भूख नहीं है।

आर्कदीना—जैसी तुम्हारी इच्छा। [सोरिनको जगाती है] पैत्रूशा, खाना......[शार्मयेवकी बाँह पकड़कर] हाँ, तो मैं तुम्हें अपने हार्कोवके स्वागतके बारेमें बता रही थी।

[पोलिना, मेज़पर रखी मोमबत्तियाँ बुझा देती है। फिर वह और दोर्न कुर्सी धकेलते ले जाते हैं। सब बायीं ओरके दरवाज़ेसे चले जाते हैं। मञ्चपर केवल मेज़पर बैठकर लिखता त्रेपलेव रह जाता है]

त्रेपलेव—[लिखनेकी तैयारीमें जो कुछ पहले लिखा है उसे एक बार पढ़ता है] मैंने नये कला-रूपोंके बारेमें बहुत कुछ कहा है लेकिन मुझे धीरे-धीरे ऐसा लगता है जैसे मैं स्वयं एक रूढ़िमें फँसता जा रहा हूँ। [पढ़ता है] "दीवारका बड़ा-सा पोस्टर चीख-चीख कर बोल रहा था" "अपने काले बालोंकी टोपीमें मुरझाया चेहरा!"—'चीख-चीखकर बोल रहा था', 'टोपी'—सरासर बेवक़ूफ़ी है! [लिखे को काट देता है] यहाँ मैं यों शुरू करूँगा कि "नायक पानी बरसनेकी आवाज़से जागकर उठ पड़ा"—शेष फिर आता जायेगा। दिन छिपेकी चाँदनीका वर्णन बड़ा लम्बा और ज़रूरतसे ज्यादा विवरणात्मक हो गया है...खैर त्रिगोरिनने अपना अलग ही ढंग निकाल लिया है।' अब उसे लिखनेमें मुश्किल नहीं पड़ती......वह तो सिर्फ बाँधकर पड़ी टूटी बोतलकी गर्दनके चमकने और पनचक्कीके पहिये की काली परछाँईका

वर्णन करेगा और लीजिये साहब, चाँदनी रात साकार हो उठेगी। और मैं हूँ कि दुनिया भरकी काँपती रोशनियाँ, तारोंका मन्द-मन्द टिमटिमाना, खुशबूमें महकती हवाओंपर कहीं दूरसे आते डूबते पयानोंकी स्वर-लहरियाँ, सबका वर्णन कर डालूँगा......यह सब बड़ा रूखा हो जाता है......[चुप रहकर] मुझे तो धीरे-धीरे यह विश्वास होता जा रहा है कि मूल सवाल नये और पुराने कला-रूपोंका है ही नहीं। आदमीको बिना किसी भी कला-रूपका ध्यान किये, जो मनमें आये लिख डालना चाहिए। क्योंकि वही तो सीधा उन्मुक्त रूपसे उसकी आत्मासे उभरकर आता है [उसकी मेज़के सबसे पासवाली खिड़कीपर थपथपाहट होती है] कौन है ? [खिड़कीसे बाहर झाँकता है] कहीं कुछ भी नहीं दिखाई देता .....[काँचके दरवाज़े खोल देता है और बगीचेमें देखता है] किसीके भागते पैरोंकी आवाज़ है......[पुकारता है] कौन है ? [बाहर जाता है और बरामदेमें उसके तेज़ीसे चलनेकी आवाज़ सुनाई देती है। आधे मिनट बाद ही नीना जरेश्न्याके साथ वापिस आता है] नीना, नीना।

[नीना उसकी छातीपर सिर रखकर घुटी-घुटी सिसकियोंमें बिलख पड़ती है]

त्रेपलेव—[व्यथित उद्विग्न होकर] नीना ! नीना। तुम आ गईं... तुम...जैसे इस बातको मेरा मन पहलेसे ही जानता हो...सारे दिन मेरा हृदय व्यथासे कराहता रहा है...व्याकुल रहा है [उसका चादरा और हैट उतारता है] आह, मेरी प्राण, मेरी निधि... आखिर तुम आ गयीं। रोओ नहीं...मत रोओ......

नीना—कोई है यहाँ ?

त्रेपलेव—कोई भी नहीं है।

नीना—दरवाजा बन्द कर लो। कोई आ जायेगा।

त्रेपलेव—कोई नहीं आयेगा।

नीना—मुझे पता है इरीना निकोलायेव्ना भी तो यहीं है। चटखनी लगा लो।

त्रेपलेव—[दायीं ओरका दरवाज़ा बन्द करके बायीं ओरके दरवाज़ेकी ओर जाता है] इस तरफ़वाले दरवाज़ेमें चटखनी ही नहीं है। मै यहाँ कुर्सी अडाये देता हूँ। [दरवाज़ेके आगे कुर्सी लगा देता है] घबराओ मत, कोई नहीं आयेगा......

नीना—[ध्यानसे उसका चेहरा देखते हुए] मुझे जरा अपना चेहरा देख लेने दो......[चारों ओर देखकर] यहाँ बाहरकी अपेक्षा गरम है. ....बड भला लगता है। यहाँ तो पहले बैठक थी न। मैं क्या बहुत बदल गयी हूँ ?

त्रेपलेव—हाँ नीना, तुम काफ़ी दुबली हो गई हो—आँखें बड़ी-बडी निकल आई हैं......नीना, कैसा आश्चर्य है, मैं तुम्हें फिर अपने पास देख रहा हूँ—मुझे अपना चेहरा क्यों नहीं देखने देती ? इतने दिनोंसे क्यो नहीं आई ? मुझे मालूम है, तुम्हे यहाँ एक हफ्ता होने आ रहा है......मैं तो रोज कई-कई बार तुम्हारे पास जाता रहा—खिडकीके नीचे भिखारीकी तरह खडा ताकता रहा......

नीना—मै डरती थी कि तुम मुझे दुतकार दोगे—मै रोज़ सपना देखती जैसे तुम मुझे ऐसी निगाहोंसे देखते हो मानो पहचानते ही नहीं... काश, मैं तुम्हें समझ पाती...जबसे मैं आई हूँ यही......यहीं झीलके किनारे भटकती रही हूँ। तुम्हारे घरके पास कई बार आई, लेकिन भीतर घुसनेकी हिम्मत नहीं पड़ी। आओ, बैठ

जायें [दोनों बैठ जाते हैं] आओ, बैठकर बातें करें,—खूब बातें करें। यहाँ कैसा अच्छा लग रहा है, गरम और बड़ा सुहावना है.. हवाकी साँय-साँय सुन रहे हो न......तुर्गनेवकी लाइनें हैं : वह आदमी कैसा सौभाग्यशाली है, जिसके पास ऐसी रातमें एक मकानका सहारा है—जिसके पास अपना एक गर्म कोना है ? मैं तो हंसिनी हूँ......ना, यह पंक्तियाँ नहीं हैं [माथ खुजलाती है] हाँ याद आया......तुर्गनेवने कहा है" "हे भगवन्, बेठिकाना भटकने वालों पर दया करना"..... कुछ भी तो नहीं हो पाया...[रोती है]

त्रेपलेव—नीना, अरे तुम फिर रोने लगीं......नीना।

नीना—मेरे रोनेपर ध्यान मत दो। मेरे लिए यही अच्छा है......दो सालसे मैं बिल्कुल भी तो नहीं रो पाई हूँ। कल दिन छिपनेके बाद मैं बागमें देखने आई थी कि हमारा वह स्टेज क्या अभी भी बना है ? वह बना था। तब दो सालमें पहली बार मैं बैठकर वहाँ रोई, खूब रोई। इससे जैसे मेरे दिलपर जमा हुआ बोझा उतर गया—मन हल्का होगया, देखो न, अब कहाँ रो रही हूँ ! [उसका हाथ पकड़ लेती है] तो अब तुम लेखक बन ही गये—तुम लेखक हो, मैं अभिनेत्री हूँ—हम दोनों ही भँवरोंमें भटकते रहे हैं। पहले कैसी बच्चोंकी तरह खुशी-खुशी मैं सोया करती थी—सुबह गाती हुई उठा करती थी, तुम्हें प्यार करती थी और यश पानेके सपने देखा करती थी। और अब ? कल तड़के ही मुझे थर्ड क्लासमें येलेत्स पहुँच जाना है...साधारण किसानोंके साथ बैठकर। येलेत्समें नया-नया रुपया कमा लेनेवाले व्यापारी अपने-अपने सत्कारसे मेरी नाकमें दम कर देंगे। सच, जिन्दगीका ढर्रा बड़ा रसहीन हो गया है त्रेपलेव।

त्रेपलेव—येलेत्स क्यों जाओगी ?

नीना—मैंने जाड़े भरके लिए एक जगह वायदा कर लिया है। अच्छा, अब चलनेका समय हो गया।

त्रेपलेव—नीना, मैंने तुम्हें गालियाँ दीं, नफ़रत की, मैंने तुम्हारे पत्र और चित्र फाड़ फेंके, फिर भी पता नहीं क्यों हर क्षण मैं जानता था कि मेरी आत्मा तुम्हारी आत्मासे अनन्त कालके लिए बँधकर एकाकार हो गई है। तुम्हारे प्यारको निकाल फेंकना मेरी ताकतसे बाहर है। नीना, जबसे मैंने तुम्हें खोया और अपनी रचनायें छपाने लगा हूँ—ज़िन्दगी असहनीय हो गई है...मैं बहुत व्यथित हूँ जैसे किसीने मेरी जवानीको नोंच फेंका हो और मैं नब्बे लम्बे-लम्बे सालोंसे इस दुनियामें रहता चला आ रहा होऊँ...बार-बार तुम्हारा नाम लेता हूँ और उस धरतीको चूम लेता हूँ, जहाँ तुम चला करती थी...जिधर देखता हूँ तुम्हारा चेहरा दिखाई देता है...वही मधुर-मधुर मुसकान जिसने मेरे जीवनके सर्वश्रेष्ठ दिनोंको आलोकित किये रखा।

नीना—[भ्रान्त स्वरमें] ऐसा क्यों बोलते हो......मुझसे क्यों कह रहे हो यह सब ?

त्रेपलेव—दुनियामें मैं अकेला हूँ......किसीके प्यारकी गरमाहट मुझे नहीं मिली. ...मेरे लिए जैसे वह है ही नहीं। मैं ऐसा जड़ और जम गया हूँ जैसे तहखानेमें दबा रहा होऊँ,—मैं जो भी लिखता हूँ सब बड़ा रूखा-रूखा नीरस और अवसाद भरा होता है। नीना, मैं प्रार्थना करता हूँ रुक जाओ, या मुझे भी अपने साथ ले चलो; यहाँ से दूर......

[नीना जल्दीसे अपना टोप और चादरा ओढ़ लेती है]

त्रेपलेव—यह क्या है नीना ? भगवान्‌के नामपर नीना...[जब वह अपनी चीज़ें पहनती है तो देखता रहता है]

[चुप्पी]

नीना—मेरे घोड़े फाटकपर खड़े होंगे। मुझे छोड़ने मत चलो—मैं अकेली ही चली जाऊँगी......[आँसू भरी आँखोंसे] मुझे ज़रा-सा पानी दो।

त्रेपलेव—[पानी देता है] इस वक्त कहाँ जाओगी ?

नीना—शहर ? [चुप रहकर] इरीना निकोलायेव्ना यहीं है क्या ?

त्रेपलेव—हाँ, बृहस्पतिको मामाकी तबियत बहुत खराब हो गई थी। तभी हमने तार देकर बुला लिया था।

नीना—तुमने मुझसे यह क्यों कहा कि जहाँ हमलोग घूमा करते थे उस धरतीको तुमने चूम लिया ? काश, कोई मुझे मार देता। [मेज़ पर झुककर] आह, कितनी चूर-चूर हो गई हूँ मैं। मन होता है कभी सुस्ता पाती, काश ज़रा-सा आराम कर पाती। [सिर उठाकर] मैं हंसिनी हूँ ..नहीं झूठ है...मैं सिर्फ़ एक अभिनेत्री हूँ...हाय...खैर...[आर्कदीना और त्रिगोरिनकी हँसी सुनती है, सुनती रहती है, फिर दरवाज़ेके पास जाकर तालीके छेदसे देखती है] अच्छा, तो वह भी यहीं है [त्रेपलेवकी ओर घूमकर] आह, ठीक है...कुछ नहीं...नहीं...रङ्गमञ्चमें उसकी कोई आस्था नहीं है—वह मेरे सपनोंकी खिल्ली उड़ाया करता था और धीरे-धीरे रङ्गमञ्चसे मेरा विश्वास खुद भी हट गया...मेरा दिल बुझ गया...और फिर मैं प्यार और ईर्ष्यामें ही परेशान रहने लगी...हमेशा अपने बच्चेकी ही बात सोचती—मैं बड़ी क्षुद्र और ओछी हो गई थी...जब भी अभिनय करती तो ग़लत-सलत...मेरी समझमें ही न आता कि बाँहोंको कैसे

चलाऊँ। मञ्चपर आती तो जान ही न पाती कि कैसे खडी होऊँ, आवाज़ वशमें नहीं रहती। जब आदमी खुद जानता हो कि उसका अभिनय बडा भद्दा हो रहा है तब उसे कैसा लगता है—तुम नहीं समझ सकते त्रेपलेव, मैं तो हंसिनी थी...नहीं...झूठ... याद है तुम्हें तुमने एक बार एक हंसिनीका शिकार किया था? अचानक एक आदमी आया—उसने उसे देखा और यों ही मन बहलानेको खेल-खेलमें उसका शिकार कर डाला...कहानीका एक विषय। नहीं...यों नहीं [माथा खुलजाती है] क्या कह रही थी मैं?...मै रङ्गमञ्चकी बात कह रही थी! नहीं, अब मैं पहले जैसी थोड़े ही रह गई हूँ...अब सचमुच मै ऐक्ट्रैस हूँ, जोश और उल्लाससे अभिनय करती हूँ—जब मञ्चपर उतरती हूँ और यह सोचती हूँ कि कैसी सुन्दर लग रही होऊँगी—उस समय मानो एक नशेसे झूम उठती हूँ...पर अब जबसे यहाँ हूँ, रोज़ खूब घूमने जाती हूँ। सोचती रहती हूँ...विचार करती रहती हूँ और मुझे लगता है जैसे मेरी आत्मा में हररोज़ अधिक-अधिक शक्ति आती जा रही है...कोस्त्या, अब तो मुझे पता चल गया है......कि चाहे लिखना हो या अभिनय करना—हमारे काममें, यश, प्रशंसा और उस सबका महत्त्व नहीं है जिसके सपने हम रात-दिन देखा करते हैं—महत्त्व है धीरज रखनेका, धैर्यका! गलेमें क्रॉस लटकाकर अपनी आस्था उसपर केन्द्रित कर देनेका। अब मेरे मनमें आस्था है और इस सबसे इतनी तकलीफ भी नहीं होती...अपने पेशेके बारेमें सोचती हूँ तो ज़िन्दगीसे डर नहीं लगता......

त्रेपलेव—[व्यथासे] तुमने तो अपना रास्ता खोज लिया है। नीना, तुम जिस रास्तेसे जा रही हो—उसे तुम जानती हो। लेकिन

मै तो अभी भी सपनों और कल्पनाके सूने अवकाशमे ही इधरसे उधर भटक रहा हूँ, समझमें नहीं आता इस सबका क्या करूँ ? मेरी कहीं आस्था नहीं है, मुझे यह भी नहीं पता कि मेरा पेशा क्या है ?

नीना—[बाहर कुछ सुनकर] चु...प मैं जा रही हूँ......विदा दो, जब कभी बहुत बड़ी ऐक्ट्रैस हो जाऊँ तो आना और देखना। वचन देते हो न ? लेकिन अब...[उसका हाथ दबाती है] बहुत देर हो चुकी है, मुझसे अपने पाँवोपर खडा नही रहा जा रहा...मै चूर-चूर हो गई हूँ—मैं भूखी हूँ।

त्रेपलेव—रुको, मै कुछ खाना ले आऊँ तुम्हारे लिए ?

नीना—ना......ना, मुझे छोडने मत आना। मैं अकेली खुद चली जाऊँगी.. पास ही तो मेरे घोड़े है...तो तुम्हारी माँ त्रिगोरिनको अपने साथ ले आई...? ठीक है...कोई बात नहीं। त्रिगोरिनसे मिलो तो उन्हें कुछ बताना मत......मैं उन्हें प्यार करती हूँ.. ...पहलेसे भी ज्यादा प्यार करती हूँ......कहानीका एक विषय......मैं उन्हें चाहती हूँ...बुरी तरह चाहती हूँ—जी जानसे चाहती हूँ। कैसे अच्छे थे वे पहले दिन, कोत्स्या—तुम्हें याद है न ? कैसी, निर्मल प्यार और आनन्दसे भरी निष्कलुष जिन्दगी थी...हम लोगोंके दिलोंमें कैसी भावनाएँ लहराया करती थीं... फूलों जैसी कोमल और सलोनी...याद है न ? [दुहराती है] आदमी, शेर, चीलें और तीतर—बारहसिंघे, बतखें, मकड़े, पानीमें चुप-चुप तैरने वाली मछलियाँ, दिखाई न देनेवाले छोटे-छोटे कीड़े-मकोड़े, सारे प्राणी, सारे जीव, सारे चेतन अपने दुखोंका चक्र पूरा करके समाप्त हो चुके हैं......हज़ारों सालोंसे धरतीने किसी

जीवित प्राणीको अपनी गोदमें जन्म नहीं दिया है......और यह बेचारा चाँद अपने प्रकाश-दीपको जलाये रखनेका उद्देश्य भूल चुका है......घासके मैदानोंमें अब बगुले चीखकर चौंक नहीं पड़ते......और नीबूके पेड़ोंपर भौंरोंकी भनभनाहट नहीं गूँजती
[आवेशसे त्रेपलेवका आलिंगन कर लेती है और शीशों वाले दरवाज़ेमें भाग जाती है]

त्रेपलेव—[कुछ देर चुप रहकर] अगर किसीने बागमें इसे देख लिया और माँ को बता दिया तो बुरा होगा. ....माँ को बहुत तकलीफ़ होगी. ...
[दो मिनट तक वह अपनी पाण्डु-लिपियोंको फाड़-फाड़कर मेज़के नीचे फेंकता रहता है। फिर दायीं ओरके दरवाज़ेकी चटख़नी खोलकर बाहर चला जाता है]

दोर्न—[बायीं ओरका दरवाज़ा खोलनेकी कोशिश करते हुए] अजब बात है। दरवाज़ेकी चटखनी बन्द लगती है...[भीतर आ जाता है, और कुर्सीको उसकी जगह रख देता है] अच्छी, खासी टिखटियाँ कुदानेवाली घुड-दौड हो गई......
[आर्कादीना, पोलिनाका प्रवेश। पीछे-पीछे बोतलोंकी ट्रे लिये हुए याकोव, माशा, फिर त्रिगोरिन और शार्मयेव आते हैं]

आर्कादीना—बोरिस अलैक्सीविचके लिए अंगूरी शराब और बीयर इधर इस मेज़पर रखो। खेलते हुए हमलोग इसे पीते भी जायेंगे। बैठिये, साहिबान।

पोलिना—[याकोवसे] साथ ही चाय भी ले आओ।
[मोमबत्तियाँ जलाकर ताशोंकी मेज़पर बैठती है]

शार्मयेव—[त्रिगोरिनको आलमारीके पास ले जाता है] यह रही वह चीज़ जिसके बारेमें मैं अभी आपसे कह रहा था। [मसाला

लगी हंसिनीको बाहर निकाल लेता है] इसीके लिए तो आपने कहा था न......

त्रिगोरिन—[हंसिनीको देखते हुए] मुझे तो याद ही नहीं आ रहा [सोचते हुए] कुछ भी याद नहीं आता।

[मञ्चके दाहिनी ओरसे धमाकेकी आवाज़। सब चौंक पड़ते हैं]

आर्कदीना—[घबराकर] क्या हुआ ?

दोर्न—कुछ नहीं, कुछ नहीं। मेरे दवाके बक्समें कोई चीज फूट गई होगी...चिन्ताकी बात नहीं है [दाहिनी ओरके दरवाज़ेसे बाहर जाकर आधे मिनटमें ही वापिस आता है] हाँ, वही तो बात थी। ईथरकी एक बोतल फट गई [गुनगुनाता है] "मैं खड़ा हूँ मुग्ध तेरे सामने फिर......

आर्कदीना—उफ़, मै कैसी घबरा गई थी...मुझे उस दिनकी याद आ गई जब... [अपने हाथोंमें चेहरा छिपा लेती है] इस धमाकेसे मेरा सिर बुरी तरह चकरा उठा है।

दोर्न—[पत्रिका के पन्ने पलटते हुए त्रिगोरिनसे] दो महीने पहले इसमें एक लेख छपा था 'अमेरिकासे एक पत्र'...अच्छा, और बातोंके साथ मैं आपसे एक बात पूछना चाहता था कि...[त्रिगोरिनकी कमरमें हाथ डालकर फुट-लाइटोंकी तरफ़ लाता है] क्योंकि मुझे यह जाननेका बहुत ही शौक है [गला दबाकर धीमेसे] इरीना निकोलायेव्नाको यहाँसे किसी तरह फौरन हटा ले जाइए...बात यह है कि कोन्स्तान्तिन गाव्रिलिचने अपने गोली मार ली है......

[परदा गिरता है]

—: समाप्त :—

चैरीका बगीचा

•

पात्र

श्रीमती रैनिव्स्काया	—(ल्युबोव आन्द्रेयव्ना) चेरीके बगीच्चेकी मालकिन
आन्या	—रैनिव्स्कायाकी १७ वर्षीया पुत्री
वार्या	—रैनिव्स्कायाकी २० वर्षीया दत्तक-पुत्री
गायेव	—(लियोनिद आन्द्रीएविच) रैनिव्स्कायाका भाई
लोपाखिन	—(यार्मोलाय अलैक्सीएविच) एक व्यापारी
त्रोफ़िमोव	—(प्योत्र सर्जीएविच) एक विद्यार्थी
सिम्योनोव पिश्चिक	—एक जमीदार
चार्लोटा आइवानोव्ना	—गवर्नेस
एपिखोदोव	—(सिम्यन पेन्तालियेविच) क्लर्क
दुन्याशा	—नौकरानी
फ़ीर्स	—नौकर उम्र ८७ साल
याशा	—नौजवान नौकर

एक मुसाफ़िर, स्टेशन मास्टर, पीस आफ़िसका अफ़सर, अतिथि लोग और नौकर,

घटना-स्थल श्रीमती रैनिव्स्कायाका बगीचा ।

पहला अंक

[एक कमरा जिसे अब भी बच्चोंका कमरा कहते हैं। इसका एक दरवाज़ा आन्याके कमरेमें जाता है। झुटपुटेका समय है और घटना-क्रमके बीचमें ही सूरज उगता है। मईका महीना लग चुका है। चॅरीके पेडोंमें फूल आये हुए हैं; लेकिन बगीचेमें सुबह की ओस और ठिरन है। खिड़कियाँ बन्द हैं।]

[दुन्याशाका मोमबत्ती और लोपाख़िन का एक किताब लिये हुए प्रवेश]

लोपाख़िन—शुक्र है, गाडी आ तो गई! बजा क्या है?

दुन्याशा—करीब दो बजे होंगे [मोमबत्ती बुझा देती है] दिन तो निकल ही आया अब।

लोपाखिन—कितनी लेट है गाडी? कम-से-कम दो घण्टे तो होगी ही। [जँभाई लेकर अगड़ाई लेता है] मैं भी क्या कमालका आदमी हूँ। यहाँ स्टेशनपर उन लोगोंसे मिलनेके लिए आया, और पडकर सो गया.. ...कुर्सीपर बैठते ही आँखें लग गईं...सच-मुच, बडा बुरा हुआ...मुझे जगाया क्यों नहीं तुमने?

दुन्याशा—मैं तो समझी कि आप चले गये होंगे। [कुछ सुनकर] लो, जरूर, वे लोग ही आ रहे हैं गाडीपर।

लोपाख़िन—[सुनता है] नहीं.. . उनका सामान, इधर-उधरका ताम-झाम भी तो लेना होगा [रुककर] श्रीमती रैनिव्स्काया, पाँच साल विदेशोंमें रही है—पता नहीं अब कैसी हो गई होगी... क्या औरत है!...कितना अच्छा स्वभाव, कितनी दयालु-हृदया! जब मैं पन्द्रह सालका लड़का था तबकी मुझे याद है, उस समय

मेरे स्वर्गीय पिताजी यहीं गाँवमें छोटी-सी दूकान किया करते थे। उन्होंने एक बार ज़ोरका मुक्का मारकर मेरी नाकको लोहू-लुहान कर दिया। यहीं आँगनमें तो थे ही हम लोग। पता नहीं वे क्यों आये थे। वे खूब पिये हुए थे। मुझे सब ऐसे याद है जैसे कलकी ही बात हो। श्रीमती रेनिव्स्काया तब लड़की ही थीं बड़ी पतली-दुबली! ये मुझे मुँह धुलाने ले गईं फिर इसी कमरे में—इस बच्चोंके कमरेमें ले आईं—'मूजिक (किसान) बेटे, रोओ मत।' आप कहती हैं..."अपनी शादीके दिन रोना, तब अच्छा लगेगा..." [रुककर] मूजिक बेटा! ठीक है; मेरे पिता काश्तकार थे, लेकिन अब मुझे देखो : सफ़ेद झकझकाती वास्कट—बादामी जूते...जैसे धूलमें हीरा निकल आये। हाँ मैं रईस हूँ, लेकिन सोचो तो, सारे अपने धनके बावजूद मैं किसान था और किसान ही अब भी मैं हूँ. ....[**किताबके पन्ने पलटता है**] इस किताबको पढ़े चला जा रहा हूँ और कि कुछ सिर-पूँछ ही समझमें नहीं आ रहा......पढ़ते-पढ़ते ही नींद आने लगी।

[कुछ देर चुप्पी]

दुन्याशा—सारी रात जागे हैं कुत्ते भी। उन्हें भी तो लगता है कि मालकिन आ रही है।

लोपाखिन—अरे, यह तुम्हे क्या हो गया दुन्याशा?......

दुन्याशा—पता नहीं क्यों मेरे हाथ काँपने लगे हैं। अरे, मैं तो बेहोश हुई जा रही हूँ।

लोपाखिन—दुन्याशा! तुम्हारे साथ मुसीबत यह है कि तुम बड़ी नाजुक मिजाज़ बनती हो। कपड़े भी तुमने बड़े घरोंकी लड़कियों जैसे पहन रखे हैं—और अपना बाल बनाने का ढंग तो देखो। यह

सब अच्छी बातें नहीं हैं। आदमीको अपनी हैसियत खुद समझनी चाहिए।

[गुलदस्ता लेकर एपिखोदोवका प्रवेश । उसने एक जाकेट और बुरी तरह चरमराने वाले चमकदार जूते पहन रखे हैं। प्रवेश करते हुए गुलदस्ता गिरा देता है]

एपिखोदोव—[गुलदस्ता उठाते हुए] यह मालीने भेजा है। कहता है यह खानेके कमरेमें लगेगा [दुन्याशाको गुलदस्ता देता है]

लोपाख़िन—और मुझे ज़रा 'क्वास' (जौकी शराब) भी दे जाना !

दुन्याशा—जी, अच्छा।

[जाती है]

एपिखोदोव—आज सुबह बडी ठंड है। तीन डिग्री कोहरा है; फिर भी चॅरीके फूलों पर बहार है। यह अपने यहाँकी आब-हवा मुझे बहुत अच्छी नहीं लगती [गहरी साँस लेता है] नहीं; बिलकुल नहीं......यहाँकी आबहवा तो जैसे समयके हिसाबसे चलना जानती ही नहीं......यार्मोलाय अलैक्सीएविच, मैं जरा आपसे अपने जूतोंके बारेमें कुछ पूछना चाहता हूँ। परसों मैंने खुद इन्हें खरीदा था और ये कम्बख्त ऐसी बुरी तरह चरमराते हैं कि खुदाकी पनाह ! इनमें कौन-सा तेल लगाऊँ ?

लोपाख़िन—अच्छा, यहाँसे भाग जाओ। मैं तो परेशान आ गया तुमसे।

एपिखोदोव—मेरे ऊपर रोज एक न एक मुसीबत ही रहती है। मगर मैं तो कभी नहीं रोता, मुझे इनकी आदत पड़ गई है। हमेशा मुसकुराता रहता हूँ।

[दुन्याशाका प्रवेश। लोपाख़िनको 'क्वास' देती है]

एपिखोदोव—तो मैं चलता हूँ [एक कुर्सीसे जा टकराता है। कुर्सी लुढ़क जाती है] वाह ! [जैसे कोई बडी भारी विजयका काम

कर दिया हो] देखा। माफ कीजिये, उन्हीं मुसीबतों और दुर्घटनाओंमें से एक यह भी है ! सचमुच, कैसी मुसीबत है।

[चला जाता है]

दुन्याशा—यार्मोलाय अलैक्सीएविच, आपको एक बात बताऊँ। एपिखोदोवने मुझसे शादीका प्रस्ताव किया था।

लोपाख़िन—हाँ !

दुन्याशा—मेरी समझमें नहीं आता क्या करूँ। आदमी तो बड़ा सज्जन, बड़ा अच्छा है। पर पता नहीं कभी-कभी वह क्या बोलता है कि उसकी बात ही समझमें नहीं आती। बात बड़े अच्छे ढगसे करता है, मनको अच्छी भी लगती है, लेकिन मतलब समझमें नहीं आता। मुझे भी एक तरहसे यह पसन्द ही है और ये तो मेरे पीछे पागल ही है। बेचारा वडा अभागा है...इसके साथ रोज़ कुछ न कुछ होता ही रहता है...इसीको लेकर ये लोग इसे तंग करते हैं। उसका नाम इन्होंने 'बाईस-मुसीबतें' रख दिया है।

लोपाख़िन—[आवाज़ सुनकर] लो, अबकी बार वे ही आ रहे हैं।

दुन्याशा—वे ही लोग आ रहे हैं। हाय, यह मुझे क्या हो गया ? सारा बदन ठण्डा पड़ा जा रहा है।

लोपाख़िन—हाँ-हाँ वही लोग तो आ रहे हैं। आओ, बाहर उनसे चलकर मिल लें। पता नहीं वे मुझे पहचान लेंगी या नहीं ? उन्हें देखे हुए पाँच साल हो गये।

दुन्याशा—[काँपते हुए] मैं तो बिल्कुल बेहोश हुई जा रही हूँ—अरे मैं गिरी......

[घरके पास तक दो गाड़ियोंके आनेकी आवाज़ें। लोपाख़िन और दुन्याशा तेज़ीसे बाहर चले जाते हैं। रंगमंच ख़ाली है। बग़लके कमरोंमें शोरगुल सुनाई देता है। अपनी बेंत पर झुका

हुआ फ़ीर्स तेज़ीसे मच पार करके चला जाता है। यह श्रीमती रैनिव्स्कायासे मिलने स्टेशन गया हुआ था। पुराने ढगकी वर्दी और ऊँचा-सा टोप पहने हुए है। आप ही आप बोल रहा है]

एक आवाज़---आओ, इधर भीतर चलें।

[श्रीमती रैनिव्स्काया, आन्या, और छोटे-से कुत्तेकी जजीर पकड़े चार्लोटा आइवानोव्नाका प्रवेश। सभी सफ़री कपड़ोंमें है। वार्या कोट पहने और सिर पर रूमाल बाँधे है। गायेव सिम्योनोव पिश्चिक, लोपाखिन, दुन्याशा---छाता और एक थैला लिये हुए है। नौकर दूसरे सामान लिये हुए हैं। सब स्टेज पार करते हुए चले जाते हैं]

आन्या—आइये, इधरसे चलें। अम्मा तुम्हे याद है यह कौन-सा कमरा है ?

रैनिव्स्काया—[आनन्दविह्वल गद्गद कण्ठसे] 'बच्चोंका कमरा'।

वार्या—कैसी ठण्ड है। मेरे हाथ तो सुन्न हो गये [श्रीमती रैनिव्स्काया से] अम्मा, तुम्हारे सफ़ेद और बैगनी वाले कमरे बिल्कुल ज्योंके त्यों है, जैसे तुमने छोड़े थे।

रैनिव्स्काया—बच्चोंका कमरा ! मेरा प्यारा, सुन्दर कमरा !...जब मै छोटी थी तो यहीं सोया करती थी...[रो पड़ती है] अब मुझे लगता है जैसे फिरसे बच्ची हो गई होऊँ [अपने भाई और फिर वार्याका चुम्बन लेती है—भाईको दुबारा चूमती है] वार्या तो बिल्कुल भी नहीं बदली...वही हमेशाकी 'नन' (साध्वी) जैसी है। दुन्याशाको भी मैंने देखते ही पहचान लिया [दुन्याशाका चुम्बन लेती है]

गायेव—दो घण्टे लेट थी गाडी। क्या खयाल है आपका ? यह तुम्हारी समयकी पाबन्दी है !

चार्लोटा—[पिश्चिक से] मेरा कुत्ता मेवा भी खा लेता है।

पिश्चिक—[आश्चर्य से] वाह, कमाल है !

[आन्या और दुन्याशाको छोड़कर सब चले जाते हैं]

दुन्याशा—आखिर अब आई हो तुम [आन्याका टोप और कोट लेती है]

आन्या—सफ़रमें चार रातसे मैं बिलकुल ही नही सोई। यहाँ बड़ी ठण्ड लग रही है मुझे।

दुन्याशा—जब तुम यहाँसे गई थी तब 'लेण्ट' (ईस्टरसे पहले चालिस दिनोका रोजेका समय) का ही तो समय था न?—तब तो कोहरा और बरफ गिर रही थी—और अब देखो,.. आन्या बहन [हँसकर उसका चुम्बन ले लेती है] मुझे तो तुम्हारी बड़ी याद आई। मेरी मुन्नी, अब तो मुझसे एक मिनट भी नहीं रुका जा रहा...तुम्हे एक जरूरी बात बतानी है !

आन्या—[उदासीन स्वरमें] इस बार क्या है ?

दुन्याशा—क्लर्क एपीखोदोव हैं न, ईस्टरके बाद ही उन्होंने मुझसे शादी को पूछा था।

आन्या—वही पुराना रोना। [अपने बाल सँवारते हुए] मेरी सारी हेयर-पिनें खो गई...[थकावट से जैसे लड़खड़ा रही है]

दुन्याशा—सचमुच, समझमें नहीं आता क्या करूँ ? कितना प्यार करते है वे मुझे।

आन्या—[अपने दवाज़ेकी ओर देखते हुए प्यार से] मेरा कमरा, मेरी खिडकियाँ...बिल्कुल ऐसा लगता है जैसे मैं कभी बाहर ही नहीं गई ! अब मै अपने घरमें हूँ। कल सुबह उठते ही बगीचेमें दौड़-कर देखूँगी...हाय, मुझे एक गहरी नींद आ जाती बस ! ऐसी बेचैन और परेशान रही कि सारी यात्राभर सो नहीं पाई।

दुन्याशा—परसों प्योत्र सर्जीएविच भी आ गये।

आन्या—[उल्लास से] पेत्याऽऽ !

दुन्याशा—गुसलखानेमें सो रहे हैं। वहीं ठहरे हैं वे। कहते थे: 'मैं उन लोगोंको मुसीबत पैदा नहीं करना चाहता' [घड़ी पर निगाह डालकर] मैं तो अब तक इन्हें जाकर जगा देती, लेकिन वरवरा मिखायेलेव्नाने मना कर दिया। उन्होंने कहा, मत जगाओ।

[कमरमें चाबियोंका गुच्छा लटकाये वार्याका प्रवेश]

वार्या—दुन्याशा, कॉफ़ी ! बहुत जल्दी !—अम्माने कॉफ़ी माँगी है !

दुन्याशा—फ़ौरन लीजिये !

[चली जाती है]

वार्या—शुक्र है, तुम आ तो गईं। फिर अपने घर आ गईं [उसकी पीठ थपथपाकर] मेरी नन्हीं-मुन्नी लौट आई ! मेरी सुन्दर-सी बिटिया लौट आई।

आन्या—हाय, कैसे-कैसे मैं आ पाई हूँ।

वार्या—अरे, मैं क्या जानती नहीं हूँ।

आन्या—पर्वके हफ्तेमें हम चले—उस वक्त ऐसी ठण्ड थी कि बस। रास्ते भर चार्लोटा गप्पें सुनाती और अपने खेल दिखाती आई है। आपने इस चार्लोटाको मेरे गले क्यों मढ़ दिया था ?

वार्या—हाय, सत्रह सालकी उम्रमें तुम बिलकुल अकेली सफ़र कैसे करती मुन्नी ?

आन्या—जब हमलोग पैरिस आये तो वहाँ भी बड़ी ठण्ड थी, बर्फ़ गिर रही थी। मैं बड़ी गलत-सलत फ्रैंच बोलती हूँ। अम्मा पाँचवीं मंजिल पर रहती थीं। वहाँ पहुँची तो देखा उनके साथ ढेरकी ढेर फ्रांसीसी आदमी-औरत, किताब लिये एक बुड्ढा पुजारी। कमरेमें तम्बाकूकी बदबू और बड़ी घुटन थी। मुझे

बडा तरस आया, हाय; एकदम अम्माके लिए बडी दया आई मनमें। मैं उनसे चिपक गई, अपनी बाँहें उनके गलेमें डाल दीं और काफ़ी देर अलग ही नहीं हुई। अम्मा मुझे पुचकारती रहीं......रोती रहीं...

वार्या—[रुँधे गलेसे] यह सब मत कहो, मुझसे नहीं सुनी जाती।

आन्या—अपना मेन्तोनका मकान तो उन्होंने बेच ही दिया था, अब तो उनके पास कुछ-भी नहीं बचा। मेरे पास खुद एक कौडी नहीं थी। बस, यहाँ तक आने भरका किसी तरह इन्तजाम किया। लेकिन अम्मा क्यों सोचें यह सब, स्टेशनों पर जब हमलोग खाना खाते तो यह सबसे कीमती चीजें मँगाती और बैरेको एक-एक रूबल बख्शीश दे देतीं। चार्लोटाका भी वही रवैया। और याशाको भी वही मिलता जो हमलोग लेते। पूरी आफ़त थी! आपको पता है, याशा अब अम्माका अर्दली हो गया है। हमलोग उसे अपने साथ ले आये हैं।

वार्या—हाँ-हाँ, मैंने उस बदमाशको देखा है।

आन्या—अच्छा हाँ, अब मुझे यहाँकी सब बातें बताइये। आपने रेहनका सूद चुका दिया क्या?

वार्या—नहीं हम पैसा कहाँसे लाते?

आन्या—हे भगवान्!

वार्या—अगस्तमें जमीन बिक जायेगी।

आन्या—हाय राम!

लोपाख़िन—[दरवाज़ेसे झाँकता है और गायकी तरह रँभाता है] माँऽऽऽ? [भाग जाता है]

वार्या—[रोते हुए उसे लक्ष्य करके घूँसा दिखाती है] तुम्हीं देखो, जी करता है एक दूँ इस कम्बख्तको।

आन्या—[वार्याको बाँहोंमें बाँधकर कोमल स्वरमें] वार्या दीदी, क्या उसने आपसे शादीके लिए पूछा था ? [वार्या सिर हिलाती है] तो वह आपको प्यार करते हैं न ? आप लोग कुछ तय क्यों नहीं कर डालते ? आखिर इन्तजार आपको किस बातका है ?

वार्या—मुझे तो लगता है कि हमलोगोंमें कुछ नहीं होगा। उन्हें हजारों काम हैं... मेरे लिए भी फुरसत कहाँ रखी है... मेरा तो उन्हें खयाल ही नहीं है। मैंने तो बाबा, उनसे हाथ जोड़े— देखनेको भी मन नहीं करता मेरा। जिसे देखो हमारी शादीकी बातें करता है, हमें बधाइयाँ देता है और मज़ा यह कि बातमें तथ्य जरा भी नहीं है। सब कुछ तो जैसे बिलकुल हवाई है ! [बदले हुए स्वरमें] तुम्हारी साड़ीकी पिन तो एकदम मधुमक्खी जैसी है।

आन्या—[दुःखी स्वरमें] अम्माने खरीदी थी [अपने कमरेमें जाते हुए बच्चोंकी तरह उल्लासपूर्वक] अच्छा हाँ, आपको पता है, पेरिसमें मैं गुब्बारेमें उड़ी थी ?

वार्या—मेरी मुन्नी घर लौट आई, मेरी बिटिया घर लौट आई !

[दुन्याशा कॉफ़ीका बर्तन लेकर लौटती है और कॉफ़ी बनाती है]

वार्या—[दरवाज़े पर खड़े होकर] सारे दिन घरकी देखभाल करते-करते दुनियाँ भरकी बातें मनमें आती रहती हैं मुन्नी, कि तेरी शादी किसी धनी मानीसे हो जाती तो मुझे कैसा आनद होता। मैं खुद तब तीर्थयात्रा पर कीव या मॉस्को निकल पड़ती। इसी तरह एक पवित्र स्थानसे दूसरेमें घूम-घूमकर ही अपना शेष जीवन बिता देती...चलती चली जाती, चलती चली जाती ! कैसा आनन्द रहता !

आन्या—बगीचेमें तो चिड़ियाँ चहचहाने लगीं। क्या बजा होगा ?

वार्या—दो तो जरूर ही बज चुके होंगे। इस वक्त तक तो तुम सोती रहती थीं [आन्याके कमरेमें जाते हुए] सचमुच कैसा आनन्द है।

[याशा एक कम्बल और सफ़री थैला लिये हुए आता है]

याशा—[बड़ी बनावटी नम्रताका भाव दिखाते आ मञ्चको पार करता है] अरे भाई, क्या यहाँसे मै जा सकता हूँ ?

दुन्याशा—अब तो तू पहचाना भी नही जाता याशा, बाहर रहकर कितना बदल गया है तू।

याशा—हुँ : तुम कौन हो ?

दुन्याशा—जब तू गया था तो मैं इतनी बडी थी [धरती से ऊँचाई बताती है] दुन्याशा हूँ—फ्योदोरकी लड़की। तुझे मेरी याद कैसे होगी ?

याशा—हुम...बड़ी झूठी हो [इधर-उधर देखकर उसका आलिङ्गन करता है। वह चीख पड़ती है और एक तश्तरी गिरा देती है। याशा फुर्तीसे चला जाता है]

वार्या—[दरवाज़े से झुँझलाहटके स्वरमें] यह सब क्या हो रहा है ?

दुन्याशा—[रोते हुए] मुझसे एक प्लेट टूट गई।

वार्या—बहुत अच्छा हुआ !

आन्या—[कमरेसे बाहर आते हुए] चलो, अम्माको भी बता दें कि पेत्या यहीं हैं।

वार्या—मैंने मना कर दिया है कि उन्हें कोई जगाये नहीं।

आन्या—[स्वप्नाविष्ट-सी] पिताजीको मरे हुए ठीक छः साल हो गये... उनके छः महीने बाद ही छोटा भाई ग्रीशा नदीमें डूबकर मर गया—सात सालका ही तो था और ऐसा खूबसूरत था कि क्या बताऊँ...अम्मासे उस दुःखको सहा नहीं गया...वे बिना पीछे मुड़कर देखे भागती रहीं भागती रहीं...[काँपकर] हाय, काश

उन्हें पता होता ! मै उनके मनकी बात कैसी अच्छी तरह जानती हूँ [कुछ देर रुककर] ये पेत्या त्रोफ़िमोव, ग्रीशाके ट्यूटर थे—इन्हे देखकर अम्माको ग्रीशाकी याद आ जायेगी...।

[फ़ीर्सका प्रवेश । वह जाकेट और सफ़ेद लम्बा कोट पहने है]

फ़ीर्स—[उत्सुकतापूर्वक कॉफ़ीके बर्तन तक जाता है] मालिकिन कॉफी यहीं पियेगी [सफ़ेद दस्ताने चढाता है] कॉफ़ी तैयार है क्या ? [दुन्याशासे तेज़ स्वरमें] क्रीम कहॉ है री छोकरी ?

दुन्याशा—हाय-राम !...[तेज़ी से जाती है]

फ़ीर्स—[कॉफ़ीके बर्तनके आस-पास जल्दी-जल्दी उलट-पलट करते हुए] अरी ओ निकम्मी ! [खुद ही बडबडाते हुए] आ गई वापिस पेरिससे...मालिक भी पेरिस ही जाया करते थे...पूरे रास्ते घोडोकी बग्घीपर...[हॅसता है]

वार्या—क्या बात है फ़ीर्स ?

फ़ीर्स—ऍऽऽ ? [आह्लाद भरे स्वरमें] मेरी तो मालकिन घर आई है। उन्हे देखनेको तो बचा रह गया...अब मर जाऊँ तो भी कोई दुःख नहीं...[आनन्दसे रो पड़ता है]

[रैनिव्स्काया, गायेव और सिम्योनोव पिश्चिकका प्रवेश। पिश्चिक छाती पर कसा हुआ बढिया कपड़ेका कोट और पतलून पहने है। आतेही गायेव हाथ और शरीरसे ऐसा इशारा करता है जैसे बिलियर्ड खेल रहा हो ।]

रैनिव्स्काया—देखे तो सही कैसे जाती है ?—पीली गेंद कोने में...इसके बाद एक शाटमें ही पॉकेटमे...

गायेव—इसमें क्या है ? सीधे हाथकी तरफ लालको मारो। अच्छा तुम्हे याद है ल्यूबा, इसी कमरेमें हम लोग साथ-साथ अलग खाटोंपर

सोया करते थे। अब मैं पचपनका हो गया हूँ। वह सब बातें आज कैसी अजीब लगती हैं......

लोपाख़िन—हाँ, समय तो उड़ता है।

गायेव—क्या कहा तुमने ?

लोपाख़िन—मैंने कहा, समय उड़ता है ?

गायेव—केवड़ेकी कैसी बढ़िया ख़ुशबू है !

आन्या—मैं तो अब सोने जाती हूँ। अच्छा, नमस्कार अम्मा [उसका हाथ चूमती है]

रैनिव्स्काया—मेरी बिटिया ! [उसका हाथ चूमकर] तुम्हें घर आकर ख़ुशी हुई न ?—मुझे तो अभी बड़ा अजीब-अजीब लग रहा है।

आन्या—अच्छा मामा, नमस्कार !

गायेव—[उसका मुँह और हाथ चूमते हुए] भगवान् भला करे ! तुम अपनी माँसे कितनी मिलती हो ! [अपनी बहनसे] ल्यूबा इसकी उम्रमें तुम बिल्कुल इसी जैसी थीं [आन्या लोपाख़िन और पिश्चिकसे हाथ मिलाकर जाते हुए दरवाज़ा बन्द कर जाती है]

रैनिव्स्काया—बेचारी बहुत थक गई है।

पिश्चिक—हाँ, सचमुच ! सफ़र भी तो बहुत लम्बा है।

वार्या—[लोपाख़िन और पिश्चिकसे] अच्छा भाइयो, तीन बज रहे हैं। अब आप लोग जाइये......

रैनिव्स्काया—[हँसकर] तुम तो बिल्कुल भी नहीं बदलीं ! [अपने पास खींचकर उसे चूम लेती है] मैं अपनी काफ़ी पीलूँ—फिर हम सब जाकर आराम करेंगे। [फ़ीर्स उसके पैरोंके नीचे छोटी चौकी रख देता है] शुक्रिया भाई, मुझे कॉफ़ी इतनी अच्छी

लगती है कि दिन-रात पीती रहती हूँ। शुक्रिया भैया [फ़ीर्सका चुम्बन लेती है]

वार्या—मैं ज़रा देख तो लूँ कि सब सामान ठीकसे तो भीतर रख दिया गया है न !

[चली जाती है]

रैनिव्स्काया—मैं क्या सचमुच ही यहाँ बैठी हूँ [हँसती है] मेरा मन करता है कि ताली बजा-बजाकर खूब नाचूँ [अपने हाथोंसे चेहरा ढँक लेती है] और अगर यह सब सपना ही हो तो भगवान् ही जानता है, मुझे अपना देश कितना प्यारा है—कैसा पसन्द है ! रास्ते भर इतनी रोती रही हूँ कि मुझसे खिडकीसे बाहर तक झाँककर नही देखा गया [आँसू भरी आँखोंसे] खैर, कॉफ़ी तो पी लूँ। शुक्रिया फ़ीर्स, शुक्रिया भाई ! तुम अभी तक हो, देखकर मुझे बडी खुशी हुई !

फ़ीर्स—परसोंकी बात है...

गायेव—यह बहुत ऊँचा सुनने लगा है।

लोपाख़िन—यहाँसे मुझे चार बजते ही सीधे हार्कोव जाना है। बडी मुसीबत है !... ज़रा आपके पास बैठना चाहता था, बातें करना चाहता था...आप हमेशा जैसी ही सुन्दर हैं......

पिश्चिक—[गहरी साँस लेकर] इन फ़ारसी ढंगके कपडोंमें तो पहलेसे भी ज्यादा खूबसूरत ! मैं तो लुट गया...।

लोपाख़िन—लियोनिद आन्द्रीएविच, आपका भाई हमेशा बकता फिरता है कि मैं नीची जातिमें पैदा गँवार हूँ...मैं रुपयेका साँप हूँ... लेकिन मैं उसकी तिनके भर परवा नहीं करता...जो जीमें आये सो बके। मैं तो बस यही चाहता हूँ कि आपका विश्वास मेरे ऊपर जैसा रहा है वह बना रहे। आपकी आँखोंमें मेरे लिये जो प्यार

रहा है—वही रहा आये, बस मेरी यही इच्छा है। हे दयासागर, मेरा बाप आपके बाप-दादाओंका गुलाम था...लेकिन आपने... आपने मेरे लिये कितना किया है...वह सब तो मुझे अब याद नहीं रहा, लेकिन आपको मैं अपने सगेकी तरह प्यार करता हूँ। बल्कि सगेसे भी ज्यादा......

रैनिवस्काया—भाई, मुझसे तो अब बैठा नहीं जा रहा [उछल कर खड़ी हो जाती है और तीव्र आवेश में घूमती है] यह आनन्द मेरे लिये असह्य है। तुम लोग हँसोगे, मैं जानती हूँ; मैं पागल हूँ... हाय, मेरी किताबोंकी आल्मारी [आल्मारीको चूमती है] मेरी नन्ही मेज़......

गायेव—तुम्हारे पीछे दाई मर गई।

रैनिवस्काया—[बैठकर कॉफ़ी पीती है] हाँ, तुमने उसकी मौतके बारेमें लिखा था। भगवान, उसे स्वर्ग दे !

गायेव—आनास्तासी भी मर गई। वह भेंड़ा प्योत्रास मुझे छोड़कर चला गया। अब उसने कोतवालके यहाँ नौकरी कर ली है [जेबसे मिठाईका डिब्बा निकालता है और फलोंकी लाइमजूस मुँहमें रखकर चूसता है]

पिश्चिक—मेरी लड़की दाशेन्काने आपको नमस्कार कहा है।

लोपाख़िन—एक बड़ी दिलचस्प मजेदार बात बताऊँ ? [घड़ी पर निगाह डालकर] वैसे मुझे अभी एक दम चले जाना है...... ज्यादा बातें करने का वक्त नहीं है...खैर, दो शब्दोंमें बताये देता हूँ। आपतो जानते ही हैं कि आपको कर्ज़ चुकाने के लिये आपका चॅरीका बगीचा बिक रहा है। बाईस अगस्तको बिकना तय हुआ है। लेकिन सुनिये, जरा भी अपनी नींद खराब मत कीजिये। चिन्ता-फ़िक्रकी क़तई जरूरत नहीं है। मैं तरकीब बताये दे रहा हूँ।

एक तरीका है. .मेरी बातको जरा ध्यानमे सुनिये.. आपकी जमींदारी-कस्बेसे पन्द्रह मील पर तो है ही, रेल भी बिल्कुल पास से जाती है। अगर चॅरीके बगीचेमें से नदीके किनारे काट-काटकर मकानोंके लिये प्लॉट बना दिये जायें तो वे गर्मियोंके लिये बंगलोंकी तरह किराये पर उठ सकते है। उससे कमसे कम आपको २५ हजार रूबल सालना आमदनी हो जायेगी।

गायेव—माफ करना, यह सब बेवकूफीकी बाते है।

रैनिवस्काया—यार्मोलाय अलैक्सीविच, तुम्हारी बात मैं समझ नहीं आई।

लोपाखिन—हाँ तो, गर्मियाँ बिताने आनेवालोंसे आपको हर तीन एकड़के एक प्लॉट पर ५ रूबल सालाना मिलेंगे। और अगर आप कहीं इसका विज्ञापन कर दें, तो मैं कहता हूँ कि सारे प्लॉट आपके इस तरह उठ जायेंगे कि जाडोंके लिए आपके पास एक वर्गफुट जगह नहीं रह जायेगी। सच पूछो तो आप साफ बच गई, मैं बधाई देता हूँ आपको। गहरी नदीके किनारे जगह बड़ी शानदार हैं। हाँ, पहले उसकी सफ़ाई करानी होगी, पुरानी सारी इमारतें बिल्कुल हटा देनी पडेंगी—जैसे इसी पुराने मकानको लीजिये—अब यहाँ यह किस मतलबका रह गया है! चॅरीका बगीचा भी काट डालना होगा......

रैनिवस्काया—काट डालना होगा? अरे भैया, मुझे माफ़ करो। यह कह क्या रहे हो! कुछ पता है? इस पूरे प्रदेशमें अगर सचमुच कोई एक दिलचस्प चीज है तो यही चॅरीका बगीचा ही तो है।

लोपाखिन—और बगीचेकी अगर सबसे बडी खासियत है तो यही कि यह बहुत बडा है। हर दो साल बाद चॅरीकी एक फ़सल होती है। सो उसका कुछ होता नहीं है। कोई खरीदता तक तो है नहीं।

गायेव—'विश्वकोश' तक में चॅरीके इस बगीचेका ज़िक्र है।

लोपाखिन—[घड़ी देखकर] अगर हम लोग जल्दी ही कुछ तय करके २२ अगस्तसे पहले ही कोई कदम नहीं उठाते तो यह चेरीका बगीचा, सारी ज़मीदारी नीलाम पर चढ़ जायेगी। आपलोग कुछ सोचिये इस पर। मैं तो क़सम खाकर कह सकता हूँ इसके सिवा इसे बचानेका कोई और तरीका है ही नही...बिल्कुल भी नहीं...

फ़ीर्स—चालीस-पचास साल पहले पुराने ज़मानेमें लोग चॅरियोंको सुखाते थे, भिगाते थे, सिरका और मुरब्बा तक बनाते थे और वे लोग...

गायेव—फ़ीर्स चुप रहो।

फ़ीर्स—और लोग गाडियोंमें भर-भरकर बनाई हुई चॅरियाँ मॉस्को और हार्कोवको भेजा करते थे। उसीसे पैसा आता था! वे बनी हुई चॅरियाँ बडी मुलायम, मीठी, रसीली, खुशबूदार होती थी। तब लोगोंको बनाने के ढग मालूम थे।

रैनिवस्काया—अब वे सब ढंग कहाँ गये?

फ़ीर्स—भूल गये! अब किसीको भी याद नहीं है।

पिश्चिक—[रैनिवस्कायासे] पेरिस कैसा है आजकल? आपने वहाँ मेढ़क खाये थे?

रैनिवस्काया—हाँ, मगर खाया था!

पिश्चिक—क्या कहना!

लोपाखिन—पहले तो गांवमें सीधे-सादे लोग और किसान ही रहा करते थे, लेकिन अब गर्मियाँ बिताने वालोंकी भरमार है। छोटे-छोटे कस्बे तक तो इन गर्मियोंके बंगलोंसे घिरे हुए हैं आजकल। दावेके साथ कहा जा सकता है कि बीस सालमें ही ये गर्मियाँ बितानेवाले लोग बहुत बढ़ जायेंगे—और सभी जगह बढ़ेंगे। आज तो गर्मियाँ बिताने वाला सिर्फ़ बरामदेमें बैठा-बैठा चाय ही पीता है; लेकिन हो सकता है आगे जाकर वही आदमी काम करनेके

लिए थोडी बहुत जमीन भी ले लें...तब आपका यह चॅरीका बगीचा कैसे आनन्दकी, हरी-भरी शानदार जगह बन जायेगी...

गायेव—[गुस्से से] बकवास !

[याशा और वार्याका प्रवेश]

वार्या—अम्मा, ये आपके दो तार आये हैं [चाबी निकाल कर पुरानी-सी किताबोंकी आलमारी खोलती है। [आलमारी चरमराती है] ये रहे !

रैनिवस्काया—पेरिसके हैं [तार फाड़ती है। बिना पढ़े ही] मेरा तो पेरिससे मन भर गया।

गायेव—तुम्हें पता है ल्युबा, यह किताबोंकी आलमारी कितनी पुरानी है ? पिछले हफ्ते मैंने इसकी सबसे नीचेकी दराज़ खोली थी। वहाँ इसके बनने की तारीख पड़ी है। यह आलमारी ठीक सौ साल पहले बनी थी। क्या खयाल है, इसका शताब्दि-समारोह मना डाला जाय ? हालाँकि यह चीज बेजान है तब भी आलमारी तो किताबोंकी है......

पिश्चिक—[आश्चर्यसे] एक सौ साल ! वाह, बहुत खूब !

गायेव—जी हाँ। एक चीज़ है यह...[आलमारी पर हाथ फेरता है] प्यारी आलमारी, तुमने सौ सालसे भी ज्यादा सत्य और कल्याणकारी आदर्शोंकी सेवाकी है, तुम्हारी जय हो ! तुम्हारे इस उपयोगी परिश्रम और सेवाकी मौन-पुकार इन सौ सालोंमें कभी धीमी नहीं पडी [आँखोंमें आँसू भरकर] पीढ़ी दर-पीढ़ी तुम हमारे दिलोंमें उज्ज्वल भविष्यके प्रति आस्था, साहस भरती चली आई हो; सुन्दर-सुन्दर आदर्शों और सामाजिक जागृतिका तुमने हममें पोषण किया है।

[कुछ देर चुप्पी]

लोपाखिन—हुम्...!
रैनिवस्काया—लियोनिद, तुम तो बिल्कुल भी नहीं बदले।
गायेव—[कुछ परेशानीसे] वह डाली दाहिनी लाल गेंद पॉकेटमें...
लोपाख़िन—[घड़ी देखकर] अच्छा अब मैं चलूँ।
याशा—[रैनिवस्कायाको दवाओंका बक्स देते हुए] इस समय गोलियाँ लेंगी न ?
पिश्चिक—आपको दवायें नहीं खानी चाहिए। इनसे लाभकी जगह नुकसान ही होता है [वार्यासे] अच्छा सुनो जरा, इधर तो देना [गोलियोंका डिब्बा लेकर हथेली पर सारी गोलियाँ पलट लेता है, फूँक मारता है और मुँह में डालकर जौ की शराबके घूँटके साथ गटक जाता है] अब कहिये ...
गायेव—[घबराकर] तुम्हारा दिमाग़ तो खराब नहीं है ?
पिश्चिक—मैं तो सारी गोलियाँ खा गया !
लोपाख़िन—बड़े खाऊ हो [सब हँसते हैं]
फ़ीर्स—ईस्टर वाले हफ्तेमें हमारे सरकार डेढ़ गैलन सिरका गटक गये थे .. [धीरे-धीरे हँसता है]
रैनिवस्काया—क्या कह रहा है यह ?
वार्या—पिछले तीन सालसे यह यों ही खुद ही हँसता-बोलता रहता है। हमें आदत पड़ गई है।
याशा—अब इसके भी दिन आ गये...
[पतली-दुबली चार्लोटा आइवोनोव्ना सफ़ेद कपड़ोंमें कमर पर लॉर्गनेट (लम्बे हैंडिलमें लगा चश्मा) अटकाये स्टेज़ पर एक ओरसे दूसरी ओर गुज़रती है]
लोपाख़िन—आइवोनोव्ना, माफ़ करना, तुम्हारा हाल-चाल पूछनेकी तो फ़ुर्सत ही नहीं मिल पाई। [उसके हाथका चुम्बन लेना चाहता है]

चार्लोटा—[हाथ पीछे खींचकर] अगर कोई औरत एक बार तुम्हे अपना हाथ चूम लेने दे तो कल तुम उसकी कुहनी, फिर उसके कन्धे तक धावा मारो...

लोपाख़िन—आज तो साहब किस्मत खराब है [सब हँसते हैं] अच्छा चार्लोटा आइवानोव्ना, हमें कोई हाथकी सफ़ाई दिखाओ न !

रेनिवस्काया—हाँ, चार्लोटा दिखाओ कुछ खेल !

चार्लोटा—इस वक्त नहीं । मुझे नीद आ रही है [चली जाती है]

लोपाखिन—तीन हफ्ते बाद फिर मिलेंगे [रैनिव्स्कायाका हाथ चूमता है] तब तकके लिए बिदा दें...अब मैं चलता हूँ। [अपना हाथ पहले वार्या, फिर फ़ीर्स और याशाकी ओर बढ़ाता है] जाना इस समय बड़ा बुरा लग रहा है। [रैनिवस्कायासे] अगर बँगले बनानेकी मेरी योजनापर फिर विचार करके कुछ निश्चय कर ले तो मुझे ख़बर दें । पचास हज़ार रूबल उधार मैं दे दूँगा आपको ।

वार्या—[नाराज़ीसे] *भगवानके लिए अब यहाँसे टलो तो सही ।*

लोपाखिन—जा रहा हूँ—जा रहा हूँ । [चला जाता है]

गायेव—कमीना ! आप लोग मुझे उसके प्रति ऐसे शब्दोंको क्षमा करें। हमारी वार्या तो उससे शादी करने जा रही है। यह वार्याका वर है ।

वार्या—*मामा, क्या बेकारकी बातें कर रहे हैं आप ।*

रेनिवस्काया—खैर वार्या, मुझे तो बड़ी खुशी होगी। आदमी बहुत सज्जन है ।

पिश्चिक—यह तो मानना ही पड़ेगा कि आदमी लायक है । मेरी दाशेंका भी कहती है कि...अरे बहुत-सी बातें कहती है वह तो [ख़र्राटे लेने लगता है । फिर एक दम जागकर] अच्छा खैर, आप मुझे

कृपा करके २४० रूबल उधार दे सकेंगी ? मुझे कल अपनी रेहनका सूद जमा करना है।

वार्या—[घबराकर] नहीं ! नहीं ! हम नहीं दे सकते।

रेनिवस्काया—सच मानो, मेरे पास रुपया है ही नहीं।

पिश्चिक—अच्छा फिर ले लूँगा। [हँसता है] मैं कभी उम्मीद नहीं छोड़ा करता। पिछली बार जब मैं सोचे बैठा था कि अब तो कोई रास्ता ही नहीं बचा, अब तो जो होना होगा हो चुका होगा—तभी भगवान की माया देखिये—मेरी ज़मीनपर होकर रेलकी पटरी निकली। और रेल वालोंने पैसा दिया। सो इस बार भी कुछ न कुछ होकर ही रहेगा, आज नहीं कल सही। हो सकता है दाशेंकाके नाम दो लाख ही आ जायें ?...उसने लॉटरी टिकट खरीदा है न।

रैनिवास्काया—अच्छा, अब हम लोग कॉफ़ी पी चुके। चलो, चलकर सो लें।

फ़ीर्स—[झिड़कते हुए गायेवके कपड़े झाड़ता है] आपने फिर गलत वाला पतलून पहन लिया न ? अब बताइये आपके लिए मैं क्या क्या करूँ ?

वार्या—[धीरेसे] आन्या सो रही है [बिना आवाज़ किये, धीमेसे खिड़की खोल देती है] धूप निकल आई है। अब तो ज़रा भी ठण्ड नहीं है...अम्मा देखो, पेड़ कैसे सुन्दर दिखाई दे रहे हैं। आहा, कैसी अच्छी हवा चल रही है, छोटी-छोटी चिड़ियाँ चहचहा रही हैं।

गायेव—[दूसरी खिड़की खोलती है] बग़ीचा तो पूरा सफ़ेद ही सफ़ेद हो गया है। ल्युबा, तुम भूली तो नहीं हो ? घने पेड़ोंके बीच

तीरकी तरह सीधा-सीधा चला जाता, रास्ता चाँदनीमें कैसा जादू भरा-सा लगता था, याद है न ? क्यों याद है न ?

रैनिवस्काया—[खिड़कीसे बाहर बगीचेको देखती है] हाय, वह मेरा बचपन...वह बचपनका भोलापन। इसी बच्चोंवाले कमरेमें ही तो सोया करती थी—यहींसे बगीचेमें झाँकती रहती थी...नई-नई खुशियाँ रोज़ मेरे साथ जागा करती थीं। उन दिनों भी बगीचा बिलकुल ऐसा ही था। ज़रा भी नहीं बदला है। [उल्लासमें हँस पड़ती है] चारों तरफ सफेद ही सफेद...मेरे प्यारे बगीचे ...जाड़ेकी बर्फीली ठण्ड और पावसकी वर्षा आँधियोंसे घिरे काले-काले दिनोंके बाद तुम पर फिर बहार आ गई है—तुम फिर आनन्दसे किलक उठे हो। स्वर्गके दूतोंने तुम्हें त्यागा नहीं है...हाय, काश यह मेरी छातीपर रखा बोझ कहीं चला जाता ! काश मैं अतीतको भूल पाती।

गायेव—हुम् ! और यही बगीचा कर्जा चुकानेके लिए बेच देना पड़ेगा। अजीब बात है न ?

रैनिवस्काया—देखो, अम्मा वे चल रही हैं...वो उस छायादार पेडोंवाली सडकपर ऊपरसे नीचे तक सफेद कपडोंमें [उल्लाससे] बिलकुल वही हैं।

गायेव—किधर ?

वार्या—अम्मा, सुनो तो !

रैनिवस्काया—कहीं कोई भी तो नहीं है। मेरी कल्पना थी, बस।.. उधर दाहिने हाथकी तरफ, उस कुंजकी ओर जानेवाली सडकपर जो पेड है न, वह ऐसा झुका है जैसे सचमुच कोई औरत हो।

[त्रोफ़िमोवका प्रवेश। आँखोंपर चश्मा और अत्यन्त ही साधारण-सी विद्यार्थियोंकी पोशाक पहने है।]

रैनिवस्काया—बगीचा आज कैसा अजब-अजब लग रहा है ! बौरोंके सफ़ेद-सफ़ेद बादल...नीला खुला आसमान।

त्रोफ़िमोव—ल्युबोव आन्द्रेव्ना [रैनिवस्काया मुड़कर उसकी ओर देखती है] मैं सिर्फ़ आपकी कुशल-मंगल जानने आया हूँ। अब चला जाऊँगा। [आवेगसे हाथका चुम्बन लेता है] बताया तो मुझे यह गया था कि आप सुबह ही मिलेंगी; लेकिन मुझे इतना समय नहीं था...

[रैनिवस्काया उसे किंकर्तव्य-विमूढ़-सी देखती है]

वार्या—[भरे गलेसे] ये प्योत्र त्रोफ़िमोव हैं।

त्रोफिमोव—जी हाँ, प्योत्र त्रोफ़िमोव...मैं आपके ग्रीशाका ट्यूटर था न। क्या सचमुच मैं इतना बदल गया हूँ कि...?

[रैनिवस्काया उसे बाहोंमें भरकर सिसक पड़ती है]

गायेव—[परेशानीसे] बस करो...बस करो ल्युबा।

वार्या—[रोते हुए] पेत्या, मैंने तो तुमसे सुबह तक राह देखनेको कहा था न।

रैनिवस्काया—मेरा ग्रीशा...मेरा बेटा...मेरा मुन्ना ग्रीशा।

वार्या—अम्मा, इसमें हमारा क्या बस है, भगवानकी मरज़ी है।

त्रोफ़िमोव—[रोते हुए रुँधे गलेसे] बस कीजिए...बस कीजिए।

रैनिवस्काया—[सिसकते हुए] मेरा बेटा खो गया...डूब गया। क्यों डूबा ?—हाय पेत्या, मुझे बताओ क्यों डूबा वह ? [ज़रा थमकर] हाय, मैं इतनी ज़ोर-ज़ोरसे बोल रही हूँ और आन्या वहाँ सो रही है। इतना शोर कर रही हूँ; लेकिन पेत्या तुम्हारे चेहरेकी सारी सुन्दरता कहाँ गई ? तुम ऐसे बूढ़ेसे क्यों लगते हो ?

त्रोफ़िमोव—रेलमें एक किसान औरत भी कहती थी कि मैं खजैला-सा दिखाई देता हूँ।

रैनिवस्काया—तब तो तुम बिल्कुल लडके ही थे—बड़े सुन्दर विद्यार्थी लगते थे। अब तो तुम्हारे बाल भी पक गये है...चश्मा लगाते हो। अभी भी सचमुच क्या विद्यार्थी हो? [दरवाज़ेकी तरफ़ जाती है]

त्रोफ़िमोव—मुझे तो लगता है जैसे मै एक चिरन्तन विद्यार्थी ही हूँ!

रैनिवस्काया—[पहले अपने भाईको फिर वार्याको चूमती है] अच्छा अब सोने चलें। लियोनिद, तुम भी तो अब पहलेसे बुड्ढे हो गये हो।

पिश्चिक—[रैनिवस्कायाके पीछे-पीछे जाता है] मेरा भी यही खयाल है कि हमें अब चलकर सो जाना चाहिए......उफ़!...यह मेरी गठिया......मैं तो आज रात यहीं ठहर रहा हूँ...मेरी अच्छी ल्युबोव आन्द्रेयव्ना, अगर आप कर सकें...कल सुबह तक २४० रूबल।

गायेव—इसको बस हमेशा एक ही धुन!

पिश्चिक—२४० रूबल मुझे अपनी रेहनका सूद देना है।

रैनिवस्काया—भले आदमी, मेरे पास पैसा नहीं है।

पिश्चिक—मैं लौटा दूँगा...है ही कितना?

रैनिवस्काया—अच्छा ठीक है। लियोनिद तुम्हें दे देंगे। लियोनिद, तुम इन्हें रुपया दे देना।

गायेव—मैं दूँगा इसे रुपया? तब तो इसे ज़रा लम्बी राह देखनी होगी!

रैनिवस्काया—कोई और चारा भी तो नहीं है। उसे जरूरत है। वापिस लौटा देगा।

[रैनिवस्काया, त्रोफ़िमोव, पिश्चिक और फ़ीर्स जाते है। गायेव वार्या और याशा मञ्च पर ही रहते हैं]

गायेव—ल्युबाने रुपया बहानेकी आदत अभी तक छोडी नहीं है। [याशासे] भले आदमी, यहाँसे भाग जा, तेरे ऊपरसे मुरगीके दरबेकी बदबू आ रही है।

याशा—[खीसें निपोरकर] लियोनिद आन्द्रेयविच, आप भी वैसेके वैसे ही हे।

गायेव—क्या मतलब ? [वार्यासे] इसने अभी क्या कहा ?

वार्या—[आशासे] तेरी माँ गाँवसे आई है। वहाँ नौकरों की कोठरीमें कलसे बैठी तेरी राह देख रही हे। तुझसे मिलना चाहती है।

याशा—बैठी रहने दो उन्हें ! मै खुद फ़िक्र कर लूँगा।

वार्या—बेशर्म।

याशा—जल्दी क्या है ? उससे कल तक राह नहीं देखी जा सकती थी?

[चला जाता है]

वार्या—अम्मा, बिल्कुल हमेशा जैसी ही हैं। ज़रा भी नहीं बदलीं। अगर ये अपने ही मनसे चलती रहीं तो अपना सब कुछ गँवा देंगी।

गायेव—ठीक बात हे ! [कुछ देर रुककर] अगर एक ही बीमारीके सौ इलाज बताये जायँ तो समझ लो रोग असाध्य है। मैं हमेशा दिमाग़ घोटता और माथा-पच्ची करता रहता हूँ। मेरे दिमागमें भी बहुतसे इलाज़ भरे हैं...ढेरों..... लेकिन उनसे सचमुच कुछ भी हाथ नहीं आयेगा। मानलो कहीं कोई हमारे नाम कुछ कर जाता या अपनी आन्याकी शादी हम किसी लखपतिसे कर डालते—या हमलोग यारोस्लाव्ल जाकर अपनी बुड्ढी रानी मौसीके ही यहाँ क़िस्मत आजमा लेते। तुम्हें पता है, उसके पास अनाप-शनाप रुपया है।

वार्या—[रो पड़ती है] काश, भगवान् हमारी भी सुनते !

गायेव—यों आँसू बहानेसे क्या होता है ? मौसी धनी ज़रूर है; लेकिन हमलोगोंकी उन्हें कोई फ़िक्र नहीं है। पहला कारण तो यह है कि बहनने किसी कुलीन आदमीके बजाय एक वकीलसे शादी की।

[आन्या दरवाज़ेपर दीखती है]

गायेव—तो उसने ऐसे आदमीसे शादी की जो कुलीन नहीं था। फिर उसका खुद आचरण। हर आदमी तो उसे आदर्श नहीं कह सकता। वह बड़ी अच्छी है, दयालु है, सहृदय है, सब है और मैं उसे बहुत चाहता हूँ—लेकिन बातको चाहे जितना छोटा करके देखिये—इस बातसे तो इन्कार किया ही नहीं जा सकता है कि वह चरित्रहीन औरत है। यह तो उसकी सूरत देखकर ही पता चल जाता है।

वार्या—[फुसफुसाकर] आन्या दरवाजेपर ही खड़ी है।

गायेव—क्या कहा ? [कुछ रुककर] अजब बात है। लगता है मेरी दाहिनी आँखमें कुछ गिर गया है। अब मुझे पहलेकी तरह साफ़ नहीं दिखाई देता। और जब बृहस्पतिको मैं जिला अदालत में था .....

[आन्याका प्रवेश]

वार्या—आन्या तुम सोई नहीं अब तक ?

आन्या—नींद नहीं आ रही। कोशिश करना बेकार है।

गायेव—मेरी मुन्नी ! [आन्याके हाथ और मुँहका चुम्बन लेता है] मेरी बच्ची ! [रोने लगता है।] तू मेरी भाँजी नहीं, मेरी देवी है... मेरी सभी कुछ हो। सच मानो...मेरा विश्वास करो......

आन्या—मामा मैं खूब विश्वास करती हूँ। हम सब आपको प्यार और श्रद्धा करते हैं। पर मामा, आप बहुत न बोला करें। सिर्फ़

चुप ही रहा करें। अब देखिये, अभी-अभी आप अपनी सगी बहन, मेरी अम्माकों लेकर क्या-क्या कह रहे थे? ऐसा क्यों कहते हैं आप?

गायेव—हाँ...हाँ...[उसके हाथोंसे चेहरा ढँक लेता है] वाकई गलती हो गई। हे भगवान्, मुझपर दया करो! देखो न, और कुछ नहीं तो आज मैं किताबोंकी अलमारीको ही भाषण देने लगा... कैसा बेवकूफ़ हूँ मैं! जब पूरा भाषण दे चुका तो लगा कि यह तो सरासर बेवक़ूफ़ी है!

वार्या—मामा, यह बात तो ठीक है। आपको ज़रा चुप ही रहना चाहिये। बोलो ही मत, बस!

आन्या—अगर आप बोलना ही बन्द कर दें, तो इससे खुद आपको भी तो बहुत आराम हो जायेगा।

गायेव—अब नहीं बोलूँगा! [आन्या और वार्याके हाथोंको चूमता है] मैं बिलकुल चुप रहूँगा। लेकिन सिर्फ़ यह एक बात तो काम की है। बृहस्पतिको मै ज़िला-अदालत गया था। ख़ैर, वहाँ हम काफ़ी लोग थे। इधर-उधरकी, इसकी-उसकी बातें होने लगीं। और सुनो, वहीं मुझे लगा कि हुण्डीके ज़रिये कर्ज़ा लेकर बैंकको रेहन का सूद दिया जा सकता है।

वार्या—काश, भगवान हमारी भी सुन लेता!

गायेव—मैं बुधको जा रहा हूँ। इस बारेमें और बातें करूँगा [वार्यासे] सब जगह कहती मत फिरना। [आन्यासे] तुम्हारी अम्मा लोपाखिनसे बातें करेंगी। निश्चय ही वह ल्युबाको मना नहीं करेगा। इधर, जैसे ही तुम लोगोंकी थकान दूर हो जाय, तुम लोग यारोस्लाव्लमें अपनी दादी—मौसीरानीके यहाँ चली जाना। इस तरह हमलोग तीन तरफ़ एक साथ कोशिश शुरू कर देंगे—फिर तो

काम बना बनाया रखा है। मुझे पक्का भरोसा है—सारी बकाया चुक जायेगी......[एक लाइमजूस मुँहमें रख लेता है] मैं अपनी कसम खाकर कहता हूँ...तुम कहो उसीकी कसम खा जाऊँ—जमींदारी नहीं बिकेगी, नहीं बिकेगी...[आवेगसे] मैं अपनी ही ओरसे कसम खा रहा हूँ कि अगर मेरे रहते यह नीलाम पर चढ जाय तो, यह मेरा हाथ रहा, तुम मुझे कमीना, नीच कह देना..... मैं अपने प्राणोंकी सौगन्ध खाता हूँ।

आन्या—[पुनः शान्त होकर प्रसन्नतासे] मामा, तुम कैसे अच्छे और चतुर हो [उसे बाँहोंमें भरकर] अब मुझे कोई चिन्ता नहीं है। अब मैं खूब शान्त और सुखी हूँ।

[फ़ीर्सका प्रवेश]

फ़ीर्स—[झिड़कते हुए] लियोनिद आन्द्रीएविच, आपको क्या भगवानका बिल्कुल भी डर नहीं है ? कब सोने जायेंगे ?

गायेव—अभी जाता हूँ...सीधा जाता हूँ। फ़ीर्स, तुम चले जाओ। मैं खुद चला जाऊँगा। हाँ हाँ, मैं खुद अपने कपड़े उतार लूँगा। अच्छा बेटी, अब मैं चलता हूँ। सुबह इसके बारेमें और बातें करेंगे। अब चलकर सोएँ [वार्या और आन्याका चुम्बन लेता है] अब तो मैं अस्सीके आस-पास हो गया हूँ। लोग अस्सी सुनकर ही नाक-भौं सिकोड़ते है, लेकिन अपनी जवानीमें भी मुझे अपने विश्वासोंकी वजहसे कम चुस्त नहीं रहना पड़ा है। किसान मुझे योंही थोड़े ही प्यार करते है ?...किसानोंको समझने की जरूरत है। ज़रूरत है कि कैसे वह...

आन्या—मामा फिर तुमने शुरू कर दिया न ?

वार्या—मामा, अब बस करो।

फ़ीर्स—[नाराज़गीसे] लियोनिद आन्द्रीएविच।

गायेव—अच्छा...अच्छा, चुप हो गया। तुमलोग सोने जाओ.. एक ही निशानेमें पॉकेट कर लिया न...एक तुम्हारे नामका वो मारा... वाह, क्या कमालका निशाना...।

[चला जाता है। फ़ीर्स उसे पीछेसे पकड़े है।]

आन्या—अब जरा दिमाग़को चैन मिला है। यारोस्लाव्ल जानेको मेरा तो मन नहीं करता। दादी—मौसी मुझे जरा भी पसन्द नहीं हैं। खैर तब भी अब ज़रा धैर्य बँधा है...मामाको बहुत-बहुत धन्यवाद।

[नीचे बैठ जाती है]

वार्या—सोनेका वक्त होगया। मैं चल रही हूँ। जब तुम यहाँ नहीं थीं तो कुछ गडबड़ हो गई थी। पुराने नौकरोंकी कोठरियोंमें सिर्फ़ पुराने नौकर ही रहते हैं—तुम तो जानती ही हो—येफीम, पोल्या, यैवस्तिग्नी और कार्प। उन लोगोंने दुनियाँ भरके लफङ्गोंको रात बितानेको वहाँ टिकाना शुरू कर दिया—मैं कुछ नहीं बोली। लेकिन अचानक एक दिन मैंने सुना—उन्होंने इधर-उधर बकना शुरू कर दिया है कि मैं लोभके मारे उन्हें खानेको मटरके दलियेके सिवा कुछ नहीं देती। अच्छा, और जानती हो यह सब उसी यैवस्तिग्नीका किया-धरा था। मैंने भी मन-ही-मन कहा, अच्छी बात है—'अगर यों है, तो यों ही सही...अब तमाशा देखो।' मैंने यैवस्तिग्नीको बुलवाया [जँभाई लेती है] आया वह। मैंने पूछा, 'यैवस्तिग्नी, यह सब क्या है?' फिर मैंने कहा—'तुम ऐसी बेवकूफ़ीकी बातें बकते फिरते हो'... [कुछ देर चुप रहकर] अरे, यह तो सो गई [आन्याको बाँहोंमें भर लेती है] आओ बिस्तरपर चलें...आओ चलो [उसे ले चलती है] मेरी मुन्नी रानी सो गई...आओ।

[जाती है]

[कहीं दूर बगीचेके दूसरे सिरेपर एक गड़रिया बाँसुरी बजाता है, ओफ़िमोव मञ्चको पार करता है। लेकिन वार्या और आन्याको देखकर चुपचाप खड़ा हो जाता है]

वार्या—चुप...चुप आन्या सो रही है...आओ, मुन्नी चलो...

आन्या—[तन्द्रिल स्वरमे धीरेसे] मै बहुत ही थक गई हूँ......ये घण्टियाँ अब भी...मामा...प्यारी अम्मा, और मामा......

वार्या—आ चिड़िया...मेरी रानी चिड़िया चल......

[आन्याके कमरेमे जाती है]

ओफ़िमोव—मेरी ज्योति ! मेरी बहार !

[पर्दा गिरता है।]

दूसरा अङ्क

[चरागाहका खुला दृश्य एक पुराना-सा टूटा फूटा, परित्यक्त दोनो ओर ढालू छतवाला गिरजा। उसके पास ही एक कुँआ। बड़े-बड़े पत्थरोंके टुकड़े जो स्पष्ट ही कब्रोंके है। एक ओर बेंच। गायेवके घर जानेवाली सड़क दूर दिखाई देती है। एक तरफ़ काले काले चिनारके पेड़। यहींसे चॅरीका बगीचा शुरू होता है। दूर पर टेलीग्राफ़के खम्भोंकी चली जाती लाइन, और बहुत दूर चितिजपर धुँधले दीखते क़स्बेकी रूपरेखा। यह क़स्बा बहुत ही साफ़ मौसममे भले ही स्पष्ट दीखता हो।

सन्ध्या होनेको है। चार्लोटा, याशा और दुन्याशा बेंचपर बैठे हैं। पास खड़ा एपिख़ोदोव गिटारपर कोई दर्दीली धुन बजा रहा है। सभी विचारोंमें डूबे बैठे हैं। चार्लोटा एक पुरानी चोटीदार टोपी पहने है। उसने अपने कन्धेपर लटकी बन्दूक उतार ली है और उसका बकसुआ कस रहा है]

चार्लोटा—[विचार-मग्न स्वरमें] चूँकि मेरे पास कोई पास-पोर्ट नहीं है इसलिए मुझे अपनी असली उम्रका ही पता नहीं। मुझे तो हमेशा ऐसा लगता है जैसे बच्ची ही होऊँ। जब मैं बच्ची थी तो मेरे माँ-बाप यहाँसे वहाँ मेलोंमें घूमा करते थे और अच्छे-अच्छे तमाशे दिखाया करते थे—मैं साल्टो मार्टलका नाच और तरह-तरहकी कलाबाज़ी दिखाया करती थी। जब माँ-बाप मर गये तो एक जर्मन बूढ़ीने मुझे रख लिया, पाला-पोसा, पढ़ाया-लिखाया। इस तरह मैं बड़ी होकर आज गवर्नेस बनी। लेकिन मैं कहाँसे

आई हूँ, कौन हूँ—मुझे कुछ नहीं मालूम...मेरे माँ-बाप कौन थे? बहुत सम्भव है उन लोगोंने आपसमें शादी-वादी भी नहीं की थी... [अपनी जेबसे एक खीरा निकालकर कचर-कचर खाती है] मुझे बिल्कुल, कुछ नही मालूम [कुछ देर चुप रहकर] मेरे मनमें बातें करनेकी बडी ललक होती है; लेकिन कोई भी तो ऐसा नही है जिससे बातें करूँ, न कोई दोस्त, न सम्बन्धी. .

एपिखोदेव—[गिटार बजाते हुए गाता है]

नहीं चिन्ता मुझे इस शोरोगुलसे भरी दुनियाँ की
दोस्तो-दुश्मनकी मुझे फिर फिक्र क्योंकर हो......

अहा, मैंडोलिनपर गीत गानेमें भी कैसा आनन्द आता है।

दुन्याशा—यह मैंडोलिन नहीं, गिटार है। [जेबी शीशेमें चेहरा देखकर पाउडर लगाती है]

एपिखोदोव—जो प्यारमें पागल हो उसके लिए तो यही मैंडोलिन है। [गाता है] "काश कि मेरे दिलको जलती प्यार भरी लपटें छू जातीं !" [याशा भी गाने लगता है]

चार्लोटा—कैसी बुरी तरह गाते है ये लोग। उफ़, सियारोंकी तरह रोते है...

दुन्याशा—[याशासे] हाय, देश-विदेश घूमना-देखना भी कैसा मजेदार होता होगा।

याशा—सो तो है ही। मै तुम्हारी बातसे सोलहो आने सहमत हूँ।

[जँभाई लेता है। फिर एक सिगार जला लेता है]

एपिखोदोव—अरे, यह भी कोई कहनेकी बात है। विदेशोंमे हर चीज़ बहुत पहले ही से अपना पूरा विकास-विस्तार कर चुकी है।

याशा—बिल्कुल सही बात है।

एपिखोदोव—मैं एक सभ्य-संस्कृत आदमी हूँ। दुनियाँ भरकी अच्छीसे अच्छी किताबें पढ़े बैठा हूँ, लेकिन साफ़ और सच कहूँ तो कौन-सी दिशा मुझे अपनानी चाहिये, या वास्तवमें मै क्या चाहता हूँ—यही मेरी समझमें नहीं आता। अपने आपको गोली मार लूँ या जिन्दा रहूँ. .खैर पिस्तौल तो मै हमेशा अपने साथ रखता हूँ। यह देखिये...

[पिस्तौल दिखाता है]

चार्लोटा—ऊब गई मैं तो। अब चलती हूँ [कन्धे पर बन्दूक रख लेती है] एपिखोदोव—तुम आदमी काफी तेज़ हो—कुछ खतरनाक भी हो। औरतें तुम्हारे पीछे जरूर पागल रहती होंगी, बर्र र्र र्र... [जाते हुए] ये अपनेको तेज़ लगाने वाले आदमी भी कैसे बेवकूफ़ होते हैं! हाय, कोई भी तो ऐसा प्राणी नहीं है जिससे मै बातें करूँ...हमेशा अकेली-अकेली...मेरा अपना कोई भी तो नहीं है...मैं हूँ कौन? और आखिर धरती पर किसलिये जिन्दा हूँ—मुझे कुछ नहीं पता! [धीरे धीरे चली जाती है]

एपिखोदोव—बिना, लाग-लपेट या इधर-उधर बहके-भटके अगर सच कहूँ तो मुझे मानना पड़ेगा कि क़िस्मतने हमेशा मेरे साथ बड़ी बेरहमी का व्यवहार किया है—जैसे तूफ़ान छोटी नावके साथ करता है। अच्छा माना, मेरे दिमागमें एक ग़लत-फ़हमी घुस बैठी है। मगर फिर यही मिसाल लीजिए, आज सुबह जब मैं उठा तो क्या देखता हूँ कि मेरी छाती पर एक लम्बा-चौडा मकड़ा...ऐसा [दोनों हाथोंसे उसका आकार बताता है] जमा बैठा है। अच्छा फिर, जैसे ही प्यास बुझानेको मै "क्वास" [जौ की शराब] की सुराही उठाता हूँ तो उसमें हदसे ज्यादा ग़लीज़ चीज़—कुछ नहीं

तो एक निलचट्टा ही पडा है [कुछ देर फिर चुप रहकर] दुन्याशा, मैं जरा अपनी बात सुनानेके लिये दो मिनटकी तकलीफ देना चाहूँगा।

दुन्याशा—हाँ, हाँ, कहो।

एपिखोदोव—मैं एकान्तमें कुछ बातचीत करना चाहता था।

[गहरी साँस लेता है]

दुन्याशा—[झल्लाकर] अच्छा ठीक है, पहले मेरा दुपट्टा उधरसे उठाकर दे दो। आलमारीके पास रखा है। यहाँ बडी सीलन भी है।

एपिखोदोव—ज़रूर-ज़रूर। अभी लाता हूँ। अब मेरी समझमें अपनी पिस्तौलका काम आया है [गिटार लेकर बजाता हुआ चला जाता है]

याशा—सुनो बाईस आफ़त, किसीसे कहना नहीं......यह एकदम वज्र मूर्ख है। [जँभाई लेता है]

दुन्याशा—हाय राम! यह कहीं अपने ही गोली न मार ले [कुछ देर चुप रहकर] मेरे तो एकदम हाथ-पाँव फूल गये हैं। मैं हमेशा घबरा जाती हूँ। जब मैं मालकिनके यहाँ लाई गई थी तो निरी बच्ची थी—अब तो मुझमें किसानों जैसी कोई बात ही कहाँ रह गई है? खुद मालकिनकी तरह मेरे हाथ भी अब गोरे-गोरे हो गये हैं। ऐसी नाज़ुक और कोमल हूँ कि मुझे तो सबसे डर लगता है। बडी बुरी तरह डर जाती हूँ। सुनो याशा, अगर तुमने मुझे धोखा दिया तो समझ लेना, पता नहीं मेरे दिमाग़का क्या हो जायेगा।

याशा—[दुन्याशाका चुम्बन लेता है] अरे मेरी लीची ! सही बात है, लड़कीको कभी भी अपने आपको नहीं भूलना चाहिये। मुझे तो लड़कियोंका अपने आचार-विचारको भूल जाना बिल्कुल भी पसन्द नहीं है।

दुन्याशा—याशा, तुम्हारे प्यारमें मैं पागल हो गई हूँ। कितने पढ़े-लिखे आदमी हो तुम। हर चीज पर अपने विचार प्रगट कर लेते हो।

[कुछ देर चुप्पी]

याशा—[जँभाई लेता है] हाँ, सो तो ठीक है। मेरी तो राय यह है कि अगर कोई लड़की किसीको प्यार करती है, तो इसका मतलब उसमें चरित्रकी कमी है। [कुछ देर रुककर] खुली हवा में सिगार पीनेमें भी कैसा मजा है! [कोई आवाज़ सुनकर] लगता है इधर कोई आ रहा है...मालकिन और उनके साथी लोग हैं......[दुन्याशा आवेशसे उसका आलिंगन कर लेती है] अच्छा, अब घर जाओ—मानो तुम नदीमें नहाने को गई थीं...इधरके रास्तेसे जाओ, नहीं तो वे लोग मिल जाएँगे और सोचेंगे, मैंने ही तुमसे यहाँ मिलनेको कहा होगा। मुझे यह अच्छा नहीं लगेगा।

दुन्याशा—[धीरेसे खाँसते हुए] तुम्हारे सिगारने तो मेरे सिरमें दर्द कर दिया। [चली जाती है]

[याशा गिरजेके पास ही बैठा रहता है। रैनिवस्काया, गायेव और लोपाखिनका प्रवेश]

लोपाख़िन—आप एक बार अन्तिम रूपसे निश्चय कर डालिये। वक्त किसीकी राह नहीं देखता। अरे, बिल्कुल सीधी-सी तो बात ही है—

कि बंगले बनाने के लिये जमीन उठानेको आप राजी हैं या नहीं?
बस एक ही शब्दमें तो फैसला है—सिर्फ एक शब्द !

रैनिवस्काया—यह ऐसे भयंकर रूपसे यहाँ सिगार कौन फूँक रहा है ?

[बैठ जाती है]

गायेव—अब तो रेलकी लाइन भी बहुत पास आ गई है। इससे और भी आसानी हो गयी [बैठ जाता है] अब तो शहर जाओ, खाना खा आओ। वह मारी सफ़ेद गेंद पॉकिटमें ! मेरा तो घर जाकर एक बाजी खेलनेको मन कर रहा है।

रैनिवस्काया—जल्दी क्या है !

लोपाख़िन—सिर्फ़ एक ही तो शब्दकी बात है [अनुरोधसे] मुझे उत्तर तो दे दीजिये।

गायेव—[जँभाई लेकर] क्या कहा तुमने ?

रैनिवस्काया—[अपने पर्समें देखती है] कल इसमें ढेर-सा रुपया था और अब कुछ भी नहीं बचा। बिटिया वार्या हमें सिर्फ़ दूध का सूप खिला-पिलाकर ही जैसे-तैसे काम चलाती है। रसोईमें बूढ़ोंको मटरकी महेरीके सिवा कुछ खानेको नहीं मिलता और मैं हूँ कि अपना रुपया पानीकी तरह बहाती हूँ [पर्स गिरा देती है—सोनेके सिक्के बिखर जाते हैं] लो ये भी चले बाहर ! [झुँझला उठती है]

याशा—लाइये मैं समेटे देता हूँ [सिक्कोंको जमा करता है]

रैनिवस्काया—हाँ, ज़रा उठा देना याशा। मैं शहरमें खाना खाने पहुँची ही क्यों ?—वह ऊटपटांग संगीत और सूपकी बदबू भरे टेबिल-क्लाथों वाला गन्दा रेस्त्राँ...लियोनिद, तुम क्यों इतना पीते हो ? क्यों इतना खाते हो ? इतना बकते हो ? आज रेस्त्राँमें ही तुम

सत्रहवीं शताब्दीके बारेमें पतनशीलोंके विषयमें दुनियाभरकी बेकार की बक-बक करते रहे...और वह भी किससे ? बैरा और 'वेटरों' से 'पतनशीलों' के बारेमें बातें......? हुहँ

लोपाख़िन—आप ठीक कहती हैं।

गायेव—[हाथ झटक कर] भाई, साफ़ बात है कि मेरा तो अब सुधार हो नहीं सकता [याशासे झुँझलाकर] मेरे सामने यहाँ खड़ा-खड़ा क्यों नाच रहा है ?

याशा—[हँसता है] आपकी बात सुनकर मुझसे हँसे बिना नहीं रहा जाता।

गायेव—[रैनिवस्कायासे] या तो इसे या मुझे...

रैनिवस्काया—भाग, रे—याशा, चल भाग !

याशा—[रैनिवस्कायाको उसका पर्स देकर] जी, अभी जा रहा हूँ। [मुश्किलसे अपनी हँसी दबाकर] बस, इसी मिनट !

[जाता है]

लोपाख़िन—वह लखपति दैरिगानोव है न, वह आपकी जायदादको ख़रीदना चाहता है। सुनते हैं, नीलाममें वह खुद आयेगा।

रैनिवस्काया—यह तुमने कहाँ सुना ?

लोपाखिन—शहरमें सब यही कह रहे हैं।

गायेव—यारोस्लाव्लवाली मौसीने कुछ सहायता करनेका वचन तो दे दिया है, लेकिन कब और कितना वह देगी, सो नहीं पता।

लोपाख़िन—कितना भेज देंगी वह ? एक लाख ?—दो लाख ?

रैनिवस्काया—यही ज्यादा-से ज्यादा दस-पन्द्रह हज़ार ! और उसीके लिए हम उनके बड़े अहसानमन्द होंगे।

लोपाखिन—माफ़ कीजिए, आप जैसे अस्थिर चित्तवाले अव्यावहारिक और विलक्षण लोगोंसे पूरी जिन्दगीमें अभी तक मेरा पाला नहीं पड़ा था। मै आपसे सीधी-सादी भाषा में साफ़ बता रहा हूँ कि आपकी जायदाद नीलाम होने जा रही है, और लगता है आप लोग समझना ही नहीं चाहते।

रैनिवस्काया—अच्छा, तो हमलोग क्या करें? बताओ न, क्या करें?

लोपाखिन—रोज़ ही क्या आपको नहीं बताता? एक ही बात है सो रोज-रोज कह देता हूँ। आपको चॅरीका बगीचा और जमीनको बॅगले बनानेको किरायेपर उठा देना चाहिए। और यह आप फौरन कर दीजिए, जितनी जल्दी हो सके उतनी जल्दी। नीलाम छातीपर आ गया है। ज़रा समझनेकी कोशिश कीजिए; सिर्फ़ एक बार बॅगले बनानेका मनमें निश्चय कर डालिए, और फिर जितना रुपया चाहें मिल जायेगा। लीजिए साहब, आप बचे-बचाये रक्खे हैं।

रैनिवस्काया—बॅगले...गर्मीमें घूमने आनेवाले लोग—माफ करो, यह सब बहुत अच्छा नहीं लगता है।

गायेव—मैं भी तुम्हारी बात मानता हूँ।

लोपाखिन—हद हो गई! अब तो मैं या तो सिर फोड़ लूँगा या चीखकर बेहोश हो जाऊँगा। अब मुझसे नहीं सहा जाता। आप लोगोंने तो मुझे पागल बना दिया। [गायेव से] आप सठिया गये हैं।

गायेव—क्या कहा?

लोपाखिन—बुढ़ा गये हैं आप।

[जानेके लिए उठता है]

रैनिवस्काया—[डरी हुई-सी] नहीं, नहीं, जाओ मत। भैया, रुको तो सही। शायद हम लोग कोई रास्ता सोच लें।

लोपाखिन—सोचनेको उसमें रक्खा ही क्या है ?

रैनिवस्काया—मैं प्रार्थना करती हूँ मत जाओ। तुम यहाँ रहते हो तो मेरा मन लगा रहता है। [कुछ देर रुककर] मुझे ऐसा लगता रहता है, जैसे कुछ होनेवाला है। जैसे यह घर अभी-अभी हमारे देखते-देखते गिर पड़ेगा और हमारे कानोंके पर्दे फट जायेंगे !

गायेव—[बड़ी अन्यमनस्कतासे] सफेद गेंद पॉकेटमें !—ऊँह, बाल-बाल बच गई !

रैनिवस्काया—हम लोग बड़े पापी हैं !

लोपाखिन—तुम ? आखिर क्या पाप आपने कर डाला ?

गायेव—[मुँहमें एक मिठाई डाल लेता है] लोग कहते हैं मैंने अपनी सारी जायदाद शक्करकी गोलियोंमें खा डाली ! [हँसता है]

रैनिवस्काया—हाय, मेरे पापोंका क्या पूछना ! मैंने हमेशा बिना जरा भी सोचे-समझे, पागलोंकी तरह रुपया बहाया है। ऐसे आदमी से शादीकर बैठी, जिसे कर्ज करनेके सिवा कोई और काम ही नहीं था। ऐसी बुरी तरह उसने शराब पी कि शैम्पेन पीते-पीते ही उसके प्राण निकल गये। दुर्भाग्य मेरा यह कि फिर मैंने दूसरे आदमीको प्यार किया—और फौरन ही मुझे सबसे पहला दण्ड भी मिला—मेरे ऊपर वज्र टूट पड़ा......यहीं, इसी नदीमें... मेरा बेटा डूब मरा ! फिर मैं विदेश चली गई ताकि यहाँ कभी न लौटूँ...इस नदीको कभी न देखूँ...हमेशा बाहर ही घूमती रहूँ...मैं आँखें बन्द करके भाग खड़ी हुई...दिग्भ्रान्तकी तरह। लेकिन वह मेरा दूसरा पति क्रूरता और निर्दयतासे मेरे पीछे लगा रहा—मैंने मैन्तोंनमें एक बँगला खरीदा—क्योंकि यह साहब वहाँ जाकर बीमार हो गये। तीन साल तक रात और दिन एक पल आराम नहीं मिला। इनकी उस बीमारी और

बीमार दोनोंने मुझे चूर-चूरकर डाला। मेरी आत्माका जैसे सारा रस निचुड गया। आखिरी साल जब कर्जके लिए मेरा बँगला बिक गया तो मैं पैरिस चली आई। यहाँ इन साहब ने दूसरी औरतके लिए मेरा सारा माल मता छीनकर मुझे छोड़ दिया। तब मैंने जहर खाकर मरनेकी ठान ली।...हाय, कैसी शर्मनाक!...फिर अचानक मेरे दिलमें रूसके लिए, अपने देशके लिए, अपनी छोटी बच्चीके लिए हूक-सी उठने लगी...[**अपने आँसू पोंछती है**] हे भगवान्, हे प्रभो, मेरे पापोंको क्षमाकर, मेरे ऊपर दयाकर! अब मुझे और दण्ड मत दे! [**अपनी जेबसे एक तारका कागज निकालती है**] पैरिस से मुझे आज ही यह तार मिला है! वह मुझसे क्षमा माँगते हैं, लौट आनेकी खुशामद करते हैं। [**तारको फाड़ देती है**] कहीं सङ्गीत हो रहा लगता है। [**सुनती है**]

गायेव—वही हमारी प्रसिद्ध पुरानी यहूदी संगीत-मंडली है। चार वायलिन, एक बाँसुरी, और दो बास है!

रैनिवस्काया—अच्छा, अभी तक चली आ रही है वह मण्डली? किसी दिन सन्ध्याको इन्हें बुलाना चाहिए, फिर डटकर नाच-गाना हो।

लोपाखिन—[**सुनते हुए**] मुझे तो कुछ भी सुनाई नहीं देता [**गुनगुनाता है**] "पैसेके लिए जर्मन, रूसीको बना देगा फ्रान्सीसी!" [**हँसता है**] कल थियेटरमें मैंने ऐसी चीज़ देखी कि बस! बुरी तरह मज़ाकिया।

रैनिवस्काया—हो सकता है उसमें मजाकिया क़िस्मकी कोई बात ही न हो। खेलको देखनेकी बजाय तुम कभी-कभी खुद अपनेको ही देख लिया करो। क्या नीरस रूखी तुम लोगोंकी ज़िन्दगी है! और तुम हो कि दिनभर बक-बक ही करते रहते हो!

लोपाखिन—सो तो सही है। ईमानदारीसे अगर कहो तो हमलोग बिल्कुल बेवक़ूफ़ों की-सी ज़िन्दगी जीते हैं [कुछ देर रुककर] मेरा बाप बिल्कुल बुद्धू—किसान था। न तो वह ख़ुद कुछ जानता था, न मुझे ही उसने कुछ सिखाया। बस, नशेमें धुत होता तो छड़ीसे मुझे ख़ूब पीटता। मैं भी ठीक वैसा ही गोबर-गनेश हूँ। ढंगसे मैंने कुछ भी तो नहीं पढ़ा तभी। लिखाई मेरी ऐसी भद्दी, कि बस, सूअरकी तरह लिखता हूँ। लोगोंके सामने लिखनेमें भी शर्म लगती है...

रैनिवस्काया—अच्छा भैया, अब तो तुम्हे शादी कर डालनी चाहिए!

लोपाखिन—हाँ-हाँ...सो तो ठीक कहती है आप।

रैनिवस्काया—हमारी वार्यासे ही शादी कर डालो न, बडी अच्छी लडकी है।

लोपाखिन—जी हाँ, ठीक है।

रैनिवस्काया—शील-स्वभावकी भी अच्छी है। दिनभर कुछ न कुछ करती ही रहती है। सबसे बडी बात, इससे ज्यादा और क्या चाहिए कि वह तुम्हें चाहती है...तुम भी तो हमेशासे उसे पसन्द करते हो।

लोपाखिन—अरे, मुझे इसमें आपत्ति ही कहाँ है? वह तो बड़ी ही अच्छी लड़की है।

[थोड़ी देर चुप्पी]

गायेव—छः हज़ार रूबल सालानाकी मुझे बैंकमें एक जगह मिल रही है। तुम्हें पता है?

रैनिवस्काया—तुम और बैंक में? जैसे हो, अपने घर बैठो।

[ओवरकोट लेकर फ़ीर्सका प्रवेश]

फ़ीर्स—सरकार जाड़ा है। इसे पहन लें।

गायेव—तुम भी फ़ीर्स एक मुसीबत हो।

फ़ीर्स—इस तरह सरकार, आप थोड़े ही रह सकते हैं। सुबह बिना कुछ कहे-सुने चले गये—[उसके कपड़े ध्यान से देखता है]

रैनिवस्काया—फ़ीर्स, तुम तो बहुत बूढ़े दिखाई देते हो।

फ़ीर्स—क्या कहा बीबीजी ?

लोपाखिन—उन्होंने कहा, तुम ज्यादा बूढ़े दिखाई देते हो।

फ़ीर्स—बड़ी लम्बी जिन्दगी काटी है मैंने सरकार। जब आपके पिताजीका जन्म भी नहीं हुआ था तब लोगोंने मेरी शादी तय कर डाली थी...[हँसता है] गुलामोंकी स्वतन्त्रतासे* पहले ही मैं उनका खास अर्दली था। मैं तो 'स्वतन्त्र' होनेको राज़ी नहीं हुआ। अपने पुराने मालिकके साथ ही रहता रहा।...[कुछ देर चुप रहकर] मुझे याद है, उन लोगोंने कैसी-कैसी खुशियाँ मनाई थी...और कम्बख्त यह तक जानते नहीं थे कि किस बातपर यह खुशियाँ मना रहे है ?

लोपाखिन—वे पुराने दिन भी कैसे अच्छे थे। कमसे कम कोड़ेबाज़ी तो होती थी।

फ़ीर्स—[कुछ न सुनकर] जरूर! किसान अपनी हैसियत समझते थे, मालिक अपनी। लेकिन अब तो सभी मनके राजा हैं—कोई सिर पूँछ ही समझमें नहीं आता।

गायेव—फ़ीर्स अब चुप रहो। कल मुझे शहर जाना है। एक जनरलसे मेरा परिचय करानेकी बातचीत है। शायद वह हमें कर्ज दे देगा।

---

* १८६१ का किसानोंका दासता-उन्मूलन-आन्दोलन।

लोपाख़िन—उससे क्या होगा ? आप विश्वास रखिये उससे आप अपना सूद भी नहीं चुका पायेंगे ।

निवस्काया—यह तो सब इनकी बकवास है । ऐसा कोई जनरल-वनरल नहीं है ।

[त्रोफ़िमोव, आन्या और वार्याका प्रवेश]

गायेव—हमारी लडकियाँ जा रही हैं ।

आन्या—देखो बेन्च पर, अम्मा वो बैठीं ।

रैनिवस्काया—[प्यारसे] यहाँ आओ, आओ । यहाँ आ जाओ बिटिया [आन्या और वार्याको बाहोंमें कसती है] काश, कि तुम जानती मैं तुम दोनोंको कितना प्यार करती हूँ ! यहीं मेरे पास बैठ जाओ । हाँ, ऐसे !

[सब बैठ जाती हैं]

लोपाख़िन—यह हमारे चिरन्तन-विद्यार्थी साहब हमेशा छोकरियाके साथ लगे रहते हैं ।

त्रोफ़िमोव—अरे, आप अपना काम देखिये ।

लोपाख़िन—अभी आप पचासके हो जायेंगे और फिर भी आप विद्यार्थी ही हैं ।

त्रोफ़िमोव—अपने यह बेवकूफ़ीके मज़ाक बन्द करो !

लोपाख़िन—अरे बुद्धूमल, इतना, आप चिढ़ किस बात पर रहे हैं ?

त्रोफ़िमोव—उफ़ ! कह तो दिया मेरा पीछा छोड़ दो ।

लोपाख़िन—अच्छा, ज़रा यह तो बताओ, तुम्हारा मेरे बारेमें क्या ख्याल है ?

त्रोफ़िमोव—तो जनाब, यैर्मोलाय अलेक्सीविच साहब, सुनो अपने बारेमें मेरी राय । आदमी तुम धनी हो ही, जल्दी ही लखपति हो

जाओगे। जैसे प्रकृतिकी व्यवस्था ठीक रखनेके लिये ऐसा जगली जानवर, जो रास्तेमें आनेवाले हर शिकारको निगल जाए उपयोगी है—ठीक वही हाल तुम्हारा है।

[सब हँसते हैं]

वार्या—पेत्या, अच्छा हो तुम हमें ग्रहोंके बारेमें कुछ बताओ।

रैनिव्स्काया—नहीं, कल हमलोग जो बात कर रहे थे उसे ही पूरी करें।

त्रोफ़िमोव—किसके बारेमें ?

गायेव—शेख़ीके।

त्रोफ़िमोव—हाँ, कल हम काफ़ी देर तक लम्बी-चोडी बहस करते रहे थे, मगर किसी नतीजे पर नहीं पहुँचे। शेखीका हम जिस अर्थमें प्रयोग करते हैं उसमें कुछ न कुछ रहस्यका तत्त्व रहता है। यों अपनी जगह आप ठीक हो सकते हैं। लेकिन बिना अधिक उलझन और गहराईमें जाये, अगर ज़रा भी सामान्य तर्कसे देखें तो शेखीकी ज़रूरत क्या है ? अगर मानसिक रूपसे आदमी बिल्कुल दीवालिया ही है, या जैसा कि लोग होते हैं, गँवार, बुद्धू या भीतरसे दुःखी है तब उसके लिये शेखीकी उपयोगिता क्या है ? अब अपने-आपको सबसे अच्छा या ऊँचा सिद्ध करनेका प्रयत्न हमें बन्द कर देना चाहिए। जो अपना काम हो सो किये जाइए—यही बहुत काफ़ी है।

गायेव—यानी मर जाइए!

त्रोफ़िमोव—कौन जानता है ? और इस मरनेका भी आख़िर मतलब क्या है ? शायद आदमीमें हज़ारों प्रकारके ज्ञान भरे पड़े हैं; लेकिन हम तो इतना ही जानते हैं कि मृत्युके समय उसकी केवल पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ समाप्त हो जाती हैं। हो सकता है,—उस समय उसकी शेष पिचानवे जीवित ही रहती हों।

रैनिव्रस्काया—पेत्या, तुम तो बड़े होशियार हो गये हो।

लोपाख़िन—[व्यंग्यसे] ख़तरनाक रूपसे होशियार।

त्रोफ़िमोव—मानवता अपनी शक्तियोंका विकास करती हुई बढ़ती है। आज जो चीज़ आदमीकी पहुँचसे बाहर है—एक न एक दिन उसकी पकड़में आ जायेगी, उसके लिए सरल हो जायेगी। हमें तो सिर्फ़ काम किये जानेकी ज़रूरत है—अपनी पूरी शक्तियोंसे सत्यके खोजियोंको बढ़ावा देते जानेकी ज़रूरत है। जहाँ तक मैं जानता हूँ आज हमारे रूसमें काम करनेवाले बहुत ही थोड़े हैं। मुझे पता है, बुद्धिजीवियोंमें अधिकांश न तो कुछ पाना चाहते हैं; न करते हैं—वे अभी तक तो किसी भी कामके हैं नहीं। कहते वे अपनेको बुद्धिजीवी हैं, लेकिन नौकरोंसे कुत्तोंकी तरह व्यवहार करते हैं—किसानोंसे ऐसे पेश आते हैं जैसे वे जानवर हों। कुछ भी सीखते नहीं हैं। गम्भीरतासे कुछ पढ़ना-लिखना तो बहुत दूर की बात है—सच पूछा जाय तो कुछ भी नहीं करते। सिर्फ़ विज्ञानकी बातें करते हैं—कलाके बारेमें बिल्कुल कोरे होते हैं। वे सब गम्भीर किस्मके लोग हैं—हमेशा मनहूस सूरतें बनाये रहते हैं—हर चीज़में दार्शनिकता छाँकते हैं और भारी-भारी मसलों और सिद्धान्तोंपर बातें करते हैं। लेकिन उनमें निन्नानबे प्रतिशत जङ्गलियोंकी तरह रहते हैं। घूँसों और गालियोंसे कम तो बातें ही नहीं करते। ठूँस-ठूँसकर खाते हैं, गन्दगी और घुटनमें पड़े रहते हैं—उनके चारों तरफ़ बदबू, खटमल और नैतिक-गन्दगी ही दिखाई देती हैं। इसका मतलब साफ़ है कि हमारी यह सारी अच्छी-अच्छी बातें सिर्फ़ अपने और दूसरोंको बहकानेके लिए हैं। हम लोग बातें इतनी करते हैं, आप मुझे एक भी तो बच्चोंके पालन-पोषणकी नर्सरी बता-

इए—रीडिंग-रूम बताइए ? सिर्फ़ उपन्यासोंमें ही उनका अस्तित्व है। वास्तविक जीवनमें उनका कहीं अता पता नहीं है। गन्दगी गँवारूपन और एशियाई-ईर्ष्या उसके सिवा यहाँ और कुछ भी तो नहीं है। मुझे तो भाई, इन गम्भीर-चेहरोंसे डर लगता है, घृणा होती है। इन गम्भीर बातोंसे मैं तो कतराता हूँ। चुप रह-कर ही हम लोग कमसे कम इसमें तो अच्छे ही है।

लोपाखिन—आपको पता है, मैं सुबह चारके बाद उठता हूँ और सुबहसे लेकर सन्ध्या तक काममें ही फँसा रहता हूँ। मेरे पास अपना रुपया है—दूसरोंका रुपया है। वह सब मेरे ही हाथों इधरसे-उधर होता रहता है। इसलिए मुझे पता है कि मेरे आस-पासके ये सब लोग कैसे हैं। लोग कितने बुरे या गैर ईमानदार है, इस बातको देखनेके लिए आपको अपनी ओरसे कुछ भी करनेकी जरूरत नहीं। कभी-कभी जब मैं सुबह जागा हुआ लेटा रहता हूँ तो सोचता हूँ—'हे भगवान्, तू ने हमें ये लम्बे-चौड़े जङ्गल दिये है—असीम मैदान दिये हैं—दूर-दूर तक फैले क्षितिज दिये हैं—इस ऐसी दुनियाँमें रहकर तो हमें दैत्य होना चाहिए था।'

रेनिवस्काया—तो तुम दैत्य होना चाहते हो ? ये दैत्य कहानी-किस्साकी किताबोंमें ही अच्छे लगते है। वास्तविक जिन्दगीमें तो वे हमारे प्राण खा लेंगे।

[पृष्ठभूमिमें गिटार बजाता हुआ एपिख़ोदोव जाता है]

रेनिवस्काया—[स्वप्नाविष्ट-सी] ऐपिखोदोव जा रहा है।

आन्या—[खोई-खोई-सा] हाँ, ऐपिखोदोव जा रहा है।

गायेव—भाइयो, दिन छिप गया है।

त्रोफ़िमोव—हाँ !

गायेव--[धीरे-धीरे लेकिन बड़ी आलङ्कारिक भाषामें] हे प्रकृति, ओ दिव्य प्रकृति, अपने अनन्त तेजसे तू प्रकाशित है...निरपेक्ष और सुन्दर......तू--जिसे हम 'माँ' कहते हैं, तू हमारे जीवन और मरणके किनारोंको मिलाती है...तू ही हमें जीवन देती है और तू ही उसका नाश कर देती है।

लोपाखिन--"ऑफ़ीलिया, देवी, अपनी प्रार्थनाओंमें मेरे पापोंको भी याद कर लेना।"

रैनिवस्काया--चलो, खानेका समय हुआ जा रहा है।

वार्या--हाय, उसने मुझे कैसा डरा दिया। मेरा तो दिल अभीतक धक-धक कर रहा है।

लोपाखिन--भाइयो और बहनो, एक बार आपको फिर याद दिला दूँ, बाईस अगस्तको चॅरीका बगीचा नीलाम हो जायेगा। कुछ सोचिए, उसके बारेमें कुछ सोचिए।

[त्रोफ़िमोव और आन्याके सिवा सब जाते हैं]

आन्या--[हँसकर] मैं तो उस गुण्डे मुसाफिरकी बड़ी कृतज्ञ हूँ। उसने वार्याको डरा दिया और हम लोग अकेले रह गये।

त्रोफ़िमोव--वार्याको डर है कि कहीं हम एक-दूसरेके प्यारमें न पड़ जायँ। इसलिए पूरे-पूरे दिन वह हमें अकेला नहीं छोड़ती। उसकी सङ्कीर्ण बुद्धिमें यह बात कभी आ ही नहीं सकती कि हम लोग प्यारसे ऊपर हैं। हमारी जिन्दगीका सम्पूर्ण अर्थ और लक्ष्य है कि--उस हर क्षणभङ्गुर छलना और तुच्छताको अपने रास्तेसे हटा दें जो हमारी प्रसन्नता और स्वतन्त्रताका रास्ता रोके खड़ी है। बढ़ो, सुदूर क्षितिजमें चमकते हुए उस झिलमिलाते सितारे तक हमें आगे बढ़ते जाना है। आगे बढ़ो, दोस्तो पीछे मत घिसटो।

आन्या—[अपने हाथ एक दूसरेमें फँसाकर] सच, तुम कैसा अच्छा बोलते हो ! [कुछ देर चुप रहकर] यहाँ बड़ा अच्छा लग रहा है।

त्रोफ़िमोव—हाँ, मौसम बड़ा सुहावना है।

आन्या—पेत्या, पता नहीं तुमने मुझे क्या कर दिया है कि मैं अब चैरीके बगीचेको पहलेकी तरह प्यार नहीं करती। पहले तो मैं इसे प्राणोंकी तरह चाहती थी। मैं सोचा करती थी, हमारे बगीचेकी तरहकी धरतीपर कोई चीज़ नहीं है।

त्रोफ़िमोव—सारा रूस ही तो हमारा बगीचा है। आन्या, धरती बहुत सुन्दर है, बहुत बडी है ! और इसमें एकसे एक सुन्दर चीज़ें हैं [कुछ क्षण चुप रहकर]—जरा सोचकर तो देखो आन्या। तुम्हारे दादा-परदादा और सारे पुरखे गुलामोंको पालनेवाले थे..... जीते-जागते प्राणियोंके मालिक थे—इस बगीचेकी हर चॅरीसे, हर पत्तीसे, हर तनेसे ऐसा नहीं लगता जैसे एक जीवित-आत्मा हमारी ओर आँखे फाड-फाड़कर देख रही हो ? क्या तुम्हे उनकी आवाजें नहीं सुनाई देतीं ? अरे मालिक लोगो, इन सबने तुम्हें बदल डाला है—तुम्हारे पुरखों और तुम्हें दोनोंको बदल डाला है। इसी लिए तो तुम या तुम्हारी माँ, कोई भी महसूस नहीं करते कि तुम लोग उन्हींके बलपर रङ्गरेलियाँ उडा रहे हो जिन्हें तुम्हारे घरमें घुसने तककी इजाज़त नहीं है। उफ़ ! कैसा भयङ्कर है ! यह तुम्हारा बगीचा भी बड़ी डरावनी जगह है। सन्ध्या या रातको यहाँ जब कोई घूमता है तो झुटपुटेमें पेडोंकी मनहूस छालें झिलमिलाती हैं। पुराने-पुराने चॅरीके पेड़ भयङ्कर स्वप्नोंसे त्रस्त सदियों पहलेके युगमें डूबे लगते हैं। हाँ, हाँ ! हम लोग अभी भी कमसे कम दो-सौ साल पिछड़े

हुए हैं। अभी तक हमने पाया ही क्या है ? अपने अतीतके लिए हमारे पास कोई निश्चित दृष्टिकोण नहीं है। हम तो सिर्फ सूक्तियाँ बघारते है, आजके पतन और ह्रासपर रोते हैं और वोद्का पीते हैं। साफ़ बात है कि वर्तमानमें जीनेके लिए हमें अतीतसे पीछा छुडाना होगा—हमें उसे तोड फेकना होगा। और अतीतको तिलांजलि हम तभी दे सकते हैं जब इसके लिए काफ़ी कष्ट उठायें...... अन्धाधुन्ध और अनथक परिश्रम करें। यह समझ लेना, आन्या !

आन्या—जिस मकानमें हमलोग रहते है, अब वह हमारा नहीं रहा। मैं तुमसे सच कहती हूँ मैं अब इसे छोडकर चली जाऊँगी।

त्रोफ़िमोव—अगर अब भी यहाँकी चाबियाँ तुम्हारे पास हों, तो फेंको उन्हे कुएँमें, और भाग जाओ। हवाकी तरह उन्मुक्त, स्वतन्त्र बनो !

आन्या—[आनन्दोवेगसे] आह, तुमने कितने सुन्दर ढङ्गसे यह बात कही है।

त्रोफ़िमोव—आन्या, मेरा विश्वास करो ! मैं अभी तीसका भी नहीं हूँ—मैं नवयुवक हूँ। हालाँकि अभी भी मैं विद्यार्थी ही हूँ, लेकिन कितना जमाना देख चुका हूँ। जाड़ा आते ही मै भूखा रहूँगा, बीमार रहूँगा—परेशान रहूँगा और भिखारीकी तरह दाने-दानेको मोहताज हो जाऊँगा। भाग्यके कितने ऊँच-नीच मैंने नहीं जाने ? कहाँ-कहाँ मैंने ठोकरें नहीं खाई ? पर हर क्षण, दिन और रात, मेरी आत्मामें न जाने कैसी-कैसी बातें झिलमिलाया करती है...आज मुझे प्रसन्नताका आभास हो रहा है। आन्या, मैं उसे अपनी ओर आते हुए साफ़ देख रहा हूँ।

आन्या—[उदास होकर] चाँद निकल आया है।

[एपीखोदोव गिटारपर वही विषादभरी धुन बजाता सुनाई देता है। चाँद निकल आया है। चिनारके पेड़ोंके पास कहीं वार्या आन्याको खोजती पुकार रही है—"आन्या तुम कहाँ हो!"

त्रोफ़िमोव—हाँ, चाँद निकल आया है। [कुछ क्षण मौन] देखो, वह खुशी कैसी चली आ रही है।..... वह आ रही ...मेरे पास और पास चली आ रही है। मुझे उसके कदमोंकी आवाज सुनाई देने लगी है......अगर हम उसे कभी देख न सकें, जान न सकें, उसकी ओरसे मुँह फेर लें, तो क्या उसका कुछ बिगड़ता है? दूसरे देखेंगे—हमारे बादवाले देखेंगे उसे।

वार्या—[नेपथ्यसे] आन्या, तुम कहाँ हो?

त्रोफ़िमोव—लो, यह वार्या फिर आ मरी। [गुस्सेसे] मुसीबत है।

आन्या—खैर, चलो नीचे नदीपर चलें। वहाँ बड़ा सुहावना है।

त्रोफ़िमोव—हाँ, वहीं चलें।

[जाते हैं]

वार्याकी आवाज़—"आन्या! ओ आन्या!"

[पर्दा गिरता है]

तीसरा अंक

[एक बड़ी बैठक। इसे एक बड़े ड्राइंगरूमसे महराबदार हिस्से द्वारा बाँटकर बनाया गया है। सन्ध्याका समय। एक झाड़ जल रहा है। भीतरके कमरेमें वही यहूदी-आर्केस्ट्रा बजता सुनाई दे रहा है जिसका ज़िक्र दूसरे अंकमें आया है। बड़ेवाले ड्राइंगरूममें सब लोग 'महारास' नाच रहे हैं। सिम्योनोव पिश्चिक चिल्लाता हुआ सुनाई दे रहा है "जोड़े-जोड़ेमें आइये।"

इस ड्राइंगरूममें लोग जोड़े-जोड़ेमें प्रवेश करते हैं। पहले चार्लोटा और पिश्चिक, फिर त्रोफ़िमोव और रैनिवस्काया, फिर पोस्टमास्टर क्लर्कके साथ आन्या, और फिर स्टेशनमास्टरके साथ वार्या। वार्या नाचते हुए ही चुप-चुप सिसकती अपने आँसू पोंछती जा रही है। आखिरी जोड़ेमें दुन्याशा है। ये लोग नाचते हुए ही ड्राइंगरूम पार कर जाते हैं]

पिश्चिक—[ज़ोर-ज़ोरसे फ्रेंचमें बोलता है] बड़े घेरेमें—बड़े घेरेमें। रासकी गतिसे। भाइयो, नाचते जाइये और अपनी-अपनी साथिनका शुक्रिया अदा करते जाइये।

[फ़ीर्स शामके कपड़े पहने हुए ट्रे में सोडावाटर लाता है। पिश्चिक और त्रोफ़िमोव बैठकमें प्रवेश करते हैं]

पिश्चिक—मेरा दिल कुछ कमज़ोर है। दो बार मुझे दौरे भी पड़ चुके हैं। नाचनेमें मेरे लिए काफ़ी मेहनत पड़ती है, लेकिन कहावत है कि दलमें रहो तो औरोंकी तरह भौंको चाहे न भौंको, लेकिन दुम

तो हिलाओ ही। वैसे तो मेरा कहना है कि मैं घोड़ेकी तरह मज़बूत हूँ। मेरे स्वर्गीय पिताजी, भगवान उनकी आत्माको शान्ति दे, अकसर मज़ाक़मे हमारी मूल-उत्पत्तिके बारेमें कहा करते थे कि सिम्योनेव-पिश्चिक लोग उसी घोड़ेके वंशज हैं जिसे कालीगुलाने अपनी सीनेटका मेम्बर बनाया था। [बैठ जाता है] लेकिन सारी मुसीबत यह है कि मेरे पास पैसा नहीं है। भूखे कुत्तेका विश्वास गोश्तके सिवा किसीमें नहीं होता..... [ख़र्राटे लेने लगता है, लेकिन फ़ौरन ही जग पड़ता है] यही हाल मेरा है...पैसेके सिवा मेरे दिमागमें कुछ और आता ही नहीं।

त्रोफ़िमोव—सचमुच, तुम्हारे सूरतसे टपकता तो कुछ-कुछ घोड़ापन ही है।

पिश्चिक—जनाब, घोडा बडा अच्छा जानवर होता है. .उसे बेचा जा सकता है।

[बगलवाले कमरेमें बिलियर्ड खेले जानेकी आवाज़। बड़े ड्राइंग-रूममें जानेवाली महराबमें वार्या दिखाई देती है]

त्रोफ़िमोव—[चिढ़ाते हुए] श्रीमती लोपाखिन, ऐऽ श्रीमती लोपाखिन !

वार्या—[गुस्से से] चुचके मुँहके !

त्रोफ़िमोव—हाँ, मै चुचके मुँहका हूँ। मुझे इस बातका गर्व है !

वार्या— [सोचते हुए रुकावट से] गानेवालोंको तो हमने किराये पर बुला तो लिया, मगर उन्हे देनेको क्या रखा है हमारे पास ?

[चली जाती है]

त्रोफ़िमोव—[पिश्चिक से] अपना सूद चुकानेके लिए पैसोंका प्रबन्ध करनेमे तुमने ज़िन्दगीमें जितनी शक्ति खर्चकी है—अगर वही

किसी और काममें लगाई होती तो तुम दुनिया पलट कर रख देते।

पिश्चिक—प्रचण्ड मेधावी विख्यात महापुरुष दार्शनिक नीत्शेने अपनी रचनाओंमें बताया है कि बैंकके जाली नोट बना लेनेमें कोई पाप नहीं है।

त्रोफ़िमोव—तुमने नीत्शेको पढ़ा है?

पिश्चिक—इससे क्या? मुझे तो दाशेंका बता रही थी। अब तो अपनी यह हालत हो गई है कि शायद मैं भी बैंकके जाली नोट बनाने लगूँ। परसों मुझे ३१० रूबल दे ही देने हैं। [चौंककर जेबें देखता है] ऐं, रुपये कहाँ गये? हाय-हाय! मेरा तो रुपया खो गया! [*आँखोंमें आँसू भरकर*] *कहाँ गया मेरा रुपया?* [**एकदम प्रसन्न होकर**] अरे, यह है तो सही, सीवनमें चला गया था। इसने तो मेरे प्राण खींच लिए।

[रैनिवस्काया और चार्लोटा का प्रवेश]

रैनिवस्काया—['**लेज़िगका**', **कज़्ज़ाकी नाचका, गाना गुनगुनाती है**] लियोनिद अभी तक लौटे क्यों नहीं? शहरमें क्या कर रहे हैं अब तक? [दुन्याशा से] गानेवालोंको कुछ चाय-वाय दे दो न।

त्रोफ़िमोव—हो सकता है अभी तक नीलाम न हुआ हो।

रैनिवस्काया—गाने-बजानेके और नाचने खेलनेके लिए तो यह वक्त वैसे ठीक नहीं है। पर खैर अब किया भी क्या जा सकता है?

[बैठकर धीरे-धीरे गुनगुनाती है]

चार्लोटा—[*पिश्चिकको ताशोंकी एक गड्डी देकर*] यह ताशोंकी गड्डी है। कोई भी एक ताश मनमें सोच लो।

पिश्चिक—सोच लिया।

चार्लोटा—अब ताशोंको फेट दो। ठीक। पिश्चिक महाशय, अब इन्हें इधर दो। एक—दो—तीन! अब जरा अपनी सामनेवाली जेबमें देखो।

पिश्चिक—[अपनी सामनेकी जेबसे एक ताश निकाल लेता है] हुकुमका अट्ठा! बिल्कुल ठीक! [आश्चर्यसे] भई, बहुत खूब!

चार्लोटा—[ताशकी गड्डी अपने हथेलीपर रखकर त्रोफिमोवकी ओर बढ़ाते हुए] फुर्तीसे बताइए तो सबसे ऊपरका ताश क्या है?

त्रोफिमोव—अच्छा देखूँ। हुकुमकी बेगम।

चार्लोटा—ठीक। [पिश्चिकसे] अब सबसे ऊपरका ताश क्या है?

पिश्चिक—पानका इक्का।

चार्लोटा—ठीक [ताली बजाती है और ताशोंकी गड्डी गायब हो जाती है] आजका मौसम कैसा लुभावना है!

[जैसे धरतीमेंसे आ रही हो, ऐसी एक रहस्यमय ज़नानी आवाज़ उसकी बातका ज़वाब देती है—'हाँ देवी जी, सचमुच आजका मौसम बहुत अच्छा है']

चार्लोटा—तुम मेरी सुन्दरताकी देवी हो।

आवाज़—और देवी, तुम भी काफ़ी सुन्दर हो!

स्टेशनमास्टर—[ताली बजाते हुए] शाबास! अपनी आवाजको तुमने खूब साधा है।

पिश्चिक—बहुत खूब, चार्लोटा आइवानोव्ना, मैं तो हज़ार जानसे तुम पर लट्टू हो गया।

चार्लोटा—प्रेम? [कन्धे झटककर] यह मुँह और मसूरकी दाल? तुम प्यारके लायक हो? [जर्मन कहावत दुहराता है]"आदमी अच्छे हो सकते हो, लेकिन गायक बुरे हो।"

त्रोफिमोव—[पिश्चिकके कन्धेपर हाथ मारकर] वाह बूढ़े घोड़े!

चार्लोटा—सावधान भाइयो ! एक और खेल ! [एक कुर्सीसे शॉल उठाकर] यह एक बहुत बढ़िया शाल है। मुझे इसे बेचना है ! [उसे हिलाते हुए] है कोई खरीदार ? कोई खरीदेगा ?

पिश्चिक—वाह !

चार्लोटा—एक-दो-तीन [शॉलको फुर्तीसे उठा लेती है ! शॉलके पीछेसे आन्या निकल पड़ती है। आन्या झुककर सबका अभिवादन करती है और अपनी माँकी ओर झपटती है। माँका आलिङ्गन करके वह बड़ेवाले ड्राइङ्गरूमके शोरगुल हँसी मज़ाक़ में चली जाती है]

रैनिवस्काया—शाबास ! शाबास ! [तालियाँ बजाती है]

चार्लोटा—अच्छा फिर ! एक-दो-तीन...... [फिर कम्बल उठा लेती है। कम्बलके पीछे वार्या अभिवादन करती झुकी खड़ी है]

पिश्चिक—[अथाह आश्चर्यसे] वाह कमाल है। क्या कहना !

चार्लोटा—खेल खतम। [कम्बलको पिश्चिकके ऊपर फेंक देती है। सबका अभिवादन करती है और बड़ेवाले ड्राइङ्गरूममें भाग जाती है]

पिश्चिक—[उसके पीछे भागते हुए] अरे चुड़ैल। अजब लड़की है। [चला जाता है]

रैनिवस्काया—लियोनिदका अभी तक कोई अता-पता नहीं है। समझमें नहीं आता कि शहरमें अब तक वह कर क्या रहे हैं ? अरे, अब तक तो सब कुछ खतम हो गया होगा। जायदाद बिक गई, या आज नीलाम ही नहीं हुआ—हमें इतनी देर दुविधामें रखने की क्या ज़रूरत थी उन्हें ?

वार्या—[उसे ढाँढस बँधाती हुई] मामाने उसे खरीद लिया होगा। मुझे पक्का विश्वास है।

ओफ़िमोव—[व्यंग्यसे] हाँ-हाँ, ज़रूर खरीद लिया होगा !

वार्या—बड़ी मौसीने मामाको अधिकारपत्र भेजा था कि वे जायदाद उनके नामसे खरीद लें और कर्ज़ेको उनके नाम कर दें। यह सब वे आन्याके लिये कर रही हैं। मुझे विश्वास है भगवान ज़रूर हमारी सहायता करेंगे। मामा उसे ज़रूर खरीद लेंगे।

रैनिवस्काया—यारोस्लाव्ल वाली तुम्हारी मौसीने पन्द्रह-हज़ार रूबल भेजे हैं कि जायदाद उनके नामसे खरीद ली जाय। उन्हें हमारा विश्वास नहीं है। लेकिन यह तो पिछला बकाया सूद चुकाने लायक भी नहीं है। [दोनों हाथोंसे मुँह ढँक लेती है] आज मेरी क़िस्मतका फैसला हो रहा है......मेरी क़िस्मत......

ओफ़िमोव—[वार्याको चिढ़ाता है] श्रीमती लोपाखिन।

वार्या—[नाराज़ होकर] अरे चिरन्तन-विद्यार्थी। दो बार आप यूनिवर्सिटीसे निकाले जा चुके हैं।

रैनिवस्काया—वार्या, चिढ़ती क्यों हो? वह लोपाखिनको लेकर ही तो तुम्हें चिढ़ा रहे हैं। अरे, उसमें हुआ क्या? अगर मन हो तो लोपाखिनसे शादी कर डालो न। आदमी अच्छा है, दिलचस्प है। न मन हो, मत करो। बेटी, कौन तुम्हारे ऊपर ज़ोर डाल रहा है।

वार्या—तुम्हें साफ़-साफ़ बता दूँ—अम्मा? मैं इस बातको ज़रा गम्भीरतासे लेती हूँ। वे आदमी अच्छे हैं, मुझे भी पसन्द हैं।

त्युबोव—ठीक है, तो शादी कर डालो। मेरी समझमें नहीं आता। फिर क्यों देरी कर रही हो?

वार्या—अम्मा, मैं अपनी तरफ़से तो उनसे नहीं कह सकती न। पिछले दो सालसे सब आदमी मुझसे उन्हींके बारेमें बातें करते हैं—सबके सब; लेकिन वह या तो कुछ जवाब ही नहीं देते या

मज़ाकमें टाल देते है। मैं जानती हूँ इसका क्या मतलब है? वह धनी होते जा रहे हैं। अपने व्यापारमें ही मस्त है। मेरे लिए समय उनके पास कहाँ है? काश, मेरे पास रुपया होता चाहे कितना ही थोड़ा क्यों न होता—सौ रूबल ही होता—तो मैं सारे झंझटोंको चूल्हेमें फेंककर कहीं दूर भाग जाती! कहीं सन्यास-आश्रममें चली जाती।

त्रोफ़िमोव—[व्यंग्यसे] बड़ा मज़ा रहता।

वार्या—[त्रोफ़िमोवसे] विद्यार्थियोंमें बात करनेकी तमीज होनी चाहिए। [आँखोंमें आँसू भरकर बड़ी घुटी आवाज़में] पेत्या, तुम कितने कुरूप हो गये हो? बिल्कुल बूढे दिखाई देते हो। [रोना बन्द करके रैनिव्स्कायासे] मगर अम्मा, बिना काम किये मुझसे रहा नहीं जा सकता! हर क्षण मुझे कुछ न कुछ करनेको होना चाहिए।

[याशाका प्रवेश]

याशा—[बड़ी मुश्किलसे अपनी हँसी दबाकर] ऐपिखोदोवने बिलियर्ड खेलनेका एक डण्डा तोड़ दिया।

[चला जाता है]

वार्या—ऐपिखोदोव यहाँ क्यों आया? उससे बिलियर्ड छूनेको किसने कहा था? मेरी समझमें इन लोगोंका रवैया नहीं आता।

[चली जाती है]

रैनिव्स्काया—पेत्या, इसे चिढ़ाया मत करो। वैसे ही उस बिचारीको क्या कम दुःख है!

त्रोफ़िमोव—लाट साहबी कितनी छाँटती है! चाहे इसका काम हो या न हो, सबमें टाँग अड़ाना। पूरी गर्मी भर इसने मुझे और आन्या को चैन नहीं लेने दिया। इसे डर है कि हम लोग मुहब्बत न

करने लगे। लेकिन उससे इसे मतलब? फिर इसके अलावा मैंने कोई ऐसी बात भी तो नहीं की। यह तुच्छ बातें मेरे लिए नहीं है—हमलोग मुहब्बत जैसी बातोंसे ऊपर हैं।

रैनिवस्काया—तब तो मेरा खयाल है कि मैं प्यारसे बहुत नीची हूँ। [बड़ी बेचैनीसे] लियोनिद अभी तक क्यों नहीं लौटे? मुझे बस इतना मालूम हो जाता कि जायदाद बिकी या नहीं। यह मुसीबत तो ऐसी अचानक टूटी है कि विश्वास नहीं होता। मेरे तो हाथ-पाँव फूल गये हैं. .दिमाग खराब हो गया! हाय, मैं चीख-चीखकर रोने लगूँगी...हाय, कुछ ऐसी ही बेवकूफी कर डालूँगी.. ...पेत्या, मुझे बचाओ.. मुझे कुछ बताओ... मुझसे बातचीत करो न!

त्रोफ़िमोव—आज जायदाद बिके या न बिके इससे क्या? जो होना था वह तो बहुत पहले ही हो चुका। लौटा तो जा नहीं सकता—और कोई रास्ता भी बाकी नहीं बचा। रेनिव्स्काया जी, जरा दिल को धीरज दीजिए. । क्यों अपनेको धोखा देती हैं? ज़िन्दगी में एक बार तो सत्यका सामना कीजिए।

रैनिवस्काया—कौन-सा सत्य? क्या सच है, क्या झूठ है, यह तुम देख सकते हो। मगर मैं तो अन्धी हो गई हूँ मुझे कुछ नहीं दिखाई देता......तुम तो, हिम्मतसे बड़ी-बड़ी समस्याओंको हल कर डालते हो, लेकिन भैया, बोलो, क्या इसका कारण यह नहीं है कि तुम अभी जवान हो? क्योंकि अभी तक तुम्हे कष्टों और दुःखोंके बीचसे अपनी एक भी समस्या नहीं सुलझानी पडी है? तुम हर बातका हिम्मतसे सामना करनेको तैयार हो जाते हो। पर क्या इसकी यही वजह नहीं है कि जीवनका विस्तार अभी तुम्हारी अनुभवहीन आँखोंके सामने नहीं आया है, इसलिए

तुम्हें वहाँ कोई भी खतरा नहीं दिखाई देता ? तुम हम लोगोंसे साहसी, ज्यादा ईमानदार, ज्यादा गम्भीर हो, लेकिन मेरे ऊपर ज़रा तो दया करो—ज़रा तो उदार हृदय बनकर देखो। तुम्हें पता है, मेरा जन्म यहीं हुआ ? मेरे माँ-बाप यहीं रहते थे, दादा यहीं रहते थे—इसलिए मुझे इस घरसे लगाव है। बिना चॅरीके बगीचेके ज़िन्दा रहनेकी बात मेरे दिमाग़में ही नहीं आती। अब सचमुच अगर यह बिक ही रहा है तो मुझे भी भगवानके लिए बगीचेके साथ बेच दो। [त्रोफ़िमोवको बाँहोंमें भर उसका माथा चूमती है] मेरा बेटा यहीं डूबा था। [रोती है] मेरे पेत्या, मेरे ऊपर दया करो......।

त्रोफ़िमोव—मेरे हृदयमें आपके लिए क्या भावनाएँ है, आप जानती हैं।

रैनेवस्काया—हाँ, सो तो ठीक है, लेकिन तुम्हें वह दूसरी तरह कहना चाहिए था। [अपना रूमाल निकालती है। एक तार फ़र्शपर गिर पड़ता है] आज मेरा दिल कैसा भारी-भारी है, तुम नहीं सोच सकते। उफ़, यहाँ कितना शोर है। हर आवाज़से मेरे प्राण थर्रा उठते हैं। देखो, मै काँप रही हूँ लेकिन मैं अकेली भी तो नहीं रह सकती। एकान्त और सन्नाटेसे मुझे डर लगता है। ...पेत्या, ऐसे क्रूर मत बनो...मैं तुम्हें बिल्कुल बेटेकी तरह प्यार करती हूँ। मै ख़ुशी-ख़ुशी तुम्हारी शादी आन्या से कर दूँगी। ...क़समसे कहती हूँ। लेकिन भैया, जैसे भी हो तुम्हें अपनी डिग्री ले लेनी चाहिए। आजकल तो तुम कुछ नहीं करते। बस इधरसे उधर भटकते फिरते हो। यह कितना अजब-अजब लगता है,—अच्छा, नहीं लगता ? अपनी इस दाढ़ीको भी सुन्दर ढङ्गसे किसी न किसी तरह बढ़ाने

का कुछ इन्तजाम करो......[हँसती है] बड़े उजबकसे दिखाई देते हो।

ओफ़िमोव--[तारको धरतीसे उठा लेता है] मुझे ऐडोनिस जैसा सुन्दर बननेको कोई शोक नहीं है।

रैनिवस्काया--यह पेरिसका तार है। रोज़ एक तार आता है। एक कल आया था, एक आज। वह जङ्गली फिर बीमार हो गया, फिर उसपर मुसीबत टूट पडी। वह क्षमा प्रार्थना करता है, बुलाने की खुशामद करता है। सच, मुझे उसे देखने पेरिस हो-आना चाहिए। तुम मुझे घूर-घूरकर देख रहे हो, लेकिन बताओ बेटा मैं क्या करूँ? वह बीमार है, अकेला है और बेचारा दुखी है--कौन उसकी देखभाल करता होगा? कौन उसे उलटा-सीधा करनेसे रोकता होगा? कौन उसे ठीक वक्तपर दवा देता होगा? छिपाने और मुँह बन्द करके रहनेमें क्या रखा है? सब जानते हैं कि मैं उसे प्यार करती हूँ। वह मेरे गले पड़ा पत्थर है--मुझे नीचे तले में पहुँचा देगा,--लेकिन मैं उस पत्थरको प्यार करती हूँ...उसके बिना रह नहीं सकती [ओफ़िमोवका हाथ दबाती है] मेरे बारेमें बुरा मत सोचना। पेत्या मुझसे कुछ मत कहो......अब कुछ मत बोलो!

ओफ़िमोव--[रुँधे गलेसे] भगवानके लिये, मेरी बदतमीज़ी माफ़ कीजिए। अरे, उसीने तो आपको लूट लिया है।

[कान बन्द कर लेती है]

रैनिवस्काया--नहीं--नही--नहीं--तुम यह सब मत बोलो।

ओफ़िमोव--वह पक्का गुण्डा है। मुझे तो आप ही ऐसी लगती है जो उसके बारेमें नहीं जानती। वह एकदम निकम्मा, नीच, जलील, क्षुद्र है।

रैनिवस्काया—[क्रुद्ध हो जाती है। लेकिन वाणीको संयत करके बोलती है] तुम छब्बीस, सत्ताईस सालके होने आये, मगर अभी भी स्कूली लड़कों जैसी बातें करते हो !

त्रोफ़िमोव—हो सकता है !

रैनिवस्काया—अरे आ तो आदमी बनो। प्यारकी पीड़ा समझो ! तुम्हें तो खुद किसीके प्यारमें होना चाहिए था। [गुस्सेसे] हाँ—हाँ—यह सब हृदयकी पवित्रता नहीं है—यह सब शेखी है ! तुम बिल्कुल काठके उल्लू हो ! नीच !

त्रोफ़िमोव—[घबराकर] कोई इनकी बातें सुने !

रैनिवस्काया—मैं तो प्यारसे ऊपर हूँ ! तुम प्यार-व्यारसे ऊपर नहीं, बल्कि जैसा हमारा फ़ीर्स कहता है—तुम किसी लायक नहीं हो। वर्ना तुम्हारी उम्रमें भी किसीकी कोई प्रेमिका न हो।

त्रोफ़िमोव—[भीत स्वर में] उफ़, हद हो गई ! सब क्या कह जा रही रही हैं आप यह ? [अपना सिर थामकर बड़े ड्राइंगरूममें चला जाता है]—हद हो गई। मैं यह सब नहीं सह सकता ! जा रहा हूँ। [चला जाता है मगर फिर पलट पड़ता है और भीतरकी ओर चला जाता है]

रैनिवस्काया—[उसके पीछे-पीछे पुकारती है] पेत्या, एक मिनट सुनो तो। बेवकूफ़ी मत करो। मैं तो मज़ाक कर रही थी, पेत्या ! [किसीके सीढ़ीसे उतरते हुए तेज़ीसे दौड़नेकी आवाज़—अचानक जैसे लड़खड़ाकर कोई गिर पड़ता है। आन्या और वार्या चीख़ पड़ती हैं। लेकिन फौरन ही हँसनेकी आवाज़ें]

रैनिवस्काया—क्या हो गया ?

[आन्या दौड़कर आती है]

आन्या—[हँसते हुए] पेत्या सीढ़ियोंसे लुढ़क पड़े।
[फिर भाग जाती है।]

रैनिवस्काया—यह पेत्या भी कैसा अजीब आदमी है ?

[बड़े कमरेके बीचो-बीच खड़े होकर स्टेशन मास्टर अलेक्सी टॉलस-टायकी कविता—"पापी" पढ़ रहा है। सब लोग सुन रहे हैं। लेकिन कुछ लाइनें ही पढ़ पाता है कि गलियारेसे वॉल्ज़की धुन आती है और पढना रुक जाता है। सब नाचने लगते हैं। ओफ़िमोव, आन्या, वार्या और रैनिवस्काया भीतरके कमरेसे निकल-निकल कर बाहर आ जाते हैं।]

रैनिवस्काया—आओ, पेत्या, आओ। तुम बड़े भोले हो। मैं तुमसे माफ़ी माँगती हूँ। आओ नाचें [पेत्याके साथ नाचती है]

[आन्या और वार्या नाचती हैं। फ़ीर्सका प्रवेश। अपनी बेंत बगलके दरवाज़ेके पास धरतीपर रख देता है। याशा भी बैठकमें आकर नाच देखने लगता है]

याशा—क्या बात है बाबा ?

फ़ीर्स—मुझे तो यह सब अच्छा नहीं लग रहा। पुराने जमानेमें हम-लोगोंके बॉल-डान्समें जनरल, एडमिरल और नवाब लोग होते थे और आज हमलोग पोस्ट-ऑफिसके क्लर्कों और स्टेशन मास्टरोंको बुलाते हैं—सो उन्हें भी आनेमें बीस नखरे होते हैं। मुझे तो कॅप-कॅपी चढ़ रही है। इनके दादा, बड़े मालिक हर तरहकी तकलीफ और दर्दमें मुहर लगानेकी लाख दिया करते थे। सो बीस साल या इससे भी ज्यादा दिनोंसे मैं वही लाख लगा रहा हूँ। शायद उसीने मुझे अभीतक बचाये रखा हो।

याशा—बाबा, तुम भी एक मुसीबत हो [जँभाई लेकर] अब तो अपना डेरा-डण्डा उठा लो।

याशा—अरे, नालायक भाग !

[बड़बड़ाता है]

[त्रोफ़िमोव और रैनिवस्काया बड़े कमरेमें नाचते हुए स्टेजपर सामने की ओर आ जाते हैं]

रैनिवस्काया—बस करो, मैं अब ज़रा बैठूँगी [बैठ जाती है] थक गई।

[आन्याका प्रवेश]

आन्या—[आवेशसे] रसोईमें कोई आया था वह कहता था। कि चॅरीका बगीचा आज बिक गया।

रैनिवस्काया—बिक गया ? किसको ?

आन्या—यह उसने नहीं बताया कि किसे। वह तो चला भी गया।

[वह त्रोफ़िमोवके साथ नाचती है। ये लोग बड़े कमरेमें चले जाते हैं]

याशा—आज कोई बुड्ढा बैठा कुछ बक तो रहा था। कोई नया ही आदमी था।

फ़ीर्स—लियोनिद एन्द्रीविच अभी तक नहीं लौटे। उन्होंने सिर्फ़ हल्का-वाला ओवरकोट पहन रखा है। आज ज़रूर उन्हें ज़ुकाम होगा। हाय, कैसे बुद्धू बच्चे हैं !

रैनिवस्काया—मुझे तो ऐसा लग रहा है जैसे आज मैं मर जाऊँगी। याशा, ज़रा जल्दी जाकर पता तो लगा, बगीचा किसको बिक गया ?

याशा—लेकिन वह बुड्ढा तो बहुत पहले ही चला गया।

[हँसता है]

रैनिवस्काया—[झुँझलाकर] तुझे हँसी किस बातपर आ रही है ? बता; किस बातपर तू इतना खुश है ?

याशा—एपिखोदोव भी गजब करते है। "बाइस आफ़त" बिलकुल काठका उल्लू है।

रैनिवस्काया—अगर जायदाद बिक गई फ़ीर्स बाबा, तो तुम कहाँ जाओगे ?

फ़ीर्स—जहाँ तुम कहोगी।

रैनिवस्काया—तुम ऐसे क्यों लग रहे हो ? बीमार हो क्या ? जाकर आराम करो न।

फ़ीर्स—अरे, हाँ-हाँ [व्यंगसे] ठीक है, मै तो जाकर आराम करूँ और यहाँ बैठकर लियोनिदकी राह कौन देखे ? मेरे बिना सारे कामोंको कौन देखेगा ? घर भरमें मैं ही तो एक ऐसा आदमी हूँ।

याशा—[रैनिवस्कायासे] ल्युबोल आन्द्रिएव्ना, आप अगर आज्ञा दे तो आपसे एक प्रार्थना है। इस बार आप पेरिस जॉय तो मुझे भी साथ लेती चलिए। सच कहता हूँ मुझसे यहाँ रहा नहीं जायेगा। [चारो तरफ़ देखकर धीमें स्वरसे] अब ज्यादा कहनेसे ही क्या फ़ायदा आप तो खुद ही जानती है, यह गँवारो का देश है। लोगोंमें ज़रा भी नैतिकता नहीं है। चारो तरफ़ बस जहालत भरी है। रसोईमें खाना तक तो ऐसा है कि उब-काई आये। और फिर दुनियाँ भरकी गन्दी बातें बकता हुआ यह फ़ीर्स का बच्चा सबकी जानके पीछे लगा रहता है। मुझे अपने साथ ले चलिए, ज़रूर लेती चलिए।

[पिश्चिकका प्रवेश]

पिश्चिक—"वाल्या" (नाच) में चलेगी क्या ? [रैनिव्स्काया उसके साथ जाती हैं] रैनिव्स्काया जी, १८० रूबल तो मुझे आपसे उधार चाहिए ही [नाचते हुए] जी हाँ बस १८० रूबल।

[वे लोग बड़े कमरेमें चले जाते हैं]

याशा—[धीरे-धीरे गुनगुनाता है] 'कभी होगी तुझे मालूम, मेरे दिल की हालत भी ?' ।

[बड़े ड्राइङ्गरूममें चारखानेकी पैण्ट और टोप पहने कोई ख़ूब उछलता-कूदता है। फिर चिल्लाने लगता है—शाबाश, चार्लोटा आइवानेव्ना, शाबाश !]

दुन्याशा—[पाउडर लगानेके लिए रुक जाती है] मालकिनने मुझसे नाचनेको कहा है। यहाँ पुरुष तो काफ़ी हैं लेकिन महिलाएँ कम हैं। मगर नाचनेसे मेरे सिरमें चक्कर आने और दिल धड़कने लगता है। फ़ीर्स बाबा, अभी-अभी पोस्ट ऑफ़िस क्लर्कने मुझसे ऐसी बात कही कि मेरे तो प्राण ही निकल गये।

[सङ्गीत धीरे-धीरे डूबता जाता है]

फ़ीर्स—क्या कहा उसने ?

दुन्याशा—बोला— तुम फूल जैसी हो।

याशा—[जँभाई लेता है] उँह, कैसा मूर्ख है।

[चला जाता है]

दुन्याशा—फूल जैसी ! मैं मालिकिनो जैसी नाज़ुक भावनाओंवाली लड़की हूँ। ये मधुर-मधुर बातें मुझे बड़ी अच्छी लगती हैं।

फ़ीर्स—अब तेरे भी दिन आ गये।

[ऐपिखोदोवका प्रवेश]

ऐपिखोदोव—दुन्याशा, तुम्हें मुझसे मिलकर ख़ुशी नहीं होती न ? मैं क्या साँप बिच्छू हूँ ? [गहरी साँस लेकर] हाय री, जिन्दगी...

दुन्याशा—क्या चाहते हो ?

ऐपिखोदोव—वेशक ! तुम्हारी ही बात शायद ठीक है [गहरी साँस लेकर] अगर मैं साफ़-साफ़ कहूँ तो इस बातको सचमुच ज़रा दूसरी

तरफ़से देखो। साफ़ बात कहनेके लिए माफ़ करना—तुम्हींने मेरे दिमागकी यह हालत कर दी है। मैं अपनी क़िस्मतको खूब समझता हूँ। रोज़ मेरे ऊपर कोई-न-कोई मुसीबत टूटती है। मैं तो बहुत पहलेसे इसका अभ्यस्त हो चुका हूँ। अब तो हँस-हँसकर क़िस्मतका सामना करता हूँ। तुम्हींने मुझे विश्वास दिलाया था. . . .हालाँकि मैं......

दुन्याशा—तुम्हारे हाथ जोड़ती हूँ, इस बारेमें हमलोग फिर बात करेंगे। तुम बस मेरा पीछा छोड़ दो। इस वक्त मैं सपनोंमें डूबी हूँ...

[अपने पखेसे खेलती है]

ऐपिखोदोव—रोज कुछ-न-कुछ मुसीबत मुझपर आती ही रहती है—और शायद मैं कह सकता हूँ—मैं उनपर मुसकराता हूँ! कभी-कभी हँसता हूँ।

[बड़ेवाले ड्रॉइङ्गरूमसे वार्या प्रवेश करती है]

वार्या—ऐपिखोदोव, तुम अभी तक नहीं गये? सचमुच, तुमसे कुछ भी कहते रहो, कोई असर नहीं होता [दुन्याशासे] दुन्याशा तुम भी भागो यहाँसे! [ऐपिखोदोवसे] पहले तुमने बिलियर्ड खेला सो उसका डण्डा तोड़ दिया और अब मेहमानकी तरह ड्रॉइङ्गरूममें इधरसे-उधर घूम रहे हो।

ऐपिखोदोव—मैं कहता हूँ—तुम मुझसे यह सब सफ़ाई नहीं माँग सकतीं।

वार्या—मैं तुमसे सफ़ाई नहीं माँग रही—सिर्फ़ एक बात कह रही हूँ। तुम अपना काम-धाम तो कुछ देखते नहीं, इधरसे उधर मटरगश्ती करते हो। हमने तुम्हें मुनीम बनाकर रखा, लेकिन भगवान् जाने तुम्हारा फ़ायदा क्या है।

ऐपिखोदोव—[बुरा मान जाता है] मैं काम करूँ या घूमूँ, बिलियर्ड खेलूँ या खाऊँ—यह सब मुझसे बड़े और समझदार लोगोंके जाननेकी बातें हैं।

वार्या—तू मुझे जवाब देता है। [क्रोधसे भड़क उठती है] तेरी यह हिम्मत! तेरा मतलब कि मैं समझदार ही नहीं हूँ। चल भाग यहाँसे! अभी इसी मिनट भाग!

ऐपिखोदोव—[डाँटकर] मैं कहता हूँ, ज़रा जबान सम्हालकर बोलो।

वार्या—[आपेसे बाहर होकर गुस्सेसे] अभी चले जाओ! भागो!

[वह दरवाज़ेकी ओर जाता है। वार्या पीछे-पीछे जाती है] बाईस आफ़त! सम्भाल अपना बोरिया-बिस्तर! अब कभी मेरी आँखोंके आगे मत आना [ऐपिखोदोव चला जाता है। नेपथ्यसे उसकी आवाज़ आती है—'मैं तुम्हारी शिकायत करूँगा']—क्या? फिर लौट आया। [दरवाज़ेके पास फ़ीर्सने जो छड़ी रखी थी उसे झपटकर उठा लेती है] आ! आ!—तुझे बताती हूँ। फिर लौटा? तो ले......[वह ज़ोरसे छड़ी घुमाती है। उसी क्षण लोपाखिन प्रवेश करता है]

लोपाखिन—आपका बहुत-बहुत शुक्रगुज़ार हुआ।

वार्या—[क्रोध और व्यङ्गसे] मैं माफ़ी चाहती हूँ।

लोपाखिन—कोई ज़रूरत नहीं। आपके इस हार्दिक स्वागतके लिए मैं कृतज्ञ हूँ।

वार्या—इसमें कृतज्ञताकी तो कोई बात नहीं है [चलते हुए चारों ओर देखकर मृदुल स्वरमें] आपको चोट तो नहीं लग गई?

लोपाखिन—अरे नहीं—नहीं कोई खास नहीं। बस, बत्तख़के अण्डे जैसा यह गोला उभर आया है।

[बालरूमसे आवाज़ें आती हैं—'लोपाख़िन है क्या ? यार्मोलाय अलैक्सीएविच !'

पिश्चिक—ज़रा इन्हें देखूँ तो सही, जरा सुनूँ तो सही। [लोपाख़िनका चुम्बन लेता है] आज तुम्हारे ऊपरसे फ्रैंच ब्राण्डीकी खुशबू उड रही है। यहाँ हम भी ज़रा मनोरञ्जन कर रहे हैं।

[रैनिवस्कायाका प्रवेश]

रैनिवस्काया—अरे लोपाख़िन, तुम हो क्या ? इतना समय क्यों लगाया तुमने ? लियोनिद कहाँ हैं ?

लोपाख़िन—लियोनिद एन्द्रियेविच आये तो मेरे साथ ही हैं। अभी आते होंगे।

रैनिवस्काया—[उद्वेगसे] अच्छा, अच्छा ! बगीचा बिक गया क्या ? बोलो ?

लोपाख़िन—[पशोपेशमें पड जाता है कि कहीं आन्तरिक आह्लाद प्रकट न हो जाय] चार बजे बिक्री ख़त्म हो गई थी। हमारी गाडी ही छूट गई, सो साढे-नौ बजे तक राह देखनी पडी [गहरी साँस लेकर] उफ़ ! मुझे तो कुछ-कुछ चक्कर-सा आ रहा है।

[गायेवका प्रवेश। दाहिने हाथमें ख़रीदी हुई चीज़ें हैं, और बायें हाथसे आँसू पोंछता जाता है।]

रैनिवस्काया—क्यों लियोनिद ?—क्या ख़बर है ? [रोते हुए अधीरतासे] भगवान्‌के लिए जल्दी बोलो।

गायेव—[कोई जवाब नहीं देता। सिर्फ़ हाथ झटकारकर रह जाता है। रोते हुए फ़ीर्ससे] लो, इन्हें ले लो। एंचोवी और कर्च-मछलियाँ हैं। आज मैंने सारे दिन कुछ नहीं खाया। उफ़, आजका दिन भी कैसा मनहूस बीता है।

[बिलियर्ड खेलनेके कमरेका दरवाज़ा खुला है। वहाँसे गेंदोंके खटकनेकी और याशाके बोलनेकी आवाज़ें आ रही हैं। याशा कह रहा है—'सत्तासी' गायेवके चेहरेके भाव बदल जाते हैं और वह रोना भूल जाता है] मैं तो थककर चूर-चूर हो गया हूँ। फ़ीर्स जरा आकर मेरे कपड़े बदलवाना, भैया। [बड़े ड्रॉइङ्गरूम को पार करके अपने कमरेमें चला जाता है।]

पिश्चिक—बिकनेका क्या हुआ ? बोलो, बताओ न।

रैनिवस्काया—चॅरीका बगीचा बिक गया ?

लोपाखिन—जी हाँ, बिक गया।

रैनिवस्काया—किसने खरीदा ?

लोपाखिन—मैंने ! [कुछ देर चुप्पी। रैनिवस्कायाके जैसे प्राण निकल जाते हैं। कुर्सी और मेज़के सहारे न खड़ी होती तो शायद गिर पड़ती]

[वार्या अपनी पेटीमेंसे चाबियोंका गुच्छा निकालकर बीच फ़र्शपर फेंक देती है और चली जाती है]

लोपाखिन—मैंने उसे खरीद लिया। भाइयो और बहनो, हाथ जोड़ता हूँ एक मिनट आप लोग ठहरें। मेरा सिर चकरा रहा है। मुझसे बोला नहीं जा रहा [हँस पड़ता] हम लोग नीलाममें पहुँचे। दैरिगानोव वहाँ पहलेसे ही डेरा डाले था। लियोनिद एन्द्रिएविच के पास तो कुल १५ हज़ार थे और दैरिगानोवने बक़ायाके अलावा सीधी बोली दी ३० हज़ार की। खैर, मैं उनकी मददको आगे बढ़ा। मैंने उसके खिलाफ़ बोली दी। मैं चालीस हजार बोला तो, वह पैंतालिस हज़ार बोल दिया। मैंने पचपन बोले तो वह भी पाँच

हजार बढ़कर बोला—मैंने भी दस हजार बढ़ाये...खैर...बात खत्म हुई। मैंने रेहनके ऊपर ६० हज़ार बोले। बोली मेरे नाम रही। अब चॅरीका बगीचा मेरा है—मेरा! [हँसता है] हे भगवान्, चॅरीके बग़ीचेका मालिक मैं हूँ। अरे, कोई मुझसे कहो कि मैं नशेमें हूँ, मैं पागल हो गया हूँ—यह सब सपना है? [ज़मीनपर पाँव पटकता है] मेरी बातपर हँसो मत! काश, मेरे बाप और दादा कब्रोंसे उठ-उठकर आज देखते कि क्या हो गया है! कैसे यार्मोलायनने, उसी बुद्धू और पिटनेवाले यार्मोलायनने जो भरे जाड़ोंमें नङ्गे पाँव भागा-भागा फिरता था—उसी यार्मोलायनने दुनियाँके सबसे अच्छे बग़ीचेको खरीद लिया है। आज मैंने उस सारी जायदादको खरीद लिया है—जहाँ मेरे बाप-दादे गुलाम थे और उन्हे रसोईघर तकमें घुसनेकी इजाजत नहीं थी। मैं नींदमें हूँ... यह सब सपना है! यह सब कल्पना है? अज्ञानके अन्धकारमें डूबी बुद्धिका शेखचिल्लीपना है [आनन्दसे मुसकराते हुए चाबियाँ उठा लेता है] वार्या चाबियाँ फेंक गई है। वह दिखाना चाहती है कि अब वह घरकी मालकिन नहीं है! [चाबियाँ बजाता है] खैर, कोई बात नहीं। [राग साधता हुआ आर्केस्ट्रा सुनाई देता है] अरे बाजेवालो, बजाओ-बजाओ। मैं तुम्हारा गाना सुनना चाहता हूँ। तुम सबलोग आकर देखना, कैसे यार्मोलाय लोपाखिन कुल्हाड़ी लेकर चॅरीके बगीचेमें जाता है, कैसे पेड़ धरतीपर गिरते हैं। हम यहाँ घर बनायेंगे। हमारे पोते-परपोते वहाँ एक नई ज़िन्दगी उभरती पायेंगे। बाजेवालो...बजाओ-बजाओ।

सङ्गीत शुरू हो जाता है। रैनिवस्काया कुर्सीपर सिर झुकाये बैठी फूट-फूटकर रो रही है]

लोपाख़िन—[झिझकते हुए] क्यों...तब क्यों मेरी बात नहीं मानी थी ? रैनिवस्कायाजी, अब तो आप इसे वापिस पा नहीं सकती। [रोते हुए] उफ़, काश यह सब खत्म हो पाता ! हमारी यह उखड़ी-बिगडी हुई जिन्दगी किसी तरह पलक मारते ही बदल जाती।

पिश्चिक—[उसकी बाँह पकड़कर एक ओर ले जाते हुए धीरेसे] यह तो रो रही हैं। आओ, हमलोग ड्राइङ्गरूममें चलें। इन्हें इसी जगह अकेला छोड दें......आओ...[बाँह पकड़कर उसे बड़े ड्राइङ्गरूममें ले जाता है]

लोपाखिन—क्या हुआ ? बाजे वालो, बजाओ-बजाओ। मैं जो कहूँ—वही होगा [व्यङ्गसे] नया मालिक, चॅरीके बगीचेका नया स्वामी आ रहा है [अचानक एक छोटी-सी मेज़से जा टकराता है। झाड़ गिरते-गिरते बचता है] मैं सब चीजोंकी कीमत चुका दूँगा।

[पिश्चिकके साथ चला जाता है। रैनिवस्कायाके सिवा बड़े ड्राइङ्ग-रूममें कोई नहीं है। वह मरी-सी बैठी फूट-फूटकर रो रही है। सङ्गीत धीरे-धीरे बज रहा है। तेज़ीसे आन्या और त्रोफ़िमोवका प्रवेश। आन्या माँके पास जाकर उसके घुटनोंपर गिर पड़ती है। त्रोफ़िमोव बड़े ड्राइङ्गरूमके दरवाज़ेपर खड़ा है]

आन्या—अम्मा ! अम्मा तुम रो रही हो—? अम्मा, मेरी अच्छी अम्मा ! अम्मा तुम मेरी हो...मैं तुम्हारे हाथ जोड़ती हूँ......चॅरीका बगीचा बिक गया—चला गया...सच है......सच है, पर अम्मा रोओ मत ! अभी तो तुम्हारे सामने बहुत ज़िन्दगी है...तुम्हारे पास निश्छल सुन्दर हृदय है......आओ चलें, यहाँसे कहीं बहुत

दूर चल चलें अम्मा ! चलकर हमलोग कहीं एक नया बगीचा बनायेंगे......इससे अच्छा......इससे शानदार. ...तुम खुद देख लेना...तुम्हारी समझमें अपने-आप आ जायेगा...साँझके डूबते सूरजकी तरह एक आह्लाद—शान्ति...एक गहरी प्रसन्नता तुम्हारी आत्मामें समा जायेगी...और अम्मा, तब तुम आनन्दसे हँस पड़ोगी...आओ अम्मा, चलो चलें.........

[पर्दा गिरता है]

चौथा अंक

[पहले अंकका ही दृश्य। मगर न तो जँगलों पर परदे हैं न दीवारों पर तस्वीरें। सिर्फ एक कोनेमें थोड़ा-सा फ़र्नीचर एक दूसरेके ऊपर ढेर बना रखा है—जैसे बिकने के लिए रखा हो। चारों तरफ़ एक खाली-ख़ालीपनका भाव-सा व्याप्त है। बाहरके दरवाज़े और पृष्ठभूमिके दृश्यमें यात्राके लिए बँधे हुए बिस्तर, बक्से इत्यादि रखे हैं। बायीं तरफ़ दरवाज़ा खुला है, और वहाँ से आन्या और वार्याकी आवाज़ें सुनाई दे रही हैं। लोपाख़िन प्रतीक्षा करता खड़ा है। याशा शैम्पेनके गिलासोंसे भरी ट्रे लिये हुए है। बगलवाले कमरेमें एपिखोदोव एक बक्स बाँध रहा है। नेपथ्यसे विदा करने आये हुए किसानोंसे बातचीत करने की भनभनाहटें आ रही हैं—गायेवका स्वर सुनाई देता है—"शुक्रिया, भाइयो शुक्रिया !"]

याशा—किसान लोग विदा करने आये हैं। यार्मोलाय अलेक्सीएविच, मैं समझता हूँ यह किसान लोग बहुत अच्छे स्वभावके होते हैं। मगर बेचारे बड़े भोले होते हैं।

[नेपथ्यकी आवाज़ें समाप्त हो जाती हैं। बगलके कमरेसे रैनिवस्काया और गायेवका प्रवेश। रैनिवस्काया रो तो नहीं रही, लेकिन बहुत ही मुर्दा और कमज़ोर है। उसके गाल काँप रहे हैं, बोल नहीं पाती]

गायेव—ल्यूबा, तुमने उन्हें अपना पर्स ही दे दिया ! ऐसे काम नहीं चलेगा......

रैनिवस्काया—भाई, इसमें मैं कुछ नहीं कर सकती थी। मुझसे रहा नहीं गया......!

[दोनों चले जाते हैं]

लोपाखिन—[दरवाज़ेमें उनके पीछेसे पुकारता है] चलते वक्त आपलोग विदाईका एक-एक गिलास पियेंगे ? पी लीजिये न ? शहरसे मँगा लेनेका मुझे ध्यान ही नहीं रहा और स्टेशन पर सिर्फ़ एक ही बोतल मिली। बस, एक-एक गिलास ले लीजिये। [कुछ देर चुप रहकर] क्या कहा ? आपको किसी गिलास-विलासकी जरूरत नहीं है ? [दरवाज़ेसे सामने की ओर आता है] अगर यह पहले पता होता तो मैं इसे खरीदता ही क्यों ? अच्छी बात है। तो मैं भी उसे नहीं पियूँगा। [याशा सावधानी से एक कुर्सी पर ट्रे रख देता है] याशा, एक गिलास तू ही ले ले।

याशा—[पीता है] तो यह हमारी विदाईका है। पीछे ठहरनेवालोंका भगवान् भला करे......मैं दावेसे कहता हूँ, यह असली शैम्पेन नहीं है।

लोपाखिन—अबे, एक बोतल १८ रूबलकी पड़ी है। [कुछ देर चुप रह-कर] यहाँ तो बड़ी भयङ्कर सर्दी है।

याशा—इन लोगोंने आज अँगीठी ही नहीं जलाई। खैर—हमारे लिए तो जली-न-जली बराबर है। हम तो जा ही रहे हैं।

[हँसता है]

लोपाखिन—तू क्यों हँसता है ?

याशा—खुशीके मारे।

लोपाखिन—अक्टूबर आ चुका है। फिर भी मौसम कैसा घुटा-घुटा-सा है। धूप तो ऐसी है, जैसे गर्मी हो। बँगले बनवानेका एकदम

ठीक समय यही है। [अपनी घड़ी देखते हुए दरवाज़ेकी ओर मुँह करके कहता है] भाइयो और बहनो, सुन लीजिए, सैंतालीस मिनट बाद गाड़ी छूट जायेगी। इसलिए आप लोगोंको बीस मिनटमें ही स्टेशनको चल देना चाहिए।

[एक ग्रेटकोट पहने हुए त्रोफ़िमोव दरवाज़ेसे निकलकर बाहर आता है]

त्रोफ़िमोव—मैं समझता हूँ, चल देनेका समय हो गया। घोड़े तैयार हैं। मेरे बरसाती जूतोंको कौन खा गया ? कहीं खो गये। [दरवाज़े की ओर मुँह करके] आन्या, यहाँ तो मेरे बरसाती जूते नहीं हैं। मुझे तो मिल नहीं रहे।

लोपाखिन—मुझे भी खार्कोव जाना है। आपके साथ वाली गाड़ीसे ही तो जा रहा हूँ। जाड़े भर मैं खार्कोवमें ही रहूँगा। आपलोगों के साथ गप्पोंमें मैं यहाँ समय बरबाद करता रहा। करनेको कुछ था नहीं इसलिए जी ऊब गया था। बिना काम किये मुझसे रहा नहीं जाता। कोई काम न हो तो मुझे ऐसा लगता है कि अपने इन हाथोंका क्या करूँ ? बेकार वे इस तरह झूलते-लटके रहते हैं जैसे मेरे न होकर किसी दूसरेके हों।

त्रोफ़िमोव—तो ठीक है, हम तो अभी चले ही जा रहे हैं। तुम अपना यह मुनाफ़ेवाला काम फिर शुरू कर दो।

लोपाखिन—एक गिलास पी लो न।

त्रोफ़िमोव—नहीं......धन्यवाद।

लोपाखिन—तो अब तुम मॉस्को ही जाओगे !

त्रोफ़िमोव—हाँ—शहर तक तो मैं इनलोगोंको ही छोड़ने जाऊँगा। फिर कल मॉस्को चला जाऊँगा।

लोपाख़िन—हाँ, सो ही तो मैंने कहा। वहाँ प्रोफ़ेसर लोग बैठे तुम्हारी राह देख रहे हैं। तुम्हारी राहमें अभी तक उन्होंने लैक्चर भी शुरू नहीं किया।

त्रोफ़िमोव—यह सब तुम्हारे मतलबकी बातें नहीं हैं।

लोपाख़िन—कितने साल हो गये तुम्हें यूनिवर्सिटीमें ?

त्रोफ़िमोव—अरे, इसके अलावा भी अब कोई नई बात सोचो। यह सब मज़ाक बहुत घिस-पिटकर बासी हो गया। [बरसाती जूतोंको खोजता है] देखो, शायद हमलोग अब एक दूसरेसे कभी नहीं मिलेंगे। इसलिए विदा होते समय मेरी एक सलाह मान लो। यह अपने हाथ इधर-उधर फेंकना बन्द करो। इस लतसे पीछा छुडाओ। और दूसरी बात—बँगले बनाना, और फिर यह हिसाब लगाना कि गर्मियोंमें घूमनेवाले लोग कुछ समय बाद खुदकाश्त करने लगेंगे—यह शेखचिल्लीपना भी हाथ फटकारनेकी तरह ही बुरी आदत है। खैर, इतना होते हुए भी तुम मुझे बहुत पसन्द हो...कलाकारों जैसी नाजुक-नाजुक उँगलियाँ हैं, बडी सरल कोमल तुम्हारी आत्मा है।

लोपाख़िन—[उसको बाँहोंमें भर लेता है] नमस्कार दोस्त, नमस्कार! इन बातोंके लिए शुक्रिया। अगर ज़रूरत हो तो सफ़रके लिए कुछ रुपया दे दूँ।

त्रोफ़िमोव—किस लिए ? मुझे कोई ज़रूरत नहीं है।

लोपाख़िन—अरे, तुम्हारे पास एक कौड़ी भी तो है नहीं।

त्रोफ़िमोव—धन्यवाद। मेरे पास पैसा है। अनुवाद करनेसे कुछ पैसा मिल गया था। यह रहा मेरी जेबमें। [आतुरतासे] लेकिन मेरे बरसाती जूते कहाँ गये ?

वार्या—[दूसरे कमरे में] ये कम्बख्त यहाँ रक्खे हैं! [मंचपर बरसाती जूतोंका जोड़ा फेंक देती है]

त्रोफ़िमोव—वार्या, ऐसी क्यों झुँझला रही हो?...एँ?...मगर यह जूते मेरे तो नहीं हैं।

लोपाखिन—बसन्त पर मैंने तीन हजार एकड़ जमीनमें पोस्ता बोया था और अब चालीस हजारका मुनाफ़ा कमा लिया। जब मेरे पोस्तोंमें फूल लगे थे—तब क्या कम सुन्दर दृश्य था? तो मेरा कहना था कि अभी-अभी मैंने चालीस हज़ारका मुनाफ़ा कमाया है, इसीलिए तुम्हें कुछ उधार देनेकी बात कही थी। क्योंकि अब मैं दे सकता हूँ। इसमें नाक भौं सिकोडने की क्या बात है? भाई, किसान आदमी हूँ—सीधी बात कह देता हूँ।

त्रोफ़िमोव—तुम्हारे बाप किसान थे या मेरे डाक्टर—इससे कोई मतलब नहीं। [लोपाखिन अपनी डायरी निकालता है] यह सब छोडो। मुझे अगर तुम दो लाख भी देनेकी बात करो, तब भी मैं नहीं लूँगा। मैं स्वतन्त्र प्रकृतिका आदमी हूँ। और जो चीज तुम सब ग़रीब-अमीर लोगोंको बडी क़ीमती या प्यारी लगती है मेरे ऊपर उसका जरा भी असर नहीं होता। मेरे लिए सब हवामें उडते बुलबुले हैं। तुम्हारे बिना भी मैं काम चला ही सकता हूँ मुझे तुम्हारी कोई ज़रूरत नहीं है। मैं बहुत दृढ़ और आत्म-सम्मान वाला व्यक्ति हूँ। मानवता निरन्तर उस सर्वोच्च सत्य, उस सर्वश्रेष्ठ प्रसन्नताकी ओर बढ़ रही है, जो इसी धरतीपर सम्भव है। और उसी मानवताकी प्रगतिकी हरावली लाइनवालोंमें मैं भी हूँ।

लोपाखिन—तुम्हें यह सब वहाँ मिलेगा?

श्रोफ़िमोव—हाँ, मुझे मिलेगा [कुछ क्षण रुककर] या तो मुझे ही मिलेगा या मैं पानेके लिए आनेवालोंका रास्ता साफ़कर दूँगा।

[कहीं दूर पेड़पर कुल्हाड़ी पड़नेकी आवाज़ सुनाई देती है]

लोपाख़िन—अच्छा दोस्त, नमस्कार! अब चलनेका वक्त हो गया। हम भले ही एक दूसरेको देखकर नाक-भौं सिकोड़ते रहे, लेकिन जिन्दगी चलती चली जायेगी। जब मैं बिना रुके जी-तोड़ परिश्रम करता हूँ तब मेरा मस्तिष्क बड़ा शान्त रहता है—मुझे ऐसा लगता है जैसे मुझे अपने जीवनका लक्ष्य मिल गया हो। लेकिन दोस्त, इसी रूसमें कितने आदमी हैं जिन्हें पता नहीं कि वे क्यों ज़िन्दा हैं? खैर, फ़िक्र क्या है? सारी दुनियाँ उन्हींके बल थोड़े ही चलती है? सुनते हैं, लियोनिद एन्द्रीएविचने नौकरी कर ली है। एक बैंकमें छः हज़ार रूबल सालानापर उनकी नौकरी लग गई है। खैर, उनसे यह सब चलेगा नहीं। वे आराम-तलब आदमी है।

आन्या—[दरवाज़ेमें आकर] अम्मा आपसे प्रार्थना करती हैं कि उनके जाने तक चैरीके बग़ीचेपर कुल्हाडी चलवाना रोके रहें।

श्रोफ़िमोव—हॉ, ठीक ही तो बात है। इतने ढङ्गसे तो काम लिया होता......

[मञ्चको पार करता हुआ चला जाता है]

लोपाख़िन—अभी देखता हूँ......अभी रुकवाता हूँ। बड़े बेवकूफ़ है।

[श्रोफ़िमोवके पीछे-पीछे चला जाता है]

आन्या—फ़ीर्सको अस्पताल पहुँचा दिया?

याशा—कह तो दिया था मैंने सुबह। ज़रूर ले गये होंगे।

आन्या—[ड्राइङ्गरूमको पार करके जाते ऐपिखोदोवसे] ऐपिखोदोव, जरा पता लगाना, फ़ीर्सको अस्पताल पहुँचा दिया या नहीं ?

याशा—[झुँझलाहट भरे स्वरमें] मैंने सुबह ही येगोरसे कह तो दिया है। बीस बार क्यों पूछती हैं ?

एपिखोदोव—फ़ीर्सकी भी तो उम्र बहुत हो गई है। मेरा तो पक्का विश्वास है अब उसे किसी दवासे कुछ नहीं होगा। उसको तो अब अपने बाप-दादाओंके पास पहुँचानेका वक्त आ गया है। मुझे तो उससे जलन होती है। [गत्तेके टोपके बक्स के ऊपर एक ट्रङ्क रखकर उसे कुचल देता है] टूट गया न ! मैं तो पहले ही जानता था......

[बाहर चला जाता है]

याशा—[मज़ाक उड़ाते हुए] अरे बाईस-आफ़त !

वार्या—[नेपथ्यसे ही] फ़ीर्सको अस्पताल पहुँचा दिया क्या ?

आन्या—हाँ।

वार्या—डाक्टरके लिये पत्र भी क्यों नहीं ले लिया ?

आन्या—अरे ! अच्छा अब बादमें भेजे देते हैं।

वार्या—[बग़लवाले कमरेसे] याशा कहाँ है ? उससे कहो जाते वक्त उसकी माँ उससे मिलने आई है।

याशा—[हाथ झटककर] ये लोग तो मुझे मार डालेंगे।

[दुन्याशा इस सारे समयमें सामान बाँधने में व्यस्त रही है। अब जब याशा बिलकुल अकेला रह जाता है तो उसके पास आती है]

दुन्याशा—एक बार मेरी ओर तो देख लो, याशा। अब तुम जा रहे हो। मुझे छोड़कर जा रहे हो। [उसकी गर्दनसे लिपटकर रोने लगती है]

याशा—रोती क्यों है ? [शैम्पेन पीता है] छः दिन बाद मैं फिर पेरिस आ जाऊँगा ! कल सुबह हम लोग ऐक्सप्रैस गाड़ीमें सवार होकर दनदनाते चले जायेंगे......मुझे तो एकदम विश्वास नहीं आता। फ्रांस ज़िन्दाबाद ! यहाँ मुझे अच्छा नहीं लगता। मेरे लिये यहाँ न कोई ज़िन्दगी है, न काम ! यहाँकी काफ़ी बेवकूफ़ियाँ मैंने देख लीं। मेरे लिये यही बहुत है। [फिर शैम्पेन पीता है] तू रोती क्यों है री ! ज़रा अपने जीको सँभाल तो नहीं रोयेगी...

दुन्याशा—[जेबी शीशेमें मुँह देखते हुए पाउडर लगाती है] पेरिससे मुझे ज़रूर लिखना। याशा, तुम्हें पता है मैंने तुमसे कितना प्यार किया, कितना प्यार किया है। याशा मेरा दिल बड़ा नाज़ुक है।

याशा—अच्छा, कोई आ रहा है !

[धीरे-धीरे गुनगुनाते हुए अपने को ट्रंकोंमें व्यस्त दिखाता है। रैनिव्स्काया, गायेव, आन्या और चार्लोटाका प्रवेश]

गायेव—तो अब चलें ? ज्यादा समय नहीं रह गया [याशाको देखकर] यह मछलियोंकी गन्ध जैसी क्या है ?

रैनिव्स्काया—दस मिनट बाद हमलोग गाड़ियोंमें बैठे होंगे। [कमरेमें एक निगाह फेरती है] प्यारे घर, हमारे पुरखोंके पुराने मकान अब विदा दो...जाड़ा आयेगा और चला जायेगा—फिर वसन्त आयेगा लेकिन तब तक तुम नहीं रहोगे......ये लोग तुम्हें गिरा देंगे......हाय, इन दीवालोंने कितना.. कुछ देखा है...[आवेग-से अपनी पुत्रीको चूम लेती है] मेरी बेटी—कितनी खुश लग रही है......तेरी आँखें हीरोंकी जैसी चमक रही है......बहुत ही खुश है क्या ? बहुत खुश है न ?

आन्या—हाँ-हाँ—अम्मा, एक नई ज़िन्दगीका प्रारम्भ जो हो रहा है !

गायेव—ठीक तो है। सचमुच अब सब ठीक हो गया। चॅरीका बगीचा जब तक बिका नहीं था, हमलोग बड़े दुःखी-परेशान थे; लेकिन जब सारा मामला आखिरी रूपसे तय हो गया तो हमलोगोंको शान्ति मिल गई। यही नहीं, खुशी भी हुई। मैं अब बैंकका क्लर्क हूँ, महाजन हूँ—वह मारा लाल गेंदको! और तुम ल्यूबा? इसमें कोई शक नहीं तुम भी पहलेसे अच्छी दीख रही हो।

रैनिव्स्काया—हाँ, यह बात तो है। मेरा मन भी पहलेसे हल्का है। [उसका टोप और कोट उसे पकड़ा दिया जाता है] खूब डटकर सोई हूँ। याशा, मेरी चीजें ले चलो। वक्त हो चुका है। [आन्यासे] बेटी, हमलोग जल्दी ही फिर मिलेंगे। मैं पेरिस जा रही हूँ। तुम्हारी यारोस्लाव्लवाली मौसीने जायदाद खरीदने को जो रुपया भेजा था, उसीसे वहाँ रहूँगी। भगवान् मौसीका भला करे! लेकिन वह पैसा ज्यादा नहीं चलेगा।

आन्या—अम्मा, तुम जल्दी आओगी न? मैं अपने हाई-स्कूलके इम्तहानके लिए खूब मेहनत करूँगी......जब पास हो जाऊँगी तो तुम्हारी सहायता करनेके लिए कहीं लग जाऊँगी। अम्मा, हमलोग तरह-तरहकी चीजें पढ़ा करेंगे—हैं न? [अपनी माँका हाथ चूमती है] जाड़ोंमें सन्ध्याके समय देरतक हमलोग पढ़ा करेंगे। खूब ढेरकी ढेर किताबें पढ़ेंगे। तब हमारे सामने एक नई आश्चर्यजनक दुनियाँके द्वार खुल जायेंगे [स्वप्नाविष्टसी] अम्मा, जल्दी आना।

रैनिव्स्काया—ज़रूर आऊँगी मेरी चिड़िया [उसे बाँहोंमें भरती है]

[लोपाखिनका प्रवेश। चार्लोटा धीरे-धीरे गुनगुनाती है]

गायेव—चार्लोटा बड़ी खुश है। गा रही है।

चार्लोटा—[एक बण्डलको छोटे बच्चेकी तरह भुकाकर] बाई ! बाई ! मेरे मुन्ना ।......[बच्चेके रोनेकी आवाज़ "हुआँ-हुआँ"] चुप-चुप मेरे चन्दा, ["हुआँ-हुआँ"] रौजा बेटा ! [बण्डल फेंक देती है] आप लोग कृपा करके मेरे लिए कोई काम ज़रूर खोज दीजिए.. ...यों मेरा काम कब तक चलेगा ?

लोपाखिन—हमलोग जरूर काम खोज देंगे । चार्लोटा आइवानोव्ना, तुम क़तई फ़िक्र मत करो ?

गायेव—सभी हमको छोड़े जा रहे हैं । वार्या भी जा रही है......अचानक जैसे हम अब किसी मसरफके ही नहीं रह गये हों ।

चार्लोटा—शहरमें मुझे कहीं ठहरनेको जगह नहीं है । इसलिए मुझे जाना पड़ेगा [गुनगुनाती है] मुझे क्या फ़िक्र......

[पिश्चिकका प्रवेश]

लोपाखिन—लीजिये, अब कुदरतका एक कमाल हाजिर होता है ।

पिश्चिक—[मुँह फाड़कर साँस लेता है] हाय,...मुझे ज़रा साँस ले लेने दो......मैं तो मर गया...मेहरबान दोस्तो, थोड़ा पानी पीनेको दो.........

गायेव—मैंने तो सोचा रुपयेकी ज़रूरत आ पड़ी ।...शुक्रिया...लो, मैं परे हटा जाता हूँ ताकि कुछ कर न बैठूँ......

[बाहर चला जाता है]

पिश्चिक—आपको देखने आये हुए बहुत दिन हो गये...रैनिव्स्काया बहन,...[लोपाखिनसे] आप भी यहीं हैं । बड़ी खुशी हुई मिलकर । आपने भी गज़बकी बुद्धि पाई है । लीजिए...यह लीजिए...[लोपाखिनको रुपये देता है] ये ४०० रूबल हैं । अब तुम्हारे सिर्फ़ ८४० रूबल रह गये ।

लोपाखिन—[आश्चर्यसे कन्धे झटकारता है] अरे, यह तो बिल्कुल सपने जैसी बात है। तुम्हें यह रुपया कहाँसे मिल गया ?

पिश्चिक—जरा रुक तो जाओ......मैं हाँफ रहा हूँ...एक बड़ी अकल्पनीय घटना हो गई...कुछ अंग्रेज कहींसे चले आये, और मेरी जमीनमें उन्होंने कोई सफ़ेद मिट्टी खोज निकाली...[रैनिव्स्काया से] और यह ४०० रूबल आपके लिये......बहुत प्यारी लग रही हैं आप तो। बड़ी सुन्दर......[रुपया देता है] बाकी बादमें [पानीकी घूँट भरता है] रेलमें एक नौजवान मुझे बता रहा था कि कोई बहुत बडा दार्शनिक, लोगोंको मकानकी छतसे कूद पड़नेकी सलाह देता है। वह कहता है—"कूदो! समस्याकी सारी मूल-जड इसीमें है।"—[आश्चर्य करता हुआ] क्या कमालकी बात है ?......भाई, ज़रा पानी......

लोपाखिन—वो अंग्रेज कौन थे ?

पिश्चिक—सफ़ेद मिट्टी खोदनेका मैंने उन्हें चौबीस सालका पट्टा दे दिया है। अब मुझे माफ़ कीजिए......मैं रुकूँगा नहीं...... मुझे सरपट भागते हुए जाना है......मैं ज़्नायकोवो जा रहा हूँ—फिर कादामानोवो जाऊँगा। सभीका तो मुझपर कर्जा है [पानीकी घूँट भरता है] अच्छा, सबसे अलविदा......मैं बृहस्पतिको आऊँगा।

रैनिवस्काया—हमलोग अभी-अभी शहर जा रहे हैं...कल मैं विदेशको रवाना हो जाऊँगी।

पिश्चिक—क्या ? [घबराकर] शहर क्यों ?...अच्छा, अब समझा... यह फ़र्नीचर......यह बक्से। इसमें किसीका क्या बस है ? [रुँधे गलेसे] कोई बात नहीं......भाई, यह अंग्रेज़ भी... गज़बकी अक्लवाले होते हैं......अच्छी बात है ? खुश

रहिए......भगवान हमेशा आपकी मदद करे! चिन्ताकी कोई बात नहीं......दुनियाँमें हर चीजका अन्त होना है......[रैनि-व्स्कायाका हाथ चूमता है]......कभी आपके कानों तक खबर पहुँचे कि मेरा भी अन्त आ गया तो इस बुड्ढे...... घोड़ेको भी यादकर लेना......कहना "कभी दुनियाँमें कोई सिम्योनोव पिश्चिक नामका भी आदमी था। भगवान उसकी आत्माको शान्ति दे......!" आज बड़े गजबका मौसम है... [तीव्र उत्तेजनामें बाहर चला जाता है, लेकिन फौरन ही उल्टे पाँव लौटकर दरवाज़ेसे ही कहता है] मेरी बेटी माशेङ्काने आपको प्रणाम कहा है।

रैनिव्स्काया—अब हमें चल देना चाहिए। दो बड़ी चिन्ताएँ अपने दिलके साथ लिए जा रही हूँ...पहली तो यह कि फ़ीर्स बीमार है... [घड़ी देखकर] अभी तो पाँच मिनट और रुक सकते हैं।

आन्या—अम्मा, फ़ीर्सको अस्पताल पहुँचवा दिया है। सुबह याशा खुद पहुँचा आया......

रैनिव्स्काया—मेरी दूसरी चिन्ता वार्या है। उसे सुबह जल्दी उठकर काममें लग जानेकी आदत है। लेकिन अब काम नहीं रहेगा तो वह बिना पानीकी मछली जैसा कष्ट पायेगी। वह बड़ी दुबली और बीमार-सी हो गई है। बेचारी रोती रहती है। [कुछ देर रुककर] यार्मोलाय, तुम तो अच्छी तरह जानते हो, मैंने हमेशा तुम्हारे साथ उसके विवाहके सपने देखे थे—तुम्हारी भी सभी बातोंसे ऐसा लगता था जैसे तुम उससे शादी कर लोगे [आन्याके कानमें कुछ कहती है और चार्लोटाको इशारा करती है। दोनों बाहर चली जाती हैं] वह तुमसे प्यार करती है—तुम भी उसे पसन्द करते हो......और अब......अब पता नहीं, क्यों

ऐसा लगता है जैसे एक दूसरेसे मुँह चुरा रहे हो......मेरी समझमें नहीं आता।

लोपाखिन—सच बात तो यह है कि खुद मेरी समझमें नहीं आता। खैर बात बडी अज़ीब-सी है। अगर अब भी वक्त हाथसे न गयाहो, तो मै तैयार हूँ...हमलोग झटपट तय कर लें और शादी कर-कराके खत्म करें...लेकिन बिना आपके सामने रहे, मुझसे खुद प्रस्ताव नहीं रखा जायेगा।

रैनिव्स्काया—यह तो बडा अच्छा है। अरे, इस कार्यके लिए कुल एक ही मिनट की तो जरूरत है। मैं उसे अभी बुलाये लेती हूँ!

लोपाख़िन—शैम्पेन यहाँ पहलेसे है ही...[गिलासोंमें झाँककर देखता है] अरे ये तो खाली है. ...किसीने पहले ही खाली कर डाले! [याशा खाँसता है]—घोर चटोरापन है यह।

रैनिवस्काया—[आतुरता से] यह बडा सुन्दर हुआ। हमलोग तुम्हें यहीं छोडकर चले जायेंगे अरे ओ याशा! अच्छा, मैं उसे अभी बुलाती हूँ [दरवाजेकी ओर] वार्या—सब काम छोड़ दो...यहाँ आओ...जल्दी आ जाओ......[याशाके साथ चली जाती है]

लोपाखि़न—[अपनी घड़ी देखकर] हुम्।

[कुछ क्षण चुप्पी। दरवाज़ेके पीछेसे हँसने और फुसफुसानेकी आवाजें तब आखि़रकार वार्याका प्रवेश]

वार्या—[सामानको ऊपरसे देर तक देखते रहकर] अजब बात है। मुझे तो यहाँ कहीं नहीं दिखाई देता।

लोपाखि़न—क्या खोज रही हो?

वार्या—मैंने ही तो बाँधा था और अब मुझे खुद ध्यान नहीं रहा......

[कुछ क्षण मौन]

लोपाखिन—वार्या मिखायलोव्ना—अब जा कहाँ रही हो ?
वार्या—मैं ? मैं तो रेगुलिनके यहाँ जा रही हूँ। मैंने उनके यहाँ घरकी पूरी देखभाल करनेकी नौकरीके लिए प्रबन्ध कर लिया है न।
लोपाखिन—वह तो याश्नेवोमें है न ?—वह जगह यहाँसे पचास मील दूर पड़ेगी। [कुछ क्षण रुककर] तो इसका मतलब; इस घरमें तो दाना-पानी उठ ही गया।
वार्या—[सामानमें देखती हुई] गया कहाँ ? शायद मैंने उसे सन्दूकमें रख दिया। हाँ, इस घरसे तो दाना-पानी खत्म हो ही गया समझो, अब इस घरमें अपना कुछ नहीं है।
लोपाखिन—और मुझे, अभी इसी दूसरी गाड़ीसे खार्कोव चले जाना है। वहाँ मुझे कई काम करने हैं.. ऐपिखोदोवको यहाँ छोड़े जा रहा हूँ—उसे मैंने फिर से लगा लिया है।
वार्या—सचमुच ?
लोपाखिन—अगर तुम्हे याद हो, पिछले साल इन दिनों तो खूब बर्फ़ पड़ने लगी थी...लेकिन इस बार तो कैसी धूप निकलती है ! कैसा अच्छा मौसम रहता है......यों सर्दी तो बेशक़ काफी है ही......हिम-बिन्दुसे तीन डिग्री नीचे है......
वार्या—अच्छा ? मैंने देखा नहीं है [कुछ देर चुप रहकर] और फिर हमारा थर्मामीटर भी टूट गया है। [फिर कुछ देर चुप्पी]

[दरवाज़ेपर आँगनसे आवाज़ आती है "यार्मोलाय,अलैक्सीएविच"]

लोपाखिन—[जैसे इस आवाज़की वह बहुत देरसे प्रतीक्षा कर रहा हो] अभी एक मिनटमें आया।

[लोपाखिन फुर्तीसे चला जाता है। वार्या धरती पर पर बैठकर कपड़े भरे हुए थैलेपर एक हाथ रखकर धीरे-धीरे सिसकियाँ भरती है। दरवाज़ा खुलता है और रैनिव्स्काया सावधानीसे प्रवेश करती है]

रैनिवस्काया—अच्छा तो ? [कुछ देर चुप रहकर] अब हमें चल देना चाहिए।

वार्या—[जिसने आँखें पोंछ ली हैं और अब बिल्कुल नहीं रो रही] हाँ अम्मा, चल देनेका वक्त हो चुका......अगर आज ही गाड़ी मिल जाय तो मैं भी आज ही रैगुलीनके यहाँ चली जाऊँगी।...

रैनिवस्काया—[दरवाज़े में] आन्या, कपड़े-अपड़े पहन लो......

[आन्या आती है, फिर गायेव और चार्लोटा आते हैं। गायेव कन्टोपेथ वाला गर्म कोट पहने है। नौकर और गाड़ीवाले भी आ जाते हैं। ऐपिखोदोव सामानके आस-पास उठा-धराई करता है]

रैनिवस्काया—चलो, अब हम लोग चलें !

आन्या—हाँ चलिये।

गायेव—मेरे बन्धुओ......मेरे प्रिय प्राणप्रिय मित्रो, हमेशाके लिये इस मकानको छोड़ते हुए मैं चुप रह जाऊँगा ?......अपने प्राणोंमें प्यारकी तरह उमड़ते हुए विदाके क्षणोंमें आवेगोंको वाणी दिये बिना क्या मुझसे रहा जायेगा ?

आन्या—[विनतीसे] मामा !

वार्या—मामा, तुम चुप रहो।

गायेव—[हताश स्वरमें] एक ही झटकेमें......वह......लिया गेंदको पॉकिटमें,......अच्छा, चुप हुआ जाता हूँ... [त्रोफ़िमोव और फिर लोपाखिनका प्रवेश]

त्रोफ़िमोव—अच्छा भाइयो और बहनो, अब हमलोग चलें।

लोपाखिन—अरे ऐपिखोदोव—मेरा कोट !

रैनिवस्काया—मैं बस एक मिनट और रुकूँगी...लगता है जैसे मैंने आज तक देखा ही नहीं कि इस घरकी छत कैसी है, इस घरकी दीवारें कैसी

है,...अब कैसी ममतासे और कैसे उत्कृष्ट आकर्षणसे इन्हें देखनेकी मनमें इच्छा होती है।

गायेव—मुझे याद है, जब मैं छः सालका था तो कैसे ट्रिनिटी-दिवसपर इस खिडकीमें बैठा बैठा पिताजीको गिरिजाघर जाते देख रहा था।

रैनिवस्काया—सब चीज़ें ले लीं है न ?

लोपाखिन—खयाल तो यही है [ओवरकोट पहनते हुए, ऐपिखोदोवसे] ऐपिखोदोव, तुम ध्यानसे देख लो, सब चीजे ठीक-ठीक है न।

ऐपिखोदोव—[फँसे गले से] यार्मोलाय अलेक्सीएविच आप कोई फ़िक्र मत कीजिये।

लोपाखिन—अरे, तुम्हारी आवाज़को क्या हो गया ?

ऐपिखोदोव—मैने अभी एक गिलास पानी पिया था। गले मे कोई चीज़ फँस गई है।

याशा—[घृणा से] बेवकूफ़ी !

रैनिवस्काया—हमलोग जा रहे है। अब यहाँ एक भी प्राणी नहीं रहेगा।

लोपाखिन—वसन्त तक तो नहीं ही रहेगा।

वार्या—[बण्डल में से एक छाता खींच लेती है—जैसे उससे किसीको मारना है।] [लोपाखिन ऐसा भाव दिखाता है जैसे डर गया हो] यह क्या ?—नहीं भाई, मेरा ऐसा कोई इरादा नहीं है।

ओफ़िमोव—भाइयो और बहनो—आइये गाडियो पर सवार हो। वक्त हो चुका है। अभी गाडी आ जायेगी।

वार्या—पेत्या, तुम्हारे बरसाती जूते यह रक्खे। इस बक्सेकी बगल में। [आँखों में आँसू भरकर] कैसे गन्दे पुराने हो गये है ये भी !

ओफ़िमोव [अपने बरसाती जूते पहनकर] बन्धुओं अब चलें।

गायेव—[अत्यधिक-सा उद्विग्न होकर डरते हुए कि कहीं रो न पड़े]

गाडी स्टेशन...बगलवाली पॉकेटके तीन कुशनमें, मैं इस बार उस सीधे कोने वाली गेंदमें मारूँगा...

रैनिवस्काया—आओ-आओ, चलें हमलोग।

लोपाख़िन—सब लोग आ गये न? [बाँई तरफ़ दरवाज़ेमें ताला लगाता है] सब चीज़ें तो यही है न, यहाँ भी ताला लगा चलें। आइये, अब चलें।

आन्या—अच्छा घर, अलविदा अलविदा। पुरानी ज़िन्दगी......

त्रोफ़िमोव—नये जीवनका स्वागत हो।

[आन्याके साथ त्रोफ़िमोव चला जाता है। वार्या कमरेको चारों ओर देखती है और धीरे-धीरे चली जाती है। याशा और अपने कुत्तेके साथ चार्लोटा भी चली जाती है]

लोपाख़िन—तो भाई वन्सत तकके लिये विदा...अच्छा बन्धुओ, अगली मुलाक़ात तकके लिये विदा......

[चला जाता है]

[रैनिवस्काया और गायेव अकेले रह जाते हैं। जैसे इसी क्षणकी राह देख रहे हों, इस तरह एक दूसरेकी गर्दनसे लिपट जाते हैं। और दबी घुटी-घुटी सिसकियोंमें फफक पड़ते हैं। डर है कोई सुन न ले।]

गायेव—[हताश स्वरसे] बहन......मेरी बहन,

रैनिवस्काया—हाय, मेरा बगीचा...मेरा प्यारा बगीचा......मेरी ज़िन्दगी, मेरी खुशी......मेरी जवानी......अब विदा दो......अलविदा ......आन्याकी आवाज़—[प्रसन्नतासे पुकारती है] अम्मा!

त्रोफ़िमोवकी आवाज़—[आवेग और प्रसन्नतासे] आ...ओ!

रैनिवस्काया—हाय, इन दीवारों...इन खिड़कियोंको आख़िरी बार तो

देख लूँ......मेरी माँ को इस कमरेमें घूमना बड़ा अच्छा लगा करता था......

गायेव—बहन......बहन.... .

आन्याकी आवाज़—अम्मा !

त्रोफ़िमोवकी आवाज़—आऽ......ओ !

रैनिवस्काया—आ रहे है ।

[सब चले जाते हैं]

[मञ्च खाली है । दरवाजोंमें ताले लगने और फिर गाड़ियोंके जानेकी आवाज़ें । शान्ति । पूर्ण निस्तब्धतामें किसी पेड़पर कुल्हाड़ी चलनेकी ऐसी आवाज़ जो बड़ी दुखित, उदास, एकान्त में झनझनाकर चुप हो जाती है। किसीकी पदचाप सुनाई देती है । दाहिनी ओर दरवाज़ेमें फ़ीर्स खड़ा दिखाई देता है । कपड़े उसके हमेशा जैसे ही हैं । एक जाकेट और कोट, पैरोंमे सली-पर । बीमार है ।]

फ़ीर्स—[दरवाजोंके पास जाता है और हैण्डिल हिलाकर देखता है] ताले बन्द हैं । सब लोग चले गये......[एक सोफ़ेपर बैठ जाता है] मेरा किसीको भी ध्यान नहीं रहा......कोई बात नहीं है......मैं जरा यहाँ बैठ लूँ......शर्तिया कहता हूँ लिओनिद् एन्द्रीएविचने अपना फ़रवाला कोट नहीं पहना होगा । अपने उसी पतलेवाले कोटमें चले गये है......[चिन्तासे दीर्घ साँस लेता है] हाय, वे लोग मुझसे मिलकर भी नहीं गये ।......अरे नया-नया खून है......[मुँह ही मुँहमें कुछ बड़बड़ाता है जो समझमें नहीं आता] सारा जीवन इस तरह खिसक गया जैसे कभी जिया ही न हो........[लेट जाता है] ज़रा लेट

लूँ......अब तो जैसे दम ही नहा रहा हो......अब शेष क्या रह गया......सभी कुछ तो चला गया। उफ़! मेरा जीवन अब बेकार है......

[बिना हिले-डुले लेटा रहता है]

वीणाके टूटे तारकी तरह एक आवाज़ सुनाई देती है, जैसे कहीं आसमानसे आई हो और उदास-विषण्ण-सी धीरे-धीरे डूब जाती है। फिर सब कुछ शान्त हो जाता है। बगीचेमें गूँजती कुल्हाड़ी की आवाज़के सिवा सब कुछ निस्तब्ध है।]

[पर्दा गिरता है]

समाप्त

तीन बहनें

•

पात्र

आन्द्रे सर्जीएविच् प्रोज़ोरोव	
नाताल्या आइवानोव्ना	—(नाताशा) (आन्द्रेकी प्रेमिका और बाद में पत्नी)
ओल्गा, माशा, इरीना	—आन्द्रेकी बहनें
फ़योदोर इल्यिच कुलिगिन	—(हाई-स्कूलका मास्टर, माशा का पति)
लैफ्टिनैण्ट कर्नल इग्नात्येविच वैर्शिनिन	—(सेना-नायक)
बैरोन निकोलाय ल्वोविच तुजेनबाख़	—(लैफ्टिनैण्ट)
वैसिली वैसिलेविच सोल्योनी	—(कैप्टेन)
ईवान सोमानिच शैबुतिकिन	—(फ़ौजी डाक्टर)
अलैक्सी पैत्रोविच फ़ैदोतिक	—सैकिण्ड लैफ्टिनैण्ट
व्लादिमीर कार्लोविच रोदे	—सैकिण्ड लैफ्टिनैण्ट
फ़ैरापोण्ट	—ग्राम-पञ्चायतका बूढ़ा चपरासी
अनफ़ीसा	—अस्सी सालकी बुढ़िया—दाई माँ ।

घटना-स्थल : देहाती-क़स्बा

पहला अङ्क

[प्रोज़ोरोव-परिवारका मकान। खम्भोंवाला एक ड्राइङ्गरूम, जिसके पीछे एक बड़ा कमरा दिखाई पड़ता है। दोपहरका समय। धूप साफ़ और तेज़ है। पीछेके कमरेमें भोजनके लिए एक मेज़ ठीककी जा रही है]

हाईस्कूल-टीचरके गहरे-नीले रङ्गके कपड़े पहने ओल्गा अभ्यास की कॉपियाँ जाँच रही है। कभी चुपचाप खड़ी होकर जाँचती है, कभी इधरसे उधर घूमते हुए। काले कपड़े पहने माशा बैठी एक किताब पढ़ रही है—उसने अपना टोप घुटनेपर रख लिया है। सफ़ेद कपड़े पहने इरीना विचारोंमें खोई खड़ी है]

ओल्गा—इरीना, आजसे ठीक एक साल पहले, पाँच मईको, तुम्हारे जन्म-दिनपर ही तो पिताजीका स्वर्गवास हुआ था। भयानक ठण्ड थी। बर्फ़ पड रही थी। मुझे तो ऐसा लगता था जैसे इस दुख से मैं बच नहीं पाऊँगी। तुम ऐसी बेहोश पडी थी मानो मर गई हो। लेकिन अब एक साल बीत गया। हमलोग अब कुछ स्थिरचित्तसे विचार कर सकते हैं। तुमने सफ़ेद कपड़े पहन ही लिये हैं—चेहरे पर भी कान्ति है! [घड़ी बारह बजाती है] उस समय भी तो घडी घण्टे ही बजा रही थी [कुछ क्षण चुप्पी] जब लोग अर्थीको क़ब्रिस्तान ले जा रहे थे उस समयका बजता बैण्ड, बन्दूकोंका छूटना मुझे अब तक याद है। थे तो पिताजी ब्रिगेडकी कमाण्डके जनरल; पर फिर भी लोग ज्यादा नहीं आये थे। खैर, उस वक़्त पानी भी तो पड़ रहा था—मूसलाधार पानी और बरफ़ दोनों।

इरीना—क्यों याद करती हो ये सब बातें ?

[खम्भाके पीछे मेज़के पास बैरन तुज़ेनबाख़, शेबुतिकिन और सोल्योनी दिखाई देते हैं]

ओल्गा—आज तो काफ़ी गर्म है—खिडकियाँ खोली जा सकती हैं। लेकिन भोजके पेड़ोंमें अभी तक क़ोंपलें ही नहीं आईं। ग्यारह साल पहले पिताजीको ब्रिगेड मिला था, तभी वे हमारे साथ मॉस्कोसे यहाँ आये थे—और मुझे खूब याद है, अबतक यानी मईके शुरू होते-होते हर तरफ़ बहार छा गई थी।—बडी सुहानी गर्मी थी और सारा संसार सुनहली धूपमें नहाया हुआ था। ग्यारह साल पहलेकी बात है। फिर भी मुझे सारीकी सारी बातें यों याद है जैसे कलकी हों। सच बहन, आज सुबह जब मै उठी तो देखा धूपका एक ज्वार-सा उमडा पड़ रहा है। तब मैंने देखा, अरे, वसन्त आगया। मेरा हृदय आनन्दसे झूम उठा। उस समय मनमें वापस घर पहुँच जानेकी बड़ी ही उत्कट इच्छा हुई।

शेबुतिकिन—[व्यंग्यसे सोल्योनीसे] वही पुराना रोना !

तुज़ेनबाख—[सोल्योनीसे हाँ] सच यार, यह सरासर बकवास है।

[माशा किताबमें ही डूबी हुई हल्के-हल्के सीटीसे गुनगुनाती है]

ओल्गा—सीटी मत बजाओ, माशा ! कैसे मन हो पाता है तुम्हारा ! [चुप्पी] सारे दिन स्कूल, फिर रात-रात तक अपने पाठोंकी तैयारी से सिरमें ऐसा दर्द होता है; दिमागमें ऐसा मुर्दनी और उदासी भरी रहती है जैसे मैं बुड्ढी हो गई हूँ। सचमुच, इन पिछले चार सालोंमें जबसे मैं इस हाईस्कूलमें हूँ, मुझे ऐसा लगता जैसे बूँद-बूँद करके धीरे-धीरे मेरी सारी शक्ति, सारी जवानी मुझे छोड़कर चली गई हो। बस, एक ही झक रोज-रोज बढ़ती जाती है.........

ईरीना—मॉस्को लौट चलो।...घर-बार सबको बेच-बाचकर, यहाँकी सारी चीजोंको ठिकाने लगाकर मॉस्को भाग चलो।......

ओल्गा—हाँ, मॉस्को—जितनी जल्दी हो सके.........

[शैबुतिकिन और तुज़ेनबाख हँसते हैं]

ईरीना—आन्द्रे भैया शायद प्रोफ़ेसर हो जायें। तब तो फिर वे यहाँ कभी भी नहीं रहेंगे। बस, बिचारी माशाका ही ज़रा सोच होता है।

ओल्गा—माशा हर साल गर्मियाँ मॉस्कोमें आकर बिता लिया करेगी।

[माशा हल्की सीटीमें गुनगुनाती रहती है]

ईरीना—भगवान करे, किसी तरह यह हो जाय। [खिड़कीसे बाहर देखकर] आजका दिन कैसा सुहावना है। पता नहीं क्यों—आज मेरा मन बड़ा पुलक रहा है। जब आज सुबह-सुबह मुझे ध्यान आया कि अरे, आज तो मेरी वर्षगाँठ है, तो अचानक मनमें बड़ी खुशी हुई। बचपनकी याद आने लगी, जब अम्मा जिन्दा थीं। उन सब बातोंने मुझे विभोर और रोमाञ्चित कर डाला—हाय, वे उन दिनोंकी बातें...

ओल्गा—आज तुम बड़ी खिल रही हो। और दिनोंकी अपेक्षा आज बड़ी प्यारी-प्यारी लग रही हो। माशा भी बड़ी सुन्दर लग रही है। आन्द्रे भैया भी बड़े अच्छे लगने लगेंगे—लेकिन वे जरा फूल गये है। मुटापा उन्हें फबता नहीं है। और मैं तो बड़ी-बूढ़ी होती जा रही हूँ—काफ़ी दुबली भी तो हो गई हूँ। इसका कारण शायद यह हो कि स्कूलमें मैं लड़कियोंसे बड़ी झल्लाई-सी रहती हूँ। आज मैं बिल्कुल स्वतन्त्र हूँ, अपने घर बैठी हूँ। न सिरमें दर्द है न कुछ—इसलिये ऐसा लगता है जैसे कल बड़ी-बूढ़ी थी आज फिरसे लड़की हो गई हूँ। अभी मेरी उम्र कुल २८ की तो है

ही। खैर यों तो सब ठीक है। जो कुछ करता है भगवान् ही करता है...फिर भी कभी-कभी मन होता है कि शादी कर लेती...दिन भर घर बैठी रहती। कैसा अच्छा होता...[कुछ देर चुप रहकर] मैं अपने 'उनका' खूब प्यार करती...

तुज़ेनबाख़—[सोल्योनीसे] तुम इतनी बक-बक करते हो कि सुनते-सुनते मै तो ऊब उठा हूँ......[ड्रॉइंगरूममें आते हुए] मै आपको एक बात बताना भूल गया...आज हमारी फ़ौजके नये कमाण्डर वैर्शीनिन आपके यहाँ आनेवाले है [पयानोके पास बैठ जाता है]

ओल्गा—अच्छा ?—मुझे बडी खुशी होगी।

ईरीना—बूढ़े हैं क्या ?

तुज़ेनबाख़—नहीं, ऐसे तो नहीं है। चालीस या ज्यादासे ज्यादा पैंतालीस के होंगे...[धीरे-धीरे पयानो बजाता है] आदमी तो शानदार लगता है। बस, बक्की बहुत है।

इरीना—दिलचस्प हैं न ?

तुज़ेनबाख़—हॉ हॉं, ठीक ही है। उसके एक पत्नी है, एक सास है, और दो छोटी-छोटी लड़कियाँ हैं बस, सो यह भी उसकी दूसरी पत्नी है। अब वह सबके यहाँ जा-जाकर कहते फिर रहे हैं कि उनकी एक पत्नी है, दो बच्चियाँ हैं। आपको भी बताएँगे। पत्नी उसकी कुछ झक्की-सी लगती है—लडकियोंकी तरह बालों की लम्बी-सी चोटी किये रहती है। हमेशा बड़े भावुकता भरे लहजे में बातें करती है। बात-बातमें दार्शनिकताका छोंक लगाती जाती है और अपने पतिदेवको जलानेके लिये ही अक्सर आत्महत्याकी कोशिशें करती रहती है। मैं होता तो वर्षों पहले ऐसी पत्नीको

नमस्कार कर चुका होता; लेकिन ये हैं कि सिर्फ़ उसकी शिकायतें करते जाते हैं और उसीके साथ चिपके हैं।

सोल्योनी—[शैबुतिकिनके साथ ड्राइंगरूममें आते हुए]—एक हाथसे मैं आधा मन वजन ही उठा पाता हूँ, जबकि दोनों हाथोंसे डेढ़ मन—कभी-कभी तो पौने दो मन तक उठा लेता हूँ। इससे यह नतीजा निकाला कि दो आदमी मिलकर एक आदमीके अपेक्षा दुगुने ही नहीं, बल्कि तिगुने या और भी ज्यादा होते हैं.. एक और एक ग्यारह।

शैबुतिकिन—[आते हुए अख़बार पढ़ता जाता है] बाल झड़नेके लिये... .आधी बोतल स्पिरिटमें दो तोले नैपथलीन डालिये... खूब घुलमिल जाने दीजिये,.....अब इसे रोज इस्तैमाल कीजिये अच्छा, इसे लिख लें [अपनी नोट-बुकमें लिखता है] नहीं... नहीं मुझे इसकी ज़रूरत क्या है ? [काट देता है] इससे क्या होता जाता है ?

इरीना—शैबुतिकिन, डॉक्टर शैबुतिकिन।

शैबुतिकिन—क्या हुआ बेटी, मुन्नी ?

इरीना—मुझे बताओ न, मैं आज इतनी खुश क्यों हूँ ? जैसे मेरे ऊपर अनन्त नीला-आकाश फैला चला गया हो और सफ़ेद बगुलोंकी क़तारें उसमें उड़ती चली जा रही हों...क्या बात है ? क्यों है ?

शैबुतिकिन—[बड़ी कोमलतासे उसके दोनों हाथोंको चूमता है] मेरी बच्ची...।

इरीना—आज जब सुबह-सुबह मैं उठी, मुँह-हाथ धोया तो लगा मानो दुनियाकी सारी बातें मेरी समझमें आ गई—मेरे सामने साफ़ हो गई हो। जैसे मैं जान गई होऊँ कि किसीको कैसे रहना चाहिये...डाक्टर साहब, अब मेरी समझमें सब कुछ आगया है...

चाहे कोई भी क्यों न हो, उसे काम करना चाहिये। एडी-चोटीका पसीना बहाकर परिश्रम करना चाहिये। जीवनकी सारी सार्थकता, सारा उद्देश्य, सारे आनन्द, सारे उल्लास इसीमें है। कैसा आनन्द है मज़दूर बननेमें। सुबह पौ फटनेसे पहले उठ पड़े...सड़कपर पत्थर तोड़ते रहे...या फिर चरवाहा बने, स्कूल-मास्टर, बच्चोंको पढ़ा रहे हैं...या फिर इंजन ड्राइवर...आह, डाक्टर साहब, मनुष्योंकी तो बात ही छोड़ दो, अच्छा हो आदमी बैल घोड़ा कुछ बन जाय—काम तो करता रहे! ऐसी लड़की बननेसे क्या फ़ायदा कि बारह बजे उठे, बिस्तरपर कॉफ़ी पीली और फिर दो घण्टे साज-सिंगार में लगाये...सचमुच बड़ा बेहूदा है यह सब!—जैसे गर्मीके दिनोंमें किसीको पानीकी झक होती है—मुझे काम करनेकी झक है। जिस दिनमैं सुबह उठते ही काम न करूँ—तुम मुझसे बातें मत करना...कुट्टीकर लेना।

शैबुतिकिन—ज़रूर...ज़रूर।

ओल्गा—पिताजीने हमें सुबह सात बजे ही उठनेका अभ्यास कराया है। अब एक ये इरीना है कि उठ तो सुबह सात पर ही पड़ती हैं लेकिन नौ बजे तक पड़ी-पड़ी सोचती रहती हैं। और दिखाई कैसी गम्भीर देती हैं—[हँस पड़ती है]

इरीना—तुम्हें तो मुझे हमेशा बच्चा समझनेकी आदत हो गई है—मैं ज़रा भी गम्भीर हुई, कि तुम्हें अजब-अजब लगता है। बीसकी तो हो गई मैं!

तुज़ेनबाख—यह काम करनेकी दुर्निवार लालसा—आह दोस्त, इसे मैं कैसी अच्छी तरह पहचानता हूँ। अपने जीवनमें मैंने कभी काम नहीं किया! सुस्त, आलसी, ठण्डसे जमे पीटर्सबर्गके ऐसे परिवारमें जन्म लिया जहाँ न तो काम करनेसे कोई मतलब था—न

चिन्ता। मुझे याद है जब मैं फौजी विद्यार्थियोंके स्कूलसे घर जाया करता था, तो एक वर्दी डाटे, चपरासी मेरे बूट उतारा करता था। मैं बड़ा उपद्रवी था; लेकिन मेरी माँ हमेशा मुझे एक आदर-मिश्रित भयसे देखा करती थीं। जब और लोग मेरी ओर इस तरह नहीं देखते, तो उन्हें आश्चर्य होता। काम करनेसे तो मुझे हमेशा बचाया गया—दूर रखा गया! लेकिन मुझे विश्वास नहीं है कि वे लोग कामसे मुझे कभी पूरी तरह दूर रख पाये हों।—मुझे तो शक है! अब वह वक्त आ गया है कि बर्फ़ की भारी पहाड़ी-चट्टान दनदनाती हमारे ऊपर चली आ रही है; गरजता हुआ शक्तिशाली भीषण तूफ़ान अब हमारे सिरोपर आ पहुँचा है—यह सारे आलस्य, सारी उदासी, सारी काम करनेसे घृणा और हमारे समाजकी सडी-गली मान्यताओंको चकना-चूर कर डालेगा—उखाड फेंकेगा! मैं काम करूँगा, और देख लेना, आनेवाले पच्चीस-तीस सालमें एक-एकको काम करना पड़ेगा—हर एकको।

शैबुतिकिन—मैं काम-वाम कुछ नहीं करूँगा।

तुज़ेनबाख—तो तुम्हें गिनता ही कौन है?

सोल्योनी—खुदाका शुक्र है, कि अगले पच्चीस सालमें यहाँ तुम्हारी हवा भी नहीं होगी। दो-तीन सालमें ही या तो तुम्हीं अपना बोरिया-बधना उठाकर जहन्नुमकी तरफ कूच करते दिखाई दोगे या फिर किसी दिन गुस्सेमें आकर मैं ही अपनी गोलीसे तुम्हारी खोपडी फोड़ दूँगा—समझे देवता!—[जेबसे इत्रकी शीशी निकालकर उसके हाथों और छातीपर छिड़कता है]

शैबुतिकन—[हँसता है] मैने तो सचमुच कभी कोई काम नहीं किया। यूनिवर्सिटी छोड़नेके बादसे मैने तिनका तक नहीं हिलाया!—

कभी कोई किताब तक नहीं पढ़ी, बस अख़बार पढ़ लेता हूँ... [जेबसे दूसरा अख़बार निकाल लेता है] अच्छा...अब जैसे उदाहरणके लिए लीजिए, अख़बारोंसे मुझे यह तो पता है कि दोब्रोल्युबोव नामके कोई साहब कभी हुए हैं—लेकिन उन्होंने लिखा क्या है?—मैं नहीं कह सकता! ख़ुदा जाने क्या लिखा है.. [नीचेकी मंजिलसे फ़र्शपर खटखटानेकी आवाज़ आती है] लीजिए, नीचे बुलावा आ गया! कोई मुझसे मिलने आया है। मैं अभी सीधा आता हूँ। एक मिनट रुको...।

[अँगुलियोंसे दाढ़ी सुलझाता हुआ तेजीसे निकल जाता है]

इरीना—कोई काम हो आ पड़ा होगा।

तुज़ेनबाख—हाँ, गया तो बडा गम्भीर चेहरा बनाकर है। ज़रूर आपके लिए कोई भेंट लेकर अभी आ रहा है।

इरीना—अच्छी बकवास है।

ओलगा—हाँ-हाँ, बडी बुरी बात है। जब देखो, तब यह कुछ न कुछ बेवकूफ़ी ही करते रहते है।

माशा—[अपने आप ही पढ़ती है]...समुद्रके एक ढालू किनारे पर हरा-हरा शाह-बलूत का पेड़ खड़ा है, बलूतके उस पेड़पर सोनेकी जञ्जीर है...उस बलूतपर सोनेकी जञ्जीर है...[धीरे-धीरे गुन-गुनाती हुई उठ खड़ी होती है]

ओलगा—माशा, तुम आज नहीं चहक रही।

[माशा गुनगुनाती हुई टोप पहनती है]

ओलगा—किधर चल दी?

माशा—घर।

इरीना—अनोखी बात है...

तुज़ेनबाख—...कि कोई जन्म-दिनके प्रीतिभोजसे उठकर यों चल दे, है न।

माशा—कोई बात नहीं, सन्ध्याको आ जाऊँगी...अच्छा बहन नमस्कार [इरीनाका चुम्बन लेती है] एक बार फिर कामना करती हूँ कि तुम स्वस्थ और प्रसन्न रहो। पहले जब पिताजी जिन्दा थे तो जन्म दिनके प्रीतिभोजोंमें तीस-चालीस अफ़सर हमारे यहाँ इकट्ठे हो जाया करते थे। बडा शोर-शराबा रहता था। लेकिन आज तो कुल डेढ आदमी हैं और निर्जन जैसा सन्नाटा है। मैं चलती हूँ। आज मैंने नीले कपडे पहन रखे हैं। जी बडा उखडा-उखडा हो रहा है, इसलिये जो भी कहूँ उसका बुरा मता मानना [आँखोंमें आँसू भरकर गाती है] हमलोग फिर कभी बातें करेंगे...अच्छा तो अब नमस्कार बहन, मैं चलती हूँ...

इरीना—झल्लाकर अरे भई, तुम भी एक मुसीबत हो।

ओल्गा—[रुँधे गलेसे] माशा, मैं तुम्हारी बात समझती हूँ।

सोल्योनी—अगर पुरुष दार्शनिकता बघारता है तो उसमें थोड़ा बहुत दर्शन या कमसे कम दर्शनाभास जरूर होता है, लेकिन जब एक या दो औरतें, दार्शनिकता छोंके तब तो भगवान ही मालिक है।

माशा—जनाब भूतनाथ साहब, क्या मतलब है आपके इस कहनेका ?

सोल्योनी—कुछ नहीं, कुछ नहीं...[किसीकी पंक्ति उद्धृत करता है] "कुछ भी कहनेका समय नहीं, जब चढ़ा पीठ पर हो भालू" [एक क्षण चुप्पी]

माशा—[ओल्गासे नाराज़ होकर] अब यह सिसकना बन्द करो।

[अनफीसा और फ़ैरापोण्टका एक केक लेकर प्रवेश]

अनफ़ीसा—भैया इस तरफ...भीतर चले आओ...जूते तो तुम्हारे साफ़ हैं...[इरीनासे] ग्राम-पंचायतसे, मिखायल, इवानिच पेविकी ओरसे यह एक केक आपके जन्म-दिवस पर।

इरीना—धन्यवाद...उन्हें धन्यवाद...[केक ले लेती है]

फ़ैरापोण्ट—क्या कहा ?

इरीना—[ऊँची आवाज़में] मेरी तरफ़से उन्हें धन्यवाद दे देना।

ओल्गा—दाई माँ, इसे कुछ समोसे (पाई) दे दो। इनके साथ चले जाओ, ये तुम्हें समोसे दे देंगी।

फ़ैरापोण्ट—ऐं ?

अनफ़ीसा—फ़ैरापोण्ट स्पिरिदोनिच, मेरे साथ आ जाओ भैया, चले आओ।

[फ़ैरापोण्टके साथ चली जाती है।]

माशा—मुझे यह प्रोतोपोपोव—क्या नाम है इस कम्बख़्तका ? मिखायल पोतापिच या इवानिच—पसन्द नहीं है। उसे बिल्कुल निमन्त्रित नहीं किया जाना चाहिये था।

इरीना—मैंने तो निमन्त्रित नहीं किया उसे।

माशा—बड़ा अच्छा किया।

[शैबुतिकिनका प्रवेश। चाँदीका समोवार (अँगीठी) लिये हुए उसके पीछे-पीछे एक अर्दली आता है। आश्चर्य और झुँझलाहट का मिश्रित कोलाहल]

ओल्गा—[हाथोंसे चेहरा ढाँपते हुए] समोवार ! हाय राम !

[भोजनके कमरेमें मेज़के पास चली जाती है]

इरीना—किस चक्करमें पड गये आप ?

तुज़ेनबाख़—[हँसकर] मैंने तो तुमसे पहले ही कहा था।

माशा—सचमुच, शैबुतिकिन दादा, तुम्हारे पास दिल नहीं है।

शैबुतिकिन—प्यारी बच्चियो, मेरी बेटियो तुम्हीं तो मेरी सब कुछ हो। अब मेरे लिए इस धरतीपर सबसे क़ीमती खजाना तुम्हीं तो हो। जल्दी ही मैं साठका हो जाऊँगा। बुड्ढा आदमी हूँ...दुनियामें

बिल्कुल अकेला...निकम्मा बूढा। तुम्हारे लिए प्यारके सिवा मेरे पास कोई भी तो अच्छी चीज़ नहीं है। अगर तुम्हारे लिए यह प्यार भी न होता तो शायद मैं बहुत पहले मर गया होता... [इरीनासे] मेरी बच्ची। बेटी, बिल्कुल बच्ची थी तबसे मैं तुझे जानता हूँ। मैंने तुझे अपनी गोदमें खिलाया है। मुझे तुम्हारी प्यारी मातासे भी बडा स्नेह था।

इरीना——लेकिन यह इतनी क़ीमती भेंट क्यों ले आये ?

शैबुतिकिन—[रुँधे गलेसे नाराज़ीसे]...कीमती भेंट। अच्छा, भागो यहाँसे ! [अर्दलीको मेज़की तरफ़ इशारा करके] समोवारको वहाँ ले जाकर रख दो...[नक़ल उतारते हुए] कीमती भेंट !

[अर्दली समोवारको खानेके कमरेमें ले जाता है]

अनफ़ीसा—[कमरा पार करके] बेटियो, एक कर्नल साहब आये हैं। कोई बिल्कुल नयेसे आदमी लगते हैं...ग्रेटकोट उतार चुके हैं। बेटियो, वे अभी यहाँ आये जाते हैं। इरीनुश्का बेटी, ज़रा तमीज़ और नम्रतासे पेश आना [बाहर जाते-जाते] और खानेका भी वक्त हो चुका है। हे भगवान हमारी भी सुनो।

तुज़ेनबाख—मेरा खयाल है वैर्शिनिन होंगे।

[वैर्शिनिनका प्रवेश]

तुज़ेनबाख—कर्नल वैर्शिनिन।

वैर्शिनिन—[माशा और इरीनासे] यह मेरा सौभाग्य है कि आज मुझे अपना परिचय देनेका अवसर मिल रहा है। मेरा नाम वैर्शिनिन है। सचमुझे बहुत ही ख़ुशी है कि आज आपके यहाँ आ ही गया। अरे-रे...तुम लोग कितनी बडी हो गई हो ?

इरीना—मेहरबानी करके तशरीफ़ रखिये। आपके दर्शन करके हमें बडी ही खुशी हुई।

वैर्शिनिन—[उमँग कर उत्साहसे] खुद मुझे कितनी खुशी है। आह, सचमुचमें कितना खुश हूँ आज! तुमलोग कुल तीन ही तो बहनें हो न?...तीन छोटी-छोटी गुड़ियोंकी तो मुझे खूब याद है। चेहरे तो याद नहीं रहे; लेकिन मुझे खूब याद है, तुम्हारे पिता कर्नल प्रोज़ोरोवके तीन लडकियाँ थीं। तुम्हें मैंने खुद अपनी आँखोंसे देखा था। समय कैसा उड़ता चला जाता है...हाँ-हाँ कैसा उडता ही चला जाता है।

तुज़ेनबाख़—कर्नल वैर्शिनिन मॉस्कोसे तशरीफ़ ला रहे हैं।

इरीना—मॉस्कोसे?...क्या आप मॉस्कोसे ही आ रहे है?

वैर्शिनिन—हाँ। तुम्हारे पिताजी वहाँ सेनाके कमाण्डर थे। उन दिनों उसी सेनामें मै भी एक अफ़सर था [माशासे] तुम्हारा चेहरा...हाँ-हाँ, अब मुझे लगता है, थोडा-थोडा ध्यान आ रहा है।

माशा—लेकिन मुझे तो आपकी याद नहीं है।

इरीना—ओल्गा! ओल्गा! [भोजनके कमरेमें पुकारती है] ओल्गा-जल्दीसे इधर तो आओ।

[ओल्गा भोजनके कमरेसे ड्रॉइंगरूममें आती है]

इरीना—पता चला, कर्नल वैर्शिनिन मॉस्कोसे तशरीफ़ ला रहे हैं।

वैर्शिनिन—अच्छा तो ओल्गा सर्जीएव्ना तुम्हीं हो न?...सबसे बड़ी बहन। और तुम मार्या, फिर सबसे छोटी इरीना।

ओल्गा—आपा मॉस्कोसे ही आ रहे है न?

वैर्शिनिन—हाँ—मॉस्कोमें ही मैं पढ़ा-लिखा। वहीं नौकरी शुरू की। वर्षों वहाँ नौकरी की, फिर आख़िरकार मुझे सेनाकी जिम्मेदारी देकर यहाँ भेज दिया गया। देख ही रही हो, अब मैं यहाँ हूँ। ठीक-ठीक

तो तुम्हारी मुझे याद नहीं है। बस इतना ही याद है कि तुम तीन बहनें थीं। तुम्हारे पिताजीकी भी याद है! अब भी अगर आँखे बन्द कर लूँ तो उन्हें ऐसे देखने लगूँगा, जैसे वे जिन्दा हों। मॉस्कोमें मैं तुम्हारे घर आया-जाया करता था।

ओल्गा—मेरा ख़याल है कि मुझे सभीकी याद है। और अभी-अभी अचानक...

वेर्शिनिन—मेरा नाम अलैक्ज़ेन्द्र इग्नात्येविच है।

इरीना—अलैक्जेंद्र इग्नात्येविच। और आप मॉस्कोसे आ रहे हैं। सचमुच कैसी मज़ेकी बात है।

ओल्गा—आपको पता है, हमलोग खुद वहीं जा रहे है?

इरीना—उम्मीद है हमलोग शरदऋतु तक वहाँ पहुँच जायेंगे। मॉस्को हमारा अपना शहर है। वहीं हमारा जन्म हुआ...पुरानी बासमानी स्ट्रीटमें...[दोनों आनन्दसे हँस पड़ती हैं]

माशा—अपने शहरके किसी आदमीसे अचानक, बिना उम्मीदके यों मिल जाना कैसा अच्छा लगता है। [उत्सुकतासे] अब मुझे याद आया। ओल्गा तुम्हें याद है न, लोग किसी मजनूँ-मेजरके बारेमें बातें किया करते थे? आप उस समय लैफ्टिनेण्ट थे और किसीको प्यार करने लगे थे? पता नहीं क्यों, सब आपको चिढ़ाने को 'मेजर' कहा करते थे।

वेर्शिनिन—[हँसकर] हाँ...हाँ, वही वही, मजनूँ मेज़र ही कहते थे।

माशा—तब तो आपके सिर्फ़ मूछें-ही-मूछें थीं। अरे, अब तो आप बिल्कुल बड़े-बूढ़े दिखाई देते है [रुँधे गलेसे] सच, आप कितने बूढ़े हो गये हैं।

वैशिनिन—हाँ, जब मैं 'मजनूँ-मेजर'के नामसे बदनाम था। तब जवान था, प्यार करता था। अब तो बहुत फ़र्क पड़ गया है।

ओल्गा—लेकिन बाल आपका एक भी नहीं पका। उम्र आपकी चाहे बढ़ गई हो पर बूढ़े जैसे तो नहीं लगते।

वैशिनिन—खैर, मैं अब तेतालीसवें सालमें चल रहा हूँ। आपको मॉस्को छोड़े तो बहुत दिन हो गये?

इरीना—ग्यारह साल! पर अरी, माशा, तू रो क्यों रही है री? अजब लड़की है। [रुँधे गलेसे] मैं भी रोने लगूँगी।

माशा—मै ठीक हूँ......अच्छा, वहाँ किस सड़कपर आप रहते थे?

वैशिनिन—पुरानी बासमानी स्ट्रीटपर!

ओल्गा—अरे, वहीं तो हम भी रहते थे।

वैशिनिन—कभी मै निमैत्स्की स्ट्रीटपर रहता था। वहाँसे मैं लालबारकों तक जाया करता था। रास्तेमें एक बड़ा मनहूस-उजाड़-सा पुल पड़ता था। वहाँ पानी शोर करता रहता था। बिल्कुल अकेले आदमीका तो वहाँ दिल डूबने-सा लगता था [कुछ देर रुककर] और यहाँका पुल कैसा चौड़ा है। नदी भी क्या शानदार है। सचमुच बहुत ग़ज़बकी नदी है।

ओल्गा—सो तो है; लेकिन यहाँ बडी ठण्ड है। एक तो यहाँ ठण्ड, और ऊपरसे डॉस-मच्छर।

वैशिनिन—उँह, छोड़ो भी! यहाँ की आबहवा बड़ी अच्छी है—ठेठ रूसी; जङ्गल...नदियाँ...यहाँ भोजके पेड़ भी तो हैं...गम्भीर शान्त... मनमोहक भोजके पेड़। मुझे भोजका पेड़ सारे पेड़ोंसे अच्छा लगता है। वाक़ई, यहाँ रहनेमें मज़ा है। बस ज़रा विचित्र बात यही है कि स्टेशन पन्द्रह मील दूर है......ऐसा है क्यों? कोई नहीं बताता।

सोल्योनी—मैं जानता हूँ। इसका कारण [सब उसकी ओर देखते हैं] क्योंकि मान लो अगर स्टेशन पास होता, तो, इतनी दूर नहीं होता और दूर इसीलिए है कि पास नहीं है।

[मनहूस-सी शान्ति छा जाती है]

तुज़ेनबाख़—इन्हें अपने ही मजाक पसन्द हैं!

ओल्गा—अब मुझे आपका भी ध्यान आ रहा है...मुझे याद आ गया।

वेर्शिनिन—तुम लोगोंकी माँसे भी मेरा परिचय था।

शेबुतिकिन—बड़ी अच्छी औरत थी बिचारी! भगवान उन्हें स्वर्ग दे।

इरीना—अम्माका दाह-संस्कार मॉस्कोमें ही हुआ था।

ओल्गा—माता मेरीके नये मन्दिरमें।

माशा—आपलोग विश्वास करेंगे...? मुझे अम्माका चेहरा ही भूलता जा रहा है। इसी तरह शायद लोग हमें भी थोड़े दिनोंमें भूल जायेंगे! हमारे चेहरे उन्हें याद ही नहीं आया करेंगे।

वेर्शिनिन—हाँ, लोग हमें भी भूल जायेंगे। यही तो हमारी किस्मत है। लेकिन हमलोगोंका इसमें क्या बस? आज जो कुछ हमें बहुत गम्भीर लगता है, बहुत महत्वपूर्ण और बहुत ही आवश्यक लगता है—एक दिन उसे कोई याद भी नहीं रखेगा, या वह बिल्कुल भी महत्वपूर्ण न लगेगा .....[एक क्षण चुप्पी] और मज़ा यह है कि हम यह भी तो दावेके साथ नहीं कह सकते कि क्या-क्या बहुत महान और महत्वपूर्ण समझा जायेगा और किसे तुच्छ और हास्यास्पदका दर्जा मिलेगा। पहले-पहल कापर्नीकस या कोलम्बसकी खोजें क्या हमें व्यर्थ और मूर्खतापूर्ण नहीं लगती थी? और उसी समय जब कि अपनेको तीसमारखाँ लगानेवाले किसी बज्रमूर्खकी लिखी बकवासमें शाश्वत-सत्यके दर्शन होते होंगे। हो सकता है कि आज जिस जिन्दगीको हम जिस

तत्परता या स्वाभाविकतासे ग्रहण किये हुए है, वही किसी समय बड़ी विचित्र, बड़ी कष्टकर, अर्थहीन, गन्दी और शायद गुनाहोंसे भरी तक लगने लगी।

तुज़ेनबाख़—कौन जाने ? हो सकता है हमारा ही युग महान माना जाय और इसे ही अत्यन्त आदरसे याद किया जाय। देखिये न, आज पहले जैसी यातनाएँ देनेके तहखाने नहीं हैं। आज दलके दल लोगोंको फाँसी पर नहीं लटका दिया जाता, रोज़-रोज चढ़ाइयाँ नहीं होतीं। यह सब कुछ है; मगर फिर भी चारों तरफ़ दुःख-दर्द छाया है।

सोल्योनी—[एकदम आवाज़ पंचम पर चढ़ाकर जैसे मुर्गोंको दाना खिला रहा हो...] कक्...कक्...कक्, हमारे बैरन साहबको तो फिलसफ़ेबाज़ी ही गोश्त मक्खन है...इसके बाद इन्हें किसी खानेकी ज़रूरत नहीं रहती।

तुज़ेनबाख़—वैसिली वैसिल्येविच, मैंने तुमसे कहा था कि मेरा पीछा छोड़ दो। [दूसरी कुर्सी पर जा बैठता है] आख़िर इस सबकी भी हद होती है!

सोल्योनी—[वैसी ही ऊँची आवाज़में]—कक्...कक्...कक्।

तुज़ेनबाख़—[वेर्शिनिनसे] लेकिन बेहद ज्यादा अफ़सोसकी जो बात आज जिधर देखिये उधर ही दिखाई देती है वह यह कि आज हमारा समाज एक ख़ास नैतिक सतह पर आकर ठहर गया है।

वेर्शिनिन—जी हाँ,...जी हाँ...बेशक।

शेबुतिकिन—बैरन साहब, अभी तुमने कहा कि हमारा युग बहुत बड़ा माना जायेगा; लेकिन दूसरी ओर देखो। हमारे युगका मनुष्य कितना

छोटा हो गया है। [खड़ा हो जाता है] देखो न, मैं कितना छोटा हूँ ?

[नेपथ्यमें वॉयलिन बजता है]

माशा—यह वॉयलिन हमारे आन्द्रे भैया बजा रहे हैं।

इरीना—परिवार भरमें वही सबसे अधिक विद्वान हैं। हमें तो उम्मीद है वे कहीं न कहीं प्रोफ़ेसर हो जायेंगे। पिताजी तो फ़ौजी आदमी थे—मगर उनके बेटेने पढ़ने-लिखनेकी लाइन चुनी है।

माशा—पिताजीकी ही इच्छा तो थी यह।

ओल्गा—आज हम सब उन्हें खूब चिढ़ा रही थीं। हमें लगता है उन्हें मुहब्बतका रोग लग गया है।

इरीना—यहीं एक लड़की रहती है—उसके साथ...। शायद, वह भी आज यहाँ आये।

माशा—उफ़, कैसे कपड़े पहनती है वह। अगर कपड़े बेढंगे या पुराने फ़ैशनके हों—तब भी कोई बात नहीं; लेकिन उन्हें देखकर तो बस दया आती है......बड़ा अजब-अजब चटक पीले रङ्गका लहँगा, बड़ी गँवारू-सी उसमें लगी झालर और लाल ब्लाउज़... ...उसके गाल ऐसे रगड़े हुए रहते है कि दूरसे चमकते है......आन्द्रे भैया उसके प्यार-व्यारके चक्करमें नहीं हैं...... नहीं, मैं नहीं मान सकती......ख़ैर कुछ-कुछ यों ही सिर्फ़ मन बहलावके लिए उनका थोड़ा-सा झुकाव ज़रूर उधर है। वह भी तो हमें चिढ़ाते और बुद्धू बनाते हैं। मैंने तो कल यह सुना कि—ग्राम-पञ्चायतके सरपञ्च प्रोतोपोपोवसे उसकी शादी होने जा रही है। हो जाय तो बड़ा अच्छा हो......[बगलमें दरवाज़ेपर जाकर] आन्द्रे भैया, भैया, ज़रा एक मिनटको यहाँ तो आइये।

[आन्द्रेका प्रवेश]

ओल्गा—यह हमारे भाई आन्द्रे सर्जीएविच् हैं।

वेर्शिनिन—मेरा नाम वेर्शिनिन है।

आन्द्रे—और मेरा प्रोज़ोरोव है [मुँहका पसीना पोंछता है] आप ही तो हमारी फौजके नये कमाण्डर हैं न ?

ओल्गा—आन्द्रे भैया, ज़रा सोचो तो सही, कर्नल साहब, मॉस्कोसे आ रहे हैं।

आन्द्रे—सचमुच ? अच्छा, तब तो मेरी बधाई है ! अब मेरी बहनें आपको चैनसे नहीं बैठने देंगी।

वेर्शिनिन—मैं आपकी बहनोंको पहले ही काफ़ी उबा चुका हूँ।

इरीना—देखिए, आन्द्रे भैयाने आज मुझे कैसा सुन्दर चित्रका फ्रेम दिया है [चौखटा दिखाती है] यह इन्होंने खुद ही बनाया है।

वेर्शिनिन—[चौखटेको देखकर जैसे समझमें न आ रहा हो क्या बोले—] हाँ......सचमुच यह एक चीज़ है।

इरीना—और पयानोके ऊपर जो फ्रेम रखा है, वह भी इन्होंने ही बनाया है।

[आन्द्रे निराशासे हाथ झटकारता है और एक ओर चला जाता है]

ओल्गा—भैया विद्वान् तो हैं ही, वायलिन भी बजाते हैं। महीन तार वाली आरीसे दुनियाभरकी चीज़ें बना लेते हैं। सचमुच यह हरफ़न मौला हैं। आन्द्रे भैया, भागो मत। ये हैं इनके ढङ्ग ! हमेशा कतरानेकी कोशिश करते हैं। यहाँ आओ न......।

[माशा और इरीना उसकी बाहें पकड़कर हँसती हुई लौटा लाती हैं]

माशा—आओ—आओ।

आन्द्रे—मुझे छोड़ दो—मेहरबानी करके छोड़ दो !

माशा—बड़े अजब हो तुम भी भैया ! कर्नल-साहबको तो कभी लोग 'मजनूँ मेजर' कहते थे, लेकिन इन्हें तो कभी बुरा नहीं लगा...।

वैशिनिन—रत्ती भर नहीं ।

माशा—मैं तो तुम्हें 'मॅजनू-वायलनिस्ट' कहूँगी ।

ईरीना—या 'मॅजनू-प्रोफ़ेसर' ।

ओल्गा—हमारे भैया मुहब्बतके चक्करमें है हमारे आन्द्रे भैया प्यार करते है।

ईरीना—[तालियाँ बजाती हुई] आहा जी...सब लोग मिलकर कहो—हमारे भैया आन्द्रे प्यार करते है ।

शैबुतिकिन—[आन्द्रेके पीछे आकर उसकी कमरमें बाहें डालकर लिपट जाता है] 'प्रकृतिने हमलोगोंका हृदय—प्यारके लिए किया निर्माण...'

[हँसता है, फिर जेबसे अख़बार निकालकर पढ़ने लगता है]

आन्द्रे—अच्छा बस । बहुत हो गया [मुँह पोंछता है] आज सारी रात मेरी आँख नहीं लगी । आज सुबहसे ही—जिसको कहते हैं मन उखड़ा-उखड़ा होना, वैसा ही कुछ लग रहा है । रातको, सुबह चार बजे तक पढ़ता रहा, फिर बिस्तरपर जा लेटा—मगर कोई फायदा नहीं । कभी इसके बारेमें सोचता, कभी उसके । इतनेमें ही रोशनी फैलने लगी । सूर्यदेवने मेरे सोनेके कमरेमें प्रकाश उँडेलना शुरू कर दिया । मै चाहता हूँ कि गर्मी-गर्मी, जब तक मैं यहाँ हूँ, अंग्रेजीसे एक किताब अनुवाद कर डालूँ ।

वैशिनिन—तो आप अंग्रेजी पढ़ लेते है ?

आन्द्रे—जी हाँ, भगवान् भला करे, हमारे पिताजीने पढा-पढ़ाकर हमारा दम निकाल लिया । बात जरा बेढंगी और बेहूदी है लेकिन मै मानता हूँ उनकी मृत्युके बाद मैं फूलने लगा था । एक ही साल

में मैं तो फूलकर कुप्पा हो गया हूँ। जैसे मेरे ऊपरसे किसीने कोई भारी पत्थर उठा लिया हो। लेकिन आज पिताजीकी ही बदौलत हमलोग फ्रेंच, इंगलिश, जर्मन इत्यादि जानते हैं। इरीना तो इटालियन भी पढ़ लेती है।—लेकिन कितनी क़ीमत हमें इस पढ़नेकी चुकानी पड़ी है।

माशा—इस शहरमें तो तीन भाषाएँ जानना शान है। शान ही नहीं—छठी उँगलीकी तरह बेकारका बोझ है। यहाँ तो हम अगर बहुत कुछ जानते हैं, तो सब फ़ालतू है।

वैर्शिनिन—वाह! क्या खूब! [हँसता है] अगर हम बहुत कुछ जानते हैं तो फ़ालतू है! भाई, मेरे ध्यानमें तो कोई ऐसा जाहिल और जड़ शहर नहीं आता जिसमें पढ़े-लिखे और समझदार लोगोंको फ़ालतू समझा जाय। अच्छा, मान लीजिये इस शहरमें एक लाख लोग रहते हैं—ये सबके सब निश्चित रूपसे असभ्य और पिछड़े हुए हैं और आपकी तरहके सिर्फ तीन ही व्यक्ति हैं। कहनेकी ज़रूरत नहीं है कि अपने चारों ओर फैले भयानक अँधेरेके दलको आप नहीं जीत सकेंगे। धीरे-धीरे जैसे-जैसे दिन बीतते जायेंगे और आपकी जिन्दगी कटती जायेगी, आप भी इसी भीड़में खो जायेंगे, घुलमिल जायेंगे। आपको इनके सामने झुकना पड़ेगा। लेकिन जीवन आपकी अच्छाइयोंको ले लेगा। फिर भी ऐसा नहीं है कि आपका कोई नामो-निशान ही न रहे। नहीं; हो सकता है आपके बाद, आप जैसे छह और हों, फिर बारह हों—और इसी तरह उस समय तक बढ़ते चले जायँ जबतक उन्हींकी संख्या अधिक न हो जाय। दो-तीन सौ सालमें तो धरतीपर जीवन ऐसा मधुर और सुन्दर हो जायेगा कि हम कल्पना भी नहीं कर सकते...ऐसी ही ज़िन्दगीकी तो मनुष्यको वास्तवमें

आवश्यकता है। ठीक है, ऐसा जीवन मनुष्यको अभी तक नहीं मिला; लेकिन उसके दिलमें उसका आभास होना चाहिये, आशा होनी चाहिए, सपने होने चाहिए—उस जीवनके लिए उसे तैयारी करनी चाहिये, क्योंकि उसे खुद देखना-समझना चाहिये कि अपने बाप-दादाओंके मुक़ाबले उसका ज्ञान अधिक है [हँसता है] और एक आप हैं। आपकी शिकायत है कि जो कुछ भी ज्यादा आप जानते हैं सब फ़ालतू है !

माशा—[**टोप उतारकर**] अब तो मैं खाना खाकर ही जाऊँगी।

इरीना—[**ठण्डी साँस भरकर**] सचमुच किसीको इन सब बातोंको लिख डालना चाहिए।

[**आन्द्रे इस बीच चुपचाप खिसक जाता है**]

तुज़ेनबाख़—आपने बताया कि कुछ सालों बाद धरतीपर जीवन बहुत मधुर और सुन्दर हो जायेगा। बात ठीक है। लेकिन वह समय चाहे जितना दूर क्यों न हो, उसमें अपना थोड़ा-बहुत हिस्सा लगाने के लिए हरेकको अभीसे तैयारी करनी चाहिये, काम करना चाहिये।

वेर्शिनिन—जी हाँ— जी हाँ ! आपके यहाँ कितने सारे फूल हैं ! [**चारों ओर देखते हुए**] और कमरे कैसे सुन्दर हैं। मुझे तो आपसे रश्क होता है। यहाँ तो एक सोफ़ा, दो कुर्सियाँ और धुँआ देनेवाला स्टोव लिए हुए जब देखो तब जिन्दगी भर एकसे एक गन्दे मकानोंमें टकराते फिरे हैं। ये फूल तो ज़िन्दगीमें कभी आये ही नहीं...[**हाथ मलते हुए**] लेकिन ख़ैर, यह सब सोचनेसे फ़ायदा भी क्या ?

तुज़ेनबाख़—हाँ, हाँ, हरेकको काम करना चाहिए। मैं शर्तिया कहता हूँ कि आप सोच रहे हैं मेरे भीतरका जर्मन इस समय भावुक हो उठा है ! लेकिन कसमसे कहता हूँ कि मेरा रोम-रोम रूसी है।

जर्मन बोल तक नहीं सकता—मेरे पिताजी परम्परागत चर्चमें विश्वास करते थे।

[कुछ-क्षण चुप्पी]

वेर्शिनिन—[मञ्चपर टहलते हुए] कभी-कभी मैं सोचता हूँ कि अगर हमें फिरसे अपनी ज़िन्दगी शुरू करनी होती और खूब सोच-समझकर हम लोग उसे शुरू करते तो कैसा होता ? काश, एक बारकी जी हुई जिन्दगी जल्दी-जल्दीमें लिखी गई रफ़ स्केच मानी जाती और दूसरी बार शुरू की गई ज़िन्दगी सुधरी-संशोधित [फ़ेयर-कापी] होती !...मैं कल्पना करता हूँ कि उस समय हमसे हरेककी यही कोशिश होती कि अपने किये को दुहराये नहीं और जैसे भी हो जीवनके लिए एक नया खाका बनाये। तब शायद वह अपने लिए ऐसा ही एक मकान बनवाता जिसमें खूब झकाझक रोशनी होती और ढेरके ढेर फूल होते। मेरे एक पत्नी और दो छोटी-छोटी बच्चियाँ हैं। अब पत्नीकी तबियत कुछ गड़बड़ चल रही है। लेकिन अगर मुझे फिरसे जीवन शुरू करनेको मिले तो मैं एकदम शादी ही न करूँ नहीं—बिल्कुल नहीं।

[स्कूलमास्टरके कपड़ोंमें कुलिगिनका प्रवेश]

कुलिगिन—[इरीनाके पास जाकर] इरीना, जन्म-दिनके अवसर पर मेरी बधाइयाँ लो। मैं आपके स्वास्थ्यकी कामना करता हूँ और प्रार्थना करता हूँ कि आपकी उम्रकी लड़कियोंके जो भी स्वप्न होते हैं—वे सबके सब पूरे हों। लीजिये, आपको भेंट स्वरूप यह छोटी-सी किताब है [उसे किताब देता है] अपने हाई स्कूलका पचास सालका इतिहास है। मैंने ही लिखा है। बड़ी तुच्छ और साधारण-सी किताब है—लिखी इसलिए गई कि और कुछ करनेको मेरे पास था नहीं। खैर, फिर भी आप इसे पढ़

सकती हैं। भाइयों नमस्कार! [वैर्शिनिनसे] मेरा नाम कुलिगिन है, मैं यहाँ हाई स्कूलमें मास्टर हूँ, [इरीनासे] इस किताबमें आपको उन सब लोगोंके नामोंकी सूची भी मिलेगी जिन्होंने पिछले पचास सालोंमें हमारे यहाँसे हाई-स्कूल किया है।

[माशाका चुम्बन लेता है]

इरीना—अरे, लेकिन अभी ईस्टर पर ही तो तुमने मुझे यह किताब दी है।

कुलिगिन—[हँसकर] कभी नहीं हो सकता। अच्छा, अगर यही बात है तो इसे मुझे लौटा दीजिये या और भी अच्छा हो कर्नल साहबको इसे दे दीजिये। लीजिये कर्नल साहब, मेहरबानी करके इसे ले लीजिये, कभी जब आपका मन न लग रहा हो, तो इसे पढ़ डालिये।

वैर्शिनिन—धन्यवाद! [जानेकी तैयारी करते हुए] मुझे आपसे परिचय प्राप्त करके बड़ी ही खुशी हुई।

ओल्गा—तो आप जा रहे हैं क्या? नहीं...नहीं।

इरीना—आपको हमारे साथ खाना खानेके लिए तो रुकना ही पड़ेगा। रुकिये न!

ओल्गा—हाँ-हाँ, रुक जाइये न!

वैर्शिनिन—[ज़रा आदरसे झुककर] शायद अचानक मैं आपके जन्म दिनपर ही आ गया हूँ। क्षमा कीजिये, मुझे यह पता नहीं था। इसीलिये मैंने आपको बधाई नहीं दी।

[ओल्गाके साथ भोजनके कमरेमें चला जाता है]

कुलिगिन—बन्धुओ, आज इतवारका दिन है—आरामका दिन है। आइये हमलोग अपनी-अपनी हैसियत और उम्रके अनुसार आराम करें और मज़े उड़ायें...इन गलीचोंको गर्मियों भरके लिए उठा देना

चाहिए और जाड़े आनेतक इन्हें दूर ही रखना चाहिए। इनमें या तो फ़ारसी-पाउडर छिड़क देना चाहिए या नैप्थलीनकी गोलियाँ डाल देनी चाहिए। इसीलिए तो रोमके लोग इतने तन्दुरुस्त और मस्त थे कि वे जानते थे, काम और आराम कैसे होता है—उनके स्वस्थ शरीरमें उनके जीवनकी कुछ जानी-पहचानी रूपरेखायें थीं। उनका जीवन एक ख़ास ढर्रेमें ढला हुआ था। हमारे स्कूलके हैडमास्टर साहब कहते हैं कि जीवनमें सबसे महत्वपूर्ण चीज़ है उसका रूप-निर्माण। जिस चीज़का कोई रूप नहीं होता वह समाप्त हो जाती है......ठीक यही हमारे दैनिक जीवनका हाल है—[**हँसते हुए माशाकी कमरमें हाथ डाल देता है**] माशा मुझे प्यार करती है। मेरी पत्नी मुझे प्यार करती है! और हाँ, गलीचोंके साथ-साथ यह खिड़कियोंके पर्दे भी हट जाने चाहिए। आज मेरा दिल आनन्दसे नाच रहा है। मन बड़ा खुश है। माशा, आज शामको चार बजे हमें हैडमास्टर साहबके यहाँ जाना है...मास्टरों और उनके परिवारके लिए सैर-सपाटेका इन्तजाम किया गया है।

माशा—मैं तो नहीं जाती।

कुलिगिन—[**दुःखी होकर**] प्यारी माशा, क्यों नहीं चलोगी?

माशा—अच्छा, इसके बारेमें बादमें बातें करेंगे [**गुस्सेसे**] अच्छी बात है, चली चलूँगी, मगर अब तो मेहरबानी करके मेरी जान छोड़ दो।

[**चली जाती है**]

कुलिगिन—और फिर हमलोग हैडमास्टर साहबके यहाँ सन्ध्या बितायेंगे। अपनी नाजुक तन्दुरुस्तीके बावजूद यह आदमी लोगोंसे घुलने-मिलनेके तरीके निकालता रहता है। बहुत ही सज्जन और महान

व्यक्ति है। कमालका आदमी है। कल मीटिङ्गके बाद बोला—'फ्योदोर इल्यिच, मैं तो परेशान हो उठा हूँ—थक गया हूँ। [पहले दीवार घडीको फिर अपनी कलाईको देखता है] आप लोगोंकी घडी सात मिनट तेज़ है। हाँ, तो वह बोला—'हाँ भाई, मै परेशान हो उठा हूँ।'

[नेपथ्यमें वॉयलिन बजनेका स्वर]

ओल्गा—भाइयो, अब खानेके लिए चलिए......आज पाई [समोसे] बनी है!

कुलिगिन—वाह ओल्गा, वाह। कल मैं सुबह पौ फटनेसे लेकर रातको ग्यारह बजे तक काम करता रहा—थककर चूर-चूर हो गया। आज तो मनमें बडा ही उल्लास है। [खानेके कमरेमें मेज़के पास चला जाता है] वाह प्रिये।

शैबुतिकिन—[अख़बारको तह करके जेबके हवाले करता है और दाढ़ी को उँगलियोंसे सुलझाते हुए] क्या कहा? पाई। तब तो मज़ा आ गया!

माशा—[शैबुतिकिनसे सख्तीसे] लेकिन ध्यान रखिए, आज आप पियेंगे बिल्कुल भी नहीं। सुना आपने? आपके लिए पीना अच्छा नहीं है।

शैबुतिकिन—अरे यह सब पुराने पचड़े छोड़ो भी! अब तो मुझे पिये हुए दो साल होने आये [बेसब्रीसे] मारो गोली...... इससे क्या होता है?

माशा—होता हो या न होता हो पर आप एक बूँद नहीं पियेंगे—समझे! एक बूँद भी नहीं। [गुस्सेसे, लेकिन इस तरह कि पति न सुन ले] भाड़में जाय! फिर वही......सारी शाम उस हैडमास्टरके यहाँ जाकर कुढ़ो।

तुज़ेनबाख़—आपकी जगह मैं होता तो कभी न जाता, किस्सा ख़त्म हुआ।

शैबुतिकिन—मत जाओ......प्यारी।

माशा—ठीक है, ठीक है। आपका इतना ही कहना काफ़ी है कि 'मत जाओ।'......कैसी कम्बख्त ज़िन्दगी है......अब तो सहा नहीं जाता!

[खानेके कमरेमें जाती है]

शैबुतिकिन—[उसके पीछे-पीछे चलते हुए] आइए-आइए।

सोल्योनी—[भोजनके कमरेमें पहुँचकर] अहा चुक्......चुक्......चुक्......

तुज़ेनबाख़—[सोल्योनीसे] बहुत हो चुका, मैं कहता हूँ—अब बस करो!

सोल्योनी—अहा, चुक्......चुक्......चुक्

कुलिगिन—[प्रसन्नतासे] कर्नल साहब, यह आपकी तन्दुरुस्तीके लिए। मैं स्कूलमें मास्टर होनेके अलावा इस परिवारका भी एक सदस्य हूँ। मैं माशाका पति......बड़ी सहृदय है बेचारी। बहुत ही दयालु।

वेर्शिनिन—मै तो थोड़ी-सी यह काले रङ्गकी वोद्का लूँगा [पीता है] आपकी तन्दुरुस्तीके लिए [ओल्गासे] सचमुच, आज आप सब लोगोंके साथ मिलकर मुझे बड़ी ही ख़ुशी हुई।

[इरीना और तुज़ेनबाख़के सिवा ड्राइङ्गरूममें कोई भी नहीं है]

इरीना—आज माशा बड़ी मुरझाई-मुरझाई है। अठारह सालकी उम्रमें उसकी शादी हो गई। तब तो वह इस कुलिगिनको ही सबसे विद्वान् व्यक्ति समझती थी। लेकिन अब वह बात नहीं रही......दिलका यह अच्छा आदमी हो सकता है; लेकिन है बुद्धू।

ओलगा—[अधीरतासे] आन्द्रे भैया—आओ न !

आन्द्रे—[नेपथ्यसे] आ रहा हूँ ! [प्रवेश करके मेज़पर चला जाता है]

तुज़ेनबाख़—क्या सोच रही हो ?

इरीना—कुछ नहीं । मुझे तुम्हारा यह सोल्योनी अच्छा नहीं लगता । मुझे इससे डर लगता है । ऐसी-ऐसी बेवक़ूफ़ीकी बातें कहता रहता है कि.... .

तुज़ेनबाख़—वह विलक्षण आदमी है । मुझे इसपर दया भी आती है और झुँझलाहट भी; लेकिन दया ज़्यादा आती है । मुझे तो लगता कि यह झेंपू है...अकेलेमें तो बड़ी समझदारी और अपनत्व-भरी बातें करेगा, लेकिन जब भी मित्रोंके बीचमें होगा है तो वही जङ्गली और झगड़ालूपनेकी बातें । अभीसे मत जाओ—उन लोगोंको मेज़पर बैठ तो लेने दो । सुनो, मुझे अपने पास बैठाना । सोच क्या रही हो तुम ? [कुछ देर चुप रहकर] तुम बीसकी हो और मैं अभी-अभी तीसका हुआ हूँ । कितने साल पड़े हैं अभी हमलोगोंके सामने ? तुम्हारे लिए मेरे हृदयके प्यारसे भरे दिनोंकी लम्बी चली जाती लड़ी सामने पड़ी है ।

इरीना—निकोलाय ल्वोविच, मुझसे प्यारकी बाते मत करो ।

तुज़ेनबाख़—मुझमें जीवनके लिए, संघर्षके लिए, कामके लिए एक दुर्निवार उत्कट लालसा है और यह लालसा तुम्हारे प्यारके साथ मिलकर मेरी आत्माके रेशे-रेशेमें समा गई है । इरीना, अपना सारा जीवन मुझे सिर्फ़ इसलिए सुन्दर लगता है कि तुम सुन्दर हो । आख़िर सोच क्या रही हो तुम ?

इरीना—तुम कहते हो जीवन सुन्दर है......ठीक है, लेकिन उसके सुन्दर लगनेसे ही क्या होता है ? हम तीनों बहनोंके लिए अभीतक तो जीवन सुन्दर है नहीं—जैसे पौधेको दीमक खा जाती है इसी

तरह हम तो जीवनके हाथों घुटती रही हैं।......अरे लो, मैं तो रोने भी लगी—मुझे रोना नहीं चाहिए...[जल्दीसे आँसू पोंछ डालती है और मुस्कुराती है] मुझे काम करना चाहिए, जमकर काम करना चाहिए। हम जो दबे-घुटेसे हैं और जीवनको ऐसी निराशा उदास आँखोंसे देखते हैं—वह इसीलिए कि हमलोग परिश्रम करना नहीं जानते। हम तो परिश्रमसे घृणा करनेवाले लोगोंके वंशज हैं......

[नताल्या आइवानोव्नाका प्रवेश। कपड़े गुलाबी हैं लेकिन कमरमें पटका हरा बँधा है]

नताल्या—अरे, यहाँ तो लोग खानेके लिए मेज़पर बैठ भी गये। मुझे देर हो गई [चुपचाप शीशेमें अपने आपको देखकर कपड़े ठीक ठाक करती है] बात तो शायद ठीक है [इरीनाको देखकर] इरीना सजएव्ना बहन, मेरी बधाई लो। [बड़े ज़ोरसे लम्बा-सा चुम्बन लेती है] आज तो तुम्हारे यहाँ बड़े लोग आये हैं...मुझे तो सच बड़ी झेंप लग रही है। बैरन साहब, नमस्कार।

ओल्गा—[ड्रॉइंग रूममें आते हुए] अरे, नताल्या आइवानोव्ना तो यहाँ हैं। कहो कैसी हो बहन? [उसे चूमती है]

नताशा—जन्मदिन पर मेरी बधाई। आपके यहाँ तो इतनी बड़ी पार्टी जमी है...मुझे तो बड़ी झेंप लग रही है।

ओल्गा—हिश्ट, अरे यह तो सभी अपने ही लोग हैं [ज़रा चौंककर, धीरेसे] तुमने हरा पटका कमरमें बाँध रखा है। यह अच्छा नहीं लगता बहन।

नताशा—क्यों? अशकुन होता है क्या?

ओल्गा—नहीं-नहीं, यह तुम्हारे कपड़ोंसे मेल नहीं खाता, और कोई बात नहीं है। बड़ा बेमेल-सा लगता है।

नताशा—[रुँधे स्वरमें] सच ? लेकिन वास्तवमें यह हरा कहाँ है ? यह तो एक तरहसे फ़ीके रंगका है।

[ओल्गाके पीछे-पीछे खानेके कमरेमें जाती है]

[खानेके कमरेमें सबलोग खानेके लिए बैठे हैं। ड्रॉइंगरूममें कोई भी नहीं है]

इरीना—मेरी कामना है, तुम्हें अच्छा-सा दूल्हा मिले। अब तो तुम शादी के बारेमें सोच डालो।

शैबुतिकिन—नताल्या आइवानोव्ना, हमलोग आशा लगाये हैं कि आपकी सगाईका समाचार भी मिले।

कुलिगिन—नताल्या आइवानोव्नाने पहलेसे ही वर खोज रखा है।

माशा—[अपने काँटेसे प्लेटको बजाती हुई—] भाइयो और बहनों, अब मैं एक भाषण देना चाहती हूँ..। जैसी भी हो यह ज़िन्दगी हमें एक ही बार मिलती है...

कुलिगिन—अशिष्ट आचरणके लिये तुम्हारे तीन नम्बर कटने चाहिए।

वेर्शिनिन—यह शराब बड़ी ज़ायकेदार है। किसकी बनी है ?

सोल्योनी—शुबेरैले की।

इरीना—[रुँधे गलेसे] छीः छीः, कैसी घिनौनी बात बोलते हो ?

ओल्गा—आज हमलोग खानेके साथ तुर्की कबाब और सेवकी पाई खाएँगे। खुदाका शुक्र है कि आज मैं सारे दिन घर ही रही हूँ। शामको भी घर ही रहूँगी......बन्धुओ, साँझको भी क्या आप लोग नहीं आयेंगे ?

वेर्शिनिन—इजाज़त हो तो मै आ सकता हूँ ?

इरीना—ज़रूर ज़रूर आइए।

नताशा—किसीने भी कोई तकल्लुफ़ नहीं बरता।

शैबुतिकिन—'प्रकृतिने हमलोगोंका हृदय, प्यारके लिए किया निर्माण' [हँसता है]

आन्द्रे—[झुँझलाकर] अब बस बन्द करो! आश्चर्य है आपलोगोंका मन नहीं ऊबा इस सबसे?
[फ़ैदोतिक और रोदेका एक बड़ी-सी फूलों भरी डलियाके साथ प्रवेश]

फ़ैदोतिक—मै कहता था न, यहाँ खाना भी शुरू हो चुका है।

रोदे—[ज़ोरसे तुतलाता हुआ बोलता है] खाना शुरू हो गया? अरे हाँ, यहाँ तो सबलोगोंने खाना भी शुरू कर दिया।

फ़ैदोतिक—अच्छा एक मिनट ज़रा ठहरिये [एक फ़ोटो लेता है] एक अब एक मिनट और ज़रा ठहरिये—[दूसरा फ़ोटो लेता है] दो। बस, अब मैने अपना काम कर डाला [डलिया उठाकर दोनों खानेके कमरेमें आते हैं—यहाँ इनका बड़े ज़ोर-शोरसे स्वागत होता है]

रोदे—[चीखकर] मेरी बधाइयाँ! भगवान करे आपकी सारी-सारी इच्छायें पूरी हों। अहा, कैसा मज़ेका शानदार मौसम है! आज मैं हाईस्कूलके लड़कोंके साथ सुबहसे ही घूमने निकला हूँ। मैं उन्हें व्यायाम सिखाता हूँ।

फ़ैदोतिक—[इरीनाकी तस्वीर खींचते हुए] इरीना सर्जीएव्ना, अब चाहो तो हिल सकती हो। अब कोई बात नहीं है। आज तो बड़ी सुन्दर लग रही हो तुम। [जेबसे एक लट्टू निकालते हुये] हाँ, तो यह एक लट्टू है, बड़ी अद्भुत आवाज़ है इसकी......

इरीना—बहुत सुन्दर।

माशा—समुद्रके एक झुके हुए किनारेपर शाह बलूतका हरा पेड खड़ा है......बलूतके उस पेड़पर सोनेकी जञ्जीर झूल रही है [शिकायत भरे स्वरमें] मैं इसे क्यों दुहराये जा रही हूँ ? यही वाक्य सुबहसे मेरे दिमागमें गूँजे जा रहा है......

कुलिगिन—मेज़पर कुल तेरह जने है।

रोदे—[ज़ोरसे] तेरहकी गिनतीको अशुभ माननेके अन्धविश्वासोंको आप निश्चित रूपसे कोई महत्व नही देते होंगे ?

[सब हँस पडते हैं]

कुलिगिन—जब मेज़पर तेरह आदमी हों तो समझ लीजिये कि हाज़िर लोगोंमेंसे कोई किसीसे प्यार करता है। शैबुतिकिन, यह व्यक्ति तुम तो हो नहीं सकते ? [सब हँस पडते हैं]

शैबुतिकिन—मैं तो पुराना पापी हूँ ! लेकिन मेरी समझमें यह नहीं आता ये नताल्या आइवानोव्ना क्यों बग़लें झाँक रही है ?

[फिर सब हँस पड़ते हैं। पहले नताशा खानेके कमरेसे भागकर ड्राइङ्गरूममें आ जाती है पीछे-पीछे आन्द्रे आता है।

आन्द्रे—रुको, इस सब बातोंपर ध्यान मत दो। एक मिनट रुको न, रुको, मैं प्रार्थना करता हूँ......

नताशा—मुझे तो झेंप लग रही है। पता नहीं क्या बात है मेरे साथ ? और लोग इसीका मज़ाक उडाते हैं। जानती हूँ इस तरह मेज़से उठ भागना मेरी बदतमीज़ी है; लेकिन मेरा अपने पर बस नहीं है। मैं कुछ नहीं कर पाती।

[हाथोंसे चेहरा ढँक लेती है]

आन्द्रे—सुनो, मेरी जान, मैं प्रार्थना करता हूँ, विनती करता हूँ घबराओ मत। विश्वास मानो हूँ, वे लोग तो सिर्फ़ तुमसे मज़ाक कर रहे थे। पूरी हमदर्दीके साथ यह सब कह रहे थे। प्रियतमा, ये

सभी बड़े दिलवाले हैं, बड़े हमदर्द हैं। हमें तुम्हें दोनोंको बहुत चाहते हैं...इधर आ जाओ—खिड़कीकी तरफ़ यहाँसे वे हमें नहीं देख सकेंगे......[चारों ओर देखता है]

नताशा—मुझे सभा-सोसाइटियोंमें बैठनेकी बिल्कुल भी आदत नहीं है।

आन्द्रे—वाह, क्या जवानी है...सलोनी...गदराई जवानी! मेरी जान, मेरी प्रिय, इतना घबराओ मत—मेरी बात मानो, विश्वास करो। मुझे ऐसी खुशी हो रही है, कि मेरी आत्मा आह्लाद और उल्लास से उमँगी आ रही है। अरे, हमें वे लोग नही देख सकते... ज़रा भी नही देख पायेंगे। अच्छा बताओ, मैं प्यार क्यों करता हूँ तुम्हें इतना? पहले-पहल मैंने तुम्हारे लिए कब प्यार अनुभव किया? आह! मुझे नही मालूम! मेरी जान, मेरी स्वप्न, मेरी पावन-तम प्रिय, अब तुम मेरी सहचरी बन जाओ! मै तुम्हें प्यार करता हूँ......मै तुमपर जान देता हूँ......मैंने ज़िन्दगीमें किसीको कभी इतना प्यार नहीं किया।

[चुम्बन लेता है]

[दो अफ़सरोंका प्रवेश, लेकिन यह देखकर कि युगल-जोड़ी चुम्बनमें व्यस्त है, आश्चर्यसे ठिठक जाते है]

[पर्दा गिरता है]

दूसरा-अङ्क

[लगभग दो वर्ष बाद]

[पहले अङ्कका ही दृश्य । रातके आठ बजे हैं । नेपथ्यमें, सड़कपर एक हल्का-हल्का सुनाई देता धौंकनीवाले बाजेका स्वर । मञ्चपर अँधेरा है । सोनेके कपड़े पहने नताल्या आइवानोव्ना मोमबत्ती लेकर प्रवेश करती है । भीतर आकर आन्द्रेके कमरेके दरवाज़ेपर खड़ी हो जाती है]

नताशा—क्या कर रहे हो पढ़ रहे हो ? नहीं, कुछ नहीं, मैंने यों ही पूछा...

[जाकर दूसरा दरवाज़ा खोलती है, उसमें झाँककर फिर उसे बन्दकर देती है]

आन्द्रे—[हाथमें किताब लेकर प्रवेश करता है] क्या बात है नताशा ?

नताशा—मैं देख रही थी कि क्या यहाँ भी रोशनी जल रही है ? आज रास है न...नौकरोंको अपने तन-बदनका होश नहीं है । कहीं कोई गड़बड़ न हो जाय, इसलिए हमेशा चौकन्ना रहना पड़ता है । कल रात बारह बजे मैं खानेके कमरेकी तरफ़ जा निकली तो देखा कि एक मोमबत्ती यों ही जली छूट गई थी । पता ही नहीं लग पाया फिर, कि उसे यों जलता किसने छोड़ दिया [मोमबत्ती नीचे रख देती है] बजा क्या है ?

आन्द्रे—[घड़ी देखकर] सवा आठ ।

नताशा—और ओलगा इरीना अभी भी नहीं आईं । अभी तक बाहर हैं । बेचारियाँ अभीतक कामपर ही हैं । ओलगा टीचरोंकी सभामें गई हैं और इरीना टेलिग्राफ़ ऑफ़िसमें है [ठण्डी साँस लेकर]

आज सुबह ही तो मैं तुम्हारी बहनसे कह रही थी—'बहन इरीना, जरा अपनी भी देखभाल रखो, लेकिन वह है कि सुनती ही नहीं। तुमने सवा आठका ही तो समय बताया न ? मुझे लगता है हमारे मुन्नें बॉबिककी तबियत पूरी तरह ठीक नही है। उसका बदन आज ऐसा ठण्डा क्यों है ? कल तो बुखारमें तप रहा था और आज उसका सारा शरीर ठण्डा है। मुझे बड़ी चिन्ता हो रही है।

आन्द्रे—सब ठीक है नताशा, बच्चा बिल्कुल ठीक है।

नताशा—खैर, उसके खाने-पीनेके बारेमें हमलोग ज़रा और सावधान रहें तो अच्छा हो। मुझे तो बड़ी चिन्ता है। सुना है, रासके अवसरपर बहुरूपिये भी यहाँ नौ बजे आनेवाले हैं। आन्द्रूशा, अच्छा हो वे न आयें।

आन्द्रे—सचमुच, मैं कुछ नहीं जानता। तुम्हें तो पता ही हैं उन्हें निमन्त्रण देकर बुलाया गया है।

नताशा—मुन्ना सुबह ही जाग पड़ा था। मेरी तरफ़ देखता रहा—देखता रहा फिर एकदम मुस्कुरा दिया...मुझे पहचानता है। मैंने कहा 'मुन्ना !' 'मुन्ना बाबू नमस्कार !' 'नमस्कार बिटिया' तो वह हँस दिया। बच्चे सब समझते हैं। खूब अच्छी तरह समझ जाते हैं। मैं तो आन्द्रूशा, रासवालोंसे कह दूँगी—बाबा, यहाँ मत आओ।

आन्द्रे—[हिचकिचाकर] यह सब काम तो बहनोंका है। आज्ञा-वाज्ञा देनेका काम तो उन्हींका है।

नताशा—हाँ-हाँ, उनका तो है ही। मैं उनसे कह दूँगी। वे बेचारी तो बड़ी भली हैं। [जाते हुए] मैंने खानेके लिए मट्ठेको कह दिया है। डाक्टर कहता है कि तुम्हें मट्ठेके सिवा कुछ नहीं छूना

चाहिए—वर्ना तुम्हारी चर्बी कभी कम नहीं होगी, [रुककर] मुन्नेका शरीर बडा ठण्डा है। मुझे लगता है, शायद इस कमरेमें बडी सीलन है। जैसे भी हो, गर्मियाँ आने तक हमें उसे किसी दूसरे कमरेमें रखना चाहिए। इरीना वाला कमरा बच्चोंके लिए बिल्कुल ठीक है। सीलन भी नही है, और दिनभर उसमें धूप भी बनी रहती है। मै उससे कहूँगी तो सही। थोडे समयके लिए वह ओल्गाके कमरेमें हिस्सा बॅटा लेगी। खैर, वैसे भी तो रातके सिवा वह कभी घरमें रहती ही कहाँ है? [कुछ देर चुप रहकर] आन्द्रूशा, तुम बोलते क्यो नहीं?

आन्द्रे—कुछ नहीं। मै सोच रहा था, फिर आखिर कहनेको कुछ हो भी तो......

नताशा—अरे हाँ, मै तुमसे जाने क्या कहनेवाली थी? हाँ, हाँ...फ़ैरापोण्ट ग्राम-पञ्चायतसे आया है—तुमसे मिलनेको कहता है।

आन्द्रे—[जँभाई लेकर] भेज दो भीतर।

[नताशा बाहर चली जाती है। उसके द्वारा छोडी गई मोमबत्तीसे झुककर आन्द्रे किताब पढने लगता है। फ़ैरापोण्टका प्रवेश। फटा-पुराना-सा ओवरकोट पहने है—कॉलर ऊपर उठे हैं और कानोंमें एक अँगोछा बाँध रखा है]

आन्द्रे—नमस्कार भैया। क्या बात है?

फ़ैरापोण्ट—चेयरमैन साहबने एक किताब भेजी है और यह कोई कागज़ दिया है [किताब और लिफ़ाफ़ा देता है]

आन्द्रे—शुक्रिया। बहुत अच्छा! लेकिन इतनी देरसे क्यों आये? आठ बज चुके है।

फ़ैरापोण्ट—एँ ऽऽ?

आन्द्रे—मैंने कहा, तुम बहुत देरमें आये हो। आठ बज गए।

फ़ैरापोण्ट—सो ही तो। मैं तो अँधेरा होनेसे पहले ही आ गया था लेकिन किसीने भीतर ही नहीं आने दिया। बोले, मालिक काम कर रहे हैं। बिल्कुल ठीक, अगर आप काम कर रहे हैं तो मुझे भी कोई जल्दी नहीं है, [यह सोचकर कि शायद आन्द्रेने कुछ पूछा है] ऐ ऽ ऽ—क्या कहा ?

आन्द्रे—नहीं, कुछ नहीं [किताब उलट-पलटकर देखता है] कल शुक्र है। कोई बैठक तो नहीं है, फिर भी मैं कल आऊँगा। अपना कुछ काम करूँगा...घर पर बैठे-बैठे मन भी तो ऊब जाता है। [कुछ देर रुककर] बाबा, जिन्दगी कैसी विचित्र गतिसे बदलती जाती है और आदमी कैसा धोखेमें बना रहता है ? आज कुछ करनेको नहीं था, सो बैठे-बैठे मेरा मन नहीं लग रहा था। मैंने यह किताब उठा ली। विश्वविद्यालयके पुराने भाषण हैं। विश्वास करो, मेरी हँसी नहीं रुक पाई। हे भगवान, मैं ग्राम-पंचायतका सैक्रेटरी हूँ—और प्रोतोपोव चेयरमैन है। आज सैक्रेटरी हूँ, और बड़ीसे बड़ी आशा यही कर सकता हूँ कि किसी दिन पंचायतका मेम्बर हो जाऊँगा। सोचो तो सही, मैं और ग्राम पंचायतका मेम्बर ! जबकि हर रातमें सपने यह देखता रहता हूँ जैसे मैं मास्को यूनिवर्सिटीका प्रोफ़ेसर हूँ, एक प्रसिद्ध आदमी हूँ—जिस पर सारे रूसको गर्व है।

फ़ैरापोण्ट—मैं तो सरकार, कुछ कह नहीं सकता...मुझे सुनाई ही नहीं पड़ता।

आन्द्रे—अगर तुम ठीक-ठीक सुनते होते तो शायद मैं तुमसे ये बातें करता भी नहीं...। मुझे तो किसी न किसीसे बात करनी ही है। मेरी पत्नी मुझे नहीं समझती। रहीं बहनें ?—न जाने क्यों, उनसे से डरता हूँ। डरता हूँ कि वे मुझे पर हँसेंगी, मेरा मज़ाक

उडाकर मुझे भँगा देगी। न मुझे पीनेका शौक है...न होटलों-रेस्तारात्रोंमें घूमना मुझे पसन्द है।...फिर भी बाबा, मॉस्कोके त्यैस्तोव होटलमें बैठकर मुझे कैसा मजा आया ?

फ़ैरापोण्ट—पचायतमें एक ठेकेदार उस दिन बता रहा था कि मॉस्कोमें कुछ व्यापारी लोग तन्दूरी-नान खा रहे थे। उनमेंसे एकने करीब चालीस खा डाले—और वहीं मर गया। मुझे ठीक याद नहीं है, चालीस थे या पचास...

आन्द्रे—मॉस्कोमें तो यह हाल है कि आप होटलके बड़े भारी कमरेमें बैठ जाइये। न वहाँ कोई आपको जानता है, और न आपही किसीको जानते है, फिर भी ऐसा नहीं लगेगा जैसे अजनबी हों। लेकिन यहाँ आप एक-एकको जानते हैं फिर भी ऐसा लगता है जैसे बिल्कुल अपरिचित हों...अजनबी और बिल्कुल अकेले हों...

फ़ैरापोण्ट—ऐं ऽऽ ? [कुछ देर चुप रहकर] वही ठेकेदार कहता था, हो सकता गप हो, कि मॉस्कोके एक सिरेसे दूसरे सिरे तक एक ही तार फैला हुआ है।

आन्द्रे—किसलिये ?

फ़ैरापोण्ट—मुझे तो सरकार, पता नहीं है। ठेकेदार ही यह बात रहा था।

आन्द्रे—सब बकवास है ! [पढ़ने लगता है] तुम कभी मॉस्कोमें रहे हो ?

फ़ैरापोण्ट—[कुछ देर चुप रहकर] मैं तो मालिक, कभी नहीं रहा। भगवानकी मर्जी ही नहीं थी कि मैं वहाँ रहता [चुप होकर] अब जाऊँ सरकार ?

आन्द्रे—अच्छा, जाओ। नमस्कार ! [फ़ैरापोण्ट चला जाता है] नमस्कार ! [पढते हुए] कल सुबह आकर ये कुछ कागज ले जाना...जाओ ...[चुप रहकर] यह तो चला गया ! [दरवाज़ेकी घण्टी

बजती है] हाँ, दुनिया ऐसे ही चलती है। [अँगड़ाई लेकर धीरे-धीरे अपने कमरेमें चला जाता है]

[नेपथ्यमें एक दाई बच्चेको गोदमें झुलाती हुई लोरी गा रही है। माशा और वैर्शिनिनका प्रवेश। वे बातें करते रहते हैं। उसी बीचमें एक नौकरानी खानेके कमरेकी मोमबत्तियाँ और लैम्प जलाती रहती है]

माशा—[चुप रहकर] सचमुच, मुझे नहीं मालूम। बेशक आदतसे भी बहुत कुछ हो जाता है। जैसे, पिताजीके बाद, घरमें बिना अर्दलियोंके काम चलानेकी आदतके लिये हमें बहुत समय लग गया। लेकिन आदतके अलावा, मैं समझती हूँ न्याय और सत्य की भावना भी मुझसे यह सब कहलवा रही है। शायद दूसरी जगह ऐसा न हो, मगर कमसे कम हमारे इस शहरमें तो सारे अच्छे, रईस और इज्ज़तदार आदमी फ़ौजमें ही नौकरी करते हैं।

वैर्शिनिन—मुझे तो प्यास लगी है। चाय पीनेकी इच्छा है।

माशा—[घड़ी पर निगाह डालकर] बस, वे लोग आ ही रहे होंगे। जब मैं सिर्फ़ अठारहकी थी तब मेरी शादी हो गई। चूँकि पतिदेव मास्टर थे इसलिये मुझे उनसे बड़ा डर लगता था—मैंने नया-नया स्कूल छोड़ा था न। उन दिनों तो मैं उन्हें ही बड़ा पढ़ा-लिखा, समझदार और महत्त्वपूर्ण व्यक्ति समझती थी, लेकिन दुर्भाग्यसे अब ऐसा नहीं है...

वैर्शिनिन—हाँ, जी सो तो मैं देख ही रहा हूँ...।

माशा—मैं अपने पतिके बारेमें कुछ नहीं कह रही। अब तो मैं उनकी अभ्यस्त हो गई हूँ। लेकिन साधारण शहरी लोगोंमें आप देखिये, अक्सर लोग उजड्ड, असभ्य और बदतमीज़ होते हैं। उजड्डपनेसे

मैं घबराकर परेशान हो उठती हूँ। अगर आदमी सुरुचि-सम्पन्न न हो, विनम्र और शिष्ट न हो, तो मुझे उसे देखकर बड़ा बुरा लगता है। पतिदेवके साथी मास्टरोंके साथ जब भी कभी पड़ जाती हूँ तो मेरी मुसीबत हो जाती है...

वेर्शिनिन—हाँ, सो तो ठीक है...लेकिन मैं तो समझता हूँ कि इस शहरके लोग चाहे वे साधारण लोग हों या फ़ौजी सभी एकसे ही ठूँठ हैं। उनमें आपको कोई दिलचस्प बात ही नहीं दिखाई देगी।... सब बिल्कुल एक-से हैं...चाहे साधारण नागरिक हों या फ़ौजी। यहाँ आप किसी भी पढ़े-लिखे आदमीकी बातें सुनिये—कोई साहब अपनी पत्नीकी चिन्तासे मरे जा रहे हैं—किसीका अपने घरको लेकर नाममें दम आया हुआ है,...किसीकी जमीन्दारी उसकी जानका बवाल है...किसीके घोड़े उनके प्राणोंके ग्राहक हैं। रूसियोंको उच्च-विचारोंका ऐसा महान-स्तर परम्परागत रूपसे ही मिला हुआ है लेकिन...जिन्दगीमें ये लोग हमेशा ऐसे ओछेपनकी बातें ही क्यों करते हैं?—बताओ?

माशा—क्यों?

वेर्शिनिन—हर रूसी अपनी बीवी और बच्चोंको लेकर ही क्यों मरा जाता है, और उसके बीवी-बच्चे क्यों उसे लेकर अपनी जान देने पर तुले रहते हैं...।

माशा—आजकी शाम आपका मन कुछ ज्यादा दुःखी और उदास है।

वेर्शिनिन—हो सकता है। आज मैंने खाना तक नहीं खाया। सुबहसे कुछ भी मुँहमें नहीं गया। मेरी लड़कीकी तबियत अच्छी नहीं है। और जब मेरी छोटी-छोटी बच्चियोंको कुछ हो जाता है तो मेरे प्राण कण्ठमें अटके रहते हैं। मेरी आत्मा मुझे हमेशा कोंचती रहती है कि मैं उनके लिये कैसी माँ ले आया हूँ...उफ़! आज अगर

कहीं तुम उसे देख लेतीं...। पूरी चूड़ैल है वह भी ! सुबह सात बजेसे जो उसने झगडा शुरू किया तो नौ बजे मैं ज़ोरसे दरवाज़ा बन्द करके इस ओर भाग आया...[कुछ देर चुप रहकर] मैं ये सब बातें कभी किसीसे करता नहीं हूँ। अजीब बात है। जाने क्यों—मैं सिर्फ़ तुमसे ही यह शिकायतें करता हूँ [उसके हाथ चूमता है] नाराज़ मत होना, तुम्हारे सिवा मेरा कोई भी अपना सगा नहीं है...कोई भी नहीं है।

[कुछ देर चुप्पी]

माशा—स्टोवमें भी कैसी जोरकी आवाज़ होती है। पिताजीके मरनेसे पहले धुँआँ निकलनेवाली चिमनीमें भी बिल्कुल ऐसी ही।... धुक-धुक होती थी...

वैर्शिनिन—तुम क्या ऐसी बातोंमें विश्वास करती हो ?

माशा—जी हाँ।

वैर्शिनिन—यह नई बात है [उसका हाथ चूमता है] तुम महान, विलक्षण स्त्री हो। महान ! विचित्र ! हालाँकि चारों तरफ़ अँधेरा है, लेकिन मुझे तुम्हारी आँखोंमें रोशनीकी किरण दिखाई दे रही है।

माशा—[दूसरी कुर्सी पर आकर बैठ जाती है] यहाँ कुछ खुला है।

वैर्शिनिन—मैं तुम्हें प्यार करता हूँ...प्यार...प्यार। मैं तुम्हारी आँखों पर मरता हूँ, तुम्हारी हर अदा पर जान देता हूँ। मुझे सपनोंमें भी यही-यह दिखाई देती हैं...महान और विलक्षण स्त्री हो तुम...

माशा—[धीरेसे हँसकर] जब आप मुझसे यह सब कहते हैं तो पता नहीं क्यों मुझे हँसी आती है। वैसे मैं घबरा उठती हूँ। कृपा करके अब यह सब मत कीजिये...[बहुत धीमे स्वरमें] खैर, चाहें तो कहते

रहिये मुझे कुछ नहीं है [अपने हाथोंसे चेहरा ढाँप लेती है] मुझे तो कुछ भी नहीं है पर कोई आ रहा है। अब कुछ और बात कीजिये...

[खानेके कमरेमें होकर इरीना और तुज़ेनबाख़ आते हैं]

तुज़ेनबाख़—मेरा नाम भी क्या तिमज़िला है! मेरा नाम है बैरन तुज़ेनबाख क्रोने आलशुआर। परम्परागत चर्चमें मेरा विश्वास है और जितनी रूसी तुम हो उतनी ही मैं भी हूँ। जिस लगन और धैर्यके साथ मैं तुम्हें उबाता रहता हूँ, उसे छोड़कर मेरे भीतर अब कोई भी जर्मन-तत्व नहीं रह गया है। मैं रोज़-रोज तुम्हें घर तक छोडने आता हूँ।

इरीना—उफ, मैं तो थककर चूर-चूर हो गई।

तुज़ेनबाख़—रोज मैं टेलिग्राफ़ ऑफ़िससे तुम्हे छोड़ने आया करूँगा। दस साल, बीस साल यही करूँगा...जब तक तुम मुझे फटकार कर भगा नहीं दोगी...[माशा और वैर्शिनिनको देखकर आनन्दसे] अरे, आप लोग भी हैं! कैसे हैं आपलोग ?

इरीना—उफ़, आखिर मैं घर आ ही पहुँची...[माशासे] अभी कोई महिला अपने भाईको सारातोवमें तार देनेके लिये आई कि आज उसके पुत्रकी मृत्यु हो गई है। बेचारीको पता ही याद नहीं रहा...इसलिये सिर्फ़ सारातोव लिखकर उसने बिना किसी पतेके ही तार दे दिया।...वह बेचारी रो रही थी। जाने क्यों, खाँमखाँ ही मैं उस पर बरस पडी। कहा, कि मेरे पास बरबाद करने को वक्त नहीं है। सचमुच बड़ा बेहूदा लगा... रासवाले लोग क्या आ रहे हैं आज ?

माशा—हाँ।

इरीना—[आराम कुर्सी पर बैठ जाती है] मै ज़रा सुस्ता लूँ—बहुत थक गई हूँ।

तुज़ेनबाख़—[मुस्कुराकर] जब तुम ऑफ़िससे आती हो तो एकदम बच्ची...जैसी लगती हो...सिकुड़ी-सिकुडी-सी।

[कुछ देर कोई कुछ नहीं बोलता]

इरीना—बहुत ही थक गई हूँ...। मुझे तो यह टैलिग्राफ़का काम पसन्द नहीं है—रत्ती भर नही जचता।

माशा— दुबली भी तो बहुत हो गई हो तुम...[सीटी बजाती है] तुम बड़ी कम उम्र की सी लगती हो। चेहरा देखकर लगता है जैसे लड़का हो ओ...

तुज़ेनबाख़—ये अपने बाल भी लडकों की तरह बनाती हैं।

इरीना—मैं तो कोई और काम देखूँगी। यह माफ़िक नही आता। जिसकी मुझे धुन है, जिसके मैं सपने देखा करती थी—वही सब यहाँ नहीं है। यह ऐसा काम है जिसमें न तो ज़रा भी रस है न कोई उद्देश्य...[फ़र्श पर नीचे खटखटाहट होती है] डाक्टर शैबुतिकिन खटखटा रहे हैं...[तुज़ेनबाख़से] सुनो, अब तुम्हीं जवाब दे दो। मैं बहुत ही थक गई हूँ। मुझसे नहीं उठा जायेगा...

[तुज़ेनबाख़ फ़र्श पर खटखटाता है]

इरीना—वे सीधे यहीं आयेंगे। हमें कोई न कोई राह सोचनी पड़ेगी। कल डाक्टर साहब और हमारे आन्द्रे भैया फिर क्लबमें जा पहुँचे और ताशों पर जम गये। मैंने सुना है आन्द्रे भैया दो-सौ रूबल हार गये।

माशा—[टालते हुए] ख़ैर-फ़िलहाल इसका तो कोई इलाज ही नहीं है।

इरीना—अभी पन्द्रह दिन भी तो नहीं हुए, तभी तो वे रुपया हारे थे। पिछले दिसम्बर में वे रुपया हार गये। मैं तो चाहती हूँ कि जितनी जल्दी हो वे सबको ठिकाने लगा दें, तो हमलोग इस शहरसे तब भी टलें। हे भगवान, रोज रात मैं मॉस्कोके सपने देखती हूँ। कैसा भयानक पागलपन सवार है। [हँसती है] हमलोग जूनमें जायेंगे और अभी बचे हैं फरवरी, मार्च, अप्रैल, मई...करीब-करीब आधा साल बाकी है।

माशा—कहीं नताशा भाभी इस सारी हारकी बात न सुन लें।

इरीना—मैं तो नहीं समझती कि उन्हें इसकी बहुत चिन्ता है।

[खाना खानेके बाद आरामके बाद ही सीधा बिस्तरेसे उठता हुआ शैबुतिकिन दाढ़ी पर हाथ फेरता खानेके कमरेमें आता है। मेज़ पर बैठकर जेबसे एक अख़बार निकाल कर पढ़ने लगता है]

माशा—ये आ पहुँचे। अपना किराया दे दिया इन्होंने ?

इरीना—[हँसकर] नहीं। आठ महीनेसे एक पाई नहीं दी। ज़रूर भूल जाते होंगे।

माशा—[हँसती है] कैसे धीर-गम्भीर बने बैठे हैं आप [सबलोग हँस पड़ते हैं फिर कुछ देर चुप्पी रहती है]

इरीना—कर्नल साहब, आप इतने चुप क्यों हैं ?

वेर्शिनिन—पता नहीं। मुझे तो चायकी हुड़क लग रही है। आधे गिलास चायकी राहमें मेरी आधी जिन्दगी तो गुजर गई। सुबहसे एक दाना भी मुँहमें नहीं गया।

शैबुतिकिन—अरे इरीनी...

इरीना—क्या बात है ?

शैबुतिकिन—यहाँ तो आओ, यहाँ आओ...[इरीना जाकर मेज़के पास बैठ जाती है] तुम्हारे बिना मेरा मन नहीं लगता ।

[इरीना पेशेंन्सके खेलके लिए ताश लगाती है]

वेर्शिनिन—अच्छा, अगर ये लोग चाय नहीं ला रहे, तो आइये किसी चीज़ पर ही बहस करें ।

शैबुतिकिन—ज़रूर ! बड़ी खुशीसे । अच्छा किस चीज़ पर ?

वेर्शिनिन—किस पर क्या ? जैसे—आइये यही कल्पना करें कि हमलोगोंके दो-तीन सौ साल बादकी जिन्दगीका रूप क्या होगा ?

तुज़ेनबाख़—यही सही ! हमारे मर जानेके बाद लोग गुब्बारोंमें बैठकर उड़ा करेंगे । अपने कोटोंके फ़ैशन बदल डालेंगे, शायद एक छठी ज्ञानेन्द्रियको खोज निकालेंगे और उसका विकास करेंगे । लेकिन जिन्दगी ज्योंकी त्यों बनी रहेगी...वैसी ही संघर्षमयी आनन्दों और रहस्योंसे भरी-पूरी...एक हज़ार साल बाद भी लोग यों ही ठण्डी-साँसें लिया करेंगे—'हाय, जिन्दगी कैसी मुश्किल है'—और आजकी तरह ही मौतसे डरा करेंगे—उससे मुँह चुराते घूमेंगे ।

वेर्शिनिन—[एक क्षण विचार करके] खैर, मैं तो नहीं मानता । मुझे लगता है इस धरतीकी हर चीज़को धीरे-धीरे बदलना है और वह हमारी आँखोंके आगे बदल भी रही है । दो-तीन सौ साल बाद, शायद एक हज़ार साल बाद, क्योंकि कालका कोई महत्व नहीं है—एक नई और सुखी जिन्दगी उभरेगी । सच है कि उस जिन्दगीमें हम कोई हिस्सा नहीं ले पायें—लेकिन हम उसीके लिए तो जी रहे हैं, काम कर रहे हैं । यही क्यों ? उसीके लिए सारे कष्ट उठा रहे हैं, उसका निर्माण कर रहे हैं । सिर्फ़ इतना

यही हमारे अस्तित्वका, जीवनका उद्देश्य है। कह सकते हैं...यही हमारी ख़ुशीका भी कारण है।

[माशा धीरेसे हँसती है]

तुज़ेनबाख़—क्या बात है ?

माशा—पता नहीं क्यों, आज सुबहसे ही मुझे हँसी आ रही है।

वैर्शिनिन—जिस स्कूलमें तुम थे—मैं भी उसीमें था। मैं फ़ौजी एकेडमीमें नहीं गया। पढ़ा मैंने बहुत कुछ; लेकिन मुझे यही मालूम नहीं था कि किताबें कैसे छाँटी जाती हैं। और शायद मैंने बहुत-सी अंट-संट चीजें पढ़ डालीं—फिर भी जितना-जितना मैं जीता जाता हूँ और-और जाननेकी इच्छा होती जाती है। मेरे बाल पकने लगे हैं—करीब-करीब बूढ़ा हो चला हूँ, मगर मैं कितनी कम बातें जानता हूँ। बहुत ही थोड़ी-सी। साथ ही ऐसा भी लगता है कि जो अत्यन्त ही महत्वपूर्ण बातें हैं जो अनिवार्य बातें हैं उनको मैं जरूर समझता हूँ और ख़ूब अच्छी तरह जानता हूँ...समझमें नहीं आता मैं आपको कैसे समझाऊँ कि हमलोगोंके भाग्यमें कोई ख़ुशी नहीं है। होनी भी नहीं चाहिये और न होगी। हमें तो बस, अन्धाधुन्ध काम किये जाना है, परिश्रम किये जाना है—प्रसन्नता तो हमारे किन्हीं सुदूर वंशजोंको जाकर कभी मिलेगी...[कुछ क्षण रुककर] अगर वह मेरे लिए नहीं तो मेरे वंशजोंको तो कमसे कम मिलेगी ही।

[फ़ैदोतिक और रोदे खानेके कमरेमें आते दिखाई देते हैं। वे चुपचाप आकर धीरे-धीरे गिटार बजाते हुए गाने लगते हैं]

तुज़ेनबाख़—तो आपके खयालसे प्रसन्नताकी कल्पना करना या सपने देखना भी बेकार है ? मगर मान लो, मैं ख़ुश हूँ तो इसमें किसीका क्या जाता है ?

वेर्शिनिन—कुछ नहीं !

तुज़ेनबाख़—[अपने हाथ फेंककर हँसता है] साफ़ है हमलोग एक दूसरेकी बात समझ नहीं रहे हैं। ख़ैर, मैं आपको कैसे मनवाऊँ ?

[माशा धीरेसे हँसती है]

तुज़ेनबाख़—[उसकी तरफ़ उँगली तानकर] और हँसो ! दो-तीन सौ सालकी तो बात ही क्या, दस लाख साल बाद भी जिन्दगी वैसी ही रहेगी जैसी आज है। इसमें कोई परिवर्तन नहीं होगा। दुनियाकी स्थिति हमेशा ज्यों की त्यों अचल रहेगी—वह अपने नियमोंके अनुसार चलती रहेगी। न हम उन नियमोंमें टाँग अड़ा सकते है, न कुछ बना-बिगाड़ सकते हैं उनका, यहाँ तक कि हम उनका पता भी नहीं लगा सकते। ये सुन्दर-सुन्दर पक्षी—जैसे बगुलेको ही ले लो—आगे-पीछे उड़ते रहते हैं महान् और क्षुद्र, क्या-क्या विचार उनके दिमागमें नहीं आते होंगे; लेकिन ये पक्षी क्यों उड़ रहे है, कहाँ उड़ रहे है ? बिना इन सब बातोंको जाने भी उड़ते ही रहेंगे। चाहे जितने दार्शनिक ये हो जायँ, ये उड़ते ही चले जायँगे, उड़ते चले जायँगे—और जब तक ये उड़ते रहेंगे, दार्शनिक हों या न हों इससे इनका कुछ बनता-बिगड़ता भी नहीं है।

माशा—लेकिन तब भी कोई न कोई अर्थ तो है ही।

तुज़ेनबाख़—अर्थ ? लो, सामने यह बर्फ़ गिर रही है बताओ इसमें क्या अर्थ है ?

[कुछ देर चुप्पी]

माशा—मुझे लगता है कि मनुष्यके पास एक आस्था होनी चाहिए—या उसे कोई विश्वास और आस्था खोज लेनी चाहिए—वर्ना उसकी

ज़िन्दगी सूनी और खोखली हो जायेगी। जिन्दा रहते हुए भी यह न जानना कि बगुले क्यों उड़ते हैं—बच्चे क्यों होते हैं... आसमानमें तारोंका क्या अर्थ है। आदमीको मालूम होना चाहिए कि उसकी ज़िन्दगीका अर्थ क्या है...उसकी ज़िन्दगीका उद्देश्य क्या है—वर्ना तो सब निरर्थक और व्यर्थ ही है।

वेर्शिनिन—और तब भी आदमीको दुःख होता है कि उसकी जवानी यों बीत गई।

माशा—गोगोल कहता है—दोस्तो, इस दुनियामें जिन्दा रहना बड़ा मनहूस है।

तुज़ेनबाख़—और मैं कहता हूँ; आप लोगोंसे बहस करना बड़ा मुश्किल है।

शेबुतिकिन—[*अखबार पढ़ते हुए*] बालज़ाककी शादी बर्दीचेवमें हुई थी।

[इरीना धीरे-धीरे गुनगुनाती है]

शेबुतिकिन—इसे तो सचमुच मुझे अपनी नोटबुकमें उतार लेना चाहिए। बालज़ाककी शादी बर्दीचेवमें हुई। [अख़बार पढ़ता है]

इरीना—[*पेशेन्सके खेलके लिए ताश लगाती हुई स्वप्नाविष्ट सी*] बालजाककी शादी बर्दीचेवमें हुई थी।

तुज़ेनबाख़—तीर कमानसे छूट गया। मार्या सर्जीएव्ना, तुम्हें मालूम है मैंने अपने कमीशनसे स्तीफ़ा दे दिया।

माशा—अब सुन रही हूँ। मुझे तो इसमें कोई अच्छाई दिखाई नहीं देती। मुझे साधारण नागरिक लोग पसन्द नहीं हैं।

तुज़ेनबाख़—कोई बात नहीं...[उठ खड़ा होता है] मैं सिपाही बनने जैसा बाँका जवान भी नहीं हूँ। लेकिन खैर, इससे भी कुछ नहीं आता-जाता। अब मैं काम करने जा रहा हूँ...काश, जीवनमें एक

दिन भी ऐसा जमकर कामकर पाता कि घर आता तो थककर चूर-चूर हुआ रहता और बिस्तरेमें पड़ते ही सो जाता [खानेके कमरेमे जाते हुए] मेहनतकशोंको खूब डटकर सोना चाहिए।

फ़ैदोतिक—[इरीनासे] दुकानसे गुजरते हुए अभी मैंने ये चॉक आपके लिए खरीद लिए...और यह क़लम बनानेका चाकू ।

इरीना—आपको तो मुझे छोटी-सी बच्ची समझनेकी आदत पड़गई है... लेकिन देखिये न, मै तो काफी बड़ी हो गई हूँ [आनन्दपूर्वक चाक और चाकू ले लेती है] वाह कैसे अच्छे हैं ।

फ़ैदोतिक—और एक चाकू मैने अपने लिए खरीद लिया है। देखो, एक फल, दो फल, तीन फल...और यह कान कुरेदनी...और ये रही कैंची, यह नाखून साफ करनेकी पिन ।

रोदे—[जोर से] डाक्टर साहब, आपकी उम्र क्या है ?

शेबुतिकिन—मेरी ?—बत्तीस ।

[सब हँस पड़ते हैं]

फ़ैदोतिक—अब मै आपको दूसरे ढंगका पेशेन्स बताता हूँ...[ताश लगाता है]

[अनफ़ीसा एक समोवार, अंगीठी, लाती है। कुछ देर बाद ही नताशा भी आकर मेज़पर व्यवस्थामें लग जाती है। सोल्योनी आता है और सबको नमस्कार करके मेज़पर बैठ जाता है]

वेर्शिनिन—हवा कैसी तेज़ चल रही है ।

माशा—हाँ, इस जाड़ेसे तो मै तंग आ गई। गर्मी कैसी होती है मुझे तो अब बिल्कुल भी ध्यान नहीं रहा...

इरीना—अरे, यह खेल तो मुझे एक ही बारमें आ गया। इसका मतलब यह कि हमलोग मॉस्को ज़रूर जायेंगे ।

फ़ैदोतिक—नहीं, कतई नहीं आया। देखिये, हुकुमकी दुकीके ऊपर अद्धा है, [हँसता है] यानी कि आप मॉस्को नहीं जाएँगी।

शैबुतिकिन—[अख़बारसे पढ़ता है] "जी-जी कार; यहाँ चेचकका भयानक जोर है।"

अनफ़ीसा—[माशाके पास जाकर] माशा बेटी, चलो चाय पीलो, [वेर्शिनिनसे] सरकार आप भी चलिये। सरकार, माफ़ कीजिये, मैं आपका नाम भूल गई...

माशा—दाई-माँ, यहीं ले आओ चाय। मैं वहाँ नहीं आऊँगी।

इरीना—दाई-माँ!

अनफ़ीसा—आई।

नताशा—[सोल्योनीसे] छोटे बच्चे खूब समझते है। मैंने कहा—'मुन्ना बाबू, नमस्कार राजा बेटा, नमस्कार!' तो वह मेरी तरफ़ टुकुर-टुकुर देखता रहा। आप सोचेंगे। मैं इसलिए ऐसा कहती हूँ कि मैं उसकी माँ हूँ, बिल्कुल नहीं। मैं आपसे सच कहती हूँ—बड़ा असाधारण बच्चा है।

सोल्योनी—अगर वह बच्चा मेरा होता तो कढ़ाईमें तलकर डकार गया होता। [अपना गिलास लेकर ड्राइङ्गरूममें आ जाता है और एक कोनेमें बैठ जाता है।]

नताशा—उजड्ड-गँवार कहींके।

माशा—सुखी आदमियोंको चिन्ता ही नहीं होतीकी जाड़ा है या गर्मी। मेरा ख़याल है अगर मैं मॉस्कोमें होती तो मैं भी चिन्ता नहीं करती मौसम कैसा है।

वैर्शिनिन—उस दिन मैं एक फ्रेंच मन्त्रीकी जेलमें लिखी डायरी पढ़ रहा था। पनामाके मामलेमें मन्त्रीको जेल हो गई थी। कैसे जोश-खरोश और आनन्दसे उसने जेलकी खिड़कीसे दीखनेवाली चिड़ियोंका वर्णन किया है। पहले जब वह मन्त्री था तब कभी उन चिड़ियों की तरफ़ उसका ध्यान भी नहीं गया...अब जब वह छूट आया तो पहलेकी तरह चिड़ियोंकी ओर फिर कोई ध्यान नहीं देता... इसी तरह जब तुम मॉस्कोमें जाकर रहने लगोगी तो किसी भी बातकी तरफ़ कोई ध्यान नहीं दोगी। हमलोग न तो कभी खुश हुए हैं न होंगे। हमें तो केवल सुखकी धुन है।

तुज़ेनबाख़—[मेज़से एक डिब्बा उठाकर] मिठाइयोंका क्या हुआ ?

इरीना—सोल्योनी साहब उड़ा गये।

तुज़ेनबाख़—सारी ?

अनफ़ीसा—[चाय देते हुए] सरकार, आपका एक ख़त है।

वैर्शिनिन—मेरा ? [पत्र लेता है] मेरी बेटीका है। [पढ़ता है] हाँ, अच्छा तो मार्यासिर्जीएव्ना, माफ़ करना, मैं अब चलूँगा—मैं अब चाय नहीं पियूँगा [घबराकर उठ खड़ा होता है] जब देखो तब ये मुसीबतें।

माशा—क्या हुआ ? कोई राज़की बात तो नहीं है ?

वैर्शिनिन—[धीमी आवाज़में] पत्नीने फिर ज़हर खा

जाना ही चाहिये अब...मैं चुपचाप खिसक जाऊँगा। कितनी बुरी बात है यह...[माशाका हाथ चूमता है] मेरी जान, प्यारी तुम गजबकी स्त्री हो...मैं बिना किसीको दीखे इस रास्तेसे खिसक जाऊँगा। [चला जाता है]

अनफ़ीसा—यह किधर खिसके ? अभी तो मैंने इन्हें चाय दी है। अजब आदमी हैं।

माशा—[नाराज़ होकर] अब चुप भी करो। जान मत खाओ। तुम्हारे मारे किसीको चैन नहीं है [अपना प्याला लेकर मेज़ पर जाती है] दाई–माँ, तुम तो पीछे पड जाती हो।

अनफ़ीसा—बिटिया—इतनी क्यों उबल रही हो ?...

[आन्द्रेके पुकारनेका स्वर—"अनफ़ीसा !"]

अनफ़ीसा—[नक़ल उतारते हुए] अनफ़ीसा ! वहाँ बैठे हैं और... [चली जाती है]

माशा—[खानेके कमरे की मेज़के पास नाराज़ीसे] मुझे भी बैठने दो [सारे ताश गडबडकरके मिला देती है] तुमलोग अपने ताशोंसे सारी मेज़ घेरकर बैठ जाते हो...अपनी चाय तो पीलो।

इरीना—इतना क्यों चिड़चिडा रही हो माशा ?

माशा—हाँ, मै चिडचिडा रही हूँ तो मुझसे मत बोलो। मेरी बातोंमें टाँग मत अडाओ।

तुज़ेनबाख़—[हँसकर] इसे मत छुओ—भाई, इसे छू मत लेना।

माशा—आप साठके हो गये, लेकिन जबदेखो तब स्कूली। बच्चेकी तरह बकवास करते रहते हैं।

नताशा—[गहरी साँस लेकर] माशा बहन, बातचीतमें ऐसे शब्दोंका प्रयोग क्यों करती हो ? मै तुम्हारे मुँह पर कहती हूँ, अगर तुम यह सब न कहा करो तो सभ्य-समाजमें अपनी सुन्दरता और रूपके कारण काफी आकर्षक बन जाओ। माशा, माफ़ करना तुम ज़रा बद्‌तमीज़ हो...

तुज़ेनबाख़—[अपनी हँसी दबाकर]...जरा मुझे देना...उठाना... शायद उस बोतलमें थोडी-सी बराण्डी बची है...

नताशा—लगता है हमारे बॉबिक मुन्ना अभी सोये नहीं हैं। ये मुन्ना

जाग उठा है, आज उसकी तबियत ठीक नहीं है। माफ़ कीजिये मैं उसके पास जा रही हूँ...।

[चली जाती है]

इरीना—कर्नल साहब कहाँ चले गये ?

माशा—घर। उनकी पत्नी साहिबाने फिर कुछ कर डाला है।

तुज़ेनबाख़—[हाथमें शीशेकी डाटवाली शराबकी बोतल लेकर सोल्योनीके पास आ जाता है] तुम हमेशा अकेले ही बैठे-बैठे सोचा करते हो—और आखिर सोचते क्या रहते हो, यह पता नहीं चलता। आओ, दोस्ती कर लें। जरा बराण्डी चढ़ायें [दोनों पीते हैं] लगता है, मुझे आज भी शायद रातभर पयानो बजाना पड़ेगा। दुनिया भरकी ऊलजलूल चीज़ें बजानी होंगी। खैर, होगा सो देखा जायेगा।

सोल्योनी—क्यों कर लें दोस्ती ? मेरा तो तुमसे कोई झगड़ा नहीं हुआ।

तुज़ेनबाख़—तुम मुझे हमेशा ऐसा महसूस कराते रहते हो जैसे हमलोगोंके बीचमें कोई अनबन हो गई हो। इससे इनकार नहीं कि तुम विलक्षण स्वभावके आदमी हो...

सोल्योनी—[बड़े भावुक आलंकारिक ढंगसे पुश्किनका वाक्य बोलता है] "मैं विलक्षण हूँ लेकिन बताओ, कौन है जो विलक्षण नहीं है। क्रोध न करो अलेको।"

तुज़ेनबाख़—समझमें नहीं आता, अलेको को यहाँ ला-घसीटनेकी क्या ज़रूरत है ?

सोल्योनी—जब मैं किसीके साथ अकेला होता हूँ तो हर भले आदमीकी तरह बिल्कुल ठीक रहता हूँ; लेकिन लोगोंके बीचमें बड़ा बुझा-बुझा-सा, बड़ा बेचैन-सा हो उठता हूँ। बेवकूफ़ीकी बातें चाहे कैसी भी क्यों न करता होऊँ, फिर भी बहुत-सोंसे ज्यादा ईमानदार और स्पष्टवादी भी हूँ। इस बातको मैं साबित कर सकता हूँ।

तुज़ेनबाख़—अक्सर मुझे तुम पर बड़ी झुर्झलाहट आती है। क्योंकि जब भी लोगोंके बीचमें होते हो, तो तुम बस मुझे ही छेड़ते रहते हो—फिर भी मैं तुम्हें चाहता हूँ। अच्छा, छोड़ो सब, आज मैं खूब डटकर चढ़ाऊँगा। आओ पियें।

सोल्योनी—हाँ-हाँ पियें [पीता है] बैरन, तुम्हारे खिलाफ़ मुझे कभी कोई शिकायत नहीं रही। लेकिन मेरा स्वभाव बिल्कुल लर्मन्तोव् जैसा है [बड़े धीरेसे] लोगोंका ही ऐसा कहना है। सच पूछो तो मैं दीखता भी लर्मन्तोव् जैसा ही हूँ—[इत्रकी शीशी निकाल कर अपने हाथोंपर इत्र छिड़कता है।]

तुज़ेनबाख़—मैंने अपने स्तीफेके कागज भेज दिए हैं। काफ़ी भाड़ झोंक लिया मैंने भी। पिछले पाँच सालसे लगातार सोचता आ रहा था, अब आखिर तय ही कर डाला। अब ज़रा डटकर काम करूँगा।...

सोल्योनी—[आलङ्कारिक भाषामें] "अलेको, मत हो या नाराज़...। सारे सपनोंको जा भूल.. "

[इसके बात करतेमें ही आन्द्रे चुपचाप आकर एक मोमबत्तीके पास किताब लेकर बैठ जाता है]

तुज़ेनबाख़—मैं काम करने जा रहा हूँ।

शेबुतिकिन—[ईरीनाके साथ ड्राइङ्गरूममें आकर] और खाना भी क्या?—सचमुच कोहकाफ़का माल था...प्याजका शोरबा... गोश्तकी जगह कबाब। नाम था चैहार्त्मा।

सोल्योनी—चेहार्त्मा तो गोश्त कतई नहीं होता। हमारी प्याजकी तरहका पौधा होता है...

शेबुतिकिन—नहीं भाई,—यह प्याज़-व्याज नहीं मटन (बकरीके बच्चेके माँस) को एक खास तरह भूना जाता है।

सोल्योनी—लेकिन, मैं जो आपसे कहता हूँ कि 'चेहार्त्मा' एक तरहकी प्याज़ होती है।

शेब्रुतिकिन—मुझे आपसे बहस करनेमें क्या फ़ायदा है? आप न तो कभी कोहकाफ़ गये, न आपने चेहार्त्मा खाया।

सोल्योनी—मैंने इसलिए नहीं खाया कि मुझसे खाया ही नहीं गया। चेहार्त्मासे लहसुन जैसी बू आती है

आन्द्रे—[प्रार्थनाके स्वरमें] बस भाई, बस, अब मेहरबानी करो।

तुज़ेनबाख—यह रास-मण्डली कब आ रही है?

इरीना—आनेको तो उन्होंने नौ बजे कहा है। सीधे यहीं आयेंगे।

तुज़ेनबाख—[नाचते हुए आन्द्रेको गोदीमें भरकर मस्तीसे गाता है—] "अरे मेरी कुटिया...अरे मेरी झोपड़ी।"

आन्द्रे—[नाचते हुए गाता है] "जिसमें थूनी लगी है सालकी।"

तुज़ेनबाख—[नाचता है] "जिसमें झँझरी लगी है कमालकी...।"

[सब खिलखिलाकर हँस पड़ते हैं]

तुज़ेनबाख—[आन्द्रेको चूमकर] मारो गोली सबको। आओ बैठकर पियें। आन्द्रूशा, आओ अपनी अनन्त मित्रताके लिए हमलोग पियें। आन्द्रूशा, मैं भी तुम्हारे साथ विश्वविद्यालय चलूँगा।

सोल्योनी—किस विश्वविद्यालयमें? मॉस्कोमें दो ही तो विश्वविद्यालय है?

आन्द्रे—मॉस्कोमें सिर्फ़ एक विश्वविद्यालय है।

सोल्योनी—मैं कहता हूँ, दो हैं।

आन्द्रे—अरे, वहाँ तीन हों, मेरा क्या जाता है। और भी अच्छा है।

सोल्योनी—मॉस्कोमें दो विश्वविद्यालय हैं [नाराज़गीकी भनभनाहटें और सिसकारियाँ] मॉस्कोमें दो विश्वविद्यालय है—एक नया

एक पुराना...अगर आप मेरी बात नहीं सुनना चाहते, अगर आपको मेरी बात बुरी लगती है तो लीजिए, चुप हुआ जाता हूँ। कहो तो मैं दूसरे कमरेमें उठकर चैला जाऊँ।

[एक दरवाज़ेसे बाहर चला जाता है]

तुज़ेनबाख़—शाबास! शाबास! [हँसता है] भाइयो, शुरू करो। मैं बैठकर पयानो बजाता हूँ। सोल्योनी भी बड़ा मसखरा आदमी है। [पयानोपर बैठकर वाल्ज़की धुन बजाता है]

माशा—[अकेली वाल्ज़ गतिपर नाचती है] बैरन पिये हैं—बैरोन पिये हुए हैं, बैरन पिये हुए हैं।

[नताशाका प्रवेश]

नताशा—अरे डाक्टर साहब!—[शैबुतिकिनसे कुछ कहती है, और फिर चुपचाप चली जाती है। शैबुतिकिन तुज़ेनबाख़का कन्धा छूकर उसके कानमें चुपचाप फुसफुसाकर कुछ कहता है]

इरीना—क्या बात है?

शैबुतिकिन—अब हमलोग चलते हैं। अच्छा नमस्कार।

तुज़ेनबाख़—नमस्कार—अब चलनेका वक्त हो गया।

इरीना—लेकिन मैं पूछती हूँ...उस रास-मण्डलीका क्या हुआ?

आन्द्रे—[बौखलाये स्वरमें] वे लोग नहीं आयेंगे। देखो बहन, नताशाका कहना है कि मुन्नाकी तबियत अच्छी नहीं है और इसीलिए...सच कहता हूँ मुझे तो कुछ मालूम है नहीं। और मुझे लेना-देना क्या किसीसे...

इरीना—[कन्धे उचकाकर] हुँह, मुन्नाकी तबियत अच्छी नहीं है।

माशा—देखो न, यह कोई पहली ही बार तो किए-करायेपर पानी फेरा नहीं गया है। अगर हमें निकाल बाहर ही करना है, तो हम

ख़ुद चले जायेंगे.. [इरीनासे] मुन्ना बीमार नहीं है...बीमार है नताशाका यह [अपनी उँगलीसे माथा ठोकती है] ओछी, गॅवार कहीं की ।

[आन्द्रे दाहिनी ओरके दरवाज़ेसे अपने कमरेमें जाता है, शेबुतिकिन उसके पीछे-पीछे चला जाता है। खानेके कमरेमें लोग विदाके नमस्कारकर रहे है]

फ़ेदोतिक—हाय, बडा बुरा हुआ । मैं तो आज सारी शाम यहीं गुजारना चाहता था, लेकिन जब बच्चा ही बीमार है तो...कल उसके लिए एक खिलौना लाऊँगा ।

रोदे—[ज़ोरसे] मैंने तो जान-बूझकर खानेके बाद एक झपकी भी ले ली थी । सोचा, सारी रात नाचना पडेगा...अरे, अभी तो कुल नौ ही बजे हैं ।

माशा—आइये, सडकपर चलें । वहीं हमलोग बातें करेंगे । वहीं तय करेंगे कि क्या करना चाहिए ।

[*नमस्कार, 'नमस्ते' की आवाज़ें । तुज़ेनबाख़के खिलखिलाकर* हॅसनेकी आवाज़ सुनाई देती है । सब बाहर चले जाते हैं । अनफ़ीसा और नौकरानी मेज़ साफ़ करके रोशनी बुझा देती हैं । अपना कोट और टोप पहनकर आन्द्रे और साथमें शेबु-तिकिन चुपचाप आते हैं]

शेबुतिकिन—शादी करनेका मौका ही मुझे नहीं मिला । क्योंकि जिन्दगी बिजलीकी तेज़ीसे गुज़रती चली गई । दूसरेमें तुम्हारी माँके प्यार में पागल हो गया था । उसकी शादी दूसरेसे हो गई थी ।

आन्द्रे—आदमीको शादी तो करनी ही नहीं चाहिए । कतई नहीं करनी चाहिए...बडी बेलज्ज़त चीज़ है शादी ।

शैबुतिकिन—यह तो सब ठीक है, लेकिन अकेलेपनका आदमी क्या करे ? तुम चाहे जो कहो, लेकिन भाई, अकेले जिन्दगी काटना बड़ा भयानक है। मगर खैर, कोई बात नहीं।

आन्द्रे—ज़रा जल्दी-जल्दी चलें।

शैबुतिकिन—जल्दी क्या है—अपने पास बहुत समय है।

आन्द्रे—डर है, कहीं बेगम साहिबा न रोक लें।

शैबुतिकिन—अरे हाँ।

आन्द्रे—आज मैं बिल्कुल भी नहीं खेलूँगा। बस, बैठा-बैठा देखता रहूँगा। आज चित्त अच्छा नहीं है। डाक्टर साहब, इसके लिए क्या करना चाहिए...बड़ी जल्दी मेरी साँस उखड़ने लगती है।

शैबुतिकिन—मुझसे यह सब पूछनेसे कोई फ़ायदा नहीं है। भैया, मुझे इस समय कुछ याद नहीं है—मुझे नहीं मालूम कि...।

आन्द्रे—आओ, रसोईके रास्तेसे निकल चलें।

[दोनों चले जाते हैं]

[घण्टी बजती है—फिर कुछ देर बाद दुबारा बजती है। बाहर बातचीत और हँसनेकी आवाज़ सुनाई देती हैं]

इरीना—[भीतर आकर] क्या बात है ?

अनफ़ीसा—[फुसफुसाकर] वही स्वाँगवाले बहुतरूपिए हैं। खूब सजे हुए हैं।

इरीना—दाई-माँ, उनसे कह दो, यहाँ कोई नहीं है। हमें माफ करें।

[फिर घण्टी बजती है]

[अनफ़ीसा बाहर चली जाती है। इरीना कमरेमें इधरसे उधर ठिठकती-सी घूमती है। वह बड़ी उद्विग्न है। सोल्योनी का प्रवेश]

सोल्योनी—[घबराकर] यहाँ तो कोई भी नहीं है। कहाँ गये सब ?

इरीना—सब घर चले गये।

सोल्योनी—अजब बात है। तुम क्या यहाँ अकेली हो ?

इरीना—हाँ। [कुछ देर चुप रहकर] अच्छा नमस्कार।

सोल्योनी—अभी मैंने बडा बेहूदा और असयत व्यवहार कर दिया। लेकिन तुम तो औरों की तरह नहीं हो। तुम महान् और पवित्र हो—तुम्हें सचाईकी परख है। मुझे सिर्फ़ तुम्हीं समझ सकती हो। मैं तुम्हे प्यार करता हूँ, मै तुम्हें जी-जानसे प्यार करता हूँ, इरीना, बेहद प्यार...

इरीना—अच्छा, नमस्कार। अब आप चले जाइए।

सोल्योनी—मैं तुम्हारे बिना रह नहीं सकता। [इरीनाके पीछे-पीछे जाता है] हाय, मेरी खुशी। [आँखोंमें आँसू भरकर] मेरे आनन्द-सुख, तुम्हारी-सी मादक, शरबती नशीली आखें तो मैंने आजतक किसी भी स्त्रीकी नहीं देखी...

इरीना—[रुखाईसे] रहने दो वैसिली वैसिल्यीच, अब बस करो।

सोल्योनी—आज मैं पहली बार तुम्हारे सामने अपना प्यार प्रगटकर रहा हूँ। मुझे ऐसा लग रहा है जैसे आज धरतीपर न होकर किसी और नक्षत्रमें पहुँच गया होऊँ...[अपना माथा मलकर] लेकिन, खैर जाने दो। सच तो है। किसीकी कृपापर कोई जबर्दस्ती तो है ही नहीं। मगर मेरा कोई प्रतिद्वन्द्वी भी सुखी नहीं रह पायेगा, नहीं रह सकेगा...मैं सबकी कसम खाकर कहता हूँ कि अपने किसी भी रकीबको मार डालनेमें कोई पाप या बुराई नहीं है...सुनो मेरी अप्सरा।

[मोमबत्ती लेकर नताशा, गुज़रती है]

नताशा—[एकके बाद दूसरे दरवाज़ेमें झाँकती है और अपने पतिके कमरेवाले दरवाज़ेके पास होकर गुजरते हुए] आन्द्रे भीतर है। उन्हें पढ़ने दूँ। माफ करना सोल्योनी, मुझे पता नहीं था कि आप भी यहीं हैं। मैं अपने सोनेके कपड़े पहनकर ही चली आई।

सोल्योनी—मैं ऐसी बातोंपर ध्यान नहीं देता। अच्छा, नमस्कार।

[चला जाता है]

नताशा—तुम बहुत थक गई हो, मेरी मुन्नी [इरीनाको चूमकर] तुम्हें जल्दी सो जाना चाहिए।

इरीना—मुन्ना सो गया क्या?

नताशा—सो तो गया है, लेकिन अच्छी तरह नहीं सोया है। हाँ बहन, मैं तुमसे एक बात कहना चाहती थी, लेकिन कभी तुम्हें फुर्सत नहीं मिलती थी, कभी मुझे। लगता है कि मुन्नाके कमरेमें बड़ी सीलन और ठण्ड है—तुम्हारा कमरा बच्चेके लिए बड़ा अच्छा है। मेरी रानी, मेरी मुन्नी, कुछ दिनोंको तुम ओल्याके कमरेमें न चली जाओ?

इरीना—[कुछ न समझकर] किधर?

[तीन घोड़ोंकी बग्घीकी घण्टियोंदार आवाज़ दरवाज़े तक जाती है]

नताशा—तुम ओल्याके कमरेमें चली जाना, मुन्ना तुम्हारे कमरेमें आ जायेगा। ऐसा छोटा-सा गुड्डा है कि बस।—आज मैंने उससे कहा—'मुन्ना तू मेरा बेटा है, तू मेरा है।' तो अपनी छोटी-छोटी अजब आँखोंसे मुझे टुकुर-टुकुर ताकता रहा [बाहर घण्टी बजती है] ओल्या होनी चाहिए। कितनी देर लगा लेती है यह।

[नौकरानी नताशाके पास आकर कानमें कुछ फुसफुसाती है]

नताशा—प्रोतोपोव ? यह भी कैसे अजब आदमी हैं। प्रोतोपोव आये हैं और मुझसे बग्घीमें सैर करनेको पूछते हैं [हँसती है] ये पुरुष भी कैसे विचित्र जीव होते हैं। [घण्टी बजती है] कोई आया है। मैं शायद पन्द्रह-बीस मिनटको चली जाऊँ। [नौकरानीसे] उनसे कह दो मैं सीधी आ रही हूँ...[घण्टी बजती है] तुम देखना ज़रा। ज़रूर ओल्गा होगी।

[चली जाती है]

[नौकरानी भागकर जाती है। विचारोंमें खोई हुई इरीना बैठ जाती है। कुलिगिन, ओल्गा और वेर्शिनिनका प्रवेश]

कुलिगिन—अरे, निहायत अजब बात है। इनलोगोंने तो कहा था आज शामको यहाँ दावत होगी।

वेर्शिनिन—ताज्जुब है। अभी आध घण्टा पहले जब मैं यहाँसे गया था तो सब लोग रासधारियोंकी राह देख रहे थे।

इरीना—सबलोग चले गये।

कुलिगिन—माशा भी चली गई क्या ? कहाँ गई है ? नीचे यह प्रोतोपोव बग्घी लिए किसकी राह देख रहा है ?—किसके लिए खड़ा है ?

इरीना—उफ़, मुझसे मत पूछो, मैं बहुत थक गई हूँ।

कुलिगिन—छिः कैसी बदतमीज़ लड़की है।

ओल्गा—सभा अब जाकर बरखास्त हुई है। बुरी तरह थक गई हूँ। हमारी हेड-मास्टरनी बीमार पड़ गई—सो मुझे उसकी जगह काम करना है। हाय, यह मेरा सिर...मेरे सिरमें दर्द हो रहा है...आह यह मेरा सिर...। [बैठ जाती है] कल ताशोंमे आन्द्रे भैयाने दो सौ रूबल गँवा दिए। सारे शहरमें इसकी चर्चा है।

कुलिगिन—मैं भी मीटिङ्गमें बहुत बुरी तरह थक गया हूँ [बैठ जाता है]

वैर्शिनिन—मेरी बीबीके दिमाग़में जम गया है कि मुझे डराकर मानेगी—कम्बख़्तने करीब-करीब जहर ही खा डाला था। अब तो सब ठीक हो गया। खुशी है, चलो पीछा छूटा, छुट्टी मिली। तो अब क्या हमें चलना है न? अच्छी बात है, तो फिर मेरा नमस्कार फ्योदोर इलियच। आइए हमलोग कहीं और चलें। मैं घर नहीं रह सकता इस समय। किसी भी क़ीमतपर नहीं रह सकता। आइए चलें।

कुलिगिन—मैं तो बहुत थक गया हूँ। मैं नहीं चलूँगा। [उठते हुए] सचमुच थककर चूर-चूर हो गया हूँ। मेरी पत्नी घर चली गई क्या?

इरीना—उम्मीद तो यही है।

कुलिगिन—[इरीनाका हाथ चूमता है] नमस्कार। कल और परसोंके सारे दिन मेरे पास आराम करनेको है। अच्छा, नमस्कार! [चलते हुए] मुझे चायकी बड़ी सख़्त ज़रूरत है। मैं तो सोच रहा था कि आजकी शाम किसी मज़ेदार गोष्ठीमें बीतेगी। लेकिन हर चीज़में एक अन्तर लगा रहता है।

वैर्शिनिन—अच्छा तो फिर मैं अकेला ही चलता हूँ।

[सीटी बजाता हुआ कुलिगिनके साथ चला जाता है]

ओल्गा—उफ़, मेरा सिर तो दर्दसे फटा जा रहा है। आन्द्रे भैया ताशोंमें हार गये, सारे शहरमें इसीकी चर्चा हो रही है। मैं चलकर ज़रा लेटूँगी...[जाते हुए] कल मेरी छुट्टी है। आहा,

कैसे आनन्दकी बात है...कल मेरी छुट्टी है, परसों छुट्टी है। मेरा सिर दर्दकर रहा है। हाय, यह मेरा सिर...

[चली जाती है]

इरीना—[अपने आप ही] सबलोग चले गये। कोई भी नहीं रहा।

[धौंकनीवाला बाजा सड़कपर बजता है, अनफ़ीसा गाती है]

नताशा—[फ़रकी टोपी और कोट पहने हुए खानेका कमरा पार करके आती है। उसके पीछे-पीछे नौकरानी है] मैं आधे घण्टेमें वापिस आई जाती हूँ। बस, थोड़ी ही दूर जाऊँगी।

[जाती है]

इरीना—[अकेली हताशसे स्वरमें] आह, मॉस्को चलो......मास्को... मॉस्को।

[पर्दा गिरता है]

तीसरा अङ्क

[ओल्गा और इरीनाके सोनेका कमरा। एक ओर दो पलंग। दोनों पर मसहरीकी तरह पर्दे डले हैं। रातके दो बज चुके हैं। नेपथ्यमें आग लगनेकी घण्टी बजती है, जो काफ़ी देर बजती रहती है। साफ़ दिखाई देता है कि मकानमें अभी तक कोई भी सोया नहीं है। एक सोफ़ेपर हर वक्तकी तरह काले कपड़ोंमें माशा लेटी है। ओल्गा और अनफ़ीसाका प्रवेश।]

अनफ़ीसा——बेचारे नीचे जीने पर बैठे हैं। मैंने उनसे कहा——"ऊपर चले चलो, यहीं क्यों नहीं ठहर जाते ..." वे तो बस रोते रहे–"पिता जी कहाँ हैं? जाने कहाँ चल गये पिताजी?" "और बोले——"अगर पिताजी आगमें जल गये होंगे तो क्या होगा?" इन ज़रा-ज़रा सों के दिमागमें भी क्या-क्या बातें आती हैं। खुले आँगनमें बेचारे असहाय बच्चे...उनके शरीरपर एक कपड़ा तक नहीं है।

ओल्गा——[अल्मारीमें से कपड़े निकालती है] लो यह भूरे कपड़े लो, यह भी लो, यह ब्लाउज भी यह स्कर्ट और लो...हाय-दाई-माँ, देखो न कैसा गज़ब हो गया।...लगता है सारी की सारी किसा-नोव-स्ट्रीट जलकर राख हो गई है। ये लो...ये भी लो...[अन-फ़ीसाकी गोदमें कपड़े फेंकती है] वैर्शिनिनके घरके लोग भी बहुत ही डर गए हैं। बेचारे! उनका घर भी तो करीब-करीब जल-सा ही गया है। आज रातभर उन्हें यहीं रहने दो न! आज हम उन्हें कहीं नहीं जाने देंगे...बेचारे फ़ैदोतिकका घर-बार सब कुछ भस्म हो गया। एक तिनका तक नहीं बचा।

अनफ़ीसा—ओलगा बेटी, अगर फ़ैरापोण्टको बुला लो तो अच्छा है। मैं यह सब लेजा नहीं पाऊँगी।

ओलगा—[घण्टी बजाती है कोई जवाब ही नहीं देता। दरवाज़े पर जाकर] अरे है कोई ? कोई हो तो जरा इधर आओ... [खुले हुए दरवाज़ेसे आगसे लाल-लाल झलमलाती खिड़की दिखाई पड़ती है, घरके पाससे आग बुझानेकी गाड़ीकी आवाज़ सुनाई देती है] मुसीबत है...मेरी तो नाक में दम आ गया......।

[फ़ैरापोण्टका प्रवेश]

ओलगा—लो इधर, यह सब नीचे सीढ़ी पर ले जाओ—नीचे कोलोतिन औरतें हैं। उन्हें दे देना...और लो यह भी दे देना।

फ़ैरापोण्ट—हाँ बिटिया, १८१२ में मॉस्को भी जल गया था...हे भगवान् दया करो। फ्रांसीसियोंने गजब कर दिया था !

ओलगा—अच्छा, अब तुम जाओ।

फ़ैरापोण्ट—अच्छा बिटिया।

[चला जाता है]

ओलगा—दाई-माँ, सारे कपड़े इन्हें बाँट दो। हमें कुछ नहीं चाहिये, सब उन्हें ही दे दो। मैं बहुत थक गई हूँ। पैरों पर खड़ा नहीं रहा जाता। आज हम वैर्शिनिन साहबके बच्चोंको घर नहीं जाने देंगे। छोटी बच्ची ड्राइङ्गरूममें सो जायेगी। कर्नल साहब नीचे बैरनके कमरेमें ही रह जायेंगे, या हमारे खानेके कमरेमें सो जायेंगे। वह कम्बख्त डाक्टर साहब शराब पिये बुरी तरह बेहोश पड़े हैं सो उनके कमरेमें तो किसीको टिकाया नहीं जा सकता। वैर्शिनिन साहबकी बीबी भी ड्रॉइंगरूममें आ जायेगी।

अनफ़ीसा—[बौखलाकर] ओलगा बेटी, मुझे मत निकालो। बेटी मुझे मत बाहर धक्का दो।

ओल्गा—दाई-माँ, यह तुम्हारी क्या बकवास है ? तुम्हें तो निकाल रहा नहीं कोई ।

अनफ़ीसा—[ओल्गाके कन्धेपर हाथ रखकर] मेरी बिटिया, मुन्नी—मैं तो खूब जी लगाकर काम करती हूँ, जितना हो पाता है सब करती हूँ । पर अब कमज़ोर होती जा रही हूँ न, सो हर कोई कहता है—"चल भाग ।" कहाँ जाऊँ मैं ? किधर जाऊँ ? अस्सी-इक्यासी सालकी हो गई ।

ओल्गा—दाई-माँ, तुम बैठ जाओ...तुम थक गई हो दाई-माँ [बैठा देती है] सुस्ता लो, दाई माँ । तुम तो बड़ी कमज़ोर, पीली पड़ गई हो ।

[नताशाका प्रवेश]

नताशा—लोग कहते है कि जिन लोगोंके घर जल गये हैं उनकी मददके लिए हमें फौरन ही एक कमेटी बना लेनी चाहिये । ठीक है, बहुत अच्छा विचार है । सचमुच ग़रीबोंकी मददके लिए हर वक्त तैयार रहना चाहिये । यह धनीका धर्म है । मुन्ना बॉबिक और सोफ़ी बेटी तो ऐसे सोये पड़े है, जैसे कहीं कुछ भी न हुआ हो । जिधर जाओ, लोग ठसाठस भरे हैं—सारे घर भर गये हैं । शहर भरमें इन्फ्लुएंजा फैला है । मुझे तो डर है, कहीं बच्चोंको न लग जाय ।

ओल्गा—[उसकी बात सुनकर] इस कमरेसे तो आग दिखाई भी नहीं देती । यहाँ तो एकदम शान्ति है ।

नताशा—हाँ, सो तो है ही । मेरे सारे बाल खुल गये होंगे [शीशेके सामने खड़ी हो जाती है] लोग कहते है मैं मोटी होती जा रही हूँ...झूठ बोलते हैं । कहीं भी तो नहीं हूँ मोटी ! माशा सो गई क्या ? बहुत थक गई है बिचारी बच्ची...[अनफ़ीसासे रूखे

स्वरमें] मेरे सामने बैठनेकी बदतमीज़ी मत करो। उठो, चलो, जाओ, कमरेसे बाहर निकलो। [अनफ़ीसा चली जाती है, थोड़ी देर चुप्पी] समझमें नहीं आता इस बुढ़ियाको तुमने क्यों डाल रखा है?

ओल्गा—[तपाकसे] माफ़ करना, मेरी समझमें भी नहीं आया, तुम क्या चाहती हो?

नताशा—यहाँ यह बिल्कुल फ़ालतू है। किसान औरत है। इसे तो गाँवमें जाकर रहना चाहिये। तुम इन लोगोंकी आदतें खराब कर देती हो। मुझे घरमें पसन्द है क़ायदा। किसी भी फ़ालतू नौकरकी ज़रूरत क्या है? [उसके गाल थपककर] बहन, तुम भी बहुत थक गई हो। हमारी हेड-मास्टरजी थक गईं। जब सोफ़ी बेटी बड़ी होकर हाई स्कूलमें पहुँचेगी तब तो मुझे तुमसे डरना पड़ेगा।

ओल्गा—मैं हेड-मास्टरनी थोड़े ही रहूँगी तब।

नताशा—तुम्हींको तो चुना जायेगा ओल्गा। यह तो बिल्कुल तय ही हो चुका है।

ओल्गा—मैं साफ़ मना कर दूँगी। यह सब मुझसे नहीं चलेगा। [पानी पीकर] तुम अभी दाई-माँ से ऐसी उजड्डतासे बातें कर रहीं थीं। माफ़ करो, मुझे अच्छा नहीं लगा। मेरी आँखोंके आगे तो अँधेरा आ गया।

नताशा—माफ़ करो ओल्गा बहन, माफ़ करो। मैंने इस नीयतसे नहीं कहा था कि तुम्हारे दिलको चोट लगे।

[माशा उठ पड़ती है। तकिया चादरा समेटकर गुस्सेसे बाहर चली जाती है]

ओल्गा—यह तो तुम्हें खुद ही सोचना चाहिए बहन। हो सकता है हमलोगों का पालन-पोषण कुछ अनोखे ढंगसे हुआ हो, लेकिन मुझसे

तो नहीं सहा गया। इस तरहका व्यवहार मुझे अच्छा नहीं लगता। मन भारी हो जाता है, दिल डूबने लगता है।

नताशा—अच्छा माफ़ करो बाबा, माफ़ कर दो। [उसका चुम्बन लेती है]

ओल्गा—ज़रा-सी भी उजड्डता, या एक भी बेतरीके बात मेरा मन बिगाड़ देती है।

नताशा—मैं बकती तो बहुत हूँ, यह बात सच है। लेकिन बहन, यह तो तुम्हें भी मानना पड़ेगा कि इस वक्त तो इसे अपने गाँवमें ही होना था। इसके लिए यही अच्छा था।

ओल्गा—यह आखिर हमलोगोंके यहाँ तीस सालसे है।

नताशा—लेकिन अब तो इससे काम होता नहीं है न। या तो मेरी ही अक्ल कुछ मोटी है, या तुम्हीं मेरी बात नहीं समझतीं। वह अब काम करनेके लायक़ नहीं रह गई। अब भी सिवा पड़कर सोने या हाथपर हाथ धरकर बैठे रहनेके यह करती ही क्या है ?

ओल्गा—तो ठीक है, उसे हाथपर हाथ धरे ही बैठी रहने दो।

नताशा—[आश्चर्यसे] कैसे ?—हाथपर हाथ धरे बैठी रहने दें ? अरे, आखिर वह नौकर है। [रुँधे गलेसे] ओल्गा, मेरी समझमें तुम्हारी बात नहीं आती। बच्चेकी देखभालके लिए हमारे पास एक आया है, बच्चीको दूध पिलानेको धाय अलग है। एक घर की नौकरानी है, एक बावर्चिन है,—इस बुढ़ियाकी हमें और क्या ज़रूरत ? इससे हमें फ़ायदा क्या है ?

[नेपथ्यमें आग लगनेकी ख़तरेकी घण्टी बजती है]

ओल्गा—आजकी रातने तो मुझे जैसे दस साल और बूढ़ा कर दिया।

नताशा—ओल्गा, हमलोग आज साफ़-साफ़ बातें कर लें। तुम हाई-स्कूलमें रहती हो; मैं घर रहती हूँ। तुम पढ़ाती हो तो मैं घर

की देखभाल करती हूँ। फिर अगर मैं नौकरोंके बारेमें कुछ कहती हूँ—तो यह अच्छी तरह सोच-समझ लेती हूँ कि उसका क्या मतलब है? मैं ही तो जान सकती हूँ कि किसके बारेमें क्या कह रही हूँ। और वो चोट्टी बुढ़िया खूसट [पाँव पटकती है] उस चुडैलको तो कल सुबह घर खाली कर देना होगा। मुझे हर वक्त जान खानेवाले आदमियोंकी कोई जरूरत नहीं है। कतई ज़रूरत नहीं है। [सहसा अपनेको रोककर] सच कहती हूँ जबतक तुम नीचे नहीं चली जाओगी, हमलोग हमेशा झगडते रहेंगे। बडा बुरा लगता है।

[कुलिगिनका प्रवेश]

कुलिगिन—माशा कहाँ गई?—घर चलनेका वक्त हो गया। लोग कहते हैं, आग खत्म हो गई [अङ्गड़ाई लेकर] पहले शहरके एक हिस्सेमें आग लगी और फिर जो आँधी चलनी शुरू हुई तो लगा जैसे पूरा शहर भस्मीभूत हो जायेगा [बैठ जाता है] मैं तो थककर चूर-चूर हो गया। ओल्गा रानी, कभी-कभी तो मेरे मनमें आता है कि माशाकी जगह मैं तुम्हींसे शादी कर लेता। कितनी अच्छी हो तुम। थककर मैं तो बेदम हो गया। [जैसे ध्यानसे कुछ सुनने लगता है]

ओल्गा—क्या हुआ?

कुलिगिन—कम्बख्त डाक्टरको अभी ही शराब चढ़ानेकी सूझी थी। नशेमें बेहोश पड़ा है। क्या मुसीबत है? [उठ बैठता है] लगता है वे यहीं तशरीफ़ ला रहे हैं। सुना तुमने? हाँ-हाँ, लो इधरसे आये। [हँसकर] सचमुच, डाक्टर भी क्या आदमी हैं...मैं ज़रा छिप जाऊँ [आलमारीके पास जाकर कोनेमें खड़ा हो जाता है] है न पक्का राक्षस।

ओल्गा—दो साल उसने बोतल छुई तक नहीं, और अब जाकर चढ़ा आया [नताशाके साथ कमरेके पिछले हिस्सेमें चली जाती है] [शैबुतिकिनका प्रवेश। बिना लड़खड़ाये इस तरह जैसे बड़ा गम्भीर हो, पूरा कमरा पार करके आता है। खड़ा होकर इधर-उधर देखने लगता है। फिर हाथ धोनेके स्टेण्डके पास जाकर हाथ धोने लगता है]

शैबुतिकिन—[झुँझलाकर] सब चूल्हेमें जा पड़ें, भाड़में जाँय। हर आदमी सोचता है; चूँकि मैं डाक्टर हूँ; इसलिए दुनिया भरकी सारी शिकायतें दूर कर दूँगा और सचाई यह है कि मैं कुछ जानता नहीं। जो जानता था सो भी भूल-भाल गया। याद ही नहीं रहा। बिल्कुल निकल गया दिमागसे [ओल्गा और नताशा चुपचाप खिसक जाती हैं] आग लगे सबमें! पिछले बुधको मैंने जासिपकी एक औरतका इलाज किया था, वह मर गई। मेरा ही तो क़सूर था कि वह मर गई। जी हाँ, पचीस साल पहले मैं तब भी कुछ जानता था, अब तो दिमाग़से जैसे सब उड गया। शायद मैं आदमी हूँ ही नहीं। ये हाथ-पाँव सिर तो सिर्फ़ हैं, केवल दिखावे के हैं। मेरा कोई अस्तित्व ही नहीं है। और फिर भी मजा यह कि मैं घूमता हूँ—खाता हूँ—सोता हूँ, [रोने लगता है] हाय, काश मेरा कोई अस्तित्व न होता! [रोना छोड़ कर झल्लाते हुए] मुझे कोई पर्वाह नहीं। मैं रत्ती भर चिन्ता नहीं करता [एक क्षण चुप रहकर] हे भगवान, परसों ही तो क्लबमें कुछ बातचीत हो रही थी। लोग शैक्सपियरके बारमें, वाल्टेयरके बारेमें बातें कर रहे थे। मैंने तो कुछ भी नहीं पढा। पढ़ा जरा भी नहीं, लेकिन दिखाता मैं ऐसे रहा जैसे सबको चाटे बैठा हूँ। दूसरोंको हालत भी मेरी

जैसी ही थी। कैसी मक्कारी है! कितना कमीनापन! जिस औरतको मैंने बुधको मार डाला था वह मेरे दिमागमें घुस बैठी...और भी न जाने कितनी उल्टी-सीधी दुनिया भरकी बातें मेरे दिमागमें आईं......मुझे सब कुछ बड़ा गन्दा-अपवित्र, भद्दा-भद्दा लगने लगा और दुनियाँ भरकी ऊल-जलूल चीज़ें दिलमें आ समाईं। ......मैं गया, और डटकर शराब चढ़ा ली।

[इरीना, वैर्शिनिन और तुज़ेनबाख़का प्रवेश। तुज़ेनबाख़ने नागरिकोंवाला नया फ़ैशनेबिल सूट डाट रखा है]

इरीना—आइये, यहीं बैठ जायें। यहाँ कोई आयेगा भी नहीं।

वैर्शिनिन—अगर ऐन मौकेपर सिपाही न आ पहुँचते तो सारा शहर जलकर ख़ाक हो जाता। कमालके आदमी होते हैं ये सिपाही। [आनन्दसे हाथ मलने लगता है] ग़ज़बके होते हैं ये लोग! वाह!

कुलिगिन—[उनके पास जाकर] क्या वक्त होगा?

तुज़ेनबाख़—तीन बज गये। चारों तरफ़ उजाला भी होने लगा।

इरीना—लोग खानेके कमरेमें जमे हैं। जानेका किसीका विचार नहीं लगता। वह आपका सोल्योनी भी वहीं जमा है। [शैबुतिकिन से] डाक्टर साहब, अच्छा हो, आप अब जाकर सोयें।

शैबुतिकिन—अच्छी बात है, धन्यवाद!

[दाढ़ीपर हाथ फेरता है]

कुलिगिन—[हँसता है] डाक्टर साहब, आप ज़रा आपेमें नहीं हैं। [कन्धेपर हाथ मारकर] शाबास! पुराने लोगोंका कहना था, आराम बड़ी चीज़ है मुँह ढँकके सोइये।

तुज़ेनबाख़—सब लोग मुझसे कहते हैं कि जिन परिवारोंके घर जल गये हैं उनकी मददके लिए मैं एक सङ्गीत-समारोह कर डालूँ।

इरीना—मगर हैं कौन कौन इसके लिए?

तुज़ेनबाख—अगर हमलोग चाहे तो इसे अपने ऊपर ले सकते है। मेरा खयाल है, माशा गजबका पयानो बजा लेती है।

कुलिगिन—हाँ, बहुत शानदार बजाती है।

इरीना—वह तो सब भूल-भाल गई—पिछले तीन-चार सालसे उसने बजाया कहाँ है?

तुज़ेनबाख—इस शहर भरमे एक भी तो ऐसा खुदाका बन्दा नहीं है जो सङ्गीतका नाम तक जानता हो, मगर मै जो भी कुछ सङ्गीत समझता हूँ उसीके बलपर आपको दावेसे विश्वास दिलाता हूँ कि माशा बहुत शानदार पयानो बजा लेती है—बड़ी प्रतिभा है उसमें।

कुलिगिन—बैरन, तुम बिल्कुल सच कहते हो। मुझे तो वह बहुत ही पसन्द है। मेरा मतलब माशा बडी ही अच्छी लडकी है।

तुज़ेनबाख—एक तो आदमी इतना शानदार बाजा बजाये और फिर ऊपरसे वह यह भी जानता हो कि कोई उसे समझ नहीं पा रहा......।

कुलिगिन—[गहरी साँस लेकर] बिल्कुल ठीक। लेकिन उसका समारोहमें भाग लेना उचित होगा? [कुछ देर चुप रहकर] और भाइयो, इस बारेमें मेरा ज्ञान बिल्कुल नहीं है। हो सकता है चार चाँद लग जाँय। इससे तो कोई इन्कार ही नहीं कि हमारे डायरेक्टर साहब महान और वाकई शानदार आदमी है। बड़े प्रतिभाशाली हैं, लेकिन उनके विचार कुछ ऐसे ही हैं। हालाँकि इस बातसे उस भले आदमीका कोई लेना-देना नहीं फिर भी अगर आप कहें तो मै उनके बारेमें कुछ बताऊँ।

[शैबुतिकिन चीनीकी घड़ी लेकर उसे उलट-पलटकर देखने लगता है]

वैर्शिनिन—इस आगने तो मुझे ऊपरसे नीचे तक भूत बना दिया। देखने लायक हो रहा होऊँगा [रुककर] योंही चलते चलते कल मैंने सुना कि अफ़सर हमारी फ़ौजका किसी दूर-दराज देशमें तबादला किये डाल रहे हैं। पोलैण्ड या चीताके आस-पास कहीं।

तुज़ेनबाख़—हाँ, इस बारेमें कुछ मैंने भी सुना है। जो हो सारा शहर बादमें उजाड़ हो जायेगा।

इरीना—हमलोग भी तो यहाँसे चले जायेंगे।

शैबुतिकिन—[घड़ी गिराकर तोड़ देता है] चूर-चूर हो गई।

कुलिगिन—[टुकड़े समेटकर] उफ़! डाक्टर साहब, तुमने कितनी क़ीमती चीज़ तोड डाली! मैं होता तो तुम्हें आचरणके लिए माइनस जीरो देता...

इरीना—अम्माकी घडी थी।

शैबुतिकिन—होगी...ख़ैर, अगर उनकी थी—तो थी ही। हो सकता है मैंने इसे न तोडा हो। सिर्फ़ ऐसा लगा हो कि मैंने तोड दिया। हो सकता है हमें सिर्फ़ ऐसा लगता ही हो कि हम हैं—और वस्तुतः हमारा कोई अस्तित्व ही न हो। मैं तो भाई, कुछ समझता नहीं। और कोई भी कुछ नहीं जानता। [दरवाज़ेके पास जाकर] आप लोग घूर-घूरकर क्या देख रहे हैं। नताशाकी प्रोतोपोव साहबके साथ कुछ योंही ज़रा-सी आँख-मिचौली रहती है—लेकिन आपलोग कुछ नहीं देखते। आपलोग यहाँ बैठे-बैठे भी कुछ नहीं देखते। प्रोतोपोवसे नताशाकी जरा-सी साठ-गाँठ है [गाता है] 'ले लो यह खजूर, रानी जी।'

[चला जाता है]

वेर्शिनिन—ठीक ही तो है.. [हँसता है] मगर है गोरख-धन्धा ही! [कुछ देर चुप्पी] जब आग शुरू हुई तो मैं दम छोड़कर भागा-भागा घर गया, वहाँ जाकर मैंने देखा कि हमारा घर तो बिल्कुल ठीक-ठाक खतरेसे एकदम बाहर है, लेकिन मेरी छोटी-छोटी लड़कियाँ सोनेके कपड़े पहने ही दरवाजेमें खड़ी हैं। उनकी माँका कहीं कोई पता नहीं था। लोग चीखते-पुकारते इधरसे उधर भाग रहे थे। कुत्ते, घोड़े यहाँ-वहाँ दौड़ रहे थे। मेरे बच्चोंके चेहरे, खौफ़ या प्रार्थना या पता नहीं क्यों, फ़क पड़े थे। चेहरे देखकर मेरा दिल मसोसकर रह गया। मैंने सोचा, हे भगवान, इन बच्चोंको अब सारी ज़िन्दगी बिताने को सहारा कौन-सा बचा है? मैंने उनके हाथ पकड़े और दौड़ पड़ा। वे अब इस दुनियाँ में किसके सहारे दिन काटेंगे—इस बातके सिवा और बात ही दिमागमें नहीं थी......[कुछ देर रुककर] मैं जब यहाँ आया तो देखा, यहाँ इनकी माँ रो, चीख रही है, नाराज़ हो रही है।

[माशा तकिया-चादरा लेकर लौट आती है और सोफ़े पर बैठ जाती है]

वेर्शिनिन—जिस समय मेरी बच्चियाँ सोने के कपड़े पहने दरवाज़ेपर खड़ी थीं और सारी सड़क लपटोंसे लाल-लाल हो रही थी, चारों तरफ़ भयानक कोलाहल छाया हुआ था—तो मुझे लगा शायद वर्षों पहले जब दुश्मन अचानक हमला कर दिया करते थे और लूटपाट करना, आग लगाना शुरू कर देते थे; तब भी शायद ऐसा ही कुछ दृश्य हो जाता होगा। और सच पूछा जाय तो आज में और जो कुछ पहले होता था उसमें फ़र्क ही क्या है? इसी तरह जब थोड़ा सा वक्त; यानी दो-तीन सौ साल और बीत

जाये; तो लोग हमारे आजके जीवनके ढर्रेको भी बड़े भयभीत होकर घृणा-भरी मुस्कुराहटोंसे देखा करेंगे। आजकी हर चीज उन्हें बड़ी बेहूदी और बोझिल, बड़ी विचित्र और कष्टदायक लगेगी। आह, कैसी विचित्र सचमुच वह ज़िन्दगी होगी...कितनी अद्‌भुत। [हँसता है] माफ़ कीजिये, मैं फिर सिद्धान्त बघारने लगा हूँ। आज्ञा दें तो चालू रखूँ। भविष्यके बारेमें बोलते रहनेकी मेरे मनमें न जाने कितनी ललक है। इस वक्त ज़रा तरङ्गमें हूँ [कुछ देर चुप रहकर] लगता है आप सब लोग सो गये। हाँ, तो मैं कह रहा था कि कैसी अद्‌भुत वह ज़िन्दगी होगी...क्या आप उसकी कल्पना ही करके देख सकते हैं? आज इस शहर भरमें आप जैसे सिर्फ़ तीन आदमी हैं; लेकिन आनेवाली पीढ़ियोंमें और होंगे...फिर और होंगे, फिर और बढ़ेंगे...। एक समय आयेगा जब दुनियाँकी सारी बातें ठीक उसी प्रकारका रूप ले लेंगी जैसे रूप का आप समर्थन करते हैं...जैसा रूप आप चाहते हैं। लोग ठीक आपके सपनोंकी दुनियाँके अनुसार जियेंगे; लेकिन धीरे-धीरे आप भी पुराने पड़ते जायेंगे—तब ऐसे-ऐसे लोग इस धरतीपर जन्म लेंगे जो आपसे अच्छे होंगे [हँसता है] आज पता नहीं मैं कैसी विचित्र मानसिक स्थितिमें हूँ। ज़िन्दगीके लिये मेरे दिलमें बड़ा भयानक प्यार उमड़ रहा है [गाता है]...

'सभी प्यारमें बँधे हुए हैं, बूढ़े और जवान,
प्यार-भावना इस धरतीपर सबसे शुद्ध महान्।'

माशा—[गुनगुनाती है] तनन : तनन तन नूम...

वैर्शिनिन—[जवाबमें गुनगुनाता है] तुम तनन-तनन...

[हँस पड़ता है]

[फ़ैदोतिकका प्रवेश०]

फ़ैदोतिक—[नाचता है] जल गया—जल गया—जल गया रे।
मेरा घर-बार सब जल गया रे।

इरीना—यह क्या बेहूदा मज़ाक है ? तुम्हारा क्या सब कुछ जल गया ?

फ़ैदोतिक—[हँसकर] इस धरतीपर मेरा जो भी कुछ था सब स्वाहा हो गया। कुछ भी नहीं बचा। मेरा गिटार जल गया, कैमरा जल गया, सारे पत्र जल गये। जो नोटबुक मैं तुम्हें देनेवाला था वह भी जलकर भस्म हो गई।

[सोल्योनी का प्रवेश]

इरीना—[सोल्योनी से] नहीं, वैसिली-वैसिलिच, आप फ़ौरन चले जाइये। आप यहाँ नही आ सकते।

सोल्योनी—क्यों, बैरन साहब यहाँ तो आ सकते है ? मै ही नहीं आ सकता ?

वैर्शिनिन—अच्छा, अब तो हमें चलना चाहिये। आग कैसी है, अब ?

सोल्योनी—लोग कहते है कि अब तो समाप्त हो चली है। नहीं साहब, मै बिलकुल नहीं समझ पाता कि बैरन तो यहाँ रह सकते हैं, मै आ भी नहीं सकता।

[इत्रकी शीशी निकालकर अपने ऊपर छिड़कता है।]

वैर्शिनिन—[गुनगुनाता है] तर-र-र-तनन...ताम...

माशा—तर-र-र-र...ताम...

वैर्शिनिन—[सोल्योनीसे हँसकर] आओ, खानेके कमरेमें चलें।

सोल्योनी—बहुत ठीक, चलकर हम सब इसे लिख डालेंगे। शायद मुझे अपनी बात फिर कभी साफ़ करनी पड़े। डर बस यही है, कहीं

बतख-बाबू भड़क न उठें...[तुज़ेनबाख़की ओर देखकर] चुक-चुक-चुक-चुक...

[फ़ैदोतिक और वार्शिनिनके साथ चला जाता है]

इरीना—इस कमबख्त सोल्योनीने भी कमरेमें कैसी तम्बाकू की बदबू भर दी है। [साश्चर्य] बैरन साहब सो गये! बैरन, बैरन!

तुज़ेनबाख़—[जागकर] हाँ? मैं तो बहुत थक गया...ईंटोंका भट्ठा। नहीं नहीं, मैं नींद में नहीं बर्रा रहा हूँ, यहाँ से सीधा ईंटोंके भट्ठे पर ही जाऊँगा...काम करना शुरू करूँगा। करीब-क़रीब सब कुछ तय हो चुका है [इरीनासे कोमल स्वरमें] तुम कैसी दुबली-पतली, सुन्दर सलोनी और प्यारी-प्यारी हो। मुझे तो लगता है जैसे तुम्हारी सुनहरी कान्ति अँधेरे वातावरणमें रोशनी बिखरा रही हो...तुम बहुत उदास हो...जीवनसे घोर असन्तुष्ट...है न? अच्छा, आओ, मेरे साथ चलो। आओ, हमलोग साथ-साथ काम करें।

माशा—बैरन साहब, अब आप भी जाइये।

तुज़ेनबाख़—[हँसकर] अरे, क्या तुम भी यहीं हो? मैंने तुम्हें तो देखा ही नहीं। [इरीनाका हाथ चूमकर] अच्छा-नमस्कार, मैं चलता हूँ, अब तुम्हें देखता हूँ और फिर उस दिन की बात याद करता हूँ—तो लगता है जैसे उस बातको न जाने कितने युग बीत गये हैं, जब जन्म-दिन की पार्टीमें तुमने परिश्रम करनेके आनन्दसे भरी ज़िन्दगीका सपना देखा था।...वह सब क्या हो गया? [उसका हाथ चूमता है] अरे, तुम्हारी आँखोंमें तो आँसू भर आये...अच्छा थोड़ा सो लो, रोशनी फैल रही है। क़रीब-क़रीब सुबह हो ही चुकी है...काश, मैं तुम्हारे ऊपर अपना जीवन निछावर कर पाता...इतनी छूट मुझे मिल जाती।

माशा—बैरन साहब, सचमुच आप अब चले जाइये।

तुज़ेनबाख़—मैं जा रहा हूँ—[चला जाता है]

माशा—[लेटकर] फ्योदोर, सो गये क्या तुम ?

कुलिगिन—ऑऽऽ ?

माशा—अच्छा हो, तुम भी घर जाकर लेटो।

कुलिगिन—मेरी प्यारी माशा...मेरी जान।

इरीना—यह बहुत थक गई है। भैया, इसे थोड़ा आराम कर लेने दो।

कुलिगिन—मैं बस जा ही रहा हूँ.. आह, मेरी खूबसूरत बीबी प्राण-धन, मैं तुम्हें प्यार करता हूँ।

माशा—[झुँझलाकर फ्रेंचमें व्याकरणके रूप बोलती है] मैं प्यार करता हूँ, तुम प्यार करते हो, आप प्यार करते हैं; वह प्यार करता है, वे प्यार करते हैं—तू प्यार करता है।

कुलिगिन—[हँसकर] वाह, क्या ग़ज़बकी औरत है। तुम्हें मेरी पत्नी बने हुए सात साल हो गये लेकिन लगता ऐसा है जैसे कल ही हमलोगोंकी शादी हुई हो। क़समसे, तुम भी क्या कमालकी औरत हो...मैं तो बड़ा सन्तुष्ट हूँ; सन्तुष्ट हूँ!

माशा—मैं तुमसे ऊब उठी हूँ, ऊब उठी हूँ...[एकदम उठ बैठती है] और एक बात ऐसी भी है जो मेरी खोपड़ीसे ही नहीं निकलती। देखो न, कितनी झुँझलाहट पैदा करनेवाली बात है... यह मेरे सिरमें ठुकी हुई कीलकी तरह खटक रही है। मुझसे चुप नहीं रहा जा रहा। मैं आन्द्रे भैयाके बारेमें कह रही हूँ। उन्होंने लेकर सारे घरको बैंकमें गिरवी रख दिया है और भाभीने वह सारा रुपया झटककर अपने पास रख लिया है। तुम तो जानते ही हो कि घर सिर्फ़ उन्हींका नहीं है। घर तो हम

चारों का है। अगर उनमें ज़रा भी शिष्टता और समझ है तो उन्हें खुद सोचना चाहिये।

कुलिगिन—इन सबको लेकर क्यों परेशान होती हो? तुम्हें क्या पड़ी है? आन्द्रूशा नाक तक कर्ज़में डूबे हैं। इतना जानना काफ़ी है।

माशा—कुछ भी हो, गुस्सा आने की तो बात ही है।

कुलिगिन—हम कोई भिखमंगे नहीं हैं जी। मैं काम करता हूँ—हाई-स्कूलमें पढ़ाने जाता हूँ। इसके अलावा मैं प्राइवेट-ट्यूशन भी कर लेता हूँ। मैं अपने काममें मस्त हूँ, मेरे बारेमें कोई इधर-उधर ऐसी-वैसी बात नहीं कह सकता।

माशा—चाहिये तो मुझे भी कुछ नहीं, लेकिन अन्याय देखकर बड़ा गुस्सा आ जाता है [कुछ देर रुककर] फ्योदोर, अब तुम जाओ।

कुलिगिन—[उसका चुम्बन लेकर] तुम बहुत थक गई हो। घण्टे-आध घण्टे आराम कर लो। मैं कहीं भी कुछ देर बैठकर तुम्हारी राह देखता रहूँगा। [जाते हुए] मैं सन्तुष्ट हूँ...मैं सन्तुष्ट हूँ—सन्तुष्ट हूँ।

इरीना—देखो तो सही, हमारे आन्द्रे भैया कैसे ओछे दिलके हो गये हैं। इस औरतके साथ तो मानो बुड्ढे खूसटसे होते जा रहे हैं। कभी समय था जब प्रोफ़ेसर होनेके लिए यह कितना परिश्रम करते थे और कल यह शेखी बघार रहे थे कि 'आखिरमें ग्राम-पंचायतका मेम्बर हो गया...।' यह मेम्बर है और प्रोतोपोव चेयरमैन है—इस पर सारी बस्ती हँसती है, काना-फूँसी करती है। मगर एक यही हैं कि न कुछ देखते हैं, न जानते हैं। यहीं देख लो न बच्चा-बच्चा आग बुझाने दौड़ा जा रहा है और भैया हैं कि अपने

कमरेमें बैठे है—इन्हें जैसे दुनियासे कोई मतलब ही नहीं। बस वायलिन बजानेके सिवा कुछ भी नहीं करते...[असहाय-सी हताश स्वरमें] हाय...क्या हो रहा है? कैसा ग़ज़ब है...भयकर ! [रोने लगती है] मुझसे अब और सहा नहीं जाता...बिल्कुल नहीं सहा जाता। बिल्कुल भी नही।

[इरीना प्रवेश करके अपनी श्रृंगार-मेज़को ठीक-ठाक करने लगती है]

इरीना—[ज़ोर-ज़ोरसे सिसकियाँ भरते हुए] मुझे यहाँसे धक्का देकर निकाल दो, भगा दो...मुझसे अब यह सब नहीं सहा जाता...

ओलगा—[चौंककर] क्या हुआ ? बहन क्या हुआ ?

इरीना—[सिसकते हुए] कहाँ गया ? सब कुछ कहाँ चला गया ? कहाँ है सब कुछ ? हाय भगवान ! उफ़, सब कुछ भूल गई। मुझे तो एकदम याद नहीं रहा...दिमागमें कितनी सारी चीजें एक दूसरीमें गड़बड़ हो गई है। इतालवी भाषामें 'खिडकी' या 'छत' को क्या कहते है यह तक तो मुझे ध्यान नहीं आ रहा...दिमागसे हर चीज़ उड़ती चली जा रही है। रोज कुछ न कुछ भूलती जा रही हूँ। जिन्दगी फिसलती चली जा रही है।...फिर कभी नहीं लौटेगी...हमलोग कभी भी मॉस्को नहीं जा पायेंगे...मैं अच्छी तरह जानती हूँ, हमलोग मॉस्को नहीं जा पायेंगे...

ओलगा—बहन...मेरी बहन...

इरीना—[अपने आप पर संयम करके] उफ़, मैं भी कैसी खराब हूँ। मुझसे काम नहीं होता...अब काम करना भी नहीं चाहती...जी भरकर कर लिया...बहुत कर लिया। मै टेलिग्राफ़-क्लर्क थी—

आज मैं नगर-सभामें काम करती हूँ। वहाँ जो भी काम दिया जाता है वह मुझे रत्तीभर अच्छा नहीं लगता। उन सबसे मुझे घृणा है। मैं चौबीस सालकी होने आ रही हूँ—बरसों हो गये काम करते हुए...मेरे दिमाग़का सारा रस निचुड़ता चला जा रहा है...सूखती चली जा रही हूँ, बुढ़िया और कुरूपा होती जा रहीहूँ। कहीं एक तिल भर तो शान्ति नही मिलती। समय आँधीकी तरह भागा चला जा रहा है। हमेशा लगता रहता है जैसे वास्तविक और सुन्दर ज़िन्दगीसे दिन-दिन दूर होती चली जा रही हूँ। पता नहीं किन अजानी गहराइयोंमें डूबती चली जा रही हूँ...मैं हार चुकी हूँ...कभी-कभी मुझे ख़ुद आश्चर्य होता है कि कैसे ज़िन्दा हूँ—क्यों नही मै आत्म-हत्या कर डालती?

ओलगा—मत रोओ बहन, यों मत रोओ। देखो, मुझे भी इससे कितना दुख होता है।

इरीना—मैं रो नहीं रही.. बिल्कुल नहीं रो रही...रोना तो चुक गया...लो, अब तो नहीं रो रही, अब नहीं रोऊँगी...क़तई नहीं रोऊँगी।

ओलगा—इरीनी, मैं तुझसे बहनकी तरह कहती हूँ। तेरी हितैषी मित्रकी तरह कहती हूँ अगर मेरी सलाह मानो तो बैरनसे शादी कर डालो!

[इरीना रोने लगती है]

ओलगा—[पुचकार कर] तुम्हीं देखो, तुम उसकी कितनी इज़्ज़त करती हो। उनके बारेमें तुम्हारे विचार बड़े ऊँचे हैं।...क्या हुआ अगर वे जरा कुरूप हैं। लेकिन आदमी कितने अच्छे है। ऐसे भले हैं कि...और सभी कोई तो प्यारके लिये ही शादी नहीं; बल्कि फ़र्जकी दृष्टिसे भी करते हैं। ख़ैर, यह मेरा अपना मत है। मैं

तो बिना प्यार किये ही शादी करूँगी। मुझसे तो कोई भी शादीका प्रस्ताव करे, मैं उसीसे शादी कर लूँगी। हाँ बस, आदमी भला हो. .मैं तो बूढ़े तकसे शादी करनेको तैयार हूँ।

इरीना—अभी तक तो आशा लगी रही कि हमलोग मॉस्को चले जायेंगे—वहाँ मैं अपने सच्चे प्रेमीसे मिलूँगी—मैं उसे सपनोंमें देखती रही हूँ...उसे निरन्तर प्यार करती रही हूँ; लेकिन अब लगता है, वह सब बकवास है, कोरी बकवास...और कुछ नहीं।

ओल्गा—[अपनी बहनको बाँहोंमें बाँध लेती है] मेरी बहन, प्यारी बहन, मैं सब समझती हूँ। जब बैरन ने फौजकी नौकरी छोड़ दी थी और सादा कोट पहनकर हमारे यहाँ आये थे तभी मेरे मनमें आया—कैसे कुरूप लगते हैं ये! मैं तो सचमुच रोने-रोनेको हो आई। उन्होंने मुझसे पूछा...'क्यों रोती हो?' मैं उन्हें कैसे बताती?—लेकिन भगवान अगर तुम दोनोंकी जोड़ी मिला दे तो मुझे बड़ी खुशी हो...वह तो मैं ने एक बातकी बात कही। तुम खुद जानती हो—मेरा मतलब दूसरा है।

[नताशा हाथमें एक मोमबत्ती लेकर बिना कुछ बोले दाहिने दरवाज़ेसे मचको पार करती हुई बायें दरवाज़ेकी ओर चली जाती है]

माशा—[उठ बैठती है] ऐसी चुपके-चुपके घूमती है, जैसे गाँवमें आग इसीने लगाई हो।

ओल्गा—माशा, तुम तो बेवकूफ़ हो। बुरा मत मानना, घर भरमें अगर कोई बुद्धू है तो तुम।

[कुछ देर चुप्पी]

माशा—ओलगा और इरीना दीदी, मैं आपके सामने अपना 'पाप' स्वीकार करना चाहती हूँ—मेरे दिलमें बडी उथल पुथल मची है। मैं बस तुम्हारे सामने ही स्वीकार कर रही हूँ, फिर कभी किसीके सामने कुछ नही बोलूँगी [धीरे-से] यह मेरा गुप्तभेद है; लेकिन आपसे छिपानेमे क्या है। मेरे दिलमें बात समा नहीं रही [कुछ देर ठिठक कर] मैं प्यार करने लगी हूँ...प्यार करने लगी हूँ। मैं किसीको प्यार करने लगी हूँ। आपलोगों ने अभी-अभी उसे देखा है...अच्छा लो, अब सीधा ही बताये देती हूँ...मै वैर्शिनिनको प्यार करती हूँ!

ओलगा—[अपनी मसहरीके पीछे जाते हुए] छोड़ो भी। तुम कुछ करो, मुझे नहीं सुनना।

माशा—लेकिन मैं करूँ क्या? [अपने माथेको हाथोंसे दबा लेती है] पहले तो मुझे वह बड़े विचित्र-अनोखे-से लगे...फिर उनपर बड़ी दया आई...फिर अचानक मैं उन्हें प्यार करने लगी। उनके स्वर, उनकी बातें, उनके दुर्भाग्य और उनकी दोनों लड़कियो, सभीको प्यार करने लगी।

ओलगा—[पर्देके पीछेसे] खैर, मुझे तुम्हारी कोई बात नहीं सुननी। मुझे तुम्हारे बुद्धू-पनेकी एक भी बात नहीं सुननी।

माशा—उँह, ओल्या दीदी, तुम खुद बुद्धू हो...मैं तो उन्हें प्यार करने लगी हूँ—मेरी यही कमबख्ती है। मतलब, मेरी तक़दीरमें यही लिखा है। और उन्हें भी मुझसे प्यार है। बस, यही बुरी बात है। है न यही बात? अच्छा क्या यह गलत है? [इरीनाकी बाँह थामकर उसे अपनी ओर खींचती है] मेरी प्यारी दीदी, हमलोग कैसे अपनी-अपनी ज़िन्दगियाँ बिताएँगी? हमारा क्या होगा?...जब हम कोई उपन्यास पढ़ते है तो सब कुछ बड़ा सहज,

बड़ा बासी-बासी लगता है; लेकिन जब खुद प्यारमें पड़ जाते हैं तो लगता है जैसे न तो कोई कुछ देखता है, न समझता है...सारी बातोंको हमें खुद ही सुलझाना होगा। मेरी प्यारी दीदी, मेरी बहन...जो सत्य था सो मैंने आपके सामने कह दिया। अब एकदम मुँह बन्द करके बैठी जाती हूँ...मैं गोगोलके पागल जैसी बनी जाती हूँ...चुप...बिलकुल चुप।

[आन्द्रे और उसके पीछे-पीछे फ़ैरापोण्टका प्रवेश]

आन्द्रे—[गुस्से से] समझमें नहीं आता, तुम आखिर चाहते क्या हो?

फ़ैरापोण्ट—[अधीरतासे दरवाज़ेमें से ही] आन्द्रेसर्जीएविच, मैं आपको दस बार तो बता चुका।

आन्द्रे—पहली बात तो यह कि मैं आन्द्रे सर्जीएविच् बिलकुल नहीं,—तुम्हारे लिए सरकार हूँ।

फ़ैरापोण्ट—सरकार, कोयला झोंकनेवाले पूछते हैं कि क्या वे आपके बग़ीचेमें होकर नदी तक चले जायँ? वर्ना उन्हें बेकार ही दुनिया भरका चक्कर लगाकर जाना पड़ेगा।

आन्द्रे—बहुत अच्छा...उनसे कह दो—ठीक है। [फ़ैरापोण्ट चला जाता है] मेरी तो नाकमें दम आ गया इनके मारे। ओल्गा कहाँ है? [ओल्गा मसहरीके पीछेसे निकल कर आती है] मैं तुमसे आलमारीकी ताली माँगने आया था। मेरी तालियाँ—जाने कहाँ खो गईं। तुम्हारे पास एक छोटी-सी चाबी है न?

[ओल्गा उसे चुपचाप चाबी दे देती है। इरीना मसहरीके पीछे चली जाती है। एक चुप्पी]

आन्द्रे—कैसी भीषण आग थी, उफ़! अब तो बुझने लगी है...भाड़में जाय, इस फ़ैरापोण्टके बच्चेने मुझे इतना झल्ला दिया कि मैं भी

क्या बेवकूफ़ीकी बात कर बैठा—'सरकार !' [कुछ देर चुप रहकर] ओल्या, तुम क्यों बोलती नहीं ?...[फिर एक क्षण चुप्पी] अब तो यह बेवकूफ़ी और व्यर्थका रूठना-मटकना छोड़ दो...अच्छा माशा, तुम भी यहीं हो, और इरीना भी है। बड़ा अच्छा हुआ। तो आओ, आज हमलोग बैठकर सारी बातें हमेशाके लिए साफ़ कर लें। तुम्हें मुझसे क्या-क्या शिकायतें हैं ? क्यों ?

ओल्गा—आन्द्रूशा, अब छोड़ो भी। कल बातें करेंगे, [घबरा जाती है] आजकी रात कैसी मनहूस है।

आन्द्रे—[एकदम बौखलाकर] जोशमें मत आओ...मैं तुमसे बहुत ही शान्तिसे पूछ रहा हूँ कि तुम्हें मुझसे शिकायतें क्या क्या हैं, मुझसे साफ़-साफ़ कहो न...।

[वेर्शिनिनका स्वर—त न न न् त् म—त न न्...]

माशा—[उठ खड़ी होती है। ऊँचे स्वरसे] त्ाा त न न—तन न... [ओल्गासे] अच्छा ओल्गा दीदी, नमस्कार। ओल्या...खुदा हाफ़िज़। [पर्देके पीछे जाकर इरीनाका चुम्बन लेती है] खूब अच्छी तरह सोना...आन्द्रे भैया, नमस्कार...अच्छा हो, तुम अब इनका पीछा छोड़ दो। ये बहुत थक गई हैं...सारी बातें कल तय कर लेना।

[चली जाती है]

ओल्गा—आन्द्रे भैया, इन सब बातोंपर कल ही बात-चीत कर लेंगे न [पर्देके पीछे चली जाती है] अब हमलोगोंके सोनेका समय हो चला है।

आन्द्रे—मुझे जो कहना है, जब वह सब कह लूँगा, तभी जाऊँगा। सीधी

बात...पहले तो यह कि तुम्हें मेरी पत्नी नताशाके खिलाफ कुछ शिकायतें है—और वे आजसे नहीं, जिस दिन मेरी शादी हुई उसी दिनसे हैं। मेरी तो राय यह है कि नताशा, अद्भुत स्त्री है—बड़ी विचारवान, बड़ी ईमानदार, बड़ी स्पष्टवक्ता और बड़ी सम्मान-योग्य। मैं अपनी पत्नीको प्यार करता हूँ—उसकी इज्जत करता हूँ, समझीं तुमलोग ? मैं उसकी इज्जत करता हूँ—और दूसरोंसे उम्मीद करता हूँ, वे भी उसकी इज्जत करें। मैं फिर कहता हूँ कि वह बहुत महान और सहृदय औरत है और उससे तुम्हें जो-जो शिकायतें है वे सब तुम्हारी बहक है—बुढ़ियों जैसी सनक है...बुढ़ियाँ न कभी अपनी भाभियोंको पसन्द करती है, न कर सकती हैं। सारी दुनियाका कायदा है। [**कुछ देर चुप रहकर**] दूसरे : तुम लोग मुझसे इसलिए भी नाराज हो कि मै प्रोफ़ेसर क्यों नहीं बना—कुछ पढ़ने-लिखनेका काम क्यो नहीं करता। लेकिन मैं प्रशासक [ऐडमिन्स्ट्रेटर] जेमस्त्वोकी नौकरीमें हूँ। ग्राम-पंचायतका मेम्बर हूँ, और समझता हूँ कि यह नौकरी भी इतनी ही पवित्र और महान है, जैसी पढ़ने-पढाने की। अगर तुम सुनना ही चाहती हो, तो मै सुनाये देता हूँ कि मैं ग्राम-पंचायतका मेम्बर हूँ और मुझे इस पर गर्व है [**कुछ देर चुप रहकर**] तीसरे; एक बात और भी कहना चाहता हूँ। मैंने तुम्हारे बिना पूछे ही घरको गिरवी रख दिया है। हाँ, चाहो तो इस बात पर तुम मुझे कुसूरवार ठहरा सकती हो। तुमसे इसके लिए माफ़ी चाहता हूँ। मुझे पैंतीस हज़ार कर्जेकी वजहसे यह सब करना पड़ा है। जुआ अब मै कहाँ खेलता ? ताशोंको बहुत पहले ही तिलाजलि दे चुका। लेकिन अपने बचावके लिए सबसे बड़ी बात मै यह कह सकता हूँ कि तुमलोग

अविवाहित लड़कियाँ हो, सो पिताजी की पेंशन तुम्हें मिल जाती है। मुझे क्या मिलता है? कह लो, अपनी मज़दूरी...

[चुप्पी रहती है]

कुलिगिन—[दरवाज़ेसे ही] यहाँ माशा है क्या? [चिन्तित होकर] गई कहाँ? अजब झंझट है।

[चला जाता है]

आन्द्रे—अब सुनेंगी थोड़े ही। नताशा, बड़ी महान् सहृदय औरत है। [मञ्चपर इधरसे उधर घूमता है। फिर रुक जाता है] जब मैंने इससे शादी की थी तो सोचा था, हमलोग बड़े प्रसन्न रहेंगे, सबके सब खुश रहेंगे, लेकिन...हाय, भगवान् [रोने लगता है] बहनो, मेरी प्यारी बहनो, मैंने जो भी कुछ कहा है उसे सच मत मानना; उस पर विश्वास मत करना।

[चला जाता है]

कुलिगिन—[दरवाज़ेसे ही बड़ी बेचैनीसे] माशा कहाँ है? यहाँ नहीं है क्या? अजब बात है?

[चला जाता है]

[सड़कपर आग बुझानेवालोंकी घण्टी बजती है। मञ्च बिलकुल ख़ाली है]

इरीना—[पर्देके पीछेसे] ओल्गा, यह फ़र्शको कौन खटखटा रहा है?

ओल्गा—डाक्टर शैबुतिकिन है...नशेमें धुत है।

इरीना—[कुछ देर रुककर] ओल्या! [अपने पर्देसे मुँह निकाल कर झाँकती है] तुमने सुना कुछ? फ़ौज़ यहाँसे हटाकर कहीं ले जाई जा रही है। फ़ौजवालोंका कहीं बहुत दूर तबादला हो जायेगा।

ओलगा—कोरी अफ़वाह ही अफ़वाह है।

इरीना—ओल्या, हमलोग फिर अकेली रह जाएँगी न ?

ओलगा—अच्छा ?

इरीना—मेरी दीदी, मेरी बहन, मेरे दिलमें बैरनकी बड़ी इज़्ज़त है। उनके बारेमें मेरे विचार बड़े ऊँचे हैं। वे बहुत ही अच्छे आदमी हैं। मैं राजी हूँ कि उनसे शादी कर लूँगी...बस, किसी तरह हमलोग मॉस्को चले चलें...। तुम्हारे हाथ जोड़ती हूँ—जैसे भी हो चलो। मॉस्कोसे बढ़कर इस दुनियामें कुछ नहीं है, चलो ओल्या, चलें...वहीं चलें...।

[पर्दा गिरता है]

चौथा अंक

[उसी वर्षकी शरद् ऋतु। ठीक दोपहरीका समय। प्रोज़ोरोव परिवारके मकानका पुराना बगीचा। दोनों ओर देवदारुके पेड़ोंकी एक लम्बी चली जाती सड़क—और उसके छोर पर एक नदीका दृश्य। नदीके दूसरे किनारे पर जंगल। दाहिनी ओर घरका बरामदा। एक मेज़ पर रखे काँचके गिलासों और बोतलोंसे स्पष्ट है कि अभी यहाँ बैठकर शैम्पेन पी जा रही थी। कभी-कभी सड़कसे बगीचेको पार करते हुए लोग नदीकी ओर आते-जाते रहते हैं। पाँच सिपाही दनदनाते हुए गुज़र जाते हैं। मज़ेमें आया हुआ आनन्दपूर्ण मुद्रामें, शैबुतिकिन बाग़में एक आराम-कुर्सी पर बैठा, बुलाये जानेकी राह देख रहा है। उसकी यह मनस्थिति पूरे अंकमें चलती है। उसके सिर पर फ़ौजी टोपी और हाथमें छड़ी है। इरीनाके साथ कुलिगिन [सफ़ाचट मूँछे और छाती पर गोदना] और तुज़ेनबाख़ बरामदेमें खड़े फ़ैदोतिक और रोदेसे विदा ले रहे हैं। कूचकी वर्दी पहने हुए दोनों अफ़सर सीढ़ियोंसे नीचे उतर रहे हैं]

तुज़ेनबाख़—[फ़ैदोतिकका चुम्बन लेते हुए] फ़ैदोतिक, तुम बड़े अच्छे आदमी हो...। देखो न, हमलोगोंने कैसे साथ-साथ हँसी-खुशी दिन बिता दिये...[रोदेका चुम्बन लेकर] एक बार फिर... नमस्कार, मेरे दोस्त! विदा दो।...

इरीना—अगली बार मिलने तकके लिए विदा।

फ़ैदोतिक—अगली बार मिलनेको नहीं—अन्तिम बार विदा। हमलोग फिर कभी मिल ही कहाँ पायेंगे, कभी...?

कुलिगिन—कौन जाने ? [आँसू पोंछकर मुसकराता है] लो देखो, मैं भी तो रोने लगा।

इरीना—कभी न कभी हमलोग जरूर मिलेंगे

फ़ैदोतिक—शायद कभी दस-पन्द्रह साल बाद ! लेकिन तब शायद हमलोग एक-दूसरेको पहचान भी मुश्किलसे पायें और अगर मिलें भी, तो शायद बड़े मरेमन और बुझे-बुझेसे। [कैमरेसे तस्वीर उतारता है] चुपचाप खड़ी रहो।...आखिरी बार, एक और।

रोदे—[तुज़ेनबाख़को गले लगाकर] हमलोग अब एक-दूसरेको नहीं देख पायेंगे। [इरीनाका हाथ चूमता है] आपने हमारे साथ जो-जो किया है उसके लिए धन्यवाद—शुक्रिया।

फ़ैदोतिक—[परेशानी से] अरे भाई, जरा ठहरो तो सही।

तुज़ेनबाख़—भगवानने चाहा तो हमलोग फिर मिलेंगे। हमें पत्र लिखना। सुना, हमें लिखना भूलना मत।

रोदे—[बाग़में चारों ओर दूरतक देखते हुए] अच्छा वेलि-वृक्षो विदा दो...[ज़ोरसे चीख़ता है] ओऽऽहोऽऽ [कुछ देर ठहरकर] गूँजती आवाजो, अब विदा दो।

कुलिगिन—कौन जाने तुम पोलैण्डमें जाकर शादी ही कर डालो। तुम्हारी पोलिश पत्नी तुम्हें गोदमें भरकर कहेगी—'मेरे कोखोनी।'

[हँसता है]

फ़ैदोतिक—अब तो अपने पास आध घण्टेसे भी कम समय है। हमारी फ़ौजमेंसे बजरेके साथ सामान लदवाकर सिर्फ सोल्योनी ही जा रहा है। हमलोग सब मुख्य हिस्सेके साथ रहेंगे। फौजकी तीन टुकड़ियाँ आज जा रही है, तीन कल और चली जायेंगी। इसके बाद तो सारी बस्तीमें शान्ति और सन्नाटा छा जायेगा।

तुज़ेनबाख़—साथ ही साथ एक भयङ्कर उदासी और मुर्दनी भी तो छा जाएगी।

रोदे—मार्या सर्जीएव्ना कहाँ गई ?

कुलिगिन—माशा आराममें है।

फ़ैदोतिक—उनसे भी तो विदा ले लें हमलोग।

रोदे—अच्छा, अब विदा दें। हम वहीं चले चलेंगे, या लीजिये मैं यहींसे चिल्लाना शुरू करता हूँ। [जल्दी-जल्दी तुज़ेनबाख़ और कुलिगिनको गले लगाकर इरीनाका हाथ चूमता है] यहाँ हमलोगोंका समय कैसे आनन्दमें बीत गया।

फ़ैदोतिक—[कुलिगिनसे] कभी-कभी अपनी याद दिलानेको यह यादगार है। आपके लिए पेन्सिल और एक नोटबुक है। अब हमलोग यहींसे सीधे नदी पर चले जाएँगे।

[जाते हुए दोनों मुड़-मुड़कर देखते हैं।]

रोदे—[ज़ोरसे पुकारकर] हल्लोऽऽ।

कुलिगिन—[उसी तरह ज़ोरसे] अल-विदाऽऽ

[नेपथ्यमें रोदे और फ़ैदोतिक माशासे मिलते हैं और उससे विदा लेते हैं। वह भी उनके साथ चली जाती है।]

इरीना—ये लोग चले गये...[बरामदेकी अन्तिम सीढ़ी पर बैठ जाती है]

शेबुतिकिन—मुझसे विदा लेनेका तो शायद उन लोगोंको ध्यान भी नहीं आया...।

इरीना—और आप आख़िर डूबे हुए किस सोचमें थे।

शेबुतिकिन—अरे हाँ, मैं ख़ुद भी भूल गया था। पर ख़ैर, मैं तो उनसे फिर जल्दी ही मिल लूँगा। कल ही तो जाना है। जी हाँ, मेरे

पारा एक दिनका समय और है। सालभरमें मेरा नाम रिटायर्ड लोगोंकी सूचीमें आ जायेगा। इसके बाद तो यहीं लौट आऊँगा और बाकी सारी जिन्दगी तुमलोगोंके पास ही बिता दूँगा। [जिस अखबारको पढ़ रहा था उसे जेबमें रखता है और दूसरा निकाल लेता है] इसबार यहाँ आकर मैं एकदम नई तरहकी ज़िन्दगी शुरू करूँगा। ऐसा शान्त सीधा बन जाऊँगा कि बस। भगवान्से डरा करूँगा। सबसे बड़ी अच्छी तरह व्यवहार करूँगा।

इरीना—डाक्टर साहब, आपको तो सचमुच अपने जीवनका ढर्रा बदल ही देना चाहिये। जो भी हो—आपके लिए यह बहुत जरूरी है।

शैबुतिकिन—हाँ, मुझे खुद भी यही लगता है [धीरे-धीरे गुनगुनाता है] तरारा...रा रा...बूम...तरारा...रा बूम...

कुलिगिन—अरे, हमारे डाक्टर साहब पूरे चिकने घड़े हैं, चिकने घड़े!

शैबुतिकिन—हाँ, तुम मुझे सिखाने-पढ़ानेका जिम्मा ले लो तो भले ही कुछ सुधर जाऊँ शायद!

इरीना—फ्योदोरने अपनी सारी मूछें मुड़ा डाली हैं। अब इनकी ओर देखा तक नहीं जाता।

कुलिगिन—क्यों? क्या बुराई है?

शैबुतिकिन—तुम्हारा चेहरा अब कैसा लगता है, मैं बता सकता हूँ लेकिन बताऊँगा नहीं।

कुलिगिन—छोड़िये भी...क्या होता है मूछें मुड़ा लेने से?...हमारे हेड-मास्टर साहब मुँछ-मंडे हैं और जब मैं उनका सहायक हेड-मास्टर हो गया तो मैंने भी सफ़ाचट करा ली। अगर किसी को पसन्द नहीं हैं तो मैं क्यों चिन्ता करूँ? मुझे तो सन्तोष है। मूछें रहें या न रहें, मुझे दोनों तरह सन्तोष है।

[बैठ जाता है]

[पृष्ठभूमिमें एक बच्चा-गाड़ीमें बच्चा सुलाये हुए आन्द्रे उसे इधर-से-उधर धकेलता रहता है]

इरीना—डाक्टर साहब, सचमुच मेरे मनमें बड़ी कुलबुलाहट मच रही है। कल आप छायादार सड़क पर गये थे न, सच सच बताइये वहाँ हुआ क्या ?

शेबुतिकिन—क्या हुआ ? कुछ नहीं। कोई खास बात नहीं, [अखबार पढ़ता है] कोई महत्त्वपूर्ण बात नहीं है।

कुलिगिन—किस्सा यह है कि सोल्योनी और बैरन कल थियेटरके पास छायादार सड़क पर मिले।

तुज़ेनबाख़—उँह, छोड़िये भी'''वाकई [अपने हाथको ज़ोरसे झटक कर घरके भीतर चला जाता है]

कुलिगिन—थियेटरके पास सोल्योनीने बैरनको चिढ़ाना और तंग करना शुरू कर दिया। इनसे सहा नहीं गया। इन्होंने भी कुछ तेज़ बातें कह दीं...गाली वाली।

शेबुतिकिन—मुझे कुछ नहीं पता। लेकिन यह सब बकवास है।

कुलिगिन—एक गिरजाघरके टीचरने लेखके अन्तमें लिख दिया—'बकवास।' अब इस शब्दको लैटिनका समझकर शिष्य बड़ा परेशान हुआ [हँसता है] अजब मजाक है! लोग कहते हैं सोल्योनी इरीनाको प्यार करता है, इसीलिए बैरन साहबसे उसे घृणा है। यों है तो यह स्वाभाविक ही। इरीना लड़की बड़ी अच्छी है [नेपथ्यसे—'आओ हल्लोऽऽ !' का स्वर]

इरीना—[चौंककर] पता नहीं क्यों, आज ज़रा-ज़रा-सी बातसे मैं सहम उठती हूँ। [कुछ देर रुककर] मेरी तैयारी पूरी हो चुकी। खानेके

बाद ही मैं सारा सामान भेज दूँगी। कल मेरी और बैरनकी शादी हो जायेगी। कल हमलोग ईंटोंके भट्ठेवाले मैदानमें चले जायेंगे—फिर अगले दिन ही मैं स्कूलमें पहुँच जाऊँगी। अब एक नया-जीवन शुरू हो रहा है.. हे भगवान्, मेरे ऊपर दया रखना—देखूँ, ईश्वर अब मेरी सहायता किस प्रकार करते हैं। जब मैंने टीचरीका इम्तहान पास किया था तब मनमें ऐसा आनन्द, ऐसा उल्लास उमड़ा कि मैं रो पड़ी थी [कुछ देर रुककर] सामान ले जानेके लिए थोड़ी देर बाद गाड़ी आ जायेगी।

कुलिगिन—और तो सब ठीक है, मगर न जाने क्यों, मुझे इस सबमें वह गम्भीरता दिखाई नहीं देती जो इस तरहकी बातोंमें होती है... आदर्श ही आदर्शकी बातें हैं—गम्भीरता है ही नहीं। खैर, जो हो मेरी हार्दिक कामना है तुम सुखी होओ।

शेबुतिकिन—[गद्गद होकर] मेरी बेटी, मेरी सोनेकी चिड़िया!

कुलिगिन—हाँ, आज सारे अफसर लोग चले जायेंगे और बाकी सारी चीजें धीरे-धीरे जैसे जाया करती हैं, जाती रहेंगी। लोग चाहे जो कहें—माशा कमालकी औरत है। मैं तो उसपर जान देता हूँ और अपने भाग्यको सराहता हूँ। इस जिन्दगीमें लोगोंकी भी तरह-तरहकी तकदीरें होती हैं। यहाँ आबकारीके महकमेमें एक आदमी है—नाम है कोज़ीरेव। हम और वह साथ-साथ पढ़े थे, पर उसे पाँचवें क्लासमें ही स्कूलसे निकाल दिया गया क्योंकि वह कभी—'ऊतकोजेकूतियुमस*' का अर्थ ही नहीं समझ पाया। अब वह बड़ा दीन-हीन मरियल-सा रहता है और जब

* लैटिन शब्द : UT Consecutivum = नतीजेमें

कभी मैं उससे मिलता हूँ तो कहता हूँ—कहो 'ऊत कोज़े-कूतियम,'—कैसे हो ? तो वह जवाब देता है..."यों ही 'कोज़ेकूति-यम' सा ही हूँ !" फिर खाँसने लगता है। और एक मैं हूँ ज़िन्दगीमें जब देखो तब सफल ही होता रहा। तकदीरका सिकन्दर ...द्वितीय श्रेणीमें मैंने स्तानिस्लावकी डिग्री ली और अब दूसरोंको वही—'ऊत कोज़ेकूतियम' शब्द पढ़ाता हूँ। यह तो ठीक है कि मैं बहुत-सों से ज्यादा तेज़ और समझदार आदमी हूँ, लेकिन मेरी खुशीका असली कारण यह नहीं है।

[कुछ देर चुप्पी रहती है]

[घरमें पयानोपर 'माता-मेरी' की प्रार्थना बजती है]

इरीना—कल सन्ध्याको मैं यह 'माता मेरी' की प्रार्थना नहीं सुन रही होऊँगी...प्रोतोपोवसे नहीं मिल रही होऊँगी [**एक क्षण रुककर**] प्रोतोपोव ड्राइंगरूममें बैठे हैं। आज फिर आ गये हैं वे।

कुलिगिन—अभी तक अपनी हेड-मास्टरनी नहीं आई।

इरीना—नहीं, उन्हें आज बुलवाया है। काश, तुम जान पाते कि ओल्गा दीदीके बिना यहाँ अकेले रहना कितना मुश्किल है। अब वे स्कूलकी हेड-मास्टरनी हो गई हैं, स्कूलमें रहने लगी हैं। सारे दिन व्यस्त रहती हैं और यहाँ मुझे बड़ा अकेला-अकेलापन लगता है। मैं ऊब उठी हूँ। यहाँ कुछ भी तो करनेको नहीं है। जिस कमरेमें मैं रहती हूँ उस तकसे मुझे नफ़रत हो उठी है। अब तो मैंने जान लिया है कि जब किस्मतमें मॉस्को जाना ही नहीं बदा, तो फिर जो है सो सब ठीक ही है। तकदीरका खोट है, इसमें किसीका क्या बस है...सच है 'होता है वही जो मंजूरे खुदा होता है।' निकोलाय ल्वेवोविचने जब दुबारा मुझसे विवाह-

प्रस्ताव किया तो मैंने उसपर फिर विचार किया, और तय ही कर डाला है। आदमी वे अच्छे हैं...सचमुच इतने अच्छे हैं कि देख-देखकर बड़ा आश्चर्य होता है। अब तो अचानक मुझे ऐसा लगने लगा है जैसे मेरी आत्मामें पंख उग आये हों। मन बड़ा हल्का हल्का लगता है और फिरसे मनमें धुन उठती है काम करो...काम करो। सिर्फ कल एक बात हो गई—कोई रहस्यमय है जो मेरे सिर पर मँडरा रहा है—ऊपर चक्कर काट रहा है।

शैबुतिकिन—बकवास है।

नताशा—[खिड़कीसे] हेड-मास्टरनी।

कुलिगिन—हेड-मास्टरनी आ गई। चलो, अब भीतर चलें।

[इरीनाके साथ भीतर चला जाता है]

शैबुतिकिन—[अख़बार पढ़ता हुआ धीरे-धीरे गुनगुनाता जाता है] तरारा बूम...तरा रारा बूम ..

[माशा पास आ जाती है। पीछे आन्द्रे बच्चागाड़ीको धकेल रहा है]

माशा—आप यहाँ गुमसुम जमे बैठे हैं।

शैबुतिकिन—हाँ, हाँ—तो बात क्या है?

माशा—[बैठ जाती है] कुछ नहीं...[कुछ देर चुप रहकर] आप माँ को प्यार करते थे न?

शैबुतिकिन—जी जान से।

माशा—और वे भी आपको करती थीं?

शैबुतिकिन—[कुछ देर रुककर] इसका तो मुझे ध्यान नहीं है।

माशा—मेरा 'आदमी' भी यहीं है क्या?—हमारी एक बावर्चिन थी मार्फ़ा,

वह अपने सिपाही पतिको यों ही कहा करती थी—"मेरा आदमी नहीं है क्या ?"

शैबुतिकिन—अभी तक तो नहीं है ।

माशा—जब खुशीको झपटकर, लडकर, टुकडे-टुकडे नोच-नोचकर छीनना पड़े और फिर भी वह हाथसे चली जाये, जैसे मेरे हाथसे चली जा रही है तो आदमी धीरे-धीरे चिडचिड़ा और कटखना बन जाता है...[अपनी छाती पर उँगली रखकर]...मैं यहाँ भीतर-ही-भीतर धधक रही हूँ...[बच्चागाड़ीको धकेलते आन्द्रेको देखकर] एक यह हमारे आन्द्रे भैया है । हमारी तो सारी उम्मीदें चकनाचूर हो गईं । जैसे हजारों आदमी मिलकर कोई घण्टाघर खडा करें उसमें अथाह धन और अमाप श्रम लगे, और फिर अचानक वह भहरा कर नीचे आ गिरे, खील-खील बिखर जाय, सारी-की-सारी मेहनत बिना किसी वजह चली जाय बिल्कुल वैसा ही हमारे आन्द्रे भैयाने किया है ।

आन्द्रे—घरमें शान्ति कब होगी ? उफ़, कैसा शोरगुल है ।

शैबुतिकिन—अभी हुई जाती है [घड़ी देखकर] मेरी यह घण्टी वाली घडी पुराने ढंगकी है [घड़ीमें चाबी भरता है । घड़ी बजती है ।] पहली, दूसरी और पाँचवीं फ़ौजी टुकड़ियाँ एक बजे जा रही है...[कुछ देर ठहरकर] और मैं कल जा रहा हूँ ।

आन्द्रे—हमेशाके लिए ?

शैबुतिकिन—पता नहीं । शायद सालभरमें लौट आऊँ । बाकी, भगवान की मरजी । यहाँ रहूँ या वहाँ, मेरे लिए फ़र्क क्या है ?...

[दूर सड़क पर वीणा और वॉयलिनके स्वर आता है]

आन्द्रे—सारा शहर एकदम खाली-खाली हो जायेगा । जैसे कोई ढकन

रखकर पूरे शहरको घोट दे...[कुछ देर रुककर] कल थियेटर के पास कोई घटना हुई है सो, सारे शहरमें उसीकी चर्चा है। लेकिन मुझे तो कुछ पता नहीं।

शैबुतिकिन—अरे साहब, कोई बात भी हो ? महज बेवकूफ़ी। हुआ यह कि सोल्योनी, बैरनको चिढा रहा था : बैरन साहब बिगड खड़े हुए और लगे उसे बुरा-भला कहने। नतीजा यह हुआ कि आखिरकार सोल्योनीने द्वन्द्वके लिए ललकार डाला। [घड़ी देखता है] मैं समझता हूँ वक्त हो चुका। ठीक साढ़े-बारह बजे उस झाड़ी में छिपकर नदीके पार हम देखेंगे—ठॉय-ठॉय। [हँसता है] सोल्योनीको मुगालता है कि वह लर्मन्तोव है। वह तो लर्मन्तोवकी तरह कुछ लिखता-लिखाता भी है...मज़ाक नहीं, यह उसका तीसरा द्वन्द्व है।

माशा—किसका ?

शैबुतिकिन—सोल्योनी का।

माशा—और बैरनका ?

शैबुतिकिन—बैरनका क्या ? [कुछ देर चुप्पी]

माशा—मेरी तो कुछ भी समझमें नहीं आता। जो भी हो, आपको उन्हें ऐसा करने नहीं देना चाहिये। क्या ठीक है, वह बैरनको घायल कर दे या मार-मूर ही डाले।

शैबुतिकिन—माना, बैरन आदमी बहुत अच्छे है; लेकिन एक बैरन दुनियाँ में बना रहे या कम हो जाय इससे दुनियाका, क्या बनता बिगड़ता है ? उन्हें लड लेने दो। कोई बात नहीं। [बागके पार "ओ ऽ" और "हल्लो" की आवाज़ें] जरा ठहरो, यह समर्थक-स्कंवोत्सोव चिल्ला रहा है। नावमें सवार है।

[कुछ देर चुप्पी रहती है]

माशा—मैं तो समझती हूँ कि, द्वन्द्व-युद्धमें भाग लेना या डाक्टरकी हैसियतसे भी वहाँ उपस्थित रहना घोर पाप है।

शैबुतिकिन—यह तो सिर्फ लगता ऐसा है। असलमें हमलोग सत्य नहीं हैं। यह ससार भी सत्य नहीं है; हमलोगोंका कोई अस्तित्व ही नहीं, हमें तो सिर्फ लगता ऐसा है कि हमारा अस्तित्व है। और जो कुछ सिर्फ लगता हो उसमें कुछ तथ्य नहीं होता।

माशा—कैसे लोग सारे दिन बकते रहते हैं [जाते हुए] एक तो इस ऐसे मौसममें रहना; जब हर वक्तबरफ पडनेका खतरा हो, और उसके ऊपरसे फिर ये सारी ऊल-जलूल बातें। [रुक जाती है] मेरा मन घरके भीतर जानेको नहीं करता। नहीं, मैं भीतर नहीं जा पाऊँगी। वैर्शिनिन जब आजाएँ तो बता दीजिये [पेड़ोंवाले रास्ते पर चलते हुए] चिड़िया दक्षिणकी ओर उड़ी जा रही हैं। [ऊपर देखती है] बत्तखो, जंगली बगुलो...मेरी चिड़ियो... सुन्दर-सुन्दर चिड़ियो!

[चली जाती है]

आन्द्रे—अब हमारा घर बिल्कुल सूना-सूना हो जायेगा। सारे अफ़सर जा रहे हैं। तुम जा रहे हो—इरीनाकी शादी हुई जा रही है—रह गया मैं, अकेला इस घरमें।

शैबुतिकिन—और तुम्हारी बीवी?

[फ़ैरापोण्ट कुछ कागज लेकर प्रवेश करता है]

आन्द्रे—अरे भाई, बीवी तो बीवी ही है—बडी ईमानदार, भली, सहृदय सब कुछ हो सकती है, फिर भी उसकी कुछ बातें उसे ओछा और स्वार्थान्ध बना डालती है। खैर जो भी हो, वह मनुष्य नहीं है। मैं तुमसे दोस्तके नाते कहता हूँ। तुम्हीं तो एक ऐसे आदमी हो, जिसके सामने मैं अपना दिल खोलकर रख

सकता हूँ। मैं उसे प्यार करता हूँ, यहाँ तक तो ठीक ही है; लेकिन कभी-कभी तो वह मुझे ऐसी गँवार और फूहड लगती है कि उस समय मेरी समझमें नहीं आता, क्या करूँ। उस वक्त इन सब पर भी ध्यान नहीं जाता। मैंने उसे प्यार दिया है या मैं उसे प्यार करता हूँ—

शेबुतिकिन—[उठ खड़ा होता है] आन्द्रे बेटा, कल मैं जा रहा हूँ और हो सकता है अब हमलोग फिर कभी भी न मिल पायें। इसलिये मेरी तुम्हें एक सलाह है : टोपी लगाओ, छड़ी लो और चल पड़ो। चलते चले जाओ, चलते चले जाओ, भूलकर भी पीछे मुड़कर मत देखो—जितनी दूर चले जाओगे उतना ही अच्छा है। [कुछ देर चुप रहकर] लेकिन खैर, जो तुम्हारे मनमें आये सो करो—फ़र्क क्या पड़ता है।

[दो अफ़सरोंके साथ सोल्योनी मंचको पार करता है। शेबुतिकिनको देखकर उधर घूम पड़ता है। अफ़सर अपने रास्ते चले जाते हैं]

सोल्योनी—डाक्टर साहब, वक्त हो गया। साढ़े-बारह बज गये। [आन्द्रे से नमस्कार करता है]

शेबुतिकिन—एकदम ? उफ़ तुम सबके मारे तो मेरी नाकमें दम है। [आन्द्रेसे] आन्द्रूशा अगर कोई मुझे पूछे तो कह देना, मैं अभी सीधा आता हूँ। [ठण्डी साँसे लेता है]

सोल्योनी—उफ़, 'मुँहसे निकले बात नहीं, जब चढ़ा पीठ पर हो भालू।'

[डाक्टरके साथ चलते हुए] बुढ़ऊ, क्या टरटरा रहे हो ?

शेबुतिकिन—[इस आत्मीयताका विरोध करते हुए] आओ चलो।

सोल्योनी—कैसा लग रहा है ?

शैबुतिकिन—[झुँझलाकर] जैसे गद्दे पर सुअर पड़ा मस्ता रहा हो ।

सोल्योनी—यार, ऐसे मत बौखलाओ । मैं ज्यादा कुछ थोड़े ही करूँगा । ज़रा, गोलीसे तीतरकी तरह उसे खत्म ही तो कर दूँगा । [इत्र निकाल कर, अपने हाथों पर छिड़कता है] आज तो मैंने पूरी बोतल खत्म कर डाली, फिर भी इनसे बदबू आती है । मेरे हाथोंसे मुर्दों जैसी बदबू आती है । [कुछ देर चुप रहकर] अच्छा हाँ,... तुम्हें वह कविता याद है "उद्विग्न हृदय है खोज रहा तूफ़ानी-सागर, जैसे बैठी हो शान्ति, बना तूफ़ानोंका घर ।"...

शैबुतिकिन—हाँ, हाँ... "मुखसे निकले बात नहीं जब चढ़ा पीठ पर हो भालू ।"

[सोल्योनीके साथ चला जाता है । 'हल्लो ऽ ऽ ऽ हो ऽ ऽ ऽ ।' की आवाज़ें सुनाई देती हैं । आन्द्रे और फ़ेरापोण्टका प्रवेश]

फ़ेरापोण्ट—यह आपके दस्तखत करनेको काग़ज हैं ।

आन्द्रे—[हताश और असहायसे ढंगसे] मुझे अकेला छोड़ दो, मेरा पीछा छोड़ दो । मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ—[बच्चा-गाड़ीके साथ चला जाता है]

फ़ेरापोण्ट—लेकिन काग़ज़ोंपर तो दस्तखत होने ही हैं ।

[नेपथ्यमें वापस चला जाता है]

[इरीनाके साथ चटाईका बुना टोप पहने तुज़ेनबाख़ आता है । कुलिगिन "अरी ओ माशाऽऽऽ ।' पुकारता हुआ मंच पार करके चला जाता है]

तुज़ेनबाख़—लगता है कि बस्तीभरमें यही एक ऐसा आदमी है जिसे अफ़सरोंके जानेकी खुशी है ।

इरीना—और होनी भी चाहिये [कुछ देर रुककर] अब हमारा शहर ख़ाली हो जायेगा ।

तुज़ेनबाख़—अच्छा इरीना, मैं अभी आ रहा हूँ।

इरीना—जा कहाँ रहे हो?

तुज़ेनबाख़—मुझे जरा शहरमें जाना है। फिर अपने साथियोंको बिदा करने भी जाना है।

इरीना—झूठ बोलते हो। निकोलाय, आज तुम ऐसे उखड़े-उखड़ेसे क्यों हो? [कुछ देर रुककर] कल थियेटरके पास क्या बात हो गई थी?

तुज़ेनबाख़—[बेचैनीकी मुद्रासे] मैं अभी एक घण्टेमें यहीं तुम्हारे पास आये जाता हूँ। [उसका हाथ चूमता है] मेरी अप्सरा [उसके चेहरेकी ओर देखते हुए] लगातार पाँच सालसे मैं तुम्हें प्यार करता आ रहा हूँ, फिर भी जैसे मेरा प्यार पुराना नहीं पडा। तुम मुझे रोज़-रोज और भी ज्यादा अच्छी लगती जाती हो। कैसे सुन्दर-सुन्दर चमकदार तुम्हारे बाल हैं—कैसे अद्भुत तुम्हारे नयन हैं। कल मैं तुम्हें यहाँसे ले जाऊँगा! हम लोग खूब काम करेंगे—धनी हो जायँगे . तब जैसे मेरे सारे सपने साकार हो उठेंगे। तुम्हें भी प्रसन्नता होगी। बस, मुझे सिर्फ एक ही शिकायत है कि तुम मुझे प्यार नहीं करती।

इरीना—यह मेरे बसमें नहीं है, बैरन। मानो, मैं तुम्हारी पत्नी बनूँगी और पतिव्रता स्वामि-भक्त रहूँगी। लेकिन तुम्हारे लिए मनमें प्यार नहीं है, मैं क्या करूँ? [रो पड़ती है] मैंने कभी ज़िन्दगीमें प्यार नहीं जाना। हाय, मैंने प्यारके कैसे-कैसे सपने देखे हैं। रात-रात भर लगातार वर्षों मैंने सपनोंमें प्यारको पाला है, लेकिन जैसे आज मेरी आत्मा उस अनमोल पयानोंकी तरह रह गई है

जिसकी खोलनेकी चाबियाँ खो गई हो। [कुछ देर चुप रहकर] तुम बड़े उद्विग्न लगते हो।

तुज़ेनबाख़—सारी रात मैं सो नहीं पाया हूँ...कभी मेरे जीवनमें कोई ऐसी कोई बात नहीं हुई। जो मुझे डराये या तंग करे—बस, यही खोई हुई चाबी मेरे दिलमें भी कसकती रहती है; मुझे सोने नहीं देती। मुझसे कुछ बात करो न...? [कुछ देर चुप रहकर] मुझसे कुछ बोलो।

इरीना—मेरे पास तुमसे बोलनेको क्या है ?—क्या बोलूँ ?

तुज़ेनबाख़—कुछ भी।

इरीना—ना—ना

[चुप्पी]

तुज़ेनबाख़—कभी-कभी ज़िन्दगीमें कैसी-कैसी छोटी, नगण्य और महत्वहीन बातें अहम और महत्वपूर्ण बन जाती हैं। आदमी उन पर हँसता है, उन्हें बेवक़ूफ़ी और बकवास समझता है, लेकिन फिर भी उन्हींसे जा भिड़ता है और तब लगता है कि उन्हें रोकने और टालनेका कोई उपाय नहीं है। खैर, छोड़ो—अब इस बारेमें हम बातें नहीं करें। मैं खुश हूँ। मुझे ऐसा लगता है जैसे इन देव-दारुके पेड़ोंको, चीड़के दरख्तोंको, भोजके वृक्षोंको जीवनमें पहली बार ही देख रहा हूँ, और लगता है जैसे ये सबके सब बड़ी उत्सुकतासे मुझे निहार रहे हैं, मेरी प्रतीक्षा कर रहे हैं। कैसे हरे-भरे सुन्दर पेड़ हैं—इनकी छायामें जिन्दगी कैसी अद्‌भुत होनी चाहिए थी...['हल्लोऽऽहोऽ का' स्वर] मैं अब चलूँ... वक्त हो गया...देखो वह पेड़ मुरझा गया है लेकिन फिर भी दूसरोंके साथ कैसा हवामें झूमता है। मुझे भी यही लगता है कि मैं अगर मर भी गया तो किसी-न-किसी प्रकार जीवनमें मेरा हिस्सा

रहेगा। अच्छा मेरी इरीना—अब विदा दो। [उसका हाथ चूमता है] तुमने मुझे जो कागज दिये थे वे मेरी मेज पर कलैण्डरके नीचे रखे है।

इरीना—मैं भी तुम्हारे साथ चल रही हूँ।

तुज़ेनबाख़—[चौंककर] नहीं...नहीं...[तेज़ीसे चला जाता है। फिर रविश पर रुककर] इरीना।

इरीना—कहो, क्या बात है?

तुज़ेनबाख़—[समझमें नहीं आता क्या कहे] आज मैंने सुबह कॉफ़ी ही नहीं पी। ज़रा मेरे लिए बनानेको कह देना।

[तेज़ीसे चला जाता है]

[इरीना विचारोंमें खोई-खोई-सी चुपचाप खड़ी रहती है। फिर दृश्यकी पृष्ठभूमिमें टहलती चली जाती है। वहाँ झूले पर बैठ जाती है। आन्द्रे बच्चा-गाड़ी लिये आता है। फ़ैरापोण्ट फिर प्रगट होता है]

फ़ैरापोण्ट—आन्द्रे सर्जीएविच, ये काग़ज मेरे आपके नहीं, सरकारी काग़ज हैं। मैंने तो इन्हें बना नहीं लिया।

आन्द्रे—उफ़! सब कहाँ चला गया? मेरे उस अतीतको क्या हो गया, जब मैं जवान था, प्रसन्न था, चतुर और विद्वान् था? जब एकसे एक अनूठे मेरे सपने और विचार थे...और जब मेरा भूत और वर्तमान आशाकी किरणोंसे जगमगाया करता था? जीवनकी देहलीज़ पर पाँव रखते ही हम ऐसे बुझे-बुझे-से, मरियल, रूखे, मुर्दार, उदास, आलसी, निकम्मे और दुःखी क्यों हो जाते हैं? हमारे शहरको बने हुए दो-सौ साल होने जा रहे हैं...एक लाख आदमी यहाँ रहते है...इन सबमें एक भी तो ऐसा नहीं है जो शेष सब दूसरों जैसा न हो—दूसरोंसे कहीं भी अलग हो—एक

भी सन्त हुआ हो, या हो, एक भी महान् उद्भट विद्वान् हो, कोई कलाकार रहा हो, या जिसमें कोई भी ऐसी खास बात रही हो कि मन में उससे ईर्ष्या उपजे या उसके चरण-चिह्नों पर चलनेकी उत्कट लालसा हो...बस, सब खाते हैं, पीते हैं, सोते हैं और फिर ठिकाने लगते हैं। जो पैदा होते हैं वे भी खाने-पीने सोनेमें लग जाते हैं, और एक-रसतासे बचनेके लिये ऊल-जलूल गप्पों, वोद्का, ताश और मुक़दमेबाजीमें वक्त गुजारते हैं। पत्नियाँ पतियोंको धोखा देती हैं और पति झूठ बोलते हैं। ऐसा भाव दिखाते हैं जैसे न तो उन्हें कुछ सुनाई देता है, न दिखाई। और इस गन्दगी, ग़लाज़त का बोझ सिरसे पाँव तकका बच्चोंके ऊपर लदा है...उनके भीतरकी दैवी-दीपशिखा बुझ जाती है और वे भी वैसे ही दयनीय, मरे-मराये बिल्कुल अपने माँ-बापों जैसे प्राणी बन जाते हैं। [फ़ैरापोण्टसे गुस्सेसे]... क्या चाहिये तुझे ?

फ़ैरापोण्ट—ऐंऽऽ? ये कुछ काग़ज हस्ताक्षर करनेको हैं।

आन्द्रे—हमेशा मेरी जानके पीछे लगा रहता है।

फ़ैरापोण्ट—[उसे काग़ज देते हुए] यहाँ के खजानेका कुली अभी-अभी बताता था कि इस जाड़ेमें पीटर्सबर्ग में दो-सौ डिग्री तक बरफ़ पड़ी।

आन्द्रे—वर्तमान घृणास्पद ज़रूर है, लेकिन जब मैं भविष्य की बात सोचता हूँ तो लगता है कि वह जरूर अच्छा होगा। मनमें बड़ा हल्कापन, निश्चिन्तता जागती है।...क्षितिज में एक प्रकाश फूटता चला आ रहा है, स्वतन्त्रता मुझे तो साफ़ दीख रही है। मैं देख रहा हूँ कि मैं और मेरी सन्तानें, आलस्यसे, जौ की शराबसे, इन

बत्तख और खीरेके कबाबोंसे, इन दावतों और सोनेसे, इस कमीनी और परोपजीवी ज़िन्दगीसे; छूट जायेगी, मुक्ति पायेगी।

फ़ैरापोण्ट—और वह कहता था कि दो हजार आदमी बर्फ़से जमकर मर गये, लोगोंमें त्राहि-त्राहि मच गई। मुझे ठीक याद नहीं बात पीटर्सबर्गकी है या मॉस्कोकी।

आन्द्रे—[कोमल भावनाओंके आवेशमें] मेरी प्यारी बहनें, मेरी अनोखी बहनें [गद्गद्कण्ठसे] मेरी माशा, मेरी बहन !

नताशा—[खिड़कीसे झाँककर] यह इतने जोर-ज़ोर से कौन बोल रहा है ? अरे आन्द्रूशा तुम हो ? तुम सोफ़ी मुन्नीको जगाकर मानोगे [फ्रेंच में] सोफ़ी सो रही है—उसे मत जगाओ भालू! [गुस्सेसे] अगर तुम्हें बातें ही करनी है तो यह बच्चीवाली गाड़ी किसी औरको दे दो... [फ़ैरापोण्टसे] मालिकसे गाड़ी ले लो।

फ़ैरापोण्ट—अच्छा, सरकार। [गाड़ी ले लेता है]

आन्द्रे—[उचकचा कर] ज़ोर-ज़ोरसे तो मैं नहीं बोल रहा था।

नताशा—[अपने बच्चेको थपकते हुए, कमरेके अन्दरसे] बौबिक मुन्ना! बेटा बौबिक; अरे दुष्ट।

आन्द्रे—[काग़ज़ों पर निगाह डालते हुए] बहुत अच्छा, इन्हें देख लेता हूँ और जहाँ जरूरत होगी हस्ताक्षर कर दूँगा—इसके बाद तुम इन सबको पञ्चायतमें ले जाना [काग़ज पढ़ता हुआ घरमें चला जाता है। फ़ैरापोण्ट गाड़ीको धकेलता बाग में दूर ले जाता है]

नताशा—[कमरे में से] बौबिक बेटा, तेरी अम्माका नाम क्या है ?— बेटा मुन्ना, अच्छा देख ये कौन है ? ये तेरी मौसी ओल्या है। मौसीसे बोलो—"गुडमौर्निंग मौसी !"

[एक लड़की और एक लड़के का घूम-घूमकर गानेवालोंकी वीणा और वॉयलिन बजाते हुए प्रवेश । वेर्शिनिन, ओल्या और अनफ़ीसा घरसे निकलकर चुपचाप एक मिनट गाना सुनते रहते हैं । इरीना आगे आ जाती है]

ओल्गा—हमारा बगीचा तो अब आम रास्ता ही हो गया । लोग आते-जाते हैं, घोड़ों पर चढ़कर घूमते हैं । दाई माँ, इन लोगोंको कुछ दे दो ।

अनफ़ीसा—[गानेवालों को पैसे देती है] जाओ, अब चले जाओ, भगवान् तुम्हारा भला करे बेटा [गानेवाले झुककर अभिवादन करते हुए चले जाते हैं] बेचारे ! लोगोंके पास खाने-पीनेको हो तो क्यों गली-गली गाते मारे फिरें [इरीना से] इरीना बेटी नमस्कार । [उसे चूमती है] अरे मेरी मुन्नी, बेटी, बरसों हो गये मुझे तो तुझे देखे । अब तो मैं ओल्याके साथ हाईस्कूलके ही सरकारी मकानमें रहने लगी हूँ न ! क्या करूँ, बुढ़ापेमें यही भगवान्की मर्ज़ी थी । अरे मैं पापिनी इतने आरामसे सारी ज़िन्दगीमें कब-कब रही होऊँगी ? खूब बड़ा मकान है, मुझे अपने लिए एक पूरा अलग कमरा है, अलग खटिया है । और खर्चा सारा सरकारी है...रातमें तड़के ही मेरी आँखें खुल जाती हैं । हे भग-वान् , हे माता मेरी, मुझ जैसा सुखी संसारमें और कौन होगा ?

वेर्शिनिन—[घड़ी देखकर] ओल्गा सर्जाएव्ना हमलोग, अब चलते हैं... कूचका वक्त हो गया है...[कुछ देर रुककर] मेरी कामना है, तुम्हें सब कुछ मिले...तुम सुखी होओ । मार्या सर्जाएव्ना कहाँ गईं...?

इरीना—कहीं बगीचेमें होगी ..मै जाकर अभी देखे लाती हूँ।

वैर्शिनिन—हाँ, ज़रा जाना तो। मुझे जल्दी है।

अनफ़ीसा—मैं भी चलकर उसे देखूँ [चिल्लाती है] माशेन्का...होऽऽ [इरीना के साथ बाग़में दूर चली जाती है] अरे ओऽऽऽऽ।

वैर्शिनिन—हर चीज़का अन्त होता है। देखो न, अब हमलोग बिछुड रहे हैं... [अपनी घड़ी देखता है] बस्तीवालोंने हमें विदा-भोज दिया था न, सो हमलोग बैठे-बैठे शराब पीते रहें। मेयरने भाषण दिया। मै खाता रहा, सुनता रहा, लेकिन दिल मेरा यहाँ तुम्हारे पास लगा था [बाग़ में चारों ओर देखते हुए] आप-लोगोंमें मेरा मन बहुत-बहुत रम गया था।

ओलगा—क्या हमलोग फिर कभी मिल पायेंगे ?

वैर्शिनिन—शायद कभी नहीं ! [कुछ देर चुप्पी] मेरी पत्नी और दोनो छोटी बच्चियाँ यहाँ दो महीने और रहेंगी।...अगर कोई बात हो जाय, या उन्हें कुछ ज़रूरत पड़े तो महरबानी करके...

ओलगा—हाँ-हाँ, ज़रूर ! आप बिल्कुल खातिर जमा रखिये [कुछ देर चुप रहकर] लेकिन कल सुबह बस्तीमें एक भी सैनिक नहीं रह जायेगा। सिर्फ़, याद रह जायेगी, और सचमुच, हमारे लिए तो जैसे ज़िन्दगी नये सिरेसे शुरू होगी। [कुछ देर चुप रहकर] पता नहीं क्या बात है, हम जैसा चाहती हैं, सब बातें ठीक उससे उल्टी होती है। मैं हेडमास्टरनी नहीं बनना चाहती थी और आज वही बन गई हूँ। अब लगता है हम लोग मास्को भी नहीं रह पायेंगे।

वैर्शिनिन—खैर, आप लोगोंको बहुत-बहुत धन्यवाद। अगर कुछ भूल हो गई हो तो मुझे माफ़ कर देना। मैं बहुत देर बक-बक करता रहा,

इसके लिए भी माफ़ करना। मेरे खिलाफ़ मनमें कोई दुर्भावना मत रखना।

ओल्गा—[आँखें पोंछकर] माशा क्यों नहीं आई अभी तक ?

वेर्शिनिन—विदा होते समय तुमसे और क्या कहूँ ? अब इसकी क्या दार्शनिक व्याख्या करूँ ?...[हँसता है] जीवन बड़ा कठोर है। हममेंसे बहुतोंको तो यह बिल्कुल सूना-सूना, खोखला, आशाहीन लगता है।...फिर भी हमें मानना पड़ता है कि जिन्दगी अधिक-अधिक आसान और स्पष्टतर होती जा रही है। लगता है वह दिन दूर नहीं जब यह आनन्द और उल्लाससे भर उठेगी [घड़ी देखकर] अब मेरे चलनेका वक्त हो गया। पुराने ज़मानेमें लोग दिन-रात लड़ाइयोंमें लगे रहते थे। उनकी ज़िन्दगी कूच—हमलों और विजयोंसे ही भरी रहती थी; लेकिन अब वह सब अतीतकी बातें रह गईं। हालाँकि उस युगके बाद एक ऐसा खाली स्थान, एक ऐसी दरार रह गयी है कि उसे भरनेवाली कोई चीज़ अभी तक हमारे पास नहीं है। मानवता उस दरारको भरनेवाले तत्वकी खोजमें है, ज़ोरोंसे खोज है और निश्चय ही एक दिन उसे खोज निकालेगी...काश, यह काम कुछ जल्दी हो जाता। [कुछ देर ठहर कर] तुम नहीं जानती ओल्गा, काश, परिश्रम और उद्योग भी संस्कृतिमें घुल-मिल जाते और संस्कृतिका गठबन्धन इनसे हो पाता तो कैसा अच्छा होता। [घड़ी देखकर] लेकिन, ख़ैर, अब मेरा चलनेका समय हो गया।

ओल्गा—लो, यह आ गई।

[माशाका प्रवेश]

वेर्शिनिन—मैं विदा माँगने आया हूँ।

[ओल्गा उन्हें विदा माँगनेके लिए छोड़कर अलग हट जाती है]

माशा—[उसके चेहरेको देखते हुए] अलविदा ! [एक प्रगाढ़ चुम्बन]

ओल्गा—बस-बस !

[माशा सिसक-सिसककर रो पड़ती है]

वेर्शिनिन—मुझे लिखना ।...भूल मत जाना मुझे ..अब चलने दो... समय हो गया है...ओल्गा सर्जीएव्ना, इसे सभाँलना, मुझे... मुझे अब चलना है। देर हो रही है [बड़ा उद्विग्न हो उठता है । ओल्गाका हाथ चूमता है । फिर माशाका आलिंगन करता है और तेज़ीसे चला जाता है]

ओल्गा—बस माशा !—अब बस करो बहन ।

[कुलिगिनका प्रवेश]

कुलिगिन—[परेशानीसे] कोई बात नहीं । इसे रो लेने दीजिये...इसे रो लेने...मेरी माशा...मेरी प्यारी माशा...तुम मेरी पत्नी हो माशा, और जैसी भी हो, मैं बहुत खुश हूँ...मुझे कोई शिकायत नहीं है...आरोपका एक शब्द भी मैं नहीं कहता । देख लो, यह ओल्गा गवाह है...हमलोग इसी पुराने जीवनको फिर अपना लेंगे । मै अब आगे एक भी शब्द नहीं कहूँगा...एक भी संकेत नहीं करूँगा ।

माशा—[आँसू पीकर]—एक झुके हुए ढालू समुद्रके किनारे पर हरा-हरा शाह बलूतका पेड़ खड़ा है, बलूतके उस पेड़ पर सोनेकी एक जंजीर है...शाह-बलूतके उस पेड पर सोनेकी जंजीर है... हाय, मैं तो पागल हुई जा रही हूँ...सागरके ढालू झुके किनारे पर...एक हरा-हरा शाह-बलूतका पेड़...

ओल्गा—माशा, अपनेको जरा सँभालो बहन, जरा धीरज रक्खो माशा... इसे ज़रा-सा पानी लाओ।

माशा—अब मैं कहाँ रो रही हूँ ?

कुलिगिन—हाँ, अब तो यह नहीं रो रही। यह तो बड़ी अच्छी है।

[कहीं गोली चलनेकी हल्की-सी आवाज़]

माशा—एक झुके हुए समुद्रके किनारे पर हरा-हरा शाह बलूतका एक पेड़ खड़ा है, बलूतके उस पेड पर सोनेकी ज़ंजीर है। हरी-हरी बिल्ली है, बलूत भी हरा-हरा है—अरे मैं तो दोनोंको गडमड किये दे रही हूँ [पानी पीती है] मेरी ज़िन्दगी बिल्कुल असफल रही। मेरी कोई चाह नहीं रही...मैं चुप होकर बैठी जीहूँ। खैर! सागर-तटका अर्थ क्या है? यह शब्द क्यों हर वक्त मेरे दिमाग़में गूँजते रहते हैं...मेरी खोपड़ीमें सब कुछ अस्त-व्यस्त हो गया है।

[इरीनाका प्रवेश]

ओल्गा—अब अपनेको शान्त करो माशा। देखो, कैसी अच्छी लड़की है हमारी माशा। आओ भीतर चलें अब।

माशा—[झुँझलाकर] मुझे भीतर नहीं जाना। छोड़ दो मेरा पीछा। [सिसकने लगती है, लेकिन फिर फ़ौरन ही अपनेको सँभाल लेती है] मैंने अब इस घरमें जाना छोड़ दिया है, मैं नहीं जाऊँगी।

इरीना—अच्छा, अगर हमलोगोंको कुछ बात नहीं करनी तो चुपचाप साथ-साथ ही बैठे रहें। तुम्हें पता है, मैं कल चली जाऊँगी?

[कुछ देर चुप्पी]

कुलिगिन—आज तीसरे दर्जेके एक लडकेसे मैंने नक़ली मूछें और दाढ़ी छीन लीं—देखो तो [दाढ़ी और मूँछें लगाता है] मैं हू-बहू-

जर्मन-मास्टर जैसा लगता हूँ [हँसता है]......लगता हूँ न ? ये लड़के भी कम्बख्त बड़े मसखरे होते हैं।

माशा—तुम तो सचमुच, जर्मन-मास्टर जैसे दिखाई देते हो।

ओगा—[हँसते हुए] हाँ हूबहू !

[माशा रोने लगती है]

इरीना—माशा फिर यह क्या है ?

कुलिगिन—बुरी बात है !

[नताशा का प्रवेश]

नताशा—[नौकरानी से] क्या कहा ? सोफ़ी मुन्नीके साथ प्रोतोप्रोव बैठेंगे और आन्द्रे सर्जीएविच बॉबिकको इधर-उधर घुमाएँगे। इन बच्चोंके साथ भी कितना कुछ करना पड़ता है [इरीना से] इरीना कल तुम चली जाओगी ? कैसे अफ़सोसकी बात है। एक हफ़्ते और रुक जाओ न...[कुलिगिन को देखते ही एक चीख़ मारती है। कुलिगिन हँस पड़ता है और दाढ़ी-मूछें उतार लेता है] हाय, तुमने तो ऐसा डरा दिया ! [इरीना से] मेरा तुम्हारे साथ कैसा मन लग गया था। तुम सोचती हो, तुमसे बिछुड़नेका मुझे दुःख नहीं है ? तुम्हारे कमरेमें अपने वायलिनके साथमें आन्द्रेको रख दूँगी, वहीं बैठे-बैठे रगड़ा करेंगे...उनके कमरेमें सोफ़ीको रख देंगे। कैसी प्यारी-प्यारी भोली बच्ची है। वह क्या बच्ची नहीं है हमारी ? आज मेरी तरफ़ ऐसी भोली-भोली आँखोंसे देखती रही—बोली : 'अम्मा'।

कुलिगिन—सचमुच, बड़ी प्यारी बच्ची है।

नताशा—कल मैं यहाँ बिल्कुल अकेली रह जाऊँगी [ठण्डी साँस भरके] सबसे पहले तो मैं इस देवदारुके पेड़ोंके रास्तेको कटवा दूँगी।

इसके बाद यह मोरपंखीका पेड़ उड़वा दूँगी। रातमें ऐसा भद्दा दिखाई देता है इनके मारे...[इरीना से] बहन, यह कमरमें बँधा पटका तुम्हें बिल्कुल भी नहीं खिलता। अच्छी पसन्द नहीं है। तुम्हें तो कुछ हल्के रंगका खिलेगा।......इसके बाद मैं खूब फूल लगवाऊँगी... फूल ही फूल...फिर ऐसी खुशबू रहा करेगी...[कड़क कर] उस कुर्सी पर यह खानेका काँटा क्यों पड़ा है? [घर में जाते हुए नौकरानी से] मैं पूछती हूँ उस कुर्सी पर वह खानेका काँटा क्यों पड़ा है? [चीखकर] ज़बान बन्द कर!

कुलिगिन—आज यह अपनी पर आ रही है।

[नेपथ्यमें कूचका बाजा बजता है। सब सुनते हैं]

ओल्गा—वही लोग जा रहे हैं।

[शैबुतिकिनका प्रवेश]

माशा—हमारे ही लोग जा रहे हैं। उन्हें यात्रा शुभ हो! [अपने पतिसे] अब हमें भी घर चलना चाहिये। मेरा दुपट्टा और टोप कहाँ गया?

कुलिगिन—मैंने उन्हें भीतर घरमें ले जाकर रख दिया है...अभी लाये देता हूँ।

ओल्गा—हाँ, अब समय हो चुका। हम लोग घर चलें।

शैबुतिकिन—ओल्गा सर्जीएव्ना।

ओल्गा—क्या बात है? [ठिठक कर] क्या है?

शैबुतिकिन—कुछ नहीं। पता नहीं तुमसे कैसे कहूँ...[उसके कानमें फुसफुसाता है]

ओल्गा—[चौंक कर] हैं, ऐसा कभी नहीं हो सकता।

शैबुतिकिन—हाँ, यही हुआ है। मैं तो थककर चकनाचूर हो गया हूँ।

चिन्तासे मरा जा रहा हूँ...अब एक शब्द भी बोलनेको जी नहीं करता। [उद्विग्नतासे] पर खैर, दुनियाका इससे कुछ नहीं बनता-बिगड़ता।

माशा—हो क्या गया ?

ओल्गा—[इरीनाको बाँहोंमें भरकर] आजका दिन बड़ा मनहूस है ! समझमें नहीं आता, कैसे तुम्हें बताऊँ। मेरी प्यारी बहन।

इरीना—क्या हुआ ? जल्दी बताओ न, क्या हुआ ? भगवान्के लिये जल्दी बताओ !

[रो पड़ती है]

शैबुतिकिन—अभी-अभी तुज़ेनबाख़ बैरन एक द्वन्द्व-युद्धमें मारे गये।

इरीना—[चुप-चुप रोते हुए] मुझे पता है ! मुझे मालूम है।

शैबुतिकिन—[दृश्यके पीछेकी ओर बाग़की एक बेंच पर बैठ जाता है] मेरा तो दम निकल गया...[जेबसे एक अख़बार निकाल कर] अब इन्हें रोने दो [गुनगुनाता है] त-रा-रा-रा तूम...ऐऽऽ... किसीका क्या आता-जाता है।

[एक-दूसरेको बाँहोंमें भरे तीनों बहनें खड़ी हैं]

माशा—हाय, सुनो, कूच बाजेकी आवाज़ सुनो, वे सब हमसे दूर चले जा रहे हैं। एक अभी-अभी गया है...हमेशाके लिये चला गया। हमलोग अपने जीवनको नये सिरेसे शुरू करनेके लिये अब फिर अकेली बच गई हैं। हमें जिन्दा रहना पड़ेगा, जीवित रहना ही होगा।

इरीना—[ओल्गाकी छातीपर हाथ रखकर] समय आयेगा जब हर आदमी समझ जायेगा कि, यह सब क्यों होता है ? दुनियामें यह दुःख और मुसीबतें क्यों है ? तब कोई भी रहस्य जैसी चीज

नहीं रह जायेगी। लेकिन तब तक हमें ज़िन्दा तो रहना ही पड़ेगी। हमें काम करना पड़ेगा। मेहनत और केवल मेहनत करनी पड़ेगा। कल मैं अकेली ही जाऊँगी और जिन-जिनको मेरी ज़रूरत है उन्हींकी सेवामें सारी ज़िन्दगी लगा दूँगी। अब शरद है, जल्दी ही शिशिर आकर हमें बर्फ़से छा देगा... लेकिन मैं काम में लगी रहूँगी, लगी ही रहूँगी।

ओल्गा—[*अपनी दोनों बहनोंको गले लगाकर*] कैसा मनोहर, कैसा आशाप्रद, विश्वासदायक लगता है संगीत। मनमें ज़िन्दा रहनेकी अदम्य चाह जागती है। हे भगवान, यों ही समय गुज़रता चला जाएगा—और हम लोग भी इसीके बहावमें हमेशा—हमेशाके लिये चली जाएँगी। लोग हमें भूल जाएँगे, हमारे चेहरोंको भूल जाएँगे, हमारे स्वरोंको भूल जाएँगे और पता नहीं हममें कितनी-कितनी बातें हैं जिन्हें कोई भी याद नहीं रखेगा। लेकिन हमारे दुख-दर्द, हमारे कष्ट, पीछे जीनेवालोंके सुखमें बदल जाएँगे, दुनियाँ में शान्ति और सुख छा जायेगा। तब लोग सुख से रहा करेंगे, और अपने पहलेवालोंको करुणापूर्ण स्वरमें याद किया करेंगे, आशीर्वाद देंगे। प्यारी बहनों, हमारे जीवनका अन्त यहीं नहीं हो जायेगा। हमलोग जीवित रहेंगी, यह संगीत कैसा आनन्ददायक, कैसा सुखद है कि मन होता है थोड़ी देर और चलता रहे, ताकि हम जान लें कि हम किसलिये ज़िन्दा हैं; हमें पता चल जाये कि हम यह क्यों दुख भोग रही हैं। काश, हम सिर्फ़ इतनी सी बात जान पातीं। काश, इतनी बात जान लेतीं।

[**संगीत धीरे-धीरे डूबता जाता है। बड़ा खुश-खुश हँसता हुआ कुलिगिन दुपट्टा और टोप लाता है। आन्द्रे बोबिकको बैठाकर बच्चा-गाड़ीको धकेलता ले जाता है**]

शेबुतिकिन—[गुनगुनाता है] तरा रा रा...बूम...रे...ए...[अखबार पढ़ता है] कोई फ़र्क नही पड़ेगा.........कुछ भी नही बने-बिगड़ेगा ।

ओल्गा—काश, हम सिर्फ़ समझ पाती...जान पातीं...।

[परदा गिरता है]